4

श्री

पीतलकी मूर्त्ति ।

अद्भुत घटनापूर्ण

सचित्र उपन्यास ।



प्रकाशक—

रामलाल वर्म्मा ।

• श्री •

पीतलकी मूर्त्ति ।

अद्भुत घटनापूर्ण सचित्र उपन्यास ।

पांचवां भाग ।

मि० जार्ज विलियम रेनाल्डस् कृत "ब्राजस्टैचू" का अनुवाद ।

रामलाल वर्म्मा द्वारा

२०१, अपर चीतपुर रोड, "वर्म्मन प्रेस" कलकत्तामें मुद्रित और प्रकाशित ।

प्रथम बार २०००] सं १९७४ वि० । [मूल्य १॥) आने



"परन्तु फिर उन लोगोंने बेरीनिस को धकाधू कर दिया।"

(पोतनकी मूर्त्ति—बयालीसा परिच्छेद)



"पर्मेनेयडा ! क्या यह तू ही है ?"

(पीतलकी मूर्त्ति—तिरासीवां परिच्छेद)

Burman Press Calcutta

॰ श्री ॰

पीतलकी मूर्त्ति

पांचवां भाग।

एक्यासीवां परिच्छेद।

अर्द्धरात्रिकी बातें।

अब हमें लौटकर उस कमरेमें चलना चाहिये, जहां बीबी हेमलता सो रही थी।

सोमपर्णके मार्किसको कुछ भी ख़बर न थी, कि पादड़ी छिपकर उसका सब चरित्र देख रहा है। वह यही समझता था, कि वह अपना काम बड़ी होशियारीसे कर रहा है और यही समझकर वह धीरे धीरे उस कमरेमें घुस गया, जहां बीबी-हेमलता सोयी हुई थी।

उसने उस कमरेमें घुसकर भीतरसे दरवाजा बन्दकर लिया और पलङ्गके पास जाकर देखा, कि बीबी गहरी नींदमें पड़ी है। बेरोनेसको गहरी नींदमें सोती देख पहले तो सोमपर्णके ड्यूकने लौट जानेका विचार किया; परन्तु फिर यह सोचकर कि भोजके समय इतने मनुष्योंके

बीच बहुत थोडोसी बाते करनेका अवसर मिला, जिसमें केवल यही तय हो सका, कि रात्रिके समय एकान्तमें बहुत सी जरूरी बातोंका निबटेरा करना होगा, और भोजके समयमें ही उसने चुपचाप वैरोनेससे उसके कमरेका पता पूछ लिया था। दूसरी बात यह थी, कि प्रेग छोडकर वैरोनेसके चले आनेके कारण लोगोंके हृदयमें कितनेही प्रकारके सन्देह उत्पन्न हो रहे थे। यद्यपि वैरोनेसने अपने आनेका कारण साफ साफ बता दिया था, तथापि लोगोंके हृदयमे खटका बना ही हुआ था। यही कारण था, कि सोमवर्गके मार्किसके हृदयमे भी नाना प्रकारकी चिन्तायें उत्पन्न हो रही थी, और वह प्रकृत बातें जाननेके लिये बडाही व्याकुल हो रहा था। ये बाते सोच-विचारकर अन्तमे उसने यही निश्चय किया, कि वैरोनेसको सावधानतासे जगा दिया जाये।

वेरोनेस अपना सुडौल कधा खोले आरामसे सो रही थी। अत मार्किसने धीरे धीरे उसके कन्धे पर हाथ रखा जो अत्यन्त गोरा, गोल और बहुत ही नर्म था।"

कन्धेपर हाथ पडते ही वैरोनेस चौंक उठी और घबडाहटसे चारों ओर देखने लगी। अभी तक टेबिलपर लेम्प जल रहा था, जिसकी रोशनी सोमवर्गके मार्किसके खूबसूरत चेहरेपर पड रही थी। अत. उस रोशनीमें सोमवर्गके ड्यूकको देख, उसका हाथ पकडे अपनी छातीसे लगाती हुई वह कहने लगी,—"ओह! आप अच्छे समय आ गये। आपको जगानेके लिये धन्यवाद है।"

सोमवर्गके मार्किसने कहा,—"यदि कोई जरूरी काम न हो, तो आपको वृथा ही जगाकर कष्ट दिया।"

वैरोनेस तकियेपर केहुनी टेक, एक हाथ माथेपर रखकर बोली, —"मैं आपको इसलिये धन्यवाद देती हू, कि मैं अभी एक भयानक

स्वप्न देख रही थी, जिससे मेरा जी बहुत बड़े संकटमें पड़ा हुआ था। आपने मुझे जगाकर उस विपत्तिसे मेरी रक्षा की है।"

सोमवारके मार्क्विसने कहा,—"और वह स्वप्न क्या था, प्रिये?"

हेरोनिस बोली,—"ओह! उसका स्मरण करते ही जी घबरा उठता है। यदि पीतलकी मूर्ति और कुमारीके चुम्बनकी कथा ..."

मार्क्विसने बहुत ही घबड़ाकर कहा,—"ओह! ऐसी विचारोंपर ध्यान न दो।"

हेरोनिस बोली,—"नहीं, नींदमें मुझे जो दुःस्वप्नायें उत्पन्न हुई थीं, उन्हें मैं रोक न सकी और यही कारण था, कि मुझे स्वप्नमें भयानक कष्ट हो रहा था; परन्तु ईश्वरको धन्यवाद है, कि आपने आकर मुझे जगा दिया और उस कष्टसे बचा लिया।"

सोमवारके मार्क्विसने कहा,—"कितने ही लोगोंका कथन है, कि स्वप्न चिन्ताओंसे प्रभाव पाया करते हैं और कितनोंका यह भी मत है, कि स्वप्न बिना आधारके नहीं होता। जो बात जाग्रत अवस्थामें कभी देखी सुनी नहीं गयी, वह स्वप्नमें भी नहीं दिखायी दे सकती; परन्तु यह तो निश्चित है, कि पीतलकी मूर्तिके विरुद्ध आपने कोई काम न किया होगा और आप उनकी एक प्रधान सेवि-काओंमें हैं। इसके अतिरिक्त आपका राजधानीसे इतना शीघ्र आनेका कारण सिवा इसके दूसरा नहीं हो सकता, जो मुझे पहलेसे ही मालूम है, अर्थात् जिसका मैं अनुमान कर रहा हूं।"

हेरोनिस बोली,—"प्रिय मार्क्विस! इसके आगे भी मुझे अभी बहुत कुछ कहना है और मुझे पूरी पूरी आशा है, कि आप अवश्य ही उसमें मेरा साथ देंगे।"

हेरोनिसकी ये बात सुन मार्क्विस बहुत ही डरा और घबड़ाकर

बोला,—"बेरोनेस! बेरोनेस! मैं आपसे प्रार्थना करता हू, कि आप मुझे सब बातें साफ साफ बता दीजिये?"

मार्किसको इस तरह घबडाये हुए देखकर बेरोनेस बोली,—"आप इतना डरते क्यों हैं? कौनसी ऐसी घटना घटी है, जिससे आप इतना घबडा रहे हैं। ओह! मैं समझ गयी। ड्यूक-अलटन रानीके प्रतिनिधि चुने गये हैं। यह बात आपको अच्छी नहीं लगी।"

सोमवर्गके मार्किसने कहा,—"हा, अवश्य मुझे इस बातका दुःख हुआ है, कि तुमने भी मेरे प्रतिद्वन्दी की 'जय' जो खोलकर मनाई है।"

बेरोनेस बोली,—"छल करनेके लिये जबान मीठी बनानेकी प्रधान आवश्यकता है। अत इतनेसे ही तुम मेरा अभिप्राय समझ गये होगे।"

इतना कह बेरोनेस बड़े ध्यानसे मार्किस की ओर देखने लगी।

मार्किस बोला,—"क्या कहा, छल! क्या इसका वही अर्थ है, जो मैं समझ रहा हू, अथवा मेरे सुननेमें कुछ भूल हुई है?"

बेरोनेस बोली,—"नहीं, आपको समझमें कुछ भूल नहीं हुई। इस समय पादडी तथा अलटनसे बदला लेनेका हमें अच्छा अवसर मिला है।"

मार्किस बोला,—"कुमारीके नामपर जरा स्पष्ट शब्दोंमें कहो। तुम देखती हो, कि सन्देहके कारण मेरी कैसी अवस्था हो रही है और मेरा चित्त किस तरह संकटमें पड़ा है। हा, मैं उस घमण्डी ड्यूक-से बदला अवश्य ही लिया चाहता हू। बताओ, शीघ्र बताओ, कि उस दुराचारी ड्यूकको मैं किस तरह नीचा दिखा सकता हू, जो इस समय खुशीसे जामेके बाहर हो रहा है, तुम जानती हो, कि कानून मैं रानीके अधिकारियोंमें ही हू। तुम उपाय शीघ्र बताओ,

उस कार्यमें परिणत करना मेरे आधीन है और मैं उसमें पल भर भी विलम्ब न करूंगा।"

बेरोनिस उसी तरह लोभपनेसे मार्किसकी ओर देखती हुई बोली —"तब आप यही समझ सकते हैं, कि मैंने जान-जिटकाकी गुप्त शक्ति हर ली है।"

मार्किस आश्चर्यसे बोला,—"जिटकाकी शक्ति! यह कैसे हो सकता है। मालूम होता है, तुम्हारी बुद्धि अभी तक ठिकाने नहीं हुई और इसी कारण जो मनमें आता है, बक जाती हो।"

बेरोनिसने हंसकर कहा,—"न तो मेरी बुद्धि ही मारी गयी है और न मैं अनाप शनाप ही बक रही हूं। इसके अतिरिक्त अब मैं स्वप्न भी नहीं देख रही हूं। यह सच है, कि बहुत घबराहटके कारण मैं पलङ्गपर पड़ रही और तुरत ही मुझे गहरी नींद भी आ गयी। आपको स्मरण होगा, कि यहां आनेके लिये मैंने आपको यही समय बताया था; परन्तु इससे आप ऐसा न समझें, कि मैं जरूरी बातोंको घटा रही हूं अथवा जो उपाय मैंने सोचे हैं, उनमें कुछ भी कमी कर रही हूं।"

मार्किस बोला,—"फिर वह उपाय क्या है?"

बेरोनिस बोली,—"मैं सब बातें साफ साफ बताती हूं। बहुतसे दूतोंसे मुझे पता लगा है, कि सरदार-जिटका की शक्ति हम लोगों-की शक्ति से कहीं बढ़ी चढ़ी है। अभी प्रेगमें सरदारने अपनी शक्ति की परीक्षा की थी, उस समय स्पष्ट मालूम हुआ, कि समस्त प्रजा उसकी ओर ही है। हम लोगोंके दलमें बड़े आदमी और अमीरोंके अतिरिक्त कोई सहायक नहीं है। समस्त प्रजा जिटकाकी सहायतामें अपना प्राण तक देनेको तय्यार है। ये बातें देखकर अपनी तथा आपकी रक्षा

पास जाकर उससे मिली और बहुत देर तक उससे बातें करती रही। अन्तमें दोनो ओरकी शर्तें ठोककर मैं वहासे चली आयी।"

मार्किसने कहा,—"और वे शर्तें क्या हैं?"

बेरोनेस बोली,—"सुनो, जान-जिटकासे मैंने चार शर्तोंकी मजूरी मांगी थी। पहली शर्त यह है, कि मेरे महलमें कोई पहरा न बैठाया जाय। दूसरी यह, कि मैं आजके समान ही अपनी समस्त सम्पत्तिकी अधिकारिणी बनी रहू। तीसरी शर्त मैंने यह की है, कि इतने दिनों तक जो कुछ अपराध अथवा भूल चूक हुई हो, उसे वह क्षमा कर दे और चौथी शर्त यह है, कि एक और मनुष्यके विषयमें भी ये शर्तें मानी जाये, जिसका नाम मैं पीछे बताऊंगी।"

इतना सुनते ही मार्किसने मुस्कराकर कहा,—"और शायद वह शख्स मैं ही हू।"

बेरोनेस बोली,—"हा, ऐसी ही बात है। अब यह बताइये, कि इन विषयोंमें आपकी क्या सम्मति है?"

मार्किसने कहा,—"तुम जानती ही हो, कि जिटकासे युद्ध जरूर होगा। यदि युद्धमें शरोफाकी विजय हुई तब तो ये सब शर्तें वृथा हैं और यदि विजय नही हुई तो यह निश्चय है, कि इस युद्धमें हम दोनोंमेंसे कोई न कोई अवश्य ही मारा जायगा।"

बेरोनेस बोली,—"शरोफाका दल पहले ही हार जायगा; क्योंकि जो उपाय मैंने विचारे हैं, उनके पूर्ण होनेपर शरोफाके हाथकी कुजी ही निकल जायगी। सक्षेपमें मैं तुमसे इतना कह देना चाहती हू, कि कुमारी एलीजाबेथ और उसका खजाना मैं सरदार-जिटकाके हवाले किया चाहती हू।"

यह सुन अपनी जगहसे उछलकर मार्किसने कहा,—"ओह! यह तो बड़ी भयानक बात है?"

मेरीनेस बोली,—"थोड़ी देर तक स्थिर होकर विचार कीजिये, कि यदि टेरीरास्ट इन बातोंको जो लोग हुए, और उसमें कोई सन्देह नहीं, कि उनकी विजय अवश्य होगी, तब उस समय हम लोगोंकी क्या दशा होगी? हम लोगोंको जन्मभूमि त्याग अन्यत्र भागना पड़ेगा, धन, रत्न, जमींदारी, मकान सब छिन जायगा और भीख मांगनेकी नौबत आ पहुंचेगी।"

मार्क्विसने उस बातमें टहलते हुए कहा,—"हां हां, मैं सब समझता और डरता भी हूं। परन्तु यही बड़ी ही भयानक है।"

मेरीनेस बोली,—"तब क्या तुम बदला नहीं लिया चाहते?"

मार्क्विस घबड़ाहटसे बोल उठा,—"बदला! आह! तुमने फिर वही भयानक बात मुझे याद दिलाई, जो मेरा कलेजा मसोस रही है। हां, बदला लेनेकी तो मेरी प्रबल इच्छा है; क्योंकि उन्होंने मेरा बड़ा अपमान किया है। अच्छा, तुम्हारी इच्छानुसार जो सब काम होंगे। लो, मैं भी तय्यार हूं। आजसे इस अधम कार्यमें मैं भी तुम्हारा साथी हुआ। अब मेरा आश्चर्य बिलकुल ही जाता रहा और निश्चय हो गया, कि तुम्हारे हृदयमें ये बातें छिपी रहनेके कारण ही तुमने ऐसा भयानक स्वप्न देखा था। अच्छा, अब साफ साफ बताओ, अपने इरादेको कार्यमें परिणत करनेका तुमने कौनसा उपाय सोचा है?"

इतना कह मार्क्विस उसी पलङ्गपर बैठ गया, जिसपर मेरीनेस बैठी हुई थी।

मेरीनेस बोली,—"जो उपाय मैंने सोचा है, वह बहुत ही आसान है। रानीकी सब सहेलियां मेरी आज्ञा माननेवाली हैं। मेरे कथनके अनुसार वे रानीके साथ सहानुभूति प्रकट करेंगी और उन्हें भागनेमें सहायता देंगी। रानीकी आन्तरिक इच्छा आस्ट्रिया भाग जानेकी है और ये सहेलियां भी उन्हें वही सम्मति देंगी, कुछ

पुरुषोंको ये सहेलियां अपने रहस्योंको बतानेके बहाने मोहित कर लेंगी और उन्हें रक्षक की पदवीसे प्रसन्न करेंगी। इस तरह वे लोग कुमारीको लौटाकर प्रेग ले जायेंगे और जिटकाके हवाले कर देंगे।"

मार्किसने कहा,—"यह उपाय तो ठीक है, लेकिन खजाना?"

बैरोनेसने कहा,—"जब उस खजानेको सफेद-महलसे हटानेका विचार किया गया था, तब यही स्थिर हुआ था, कि वह एक तावूतमें बन्दकर महल के तहखानेमें रख दिया जाये।"

मार्किसने कहा,—"और ऐसा ही हुआ भी; क्योंकि यहा पहुंचते ही वह तावूत तहखानेमें रख दिया गया, जो रातभर मृतकके समान लाया गया था।"

बैरोनेस बोली,—"तब तो यह निश्चय है, कि खजाना यहासे हटा देना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि पीतलकी मूर्तिके सेवकोंमें दस पीछे नौ मेरे ही भक्त हैं और उनसे मैं जो कुछ कहूंगी, उसे वे बिना सोचे-विचारे झट पूरा कर देंगे।"

मार्किस बोला,—"तुम्हारा कहना ठीक है; परन्तु इसका क्या प्रमाण है, कि जान-जिटका इन शर्तों को अवश्य पूरा करेगा।"

बैरोनेस बोली,—"मुझे विश्वास है, क्योंकि वह एक भला आदमी है। इसके अतिरिक्त उसने अपने हाथसे लिखकर मुझे एक एकरारनामा भी दे दिया है।"

मार्किस बोला,—"कहा है वह एकरारनामा, मुझे दिखाओ।"

बैरोनेस बोली,—"मेरी जाकिटमें छातीके ऊपर एक दुहरा जेब है, उसीमें वह प्रतिज्ञापत्र रखा हुआ है।"

इतना सुनते ही मार्किस अपने स्थानसे उठकर वहा गया, जहां बैरोनेसने कपड़े उतारकर रखे थे, और जाकिटके जेबोंको टटोलने लगा; पर लाख उद्योग करनेपर भी वह प्रतिज्ञापत्र न मिला।

अब बेरोनेसको ओर देखकर, जो मार्किसको खोजते देख चौंक पड़ी थी, वह बोला,—"मुझे तो वह कागज नहीं मिलता।"

"क्या नहीं मिलता है?" इतना कह बेरोनेस घबड़ाकर दौड़ती हुई स्वयं उनके कपड़ोंके पास गयी और बहुत कुछ परिश्रम करनेपर भी जब वह कागज न मिला तो चिल्ला उठी,—"हाय! वह कागज खो गया! मेरा सर्वनाश हो गया! हाय! अब मैं क्या करूंगी? अब मैं मरी!"

इसके बाद वह कुरसीके पास बैठ गयी और इतनी घबड़ा गयी, मानो उसका कालही उसके निकट आ गया हो।

मार्किस भी चित्रलिखितकी भांति खड़ा रह गया, उसके शरीर का रक्त एकदम जम गया और उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो अब मृत्युमें थोड़ा ही विलम्ब है।

इसके बाद कुछ पल तक दोनों एक दूसरेको देखते रहे; परन्तु किसीके मुंहसे कोई शब्द न निकला। अन्तमें दोनोंकी अवस्थाने पलटा खाया और दोनोंही रोने लगे। कुछ पल बाद रोना भी बन्द हुआ और बेरोनेस हाथ मल मलकर चिल्लाने लगी,—"ओह! मैं मरी, मैं मरी, यदि मुझे इस बातका तनिक भी अनुमान होता, तो ऐसी विश्वास घातकताका काम कदापि न करती। अफसोस! उस समय मेरी बुद्धि कहां? चली गयी थी?"

मार्किस बोला,—"ओह; मैं भी तुम्हारी ही तरह मटियामेट हो गया; क्योंकि अब यह असम्भव है, कि लोग मुझे तुम्हारे षड़यन्त्रसे अलग समझें।"

बेरोनेस बोली,—"नहीं, नहीं, तुम बिल्कुल ही निर्दोष हो। ओह! मेरी अब क्या दशा होगी? भयसे मेरा शरीर थर थर कांप रहा है।"

मार्किस बोला,—"अब मिथ्या आशाओंमें मुझे भुलानेका उद्योग

न करो। अभी अभी तुमने कहा है, कि उस प्रतिज्ञा पत्रमें एक मनुष्य का और भी जिक्र है; क्या इस अवस्थामें मैंही वह मनुष्य न माना जाऊंगा? क्या इससे मेरी हानि न होगी? और क्या तुम समझती हो कि हम लोगोंकी कार्रवाई देखनेके लिये पहरा न बैठा दिया गया होगा? मेरा तो अनुमान है, कि वह कागज उन्हीं लोगोंके हाथ लगा है, जिन्हें हमलोगोंको सजा देनेका भी अधिकार है। यदि मेरा अनुमान सत्य है, तो क्या वे सब कानमें तेल डालकर चुपचाप बैठे होंगे? नहीं, नहीं, हमलोगोंकी सब बातें उन्हें मालूम हो गयी होंगी और उन लोगोंने इसका उचित प्रबन्ध भी कर लिया होगा। इसके अतिरिक्त तुम यहभी जान रखो कि तुम्हारा इतना शीघ्र राजधानीसे आना सभोंके चित्तमें खटक रहा है, इस अवस्थामें यदि वह कागज उनके हाथ लग गया होगा, तो वे क्या हम दोनोंको छोड़ देंगे?"

बैरोनेस बोली,—"ईश्वर न करे, कि मेरी मूर्खता, अदूरदर्शिता तथा पागलपनमें आप भी सम्मिलित समझे जायें। अच्छा, अब यह बताइये कि इस समय के बजे होंगे?"

मार्क्किस बोला,—"ग्यारह बजनेके समय मैं तुम्हारे कमरेमें आया था और बातें करनेमें कमसे कम दो घण्टेका समय व्यतीत हुआ होगा; परन्तु तुम यह सवाल क्यों करती हो?"

बैरोनेस बोली,—"जब मैं भोजनवाले कमरेसे बाहर निकली थी, उस समय दस नहीं बजे थे और तबतक वह कागज मेरी जेबमें ही था। मैं खयाल करती हूं कि जब मैं उस बराम्देमें से कमरेमें आ रही थी, उसी समय वह कहीं गिर गया?"

जैसे डूबता हुआ मनुष्य लकड़ीका सहारा पाकर प्रसन्न हो जाता है, उसी तरह उत्साहित होकर मार्क्किसने कहा,—"तब वह वहीं गिरा होगा और शायद अब भी वहीं पड़ा हो।"

इस विचार मात्रसे दुःखित हो वेरोनिका बोली,—"ईश्वर करे कि वह यहीं पड़ा हो।"

अभी वेरोनिका कुछ सोच विचार ही रही थी, कि इतनेमें ही मार्किस आगल खोलनेके लिये दरवाजेकी ओर चला; परन्तु ज्यों ही वह दरवाजेके पास पहुँच कर किवाड़ खोलने लगा त्यों ही बाहरसे बन्द रहनेके कारण वह किसी तरह भी खुल न सका।

"ओह! ईश्वरही रक्षा करे।" इतना कहकर चिल्लाता हुआ वह अपनी पत्नी पर आ गिरा, जो अभी तक घुटनोंके बलसे बैठी हुई थी और इस अचानक घटनासे बिल्कुल ही हताश हो गयी थी।"

फिर एकाएक वेरोनिका चिल्लाकर बोल उठी,—"अब भागो, भागो।" इतना कहकर वह चटपट उठी और कपड़े पहनने लगी।

मार्किस इतना सुनतेही खिड़कीकी ओर दौड़ गया; परन्तु चन्द्रमाकी निर्मल चांदनीमें उस कमरेके पीछे ही चांदीके समान चमकीले जलसे भरा हुआ तालाब दिखायी दिया। "अरे उस ओरसे भागनेकी आशा भी एक क्षणमें ही नष्ट हो गयी।"

"हमलोग गये, अब कोई उपाय नहीं है।" इतना कह बिचारा मार्किस एक कुर्सीपर बैठ गया। उसके शरीरके रोम रोमसे ठण्डा पसीना निकलने लगा और उसका चेहरा एकदम पीला पड़ गया। वह जोरसे चिल्ला उठा,—"मौत! मौत! मौतही हमारे भाग्यमें बदी है। ओह! ईश्वर!! कैसी भयानक मौत!!!"

इसके बाद दोनों हाथोंसे अपना चेहरा छिपाकर वह बहुत देर तक चुपचाप बैठा रहा। वेरोनिका एमलिनने जल्दीमें किसी तरह उलटा सीधा कपड़ा पहना। अभी वह कपड़े पहन मार्किसकी ओर घूमी ही थी, कि एकाएक दरवाजा खुल गया!

दरवाजा खुलतेही मार्किस अपने स्थानसे उछल पड़ा और तल-

बयासीवां परिच्छेद।

कुमारीका चुम्बन।

आज बेरोनेस-हेमलेनको यह पहला ही अवसर था, कि वह उस पीतलकी मूर्त्तिके सामने अपराधीकी तरह खड़ी की गयी थी। वह उस विचित्र मूर्त्तिके भयानक कार्य्यके विषयमें बहुत कुछ सुन चुकी थी; परन्तु उसे स्वपनमें भी यह गुमान न था, कि एक दिन उसे भी उसका शिकार बनना पड़ेगा।

उसने एक बार भयसे उस मूर्त्तिकी ओर अपनी दृष्टि डाली, जो कारीगरोंने अपनी समस्त शक्ति और बुद्धि खर्चकर बनायी थी। इसके बाद वह दुःखभरे स्वरमें बोली,—"अफसोस! यह मूर्त्ति जितनी ही सुन्दर है और इसे देखनेसे जो भक्ति उत्पन्न होती है, उसी तरह इसके पेटमें भयङ्कर कार्य्यके मसाले भी भरे हुए हैं। हा कुमारी! तेरा कोई दोष नहीं है। तेरे पवित्र नामको दुष्ट लोग वृथा ही कलुषित कर तेरे नामसे सैकड़ों अपकर्म्म करते और फिर भी लज्जित नहीं होते हैं।"

इतना कहकर बेरोनेसने अपने हाथ पैर इतने जोरसे फेंकने शुरू किये, कि उन जल्लादोंको कई कदम पीछे हट जाना पड़ा, परन्तु फिर उन लोगोंने बेरोनेसको बेकाबू कर दिया। जब बेरोनेसको उन तीनोंसे किसी प्रकारकी आशा न रही, तब वह बुड्ढे ह्यूबर्टकी ओर बड़ी करुण दृष्टिसे देखकर और जोरसे इस लिये रोने लगी, कि जिसमें दयामें पड़कर वह उसकी रक्षा करे।

चिरागकी रोशनीमें ह्यूबर्टके चेहरेपर करुणाकी रेखा स्पष्ट मालूम हो रही थी, उसका चेहरा दया और घबड़ाहटसे क्षण क्षणमें

मदद रहा था। उसके होठोंका हिलना देखकर, मालूम होता था, कि वह बेरोनेससे कुछ कहना चाहता है। पर इसी समय धूम्र-प्रकटन तथा बादलोंके साथ साथ सोमवर्णका मार्किस भी वहाँ आ पहुँचा था और वह देवता भी चुपचाप खड़ा रह गया था। यही तो स्पष्ट था, कि वह बेरोनेसका कोई उपकार कर सकता।

इतनेमें ही पासके एक कमरेमें आरती घण्टी बज उठी, जिसकी आवाज उस कमरेमें गूँज गयी। इस आवाजके साथही साथ वह मूर्ति भी हिलती हुई मालूम हुई और मूर्तिके भीतरसे एक प्रकारकी प्रतिध्वनि निकलने लगी।

अब उन दरवेशभाइयोंमें से एकने बेरोनेसकी ओर देखकर कहा,—"बेटी! अब दो बार यह घण्टी और बजेगी और तीसरी बार तुम्हें इस संसारसे कूच कर जाना पड़ेगा।"

इसके पहले बेरोनेसके शरीरका खून इस तरह उबल रहा था, मानो उसे ज्वरका बुखार आता हो; परन्तु अब दरवेशभाईकी बात सुन उसका उबलता हुआ खून एकदम ठण्डा पड़ गया, आँखोंकी रोशनी धीमी पड़ गयी और अत्यन्त घबड़ाहट तथा दुर्बलताके कारण उसकी बोली बन्द हो गयी।

कुछ क्षण बाद उसे फिर होश आया और कुछ आत्मस्थित होकर वह चुपचाप तीनोंकी ओर देखती हुई बोली,—"हे मेरे ईश्वर! मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो। मैं इतना शीघ्र मरनेके लिये तय्यार नहीं हूँ, मुझे छोड़ दो।"

इसपर उसी दरवेशभाईने जिसने पहले बेरोनेससे बातकी थी कहा,—"हम ऐसा नहीं कर सकते; यदि ऐसा करेंगे भी तो आपकी जान कदापि न बचेगी बल्कि साथ ही साथ हम लोगोंको भी अपनी जानोंसे हाथ धोना पड़ेगा। आप यह न समझें, कि हम लोग आपसे

उन बुराइयोंका बदला ले रहे हैं, जो अति भयानक हैं और जिनका सुधार कदापि नहीं हो सकता। इस समय हम लोग जो कुछ कर रहे हैं, सब लाचारीसे और कर्त्तव्य समझकर ही कर रहे हैं।"

दूसरा भाई बोल उठा,—"ऐ अभागी औरत! हम तुझे उन बुराइयोंके लिये क्षमा करते हैं, जो तूने हमारे साथ की हैं, हा हम तुझे हृदयसे क्षमा करते हैं।"

इतनेमें ही तीसरा भाई भी कह उठा,—"यद्यपि आपका काम उन लोगोंके लिये बड़ाही भयानक हुआ है, जिन्होंने कभी मन, वचन या कार्यसे आपकी बुराई नहीं की, तथापि हम लोग आपको हृदयसे क्षमा करते हैं।"

यह बातें हो ही रही थीं; कि फिर घण्टी बजी और समस्त कमरा उसके थर्रानेकी आवाजसे गूंज उठा तथा ऐसा मालूम होने लगा, मानो पीतलकी मूर्त्ति, दीवार, मकान, तथा कमरे सभी उसकी भयानक आवाज सुनकर कांप रहे हैं।

कमरेमें फिर सन्नाटा छा गया; क्योंकि गोल कमरेमें मार्क्विस सोमवर्ग जोरसे तो नहीं, परन्तु धीरे धीरे गहरी प्रार्थना कर रहे थे और अल्टनका ड्यूक अपने प्रतिद्वन्दीकी यह दुर्दशा देख मनही मन फूला न समाता था। पीतलकी मूर्त्तिके सेवक उस अभागे मार्क्विसको चारों ओरसे घेरे हुए पत्थरकी मूर्त्तिकी तरह खड़े थे। न तो उनके हाथ पैर हिलते थे और न मुंहसे किसी प्रकारका शब्द ही निकलता था। पादड़ी क्रूर दृष्टिसे बैरोनेस तथा मार्क्विसकी ओर देखता हुआ किवाड़का सहारा लिये खड़ा था। यही उस दलके लोगोंका दृश्य था, जिनकी शैतानी छाया चिरागकी धुंधली रोशनीमें दीवाल पर पड़ रही थी।

बैरोनेसकी दशा अब और भी खराब होने लगी, उसकी इस समय

को दशाका वर्णन करना शक्तिके बाहर है और केवल वही मनुष्य वर्णन कर सकता है, जो उसके हृदयके भीतर घुस सके। इस समय बेरोनिस अपना माथा झुकाये चुपचाप बैठी हुई थी।

तुरत ही तीसरी बार घण्टी बजी। इस अन्तिम घण्टेकी आवाज़ कानमें पड़ते ही वह दृष्टि उठा ऊपरकी ओर देखने लगी। उसकी आकृतिसे ऐसा मालूम होता था, मानो कोई सूली पर उठाकर कुछ देख रहा है। अथवा जिस तरह मृत्युके समय मनुष्य बिलकुलही बेहोश हो जाता है, उसकी सांस चढ़ने लगती है, नाड़ी बन्द हो जाती है और चेहरे पर विकृति ही नहीं आ जाती है, परन्तु जब मृत्युका समय खूब निकट आ जाता है, तब एकाएक उसे कुछ चेत हो जाती है और वह भयानक आंख खोल इधर उधर देखने लगता है, ठीक वही दशा बेरोनिस-इमसेनकी हो रही थी। उसकी आंखोंपर जालीका पर्दा पड़ गया था और बहुत कुछ उद्योग करनेपर भी वह कुछ बोल नहीं सकती थी। इसके बाद देखते ही देखते बेरोनिसकी पलक गिरी और वह एकदम बेहोश हो गयी।

उसकी यह दशा देख पादड़ोंने चिल्लाकर कहा,—"इसे हवा दिलाओ; क्योंकि बेहुश अवस्थामें बलिदान देनेका नियम नहीं है। अपराधीको होशमें रखकर सब कष्ट अनुभव कराना चाहिये।"

लाचार हो उन्हीं तीनों जल्लादोंमेंसे एकने बेरोनिसके मुंहमें एक प्रकारकी तेज दवा डाल दी जिसके साथ ही वह अभागिनी सब प्रकारकी यातनाओंको सहन करनेके लिये होशमें आ गयी।

अभी मुश्किलसे उसने आंखे खोलकर चारों ओर देखा था, कि तीनों जल्लाद उसे पकड़कर पीतलकी मूर्त्तिका चुम्बन करानेके लिये उसे मूर्त्तिके पास ले गये।

हाए! इसके बाद मनुष्यकी वही दशा होती है, जब समस्त शरीर

उन बुराइयोंका बदला ले रहे हैं, जो अति भयानक हैं और जिनका सुधार कदापि नहीं हो सकता। इस समय हम लोग जो कुछ कर रहे हैं, वह लाचारीसे और कर्त्तव्य समझकर ही कर रहे हैं।"

दूसरा भाई बोल उठा,—"ऐ अभागी औरत! हम तुझे उन बुराइयोंके लिये क्षमा करते हैं, जो तूने हमारे साथ की हैं, हां हम तुझे हृदयसे क्षमा करते हैं।"

इतनेमें ही तीसरा भाई भी कह उठा,—"यद्यपि आपका काम उन लोगोंके लिये बड़ाही भयानक हुआ है, जिन्होंने कभी मन, वचन या कार्यसे आपकी बुराई नहीं की, तथापि हम लोग आपको हृदयसे क्षमा करते हैं।"

यह बाते हो ही रही थीं, कि फिर घण्टी बजी और समस्त कमरा उसके घर्रानेकी आवाजसे गूंज उठा तथा ऐसा मालूम होने लगा, मानो पीतलकी मूर्त्ति, दीवार, मकान, तथा कमरे सभी उसकी भयानक आवाज सुनकर कांप रहे हैं।

कमरेमे फिर सन्नाटा छा गया, क्योंकि गोल कमरेमें मार्क्विस वोमवर्ग जोरसे तो नहीं, परन्तु धीरे धीरे गहरी प्रार्थना कर रहे थे, और बल्टनका ड्यूक अपने प्रतिद्वन्दीकी यह दुर्दशा देख मनही मन फूला न समाता था। पीतलकी मूर्त्तिके सेवक उस अभागे मार्क्विसको चारों ओरसे घेरे हुए पत्थरकी मूर्त्तिकी तरह खड़े थे। न तो उनके हाथ पैर हिलते थे और न मुंहसे किसी प्रकारका शब्द ही निकलता था। पादड़ी क्रूर दृष्टिसे बैरोनेस तथा मार्क्विसकी ओर देखता हुआ किवाड़का सहारा लिये खड़ा था। यही उस दलके लोगोंका दृश्य था, जिनकी शैतानी छाया चिरागकी धुंधली रोशनीमें दीवाल पर पड़ रही थी।

बैरोनेसकी दशा अब और भी खराब होने लगी, उसको इस समय

पाठकोंको स्मरण होगा, कि जब जर्नैल हो कोमरके दोनों मित्र चार्लस और कोमार्ड उस सफेद स्त्रीके साथ उस पुलवाले कमरेमें पहुंचना ही चाहते थे, कि उन्हें घण्टीकी भयानक आवाज सुन पड़ी

ओह! यह सफेद स्त्री उस घण्टीकी आवाजसे भलीभांति परिचित थी। यह आवाज उसके कानोंमें पड़ती ही भय, घबड़ाहट और चिन्ताने उस पर इस तरह अपना अधिकार जमा लिया और वह एकाएक इतनी कमजोर हो गयी, कि जमीन पर गिराही चाहती थी, कि चार्लसने उसके हाथका सिरा थाम लिया और कोमार्डने उसे अपने हाथके सहारे गिरनेसे बचा लिया।

उस सफेद स्त्रीका खून मानो इस समय ठण्ढा हो गया और उसके चेहरे पर भयानक घबड़ाहट छा गयी। उसने कुछ बोलनेका उद्योग भी किया परन्तु जीभ लड़खड़ा जानेके कारण बोल न सकी। उस सफेद स्त्रीकी यह अवस्था देख, दोनों मित्र आपसमें एक दूसरेकी ओर देखने लगे।

अब दूसरी बार फिर घण्टी बजी, शायद चल पुर्जेके चलने की आवाजने उस स्थानको गुंजा दिया और जिसके बाद ही उन दोनों नवयुवकोंके हृदयमें एक विचार उत्पन्न हो गया तथा उस सफेद स्त्रीके घबरानेका कारण भी उनकी समझमें आने लगा।

एकाएक अपने विचारसे चौंककर उस सफेद स्त्रीने कहा,—"ओह! भागो, भागो, एक दम पीछे भागो।"

इतना कह चार्लसके हाथसे लम्प लेकर वह वहांसे भागना ही चाहती थी; परन्तु उन दोनों नवयुवकोंकी डरी हुई अवस्था, घबड़ाहट और शङ्का देख, उसे लाचार हो रुककर फिर दुबारा उन्हें भागनेके लिये कहना पड़ा।

परन्तु उन दोनोंकी अवस्था इस समय ऐसी न थी

में ठरडक पहुंच जाती है, मानो मौत अपना बर्फीला हाथ समस्त शरीर पर फेर देती है। बैरोनेसकी नसनसमें खून जम गया। हड्डियों के जोड़ खिचने लगे और उसे मानो लकवा मार गया।

ज्यों ही उस चिल्लाती कापती और घबड़ाती हुई बैरोनेसको वे जल्लाद मूर्त्तिके पास ले जाने लगे, त्यों ही ऐसा मालूम हुआ मानो उस मूर्त्तिमें जान आ गयी है, क्योंकि उसके वे दोनों हाथ जो छातीपर चिपके हुएसे मालूम होते थे, अब एकाएक खुलकर अपराधीको गले लगानेके लिये आगे बढ़ आये और किंवाड़के पल्लेकी भाति मूर्त्तिका अगला भाग खुल गया।

परन्तु ओह! उस मूर्त्तिके भीतरके काल पुर्जों पर दृष्टि पड़ते ही बैरोनेसकी क्या अवस्था हुई होगी, जब उसने देखा होगा; कि उस मूर्त्तिके भीतरकी कलोंमें दो बड़ी बड़ी नुकीली कीलें इस ढगसे जड़ी हुई हैं, कि वे सीधी अपराधीकी आखोंमें घुस जायगी और इसके अतिरिक्त सैकड़ों ऐसी ऐसी नुकीली कीलें उस मूर्त्तिके भीतरी भागमें और भी जड़ी हैं, जिनसे मनुष्यका समूचा शरीर छिद्रमय हो जायगा।

वह विचित्र घण्टी तीसरी बार बजनेके बादसे अबतक बराबर बज रही थी और उसकी भयानक आवाज उस तहखानेके प्रत्येक भागको हिला रही थी।

इसी समय जब कि घण्टी इस भयानकतासे बज रही थी, तीनों स्वार्जभाइयोंने बैरोनेसको उस मूर्त्तिके भीतर ढकेल दिया। इसके बाद मूर्त्तिका अगला भाग फिर ज्योंका त्यों बन्द हो गया और उसके दोनों हाथ छातीपर चिपक गये। उस मूर्त्तिके भीतरसे अभागी बैरोनेसके चीखने-चिल्लाने और कराहनेकी आवाज निकलकर घण्टीकी आवाजमें मिलने लगी।

छुरियां उसके अङ्ग अन्दरमें सैकड़ों छिद्र कर चुकी थीं। वह घाव युक्त हो गया था ; परन्तु वह अभी जीवित थी।

परन्तु इसके कुछ ही पल बाद उस मैडोनका, जो पीतलकी मूर्त्ति-के भीतर बनी थी, जिसका दरवाजा आपही आप खुल गया, अथवा यों समझना चाहिये, कि मानो मूर्त्ति को चाहने उसे खोल दिया। आह ! दरवाजा खुलतेही बेरोनेस उस मूर्त्तिके भीतरसे उसके नीचे बनी गड्ढेमें एक भयानक घोर अंधेरी तक खिर चरखियों पर गिर पड़ी, जो उसको छील डालनेके लिये खुब चाहे तय्यार थीं।

वह तब तक जीवित थी ; जब तक इस तरह चरखियोंपर आ गिरी थी ; परन्तु उसका जीवना-जिलाना क्रमशः कम हो रहा था। उसकी दोनों आंखे फट गयी थीं, सारा शरीर लहुसे और खूनसे लथ पथ हो रहा था, ऐसी अवस्थामें वह उन चरखियों पर गिरी थी।

उसके गिरते ही उन बड़ी चरखियोंने अपना काम आरम्भ कर दिया और उनकी तीखी छुरियां बेरोनेसके शरीरको काटने लगीं। बेरोनेसका भार पड़ते ही चरखियां और जोरसे घूमने लगीं।

अभागी ज्यों उन तीखी छुरियोंपर ही गिरी थी और वहां एक निमेष मात्र वह छिदी हुई पड़ी रही परन्तु दूसरे ही क्षण, जैसा कि अभी अभी हम कह आये हैं, वे चर्खियां घूमने लगीं। उनमें लगी हुई छुरियां उसके शरीरके प्रत्येक भागको काटने, चीरने तथा फाड़ने लगीं। ओह ! सचमुच ही वे उसे टुकड़े टुकड़े करने लगीं। इस तरह जिस समय वह चर्खी पहली बार घूमी, उसी समय अभागी बेरोनेसका ज्ञान लोप हो गया, उसकी जान निकल गयी और उसकी आत्मा सदाके लिये इस असार संसारको त्याग कर परलोक सिधार गयी।

परन्तु इससे क्या ! उन भयानक चर्खियोंने अपना किया। बराबर काटती, चीरती और खींचती हुई घूमती

वात सुन पड़ती। उन्होंने न कुछ सुना, न उस सफेद स्त्रीकी ओर देख और न उसे यादही किया। उनके सब विचार, समस्त बुद्धि और ख़या लात उस समय उस घण्टीकी आवाज और उसके बजनेके शब्द लोप कर दिये थे। वे पत्थरकी मूर्त्तिकी भांति, जिसमें कोई शक्ति नहीं रहती, और जिसे किसी प्रकारका आत्मज्ञान नहीं रहता चुपचाप खड़े थे। न वे हिलते थे, न उनके मुहसे किसी प्रकारका शब्द ही निकलता था और न किसीकी आवाज ही सुन सकते थे, तथा न उन्हें सफेद स्त्रीके हाथका स्पर्श ही अनुभव होता था, जो उन्हें खींचकर ले जानेके लिये उनके हाथपर हाथ रखे खड़ी थी।

हां, उनकी ठीक ऐसी ही अवस्था थी, जब वह डरी हुई निराश स्त्री उन्हें उस स्थानसे दूर भगा ले जाया चाहती थी। ठीक इसी समय वह घण्टी तीसरी बार बज उठी।

इस बार आवाज सुनते ही वह स्त्री दीवारपर ढलक पड़ी। उसकी समस्त शक्ति और साहस लोप होने लगा, उसका आत्मज्ञान खो गया और वह अपने आपेमें न रह सकी ; परन्तु अब भी किसी मैशीन की चालके समान वह लम्प अपने हाथमें थामें रही।

इसके बादही अभागी वेरोनिसके चीखने-चिल्लानेकी आवाज उनके कानोंमें पड़ी और अब उन्हें निश्चय हो गया, कि आज पीतलकी मूर्त्तिका कोई शिकार पकड़ा गया है और यह बलिदान पड़ने वाली कोई स्त्री है।

इस समय घण्टी बराबर जोरसे बज रही थी, साथ ही वेरोनिसकी चीखने-चिल्लानेकी आवाज इतनी भयानक होती जाती थी, कि उसका सुनना कठिन हो रहा था , क्योंकि अब वह पीतलकी मूर्त्तिके भीतर

दिनोंसे बेचैन रहकर वो वह दुर्बल और पीली हुई जाती थी और यही कारण था, कि जब घण्टोंकी आवाज उसके कानोंमें पड़ी तब वह काठकी प्रतिमाकी भांति दीवारके सहारे टिक गयी, हृदय और दमाग अवस्थामें पड़ी रह गयी।

और लार्डस तथा कानाडं, वे इस दृश्यको देखकर गतपत हो गये थे। उनका रोमहर्षण भयसे लोप हो गया था और उनकी आंखें उस कँगूरोंपर गड़ रही थीं।

अब घण्टे फिर बज उठे। इस घण्टेकी आवाज सुनते ही वह चीखी चिल्ला उठी,—"ओह! अभी कोई शिकार बलिदानके लिये और भी बाकी है।"

ओह! अब एक पलके लिये भी वे दोनों प्रेमी उस स्थान पर खड़े न रहकर एकदम भागे। भागो हमारा बलकर उन घण्टोंने उनके भूत-वत् प्राणोंमें जान डाल दी और दूर दूर, बहुत दूरके तहखानोंमें, उस यज्ञ-कुण्डों आदि कमरेसे अतिशय दूर थे अपनेको छिपानेके लिये भाग गये।

इतना करने पर भी उनके कानोंमें उस घण्टेकी आवाज पड़ती ही रही जो मार्किस आफ लोमबर्गके बलिदानके समय बजाया गया था। लोमबर्गके मार्किसने बहादुरोंके समान अपनेको पीतलकी मूर्त्तिके हवाले किया और इस तरह उस भयानक रात्रिमें दो शिकार पीतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदान चढ़ाये गये।



शरीरके मांसका बड़ा बड़ा लोंदा कर कर उसके नीचे वाली छोटी चर्खियोंपर गिरता गया और अब सब चर्खियोंने चलकर उसके शरीरको छोटे छोटे बहुतसे मांस-खण्डोंमें परिणत कर दिया। इसके बाद जब समस्त शरीरके छोटे छोटे टुकड़े हो गये, तब सब मांस नीचे झरनेमें गिर गया और पानीकी तेज धारने उसे बहाकर बेरोनेसका निशान तक मिटा दिया।

पीतलकी मूर्त्तिका यही बलिदान हुआ और इसी प्रकारकी सजा-का नाम "कुमारी-चुम्बन" रखा गया था।

अब घण्टी बजनी बन्द हो गयी थी, पीतलकी मूर्त्तिसे सम्बन्ध रखने वाला दरवाजा बन्द हो गया था। चर्खियों वाले कमरेके नीचे बहने वाले झरनेका वह जल जो कुछ क्षण पहले, रक्तसे लाल हो रहा था, अब स्वच्छ हो गया तथा वे भयानक चर्खियां अब पीछेकी ओर धीरे धीरे इस तरह घूमने लगीं; मानो वे उन चरखियोंको फिरसे चरखेमें लपेट रही हों, जो इतनी देरमें खुल गयी थीं।

परन्तु उस सफेद स्त्री और उन दोनों पेजोंकी यह दृश्य देखकर क्या अवस्था हुई?

ओह! मनुष्यकी भाषामें उस भयानक दुःख और कष्टको वर्णन करनेकी शक्ति नहीं है, जो उनके हृदयमें पहुंचा था।

यद्यपि सफेद स्त्री आज बीस वर्षसे इन भयानक काण्डोंसे परिचित थी और यद्यपि उसने उन दोनों पेजोंसे कहा था, कि कितने ही मनुष्योंका यहां बलिदान हो चुका है और वह सबको नहीं बचा सकी है; परन्तु अभीतक उसने स्वयम् अपनी आंखों यह काण्ड नहीं देखा था और केवल सुना सुनाया भयही उसे मृतवत बनाये हुए था।

परन्तु अब एकाएक समयने उस भयानक काण्डको देखनेके लिये उसे उस कल-पुर्जे वाले कमरेमें पहुंचा दिया था, जिसके बारेमें बहुत

दिनोंसे केवल यह सुनकर जो सब दुर्बल और पीली हुई जाती थी और मरी जाती थी, कि जब घण्टेकी आवाज उनके कानोंमें पड़ी तब वह काठकी प्रतिमाकी भांति दीवारके सहारे दुःखित हृदय और अज्ञान अवस्थामें खड़ी रह गयी।

और मार्किस तथा कोमार्क, वे इस दृश्यको देखकर गदगद हो गये थे। उनका श्वासप्रश्वास मानो लोप हो गया था और उनकी आंखें उस शिलामूर्तिपर गड़ गयी थीं।

अब घण्टी फिर बज उठी। इस घण्टीकी आवाज सुनते ही वह चीख़ उठी,—"ओह! अभी कोई शिकार बलिदानके लिये और भी बाकी है।"

ओह! अब एक पलके लिये भी वे दोनों वीर उस स्थान पर खड़े न रहकर एकदम भागे। मानो दुधारा बनकर उस घण्टीने उनके मृत-वत् शरीरमें प्राण डाल दी और दूर दूर, बहुत दूरके तहखानोंमें, उस फल-पुष्पों वाले कमरेसे अतिशय दूर वे अपनेको छिपानेके लिये भाग गये।

इतना करने पर भी उनके कानोंमें उस घण्टीकी आवाज पहुंची जो वही थी जो मार्किस आफ सोमवर्गके बलिदानके समय बजायी गयी थी। सोमवर्गके मार्किसने बहादुरीके समान अपनेको पीतलकी मूर्तिके हवाले किया और इस तरह उस भयानक रात्रिमें दो शिकार पीतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदान चढ़ाये गये।



तिरासीवां परिच्छेद।

विवाहोत्सव।

उस भयानक रात्रिके दूसरे दिन रातके नौ बजनेके समय भरटन-म्हल का गिरजा रोशनीकी जगमगाहटसे चमक उठा। आज उसकी चहारदीवारोंपर सुन्दर सुन्दर पताकायें लगायी गयी थीं, जिनपर बढ़ियासे बढ़िया काम किया हुआ था। बढ़िया मखमली पर्दे, जिनपर सुनहली कारचोपीका काम किया हुआ था, खिड़कियोंमें लगे थे और मोटा मखमली गलीचा सभी कमरोंमें बिछा हुआ था। कुर्सियोंकी कतार बड़ी सुघड़ाईसे लगायी गयी थी और सभी कुर्सियोंपर लाल मखमली गद्दिया बिछी हुई थीं, जिनपर सुनहरी जरदोजीका काम बड़ी उत्तमतासे किया हुआ था। ये मखमली कुर्सिया स्त्रियोंके बैठनेके लिये थीं और उनके पीछे वैसी ही, ये गनी मखमल चढ़ी कुर्सियोंकी खूबसूरत कतार लगी थी।

गिर्जा बड़ी खूबसूरतीसे सजाया गया था। हजारों मोमबत्तियोंके झाड़ जल रहे थे और दीवारोंमें कतारकी कतार दीवालगीरें लग रही थीं। कमरेके बीचोबीच बीस बीस मोमबत्तियोंके दो फर्राशी झाड़ जल रहे थे, जिनकी तेज रोशनी उन जवाहरातोंपर, जो खूबसूरत लेडियोंकी टोपियों तथा गवनोंमें जड़े हुए थे, पड़कर अपूर्व मनोहर छटा दिखा रही थी। यह बड़ा ही सुन्दर दृश्य था; क्योंकि सभी पदार्थ भड़कीले, बहुमूल्य तथा चित्तको आकर्षण करने वाले थे।

ठीक बीचवाले दरवाजेके सामने की एक ऊंची चौकी पर दो तख्त लगाये गये थे, जो बेशकीमत जवाहरातोंकी चमकसे जगमगा रहे

थे। बढ़िया बढ़िया शीशेके गमले, जिनमें रंगबिरंगी फूल भरे हुए थे, सामने टेबिलोंपर रखे थे। उनकी मन लुभाने वाली सुगन्धसे कमरा सुगन्धित हो रहा था।

अष्टम महलके सदर फाटक पर बोहेमियाका गाढ़ा झण्डा हाथमें लिये बहुतसे सिपाही कतार बांधे खड़े थे।

मेहमान लोग बड़े ठाट-बाटसे इधर उधर घूम रहे थे। बेश-कीमत जवाहरात उनके गले, टोपी तथा वक्षोंपर शोभा दे रहे थे और मालूम होता था, कि आज बनावटी तथा असली सौन्दर्यने मिलकर अष्टम महलको सुन्दरताकी खान बना दिया है।

शरीफ तथा धनी मेहमान दरबारी पोशाक पहने हुए थे। यद्यपि कुछ मेहमानोंने जङ्गी पोशाकें भी पहन रखी थीं, जिनसे मालूम होता था, कि समय पड़नेपर ये राजाके लिये प्राण तक देनेको तय्यार हैं, तथापि ये सभी जङ्गी पोशाकें भी अत्यन्त भड़कीली और विलासव्यञ्जक थीं। इन मेहमानोंके पीछे सुन्दर सुन्दर वस्त्र आभूषण पहने पेज (छोकरे-नौकर) थे और जो लोग जङ्गी पोशाक पहने थे, उनके पेज भी उसी तरह जङ्गी पोशाक पहने तथा ढाल तलवार लगाये अपने मालिकोंके पीछे पीछे घूम रहे थे।

ठीक नौ बजते ही गिर्जेके कमरेका दरवाजा खोल दिया गया और पांच पादड़ियोंने उस कमरेमें प्रवेश किया। उनके पीछे पीछे चार नौजवान युवक थे, जो अपने हाथोंमें धूपदान लिये हुए थे, जिनमें बहुत ही सुगन्धित धूप जल रही थी। इन सभोंके साथ पादड़ी सोफियन था, जो सबके आगे आगे चल रहा था। जिस समय यह दल वेदीकी ओर चला, उसी समय बाजेवालोंने मधुर धार्म्मिक गीत बजाना आरम्भ किया, जिसकी आवाज गिर्जेभरमें गूंज उठी।

जब यह धर्म्म संगीत समाप्त हुआ, तब बाजा बजाने वालोंने

वीररसका गाना आरम्भ किया। पहले तो बजाने वालोंने रानी एलीजाबेथके अल्टन-महलमें आनेके लिये बधाई बजाई, फिर धीरे धीरे उस गीतने पलटा खाकर बोहेमियाको रानी बननेकी जय जयकार मनायी और इसके बाद रानीका प्रियपात्र बननेके लिये लार्ड डोडल्फ को बधाई दी गयी।

कुछ ही क्षण बाद गिर्जा मेहमानोंकी भीड़से खचाखच भर गया और सभी लोग प्रसन्नताके मारे उन्मत्तसे दिखायी देने लगे। इसी समय एकाएक ड्यूक-अल्टनने गिर्जेमें घुसते हुए प्रसन्नतासे कहा,— "महारानी।"

बस इतना सुनते ही सब लेडियां अपनी अपनी कुर्सीसे उठ खड़ी हुईं, सभी शरीफ सम्मानके लिये आगे बढ़ आये और सिपाहियोंने अपनी अपनी सगीनें ऊंची उठा दीं। साथ ही बाजे वालोंने रानी एलीजाबेथकी अगवानीमें मधुर सगीत गाना आरम्भ किया।

परन्तु और! इतनी प्रसन्नताके बीच यह उदासी कटा कैसी छायी है? रोगीके समान पीली और कांपती हुई चाल तथा डरे हुए चेहरेसे, मानो ये सुखकर पदार्थ उसके हृदयमें भयानक चोट पहुंचा रहे हों, रानी एलीजाबेथने गिर्जेमें प्रवेश किया।

वह इस समय एकदम सफेद वस्त्र पहने हुई थी और सुन्दर सुन्दर चार सहेलियां उसके साथ थीं। उन चारोंके पीछे पाच अन्य युवतियां थीं, जो सभी देखनेमें सुन्दर तथा एकसे एक भड़कीली पोशाक पहने हुई थीं।

उस तख्त की ओर, जो बायीं ओर रखा हुआ था, बढ़ते हुए रानी एलीजाबेथने पादड़ी, शरीफ तथा उन बहादुरोंके सम्मान का उत्तर दिया और इसके बाद अपनी जगह पर बैठते ही वह घोर चिन्तामें निमग्न हो गयी। मानो अपने सामनेके सब दृश्य और जिस कार्यके लिये वह यहां आयी थी, वह भी भूल गयी। उसकी यह अवस्था देख,

रानीका सम्मान करनेके बहाने पादरी कोविंगनने उसके पास जाकर कुछ ऐसी बात उसके कानमें कही, जिसे सुनते ही वह एकबार चौंक उठी और बाद ही अपनी दशा सुधारनेका उद्योग करने लगी।

एलोनोरेके बैठनेके कुछ ही देर बाद लार्ड रोडरिकने गिर्जेमें, पैर रखा। वह बहुत ही भड़कीली पोशाक पहने हुए था और दो दरबान उसके दोनों ओर तथा कई ऐन उसके पीछे पीछे चल रहे थे। जिस समय वह गिर्जेके भीतर आया उस समय समस्त पादरी, नर्तकियाँ तथा दर्शकोंने उसके सम्मानके लिये अपना अपना माथा झुका दिया और अपना इतना सम्मान देख, उसकी आँखें बिजलीकी तरह चमक उठीं। इसके बाद वह सीधा रानीकी कुर्सीके सामने आकर घुटनोंके बल बैठ गया और रानीके उस हाथको चूमने लगा, जो उसने एक कलकी मूर्त्तिके समान आगे बढ़ा दिया था।

अब रानी एलोनोरे अपनी कुर्सीसे उठ खड़ी हुई और रोडरिक उसे हाथका सहारा दे वेदी की ओर ले चला। रानीकी सहेलियाँ तथा रोडरिकके ऐन भी उसके पीछे पीछे गये।

अब वैवाहिक कार्य आरम्भ हुआ और वह रोमन केथोलिकमता-नुसार उतनी दूर तक पहुंचा, जब कि विवाहकी ग्रन्थि उन दोनोंमें पड़नेवाली ही थी, तथा जिस समय सबकी आँखें इस युगल जोड़ीकी ओर लगी हुई थीं और जब लार्ड रोडरिक मन ही मन विचार रहा था, कि अब कुछ ही क्षण बाद वह कोरिनियाका राजा बना चाहता है, तथा जिस समय घटनाक्रमके प्रभावके कारण अभिमानी ड्यूक फूला न समाता था, ठीक उसी समय, उसी क्षण एक ओरकी भयानक चिल्ला-हट सबोंके कानोंमें गूंज उठी।

यह चिल्लाहट किसी तहखानेसे आयी हुई मालूम होती थी। मालूम होता था, कि कब्रमें मुर्दे चिल्ला रहे हैं।

इसी समय लाल रंगकी आगकी एक भयानक ज्वाला वेदीके पीछेसे फूट निकली और वह धीरे धीरे समस्त गिर्जे में फैल गयी! जब उस विचित्र अग्निकी शिखाको सभी लोग आश्चर्यसे देख रहे थे, ठीक उसी समय एक स्त्रीकी सूरत उस लाल आगमें दिखायी दी।

आगका रंग लाल रहने पर भी यह स्पष्ट मालूम हो रहा था, कि उस स्त्रीका चेहरा मुर्देके समान सफेद हो रहा है, और जो वस्त्र उसके शरीर पर हैं, वे ठीक उस मनुष्यके समान ही हैं, जो इस संसारसे विदा होते समय मनुष्यको पहनाये जाते हैं।

ओह! उस स्त्रीको देखते ही सब लेडियां जोरसे चिल्ला उठीं और भय, विस्मय तथा घबड़ाहटसे कुर्सीयोंके नीचे ढुलक पड़ीं। और बहादुरोंने यद्यपि अपने हाथ तलवारको मूठपर रख लिये तथापि एक कदम भी आगे बढ़ न सके और न अपना शस्त्र ही म्यानके बाहर खींच सके। यह दृश्य देखते ही रानी एलीजाबेथ एक बार कांपकर बेहोश हो गयी, लार्ड रोडल्फ भयसे पागल हो उठा और अलटनका ड्यूक सरसे पांव तक इस तरह कांप उठा मानो उसे भयानक ज्वर चढ़ आया हो।

अब उस लाल आगके बीचसे ही उस स्त्रीने गम्भीर आवाजमें कहा,—"यह विवाह नहीं हो सकता। ईश्वर की आज्ञा नहीं है।"

यह आवाज सुनते ही अलटनका ड्यूक पागलोंके समान चिल्ला उठा और घुटने टेक कर उसने अपने दोनों हाथ उस स्त्रीकी ओर फैला दिये, जो अभी तक उस लाल आगके बीचमें खड़ी थी। ड्यूक बड़ी ही भयावनी आवाजमें बोला,—"अनैंडा! क्या यह तू ही है?"

इसके बाद कुछ विचित्र विचार मस्तिष्कमें उत्पन्न हो जानेके कारण अलटनका ड्यूक घबड़ाकर मुंहके बल बेहोश हो भूमिपर गिर पड़ा।

इसके बादका दृश्य बड़ा ही भयानक था। क्योंकि अब वेदीके चारों

और तमाम कब्रिस्तानके मुर्दे मानों पृथ्वीसे बाहर उमड़ते हुए दिखायी दिये तथा देखते ही देखते वह स्त्री-मूर्त्ति उनके बीचमें गायब हो गयी। वह मेहमानोंका दल, जो कुछ पल पहले विवाहोत्सवकी आनन्दमें फूला न समाता था, वह भय, घबराहट तथा सन्देहसे व्याकुल हो गया। वे सभी एक बार दरवाजेकी ओर भागे। स्त्रियाँ चिल्लायीं, गिरीं और बेहोश हुईं दरवाजेकी ओर दौड़ीं। पुरुष मेहमान सब हल्ला मचाते, धक्का देते हुए अपनी अपनी जान बचानेके लिये दरवाजेकी ओर दौड़ पड़े।

बड़ा भयानक कोलाहल मचा। कितनी ही स्त्रियाँ गिर पड़ीं और पुरुषोंके पैरोंके नीचे कुचल गयीं। उनकी चिल्लाहटसे गिर्जाघर गूंज उठा तथा उनके बहुमूल्य आभूषण छिन्न भिन्न हो गये। लार्ड रोडल्फ, रानी तथा अपने पिताको उसी अवस्थामें छोड़ सभीको धक्के देता हुआ किसी तरह गिर्जेसे बाहर भाग गया; क्योंकि उसने अपने पिताकी बातें सुन ली थीं और उसे विश्वास हो गया था, कि उसकी माताकी आत्मा उसे विवाह करनेके लिये मना कर रही है।

कुछ ही देर बाद गिर्जेका वह भाग, जो कुछही देर पहले मेहमानोंकी भीड़से खचाखच भरा हुआ था, शून्य हो गया; परन्तु रानी एलो-आथेय अभी तक उसी अवस्थामें, उसी स्थानपर पड़ी हुई थी और उससे कुछ ही दूरीपर अस्टनका ड्यूक बेहोश होकर पड़ा था। उस स्त्रीके आविर्भावका इतना भय लोगोंके हृदयमें समा गया था, कि सदाका बहादुर, निर्भय और प्रत्युत्पन्नमति पादड़ी थौमियन भी उस स्थानको छोड़कर भाग गया। इसका कारण यह था, कि लार्ड रोडल्फकी तरह वह भी ड्यूक-अस्टनकी स्त्रीके क्रिश्चियन नामसे परिचित था और उसे भी विश्वास हो गया था, कि यह ड्यूककी स्त्रीकी आत्मा ही थी जो इस तरह इस विवाहमें बाधा डालनेके लिये आ गई थी।

जब उस गिर्जेमें भयके कारण एकदम सन्नाटा छा गया, तब एक मनुष्य-मूर्त्ति धीरे धीरे उस वेदीके पीछेसे निकली और उसने रानी एलीजाबेथके पास जाकर उसे मखमली गद्दीपरसे उठा लिया।

यह कोई दूसरा मनुष्य नहीं, बल्कि ड्यूक-अरटनका विश्वासी खानसामा ह्यूबर्ट था; परन्तु ज्योंही उसने रानीको उठाया त्यों ही उसके मुंहसे एक भयानक चीख निकल पड़ी और यह चीख बेहोश अरटनके कानोंमें पहुंचते ही उसे होश आ गया तथा वह आंखे फाड़ फाड़कर अपने चारों ओर देखने लगा।

कुछ देरतक इसी तरह देखनेके बाद वह उठ बैठा और घबराहटसे फिर चारों तरफ देखने लगा।

यद्यपि ड्यूककी विवाहोत्सवकी सत्यता तथा गत घटनाओंका स्मरण दिलानेके लिये गिर्जेमें अभीतक उसी प्रकार रोशनी जल रही थी, तथापि यह साबित करनेके लिये कि सत्य सत्य ही एक प्रकारकी लाल आग यहां भड़क उठी थी, गंधककी बदबू अभी तक आ रही थी। यह सब देखकर ड्यूकको पिछली बातें अच्छी तरह स्मरण होआयीं और वह किंकर्त्तव्यविमूढ़सा उसी जगह खड़ा रह गया।

यद्यपि गिर्जेमें भरपूर रोशनी हो रही थी; परन्तु पादड़ी, स्त्रियां, शरीफ तथा नौकर-चाकर सभी उस स्थान को छोड़ भाग गये थे और अरटनके ड्यूकको ऐसा मालूम होता था, कि वह अकेला ही वहां पड़ा है। यद्यपि वह एकदम अकेला न था और उससे कुछ ही दूरी पर एक बुड्ढा आदमी घुटने टेककर उस स्त्री की ओर झुका हुआ था, जो जिस तरह सफेद वस्त्र पहने हुए थी उसी तरह उसका चेहरा भी सफेद हो रहा था।

यह रानी थी—उसके लड़के लार्ड रौलफकी भावी पत्नी थी, जो

एकदम पीली पड़ गयी थी और मृत्युशय्याके पार्श्वमें खानसामा ह्यूबर्ट था।

जब चारों ओरसे घूमती हुई ड्यूक-दम्पतिकी दृष्टि उस खानसामा पर पड़ी, तब वह एकाएक मन्द स्वरमें चिल्लाकर जोरसे बोल उठा,—“ह्यूबर्ट! मेरे बन्धु! शीघ्र बताओ, रानीको क्या हुआ है?”

खानसामा, जिसके गालोंपर आंसुओंकी बड़ी बड़ी बूंदे झलक रही थीं, रोता हुआ बोला,—“मेरे मालिक! वह मर गयी! अफसोस! उसकी आत्मा अब इस संसारमें नहीं है।”

यह सुन अपना समस्त भय और सम्मान भूलकर एक डरे हुए बालकके समान ड्यूक बोला,—“मर गयी! नहीं, ह्यूबर्ट! ऐसा न कहो।”

ह्यूबर्टने गम्भीर शब्दोंमें कहा,—“हां, वह मर गयी।” इसके बाद वह मृत रानीके गर्दनकी नीचेसे अपना हाथ बाहर निकाल, खड़ा हो, बड़े ही दर्दनाक आवाजमें कहने लगा,—“हाय! आज बोहेमियाके शाही घरानेकी अन्तिम आशा इस स्थानमें विलुप्त हो गयी; जहांसे अब वह कभी निकल नहीं सकती। यह नौजवान सुन्दरी और उज्ज्वल ज्ञान राज कन्या आज उस नींदमें सो गयी, जिस नींदसे उसे ईश्वरके अतिरिक्त और कोई जगा ही नहीं सकता। हां! अब इसके शोकसे मुर्झाये हुए गालोंपर आंसुओंकी बूंदे न दिखायी देंगी। अब किसी शुभ भेदके सुननेके भयसे इसके कलेजेमें धड़कन न उत्पन्न होगी, अब इसके सिरपर न तो कभी शाही ताज रखा जायगा और न इसके कोमल हाथोंमें राज-दण्ड ही दिखायी देगा। अब सब समाप्त हो गया है। राज-घरानेका आज अन्त हो गया है और इस राजनन्दिनीकी मृत्युने हमलोगों-का समस्त सुख-स्वप्न सदाके लिये भङ्ग कर दिया है। अब इसके

अतिरिक्त और कुछ भी बाकी नहीं रह गया है, कि उसकी कब्रपर उसका यश-परिचय लिख दिया जाये, जो आज गत तीन दिनोंसे रानी कहला रही थी।

जिस समय ग्रू बर्ट अपने हृदयमें उत्पन्न हुए विचारोंको अपने पैरोंके पास पड़ी हुई रानीकी ओर देख देखकर इस तरह जोर जोरसे प्रकट कर रहा था, उस समय ड्यूक भय, विस्मय तथा शोकसे काठके पुतलेके समान अचल होकर उस ओर देख रहा था, जिस ओर उस स्त्री-मूर्त्तिका आविर्भाव हुआ था। इसीलिये वह ग्रू बर्ट की बाते न सुन सका, अथवा कानमें शब्द पड़ने पर भी उसका ध्यान उस ओर आकर्षित न हुआ। आज रातकी घटनाओंने उसके हृदयपर एकाएक जो आघात पहुंचाया था, सब मान, सम्मानका नाश कर जिस तरह उसने बनायनाया खेल चौपट कर दिया था और इस विचारने, कि उसके पुत्रके सिरसे शाही ताज ठीक उसी समय उतर आया, जब कि वह उसे पहनना ही चाहता था, इस भयानक घटनाके समयाने उसका दिमाग खराब कर दिया था, उसको अवश्य शक्ति नाश हो गयी थी और सब घटनाओंने एकत्र होकर उस बहादुर, परन्तु नीच-हृदय ड्यूकके कलेजेको चूर चूर कर दिया था।

जो हो, जब यह समाचार अल्टन-महलमें फैल गया, तब महल भरमें एक भारी आतङ्क छा गया और सभी मेहमान भय, निराशा तथा घबराहटसे इस विपदपर आलोचना करनेके साथ ही साथ किसी नये आतङ्ककी भी आशा करने लगे।

अभी लोगोंपरसे यह आतङ्क दूर भी न हुआ था, कि दूसरे ही दिन जासूसोंने आकर समाचार दिया, कि जान-जिटका एक बड़ी सेनाके साथ प्रेगसे चल चुका है और दक्षिणकी ओर बढ़ता चला आता है।

चौरासीवां परिच्छेद।

पल्टन महलपर आक्रमण।

उस भयङ्कर घटनाके चौथे दिन, जो त्रिवाङ्कोरममें हुई थी, पल्टन-महलके कुछ रक्षकोंने, जो बुर्जपर रहकर दूर दूर तक निरीक्षण किया करते थे, समाचार दिया, कि घुड़सवारोंकी एक बड़ी फौज महलकी ओर बढ़ती चली आती है। यह समाचार मिलते ही पल्टन-महलकी सेना तथा अन्य प्रजाओंको यह जता देनेके लिये कि टैपोराइट-सेना आ पहुंची है, पल्टन-महलसे एक तोप दाग दी गयी।

दोपहर होते न होते जिटकाकी सेना सामनेकी पहाड़ी पर आ पहुंची और पल्टन महलके वाम भागसे तीन मील की दूरी पर उसने अपना पड़ाव डाल दिया। टैपोराइट-दलके सभी खेमे सफेद कपड़ेके थे। खेमे खड़े हो जानेपर 'टैपोराइट' शब्द लिखा हुआ एक बड़ा झण्डा वहां गाड़ दिया गया।

इसके बाद संध्या होते होते यह प्रजा तंत्र चाहने वाली टैपोराइट सेना पल्टन महलके तीन ओर फैल गयी। अभी सूर्य भगवान् पश्चिम दिशामें अपनी विचित्र किरणें फैलाकर आकाशको लाल, हरे, नीले आदि रंगोंसे रंगने भी न पाये थे, कि जिटकाकी सेना अग्रसर होकर पल्टन-महलकी ओर बढ़ने लगी। पल्टन-महलके सामने जिस मैदानमें नित्य सैकड़ों गायें चरा करती थीं, जहांकी वाटिकाओंमें सुन्दर सुन्दर नर नारी हाथमें हाथ मिलाये घूमा करते थे, वह सब स्थान जिटकाकी प्रचण्ड सेनासे परिपूर्ण हो गया और चारों दिशायें घोड़ेकी टाप तथा सिपाहियोंके शब्दोंकी आवाजसे गूंज उठीं।

सिपाहियोंके सिंहनाद, शस्त्रोंकी खनखनाहट, घोड़ोंकी हिन-हिनाहट और तोपकी गाड़ियोंकी गड़गड़ाहटसे कुछ ही क्षण बाद चारों दिशायें प्रतिध्वनित हो उठीं। सिपाहियोंकी नङ्गी तलवारें तथा फौजी वर्दियां अस्त होते हुए सूर्यकी किरणोंमें चमक उठीं। फौजी बाजोंसे सैनिक उत्साहित होने लगे और कुछ ही क्षणमें अलटन महलको देख उनके चित्तमें इतना उतसाह भर आया, मानो शत्रु-दलको सामने पाते ही ये खाकमें मिला देंगे।

इन सैनिकोंके बीच बड़ी बड़ी तथा कितनोंही ऐसी छोटी ध्वजायें भी थीं, जिनपर "टेबोर" "जिटका" "राज-तन्त्रकी मृत्यु" "राज-पथका नाश" "न गद्दी न मुकुट" "समान अधिकार—समान सम्पत्ति" आदि शब्द और छोटे छोटे वाक्य लिखे हुए थे।

इस सेनाके आगे आगे एक बड़े और अच्छे काले घोड़े पर बोहेमियाके प्रजा-तन्त्र-दलका सरदार कप्तान जेनरल जिटका बढ़ रहा था। यद्यपि उसकी एक आंख नष्ट हो गयी थी तथापि इस समय मारे जोशके उसकी आखोंमें भी चमक आ गयी थी। जोशके कारण उसका चेहरा लाल हो रहा था और उसकी एक मात्र आंख सितारेकी तरह चमक रही थी। मारू बाजेके शब्द ज्यों ज्यों उसके कानमें पड़ते थे, त्यों त्यों उसके चेहरेकी रौनक बढ़ती जाती थी और जब कभी यह अपनी सेनाको कोई आज्ञा देता, तो उसी तरह उतसाह और आनन्दसे प्रत्येक सिपाही उसकी आज्ञाका पालन करनेको दौड़ पड़ता था। यह स्पष्ट मालूम होता था, कि सेना अपने सरदारको हृदयसे प्यार करती है।

टेबोराइट-सेनाको देखनेके लिये अलटन-महलकी प्रत्येक अटारी, खिड़की और गुम्बदोंपर दर्शकोंकी भीड़ लगी हुई थी, लार्ड रौडल्फ जोशसे तड़प रहा था और मनही मन विचारता था, कि जिस समय

जिटकाकी सेना कई भागोंमें विभक्त हो गढ़पर आक्रमण करेगी, इससे सम्भव यह पहली सेना ही उसपर टूट पड़ेगी और टैबोर सेनाको छिन्नभिन्नकर रसातलमें पहुँचा देगी। परन्तु उसके पिता अल्क-ज़ब्टमस, जो अपने पुत्रसे कहीं अधिक दूरदर्शी था, उसे समझाया कि इसतरह सेना बाँटना बराबर भूल है और जिटकाके लिये अपनी बिखरी हुई सेना एकत्र कर लेना बायें हाथका खेल है। आपने आज अल्टनके ड्यूकने अपने पुत्रके उत्साहकी बड़ी सराहना करते हुए यह भी कहा, कि महलकी रक्षा करना ही इस समय उसका कर्तव्य है। क्योंकि जिटका की सेना इस समय उत्साहसे भरी हुई है, एकाएक उसपर आक्रमण करनेसे हमलोगोंकी शक्ति कम हो जायगी और हार खानी पड़ेगी। यदि महलकी रक्षामें ही हमलोग प्रस्तुत रहेंगे तो थोड़ेही समयमें शत्रु घबड़ाकर छितरा जायँगे और स्वदेशको हमी उन्हें भागनेके लिये बाध्य करेंगे।

जब महल रक्षकोंकी ओरसे जिटकाकी सेनाको किसी प्रकारकी बाधा न पहुँची तब उसने महलको चारों ओरसे घेर लिया। अब, सूर्यास्त हो गया था और सूर्यदेवकी अन्तिम किरणें एकबार टैबो-राइट सेनाके सफेद कमरोंपर गिरकर विलीन हो गयी थीं।

इस समय अन्धेरा हो जानेसे कारण मशालें जलादी गयीं और उसकी लाल रोशनी जंगली पेड़ोंपर गिरकर भयानक दृश्य दिखाने लगी साथ ही टैबोराइट-फौजके अगले भागोंने स्वाधीनतासूचक मधुर संगीत बजाना प्रारम्भ कर दिया।

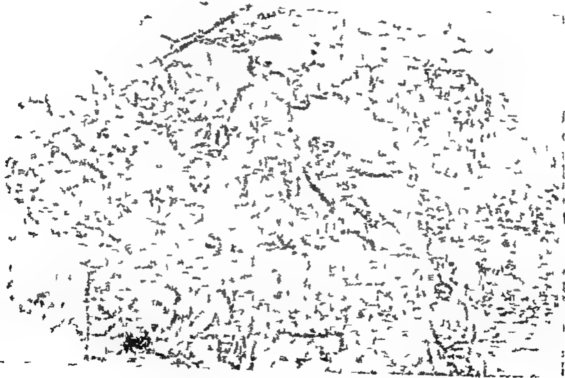
हाँ, अल्टन महलके पास इसी तरहकी संगीत ध्वनिकी लहरें उठने लगीं, जिन्हें सुन सुनकर टैबोराइट-दल उत्साहमें भरने लगा और उसकी हुङ्कारसे अल्टन-महलके अधिवासी व्याकुल होने लगे। सैनिकों की जयध्वनिसे आसपासके जीव-जन्तु भागने लगे, पक्षीगण उषाका

आश्रय छोड उड़ गये और उन वीरोंके शब्दोंकी प्रतिध्वनि इस तरह जंगलोंमें गूंजने लगी, मानो पेड़, पत्ते, मकान सभी थर्रा थर्रा कर उन वीरोंके उत्साहकी सराहना कर रहे हों।

इसी तरह समूची रात बीत गयी और सवेरा होतेही युद्धके बाजे फिर बजने लगे, साथ ही टेमोर-सेना उत्साहमें परिपूर्ण हो अल्टन-महलकी ओर दौड पडी।

अल्टनके ड्यूकने पहलेसे ही अगुआ न बनकर किलेकी रक्षा करना ही निश्चयकर लिया था, अत लाचारहो जिटका को ही आक्रमण आरम्भ करना पड़ा और उसके तोपखानेने अल्टन-महल पर गोले बरसाना आरम्भ कर दिया जिससे महलको बहुत ही हानि पहुंची। अल्टन-महलके सदर फाटकके आगे एक बडी नहर थी, जिसपर एक छोटा सा पुल बना हुआ था और इसी पुलको पारकर अल्टन-महलमें जाना पड़ता था। उस नहरने उन मकानोंको, जो अल्टन-महलके आगेकी ओर पडते थे, घेर कर ठीक एक टापूके समान बना रखा था अत आक्रमण करने वालोंके लिये उस भूमिपर अधिकार जमाना उतना ही आवश्यक था, जितना कि महलको रक्षा करने वालोंके लिये उसकी रक्षा करना, क्योंकि इसके बाद ही महल पडता था। यह स्थान संकीर्ण रहनेके कारण रक्षकोंको उसकी रक्षा करनेमें बडी सुविधा थी और ड्यूक-अल्टनने उसकी रक्षाका जबर्दस्त इन्तजाम भी कर रखा था, अत शत्रुओंका उस भूमिपर पैर रखना सहज काम न था।

इधर सवेरा होतेही अल्टन-महलमें भी लड़ाईके बाजे बजने लगे थे और राजकीय झण्डे हवामें झोंका खाते हुए लहरा रहे थे। सैनिकोंके नालदार जूतोंकी आवाजें महलमें गूंज रही थीं और सारा महल युद्धके शब्दोंसे परिपूर्ण हो रहा था। उस महलमें अभी बहुतसी ऐसी स्त्रियां



एक मानिसको भयटका पट्टो भो गयो।



यह अङ्गूठी मेरी जबानसे अधिक उस स्त्रीका हाल आपको बता सकेगी।

(पो० मू० नब्बेवां परिच्छेद)

तथा दुर्बल थे, जो सिपाहीगण साथ थे, इसलिये उनके साथ उनके परिवारवाले स्त्रियां भी थीं। क्लाइवके एकाएक आ पहुंचनेके कारण उनके भयका पारावार न था और जब जब तोपोंका गरजना उनके कानोंमें पड़ जाता, तभी सब वे घबराकर एक दूसरेसे चिपक जाते और बच्चोंको उस समयमें छिपानेका उद्योग करते, जहां वे भयंकर शब्द उनके कानोंमें न पड़ सकें।

लगातार तीन दिनों तक जिस तरह गोलाबारी उस टापूपर आक्रमण हुआ उसी तरह बहादुरी और दृढ़तासे उसकी रक्षा भी की गयी; परन्तु तीसरे दिन सन्ध्याके समय टैंगोराइट-सिपाही आशासे अधिक जी खोलकर लड़ते और जोर लगाते हुए दिखायी देने लगे। इन लोगोंने इस स्थानको जीतनेके लिये मानो प्राणसे अधिक उद्योग करना प्रारम्भ कर दिया और उसका फल यह हुआ, कि उस छोटेसे स्थानमें भयानक हत्याकाण्ड मच गया। शस्त्रोंकी झनझनाहट, घोड़ोंके टापोंकी आवाज, तोपोंकी गरज, सिपाहियोंके सिंहनाद तथा मरनेवालोंकी आहसे यह स्थान परिपूर्ण हो गया।

इस स्थानके पासही गढ़के एक बुर्जपरसे ब्रूक-पल्टन तथा लार्ड रौडक इस भयानक हत्याकाण्डको देख रहे थे। जब उन्होंने मिटलाके दलको इस तरह जी खोलकर लड़ते हुए देखा, तब ब्रूकके हृदयमें निराशा छा गयी और उसे अपना भविष्य बुरा दिखायी देने लगा। यह स्थान इतना छोटा और संकीर्ण था, कि वहां अधिक सेनाकी गुजर न थी। थोड़े ही मनुष्य थोड़े ही मनुष्योंसे लड़ रहे थे और मरने तथा मारने वालोंकी चिल्लाहटसे यह स्थान श्मशान सा मालूम होता था। संध्या हो जानेके कारण एकाएक अस्त होते हुए सूर्य्यदेवकी सुनहली किरणें उस स्थान पर पड़ी और इस चमकमें लड़ाईकी भयानकताको देख सभी योद्धाओंका कलेजा हिल गया और इसी उज्वल प्रकाशमें



यहअङ्गूठी मेरी जबानसे अधिक उस स्त्रीका हाल आपको बता सकेगी।

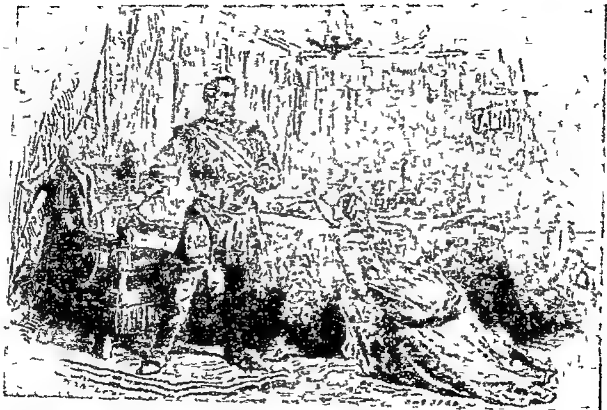
(पी० मु० नब्बेवा परिच्छेद)

Burman Press Calcutta

सदा युवक थे, जो विलायतसे नये आये थे, इसलिये उनके साथ उनके परिवारवाले स्त्रियां भी थीं। सिक्खोंके एकाएक आ पड़नेके कारण उनके भयका पारावार न था और जब जब तोपोंका गरजना उनके कानोंमें पड़ जाता, तभी तब वे घबड़ाकर एक दूसरेसे लिपट जाते और बचनेको उस स्थानसे निकलनेका उद्योग करते, जहां वे भयंकर शब्द उनके कानोंमें न पड़ सकें।

लगातार तीन दिनों तक जिस तरह वीरतासे उस टापूपर आक्रमण हुआ उसी तरह बहादुरी और दृढ़तासे उसकी रक्षा भी की गयी; परन्तु तीसरे दिन संध्याके समय टेहरावट-सिपाही भागनेसे अधिक जी खोलकर लड़ते और और भगाते हुए दिखायी देने लगे। इन लोगोंने उस स्थानको लेनेके लिये मानवी शक्तिसे अधिक उद्योग करना प्रारम्भ कर दिया और उसका फल यह हुआ, कि उस छोटेसे स्थानमें भयानक हत्याकाण्ड मच गया। मर्दोंकी ललकार, घोड़ोंके टापोंकी आवाज, तोपोंकी गरज, सिपाहियोंके सिंहनाद तथा मरने वालोंकी आहसे वह स्थान परिपूर्ण हो गया।

उस स्थानके पाससे गवर्नरकी एक गुजरती ड्यूक-पलटन तथा लार्ड गौउलक इस भयानक हत्याकाण्डको देख रहे थे। जब उन्होंने सिक्खोंके दलको इस तरह जी खोलकर लड़ते हुए देखा, तब ड्यूकके हृदयमें निराशा छा गयी और उसे अपना भविष्य बुरा दिखायी देने लगा। यह स्थान इतना छोटा और सकीर्ण था, कि वहां अधिक सेनाकी गुजर न थी। थोड़े ही मनुष्य थोड़े ही मनुष्योंसे लड़ रहे थे और मरने तथा मारने वालोंकी चिल्लाहटसे वह स्थान श्मशान सा मालूम होता था। संध्या हो जानेके कारण एकाएक अस्त होते हुए सूर्यदेवकी सुनहली किरणें उस स्थान पर पड़ीं और इस चमकमें लड़ाईकी भयानकताको देख सभी योद्धाओंका [illegible]। खिल गया और इसी उज्ज्वल प्रकाशमें



यह अङ्गूठी मेरी ज़बानसे अधिक इस स्त्रीका हाल आपको बता सकेगी ।

(पी० मु० नब्बेवा परिच्छेद)

तथा दृढ़ थे, जो सिपाहियोंसेबढ़ी चाहिये थे, इसलिये उनके साथ उनके हथियारवालों स्त्रियां भी थीं। ब्रिटिशोंके एकाएक आ पहुंचनेके कारण उनके साहसका पारावार न था और जब जब तोपोंका गरजना उनके कानोंमें पहुंचता, तभी तब वे घबड़ाकर एक दूसरेसे लिपट जाती और अपनेको उस स्थानमें छिपानेका उद्योग करती, जहां वे भयंकर शब्द उनके कानोंमें न पहुंच सकें।

लगातार तीन दिनों तक जिस तरह वीरतासे उस टापूपर आक्रमण हुआ उसी तरह बहादुरी और दृढ़तासे उसकी रक्षा भी की गयी। परन्तु तीसरे दिन, संध्याके समय टेपोटरट-सिपाही आशासे अधिक जी खोलकर लड़ती और और भागती हुए दिखायी देने लगी। इन लोगोंने उस स्थानको लेनेके लिये मानवी शक्तिसे अधिक उद्योग करना प्रारम्भ कर दिया और उसका फल यह हुआ, कि उस छोटेसे स्थानमें भयानक हत्याकाण्ड मच गया। गोलोंकी सनसनाहट, घोड़ोंके टापोंकी आवाज, तोपोंकी गरज, सिपाहियोंके सिंहनाद तथा मरनेवालोंकी आहसे यह स्थान परिपूर्ण हो गया।

इस स्थानके पासही गढ़सके एक गुम्बजसे ड्यूक-अवटग तथा लार्ड रोडलन इस भयानक हत्याकाण्डको देख रहे थे। जब उन्होंने ब्रिटिशोंके दलको इस तरह जी खोलकर लड़ते हुए देखा, तब ड्यूकके हृदयमें निराशा छा गयी और उसे अपना भविष्य बुरा दिखायी देने लगा। यह स्थान इतना छोटा और संकीर्ण था, कि यहां अधिक सेनाकी गुजर न थी। थोड़े ही मनुष्य थोड़े ही मनुष्योंसे लड़ रहे थे और मरने तथा मारने वालोंकी चिल्लाहटसे यह स्थान श्मशान सा मालूम होता था। संध्या हो जानेके कारण एकाएक अस्त होते हुए सूर्यदेवकी किरणें उस स्थान पर पड़ी और इस चमकमें लड़ाईको देख सभी योद्धाओंका कलेजा खिल गया और इसी उज्ज्वल

लार्ड अल्टन तथा उसके साथियोंने देखा, कि टेवोराइट सिपाही अपना
जी छोमकर उस स्थानपर अधिकार जमानेकी चेष्टाकर रहे हैं।
स्वयं जिटका भी उसी स्थानपर था और बड़ी बहादुरीसे
तथा अपनी सेनाको उत्साहित करता जाता था।
हाथमें नंगी तलवार थी जो सूर्य की उज्वल किरणोंमें
चमक रही थी और जो कोई उसके पास जाता था,
यमलोक पहुंचा देती थी।

अब अंधेरा हो गया था, परन्तु टेवोराइट दलने
साथ ही एक बार जिटकाकी फौजने इस जोरसे
राजकीय दल वालोंके पैर उखड़ गये और
स्थानमें भर गयी, साथ ही राज-दल वालोंको
भागकर उस टापूको खाली कर देना पड़ा। इस
टेवोर-दल वालोंने उस टापूपर अपना अधिकार
पहली विजय प्राप्त हुई।

दूसरे दिन सवेरा होते ही टेवोराइट
आरम्भ कर दिया। चारों ओरसे टेवोर-दल
अन्य बाधायें जो उसे अल्टनमहलमें पहु
नाश करनेका उद्योग करने लगा। ज्यों
उस आक्रमणकी भयकरता बढ़ती ही गयी।
डाल पात वाले पेड़ काट काटकर डाले
देरमें जिटकाकी फौज उस खायीके पार
अपने परिश्रम, अध्यवसाय तथा उद्योगके
गयी जो पुलके पास था और जिसके बाद ही
दीवार पड़ती थी।

पुल पारकर जब वह दल महलकी दीवार

स्वयं उसकी प्रसन्नताकी सीमा न रही। जिस्काकी जय जयकारसे सब कानोंमें गूंज कर अस्टन महलके अधिवासियोंको हतोत्साह कर दिया। अब टैबोराइट फौजके सामने अस्टन-महलकी बड़ी और ऊंची पत्थर-दीवारें थीं, जिसे पार करनेका कोई उपाय न दिखायी देता था।

इसलिये टैबोराइट सिपाही दीवालोंमें बड़ी बड़ी कीलें गाड़कर उनपर चढ़नेका उद्योग करने लगे और कितने ही चढ़ भी गये। फिर दीवालपरसे रस्सोंकी सीढ़ियां लटका दी गयीं और उनके सहारे और भी कितने ही मनुष्य ऊपर चढ़ गये; परन्तु दीवाल पार कर जाना कुछ लड़कोंका खेल न था, बल्कि भयानक, प्राण नाश और बड़े भारी जोखिमका काम था। उस स्थानपर किसीके प्राण बचनेकी आशा न थी; परन्तु जिस्काके बहादुर सिपाहियोंने इन बातोंका कोई विचार नहीं किया और उन बड़ा भारियोंके बीच अपना प्राण देनेके लिये घुस पड़े जो खूंखार जानवरोंकी भांति उन्हें कच्चा ही चबा जानेके लिये तय्यार थे।

यह दशा देख टैबोराइट सेना जरा भी न घबरायी, बल्कि अपनी जान हथेलीपर रख मौतका सामना करनेके लिये तय्यार हो गयी और दूने जोशसे लड़ने लगी। इसी समय राज-दलवाले सिपाहियोंने भी दीवालोंके ऊपर चढ़कर टैबोर-सिपाहियोंसे लड़ना आरम्भ किया और,जो टैबोर सैनिक दीवालपर चढ़ते हुए दिखाई देने लगे, उनपर ऐसी बाढ़ दागनी शुरू की, कि कितने ही गोलोंसे मारे गये और कितने ही भूमिपर गिरकर परलोक सिधार गये।

भीतरसे सिपाहियोंका आक्रमण होनेके कारण टैबोराइट-दलवाले दीवारोंसे सटे जाते थे, कुछ दीवालोंमें मकड़ेकी भांति कीलें पकड़ पकड़कर चिपक गये थे और स्थान न मिलनेके कारण बहुतसे सिपाही अन्य सिपाहियोंके कांधेपर चढ़ चढ़कर दीवालपर पहुंचनेका
कर रहे थे।

बड़ी भयानक लड़ाई हुई, और यह लड़ाई कई दिनों तक जारी रही। तोपोंकी गरजन -बादलोंकी गड़गड़ाहटके समान सिपाहियोंके कान फाड़े डालती थी, कटे और मरे हुए आदमियोंकी लाशोंसे खाईका पानी लाल हो गया था और खाई एक प्रकारसे भरसी गयी थी.तथा सड़े हुए मुर्दोंकी दुर्गन्धसे उस स्थानमें खड़े होना कठिन हो रहा था।

जिस तरह सरदार-जिटकाके सिपाही अपने प्राणोंकी पर्वाह न कर अपने सरदारकी आज्ञा पालनकर रहे थे, उसी तरह ड्यूक-अलटन भी अपने सिपाहियोंको उत्साहित कर लड़ाता और स्वयं अपनी सेनाकी देखभाल करता था। कई दिन बाद जासूसों द्वारा जिटकाको पता लगा, कि महलकी बाईं ओर रसद तथा भोजनका सामान भरा हुआ है, यदि किसी प्रकारसे उस अवसर अधिकार कर वह जला दिया जाये, तो लाचार हो किले वालोंको या तो भूखों मर जाना पड़ेगा अथवा सम्मुख युद्ध क्षेत्रमें आकर युद्ध करना पड़ेगा।

यह समाचार जिटकाके दलमें फैलते ही सबके हृदयमें दूना उत्साह भर गया और कितने ही बहादुर सिपाही भीतर घुसनेका उद्योग करने लगे।

परन्तु भीतर घुस जाना कोई सामान्य काम न था। चारों ओर शत्रुओंका भयानक भय था। खाई पार करने वाला पुल शत्रुओंके आगमनके पहले ही तोड़ दिया गया था, अत सरदारको फिर खाई पार करनेकी आवश्यकता पड़ी; क्योंकि खाई पार किये बिना उस रसदखाने तक पहुंचना कठिन था।

यद्यपि यह काम कठिन था और इसके लिये उपाय सोचनेमें सरदार-जिटकाका कुछ समय भी गया, तथापि अन्तमें उसने एक उपाय

ओर निकाला और इसी विचारके अनुसार यह निश्चय हुआ, कि खाईके इस पारसे उस पार तक मोटे मोटे रस्से बांध दिये जायें और उन्हीं रस्सोंके सहारे उसे पार किया जाये।

सरदार जिटकाका यही सिद्धान्त मान्य रहा। खाईके इस पार दो मोटे मोटे खूंटे गाड़कर उनमें रस्से बांध दिये गये। इन दोनों रस्सोंका दूसरा सिरा ले कर कुछ आदमी खाईमें कूद पड़े और उन गोलियोंकी बौछार सहते हुए (जो किलेकी दीवारपरसे आ रही थीं) उस पार पहुंच कर उन्होंने दीवालमें खूंटे गाड़ रस्से बांध दिये। इन्हीं दोनों रस्सोंमें से एक पर पैर रख तथा दूसरेको पकड़ कर सरदारके पीछे पीछे सब की सब सेना खाईके पार उतरने लगी।

जब सब खाईके पार हो गये तब फिर दीवाल लांघनेकी चेष्टा की जाने लगी। अब दीवालपर चढ़नेका भी इसके अतिरिक्त दूसरा उपाय न था, कि रस्सेको एक आदमी ऊपर जाकर लटकाये और उसीके सहारे अन्य सिपाही ऊपर चढ़ जायें; पर दोनों रस्सोंका दूसरा छोर खाईके दूसरी ओर बंधा था और पासमें कोई तीसरा रस्सा न था। अतः सरदारके इशारा करते ही एक सिपाही फिर खाईमें कूद पड़ा और बड़ी कठिनताई उस पार जाकर उसने रस्सा खोल दिया और फिर तैरता हुआ इस ओर आ निकला।

सरदार-जिटका सामान्य लड़ाका न था। मालूम होता था, कि वह युद्ध-विद्यामें अच्छी तरह निपुण तथा दूरदर्शी भी था। पहलेही कहा जा चुका है, कि अधका यह गोदाम महलके बाईं ओर था, अतः किलेवालोंका ध्यान बटानेके लिये जिटकाने अपनी सेनाका एक बड़ा भाग महलकी दाहिनी ओर भेज दिया था जो पलटनके -
का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किये हुआ था। अस्तु,
जब रस्सा आ गया, उसे लपेटकर दीवालके दूसरे

का विचार स्थिर हुआ। अब एक मनुष्य दूसरेके तथा फिर उसपर एक मनुष्य चढा और इस तरह एक बहादुर दीवालके ऊपर जा पहुंचा और उसी रस्सेके सहारे अलटन-महलके भीतर उतर पड़ा। उस पार जाकर वह मजबूतीसे रस्सेको पकडे रहा और इस तरह बहुतसे सिपाही उस पार जा पहुंचे।

इसके बाद भयानक काण्ड आरम्भ हुआ। एक लकड़ीमें कुछ कपड़े लपेट किरोसिन तेल डाल आग लगादी गयी और इस प्रकार अग्निने धीरे धीरे सुलग कर अन्नके साथही साथ अलटन-महलको भी जलाना आरम्भ किया।

गल्लेमें आग लगते ही काले काले धुएके बादल उठकर महलमें फैल गये, आग जोरसे जल उठी और अन्नके जलनेकी दुर्गन्ध चारों ओर फैल गयी।

यद्यपि लार्ड अलटन तथा उसके पुत्रको अपनी रसदकी रक्षा करनी आवश्यक थी, परन्तु उधर शत्रुओंका जाना असम्भव समझ वे वेफिक्र थे। परन्तु जब वह धुएका बादल तथा आंचकी लहर उठकर अलटन-महलको भस्म करने लगी, तब उन लोगोंको मालूम हुआ, कि उनका अनुमान झूटा निकला और शत्रु उधर भी जा पहुंचे।

ओह! परन्तु अब क्या हो . . . [illegible] लार्ड . . . अपने पुत्र तथा अन्य सैकडों सिपाहियों [illegible] . . . लिये

खड़ी थी और दूसरी ओर शत्रु उसका नाश करनेके लिये तय्यार थे। किसी ओर भी भाग बचाकर निकल भागनेका मौका न था।

जब कुछ उपाय न दिखायी दिया, तब सरदारने जान लड़ाकर युद्ध करना ही निश्चय किया। अत दोनों दलोंमें महलके भीतर ही गहरी लड़ाई छिड़ गयी।

एकबार पीछे हटता हटता सिटका आगके बिलकुल ही पास जा पहुंचा और उसके कितने ही सिपाही आगमें गिरते गिरते बचे। अब प्राण देनेके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय न देख सिटकाके सिपाही पलटनको धमाधम इस तरह टूट पड़े, जिस तरह शेर हरि-णोंके झुण्डको सामने पाकर उनपर झपट पड़ता है। इस भयानक संग्राममें दोनों दलोंके बहुतसे मनुष्य मरे तथा घायल हुए और बड़ी कठिनतासे सरदार तथा उसके सिपाही फिर दीवाल फांदकर किलेके बाहर निकल आये।

यह अवस्था तथा हाथमें आये हुए शिकारको निकल जाते देख ड्यूक-अस्टन तथा रोडफक आदि बहुत घबड़ाये; परन्तु उनके किये कुछ भी न हो सका। रसदखानेमें आग लग ही चुकी थी और जबतक युद्ध होता रहा, तब तक भोजनकी सब सामग्री जलकर खाक हो गयी। अन्तमें ड्यूकको भूखों मरनेका सामान दिखायी देने लगा।

यद्यपि सरदार अपने बचे-खुचे सिपाहियोंके साथ महलके बाहर निकल आया, तथापि उसके कितने ही ऐसे होनहार और बहादुर सिपाही मारे गये, जिससे उसके हृदयपर बड़ी चोट पहुंची; परन्तु इसबार उसे बहुत बड़ी सफलता हुई थी और पलटनके सिपाहियोंकी अपेक्षा उसके सिपाही बहुत कम मारे गये थे, अत उसने सन्तोषकर फिर अपने काममें ध्यान दिया।

का विचार स्थिर हुआ। अब एक मनुष्य दूसरेके तथा फिर उसपर एक मनुष्य चढा और इस तरह एक बहादुर दीवालके ऊपर जा पहुंचा और उसी रस्सेके सहारे अलटन-महलकी भीतर उतर पड़ा। उस पार जाकर वह मजबूतीसे रस्सेको पकडे रहा और इस तरह बहुतसे सिपाही उस पार जा पहुंचे।

इसके बाद भयानक कागड आरम्भ हुआ। एक लकड़ीमें कुछ कपड़े लपेट किरोसिन तेल डाल आग लगादी गयी और इस प्रकार अग्निने धीरे धीरे सुलग कर अन्नके साथही साथ अलटन-महलको भी जलाना आरम्भ किया!

गल्लेमें आग लगते ही काले काले धुएके बादल उठकर महलमें फैल गये, आग जोरसे जल उठी और अन्नके जलनेकी दुर्गन्ध चारों ओर फैल गयी।

यद्यपि लार्ड अलटन तथा उसके पुत्रको अपनी रसदकी रक्षा करनी आवश्यक थी, परन्तु उधर शत्रुओंका जाना असम्भव समझ वे बेफिक्र थे। परन्तु जब वह धुएका बादल तथा आंचकी लहर उठकर अलटन-महलको भस्म करने लगी, तब उन लोगोंको मालूम हुआ, कि उनका अनुमान झूठा निकला और शत्रु उधर भी जा पहुंचे।

ओह! परन्तु अब क्या हो सकता था। यद्यपि लार्ड अलटन अपने पुत्र तथा अन्य सैकड़ों सिपाहियोंके साथ गल्लेकी रक्षा करनेके लिये आ पहुंचा, परन्तु उस समय तक अन्नका अधिक भाग भस्म हो चुका था और स्वयं जेनरल जिटका अपने चुने हुए साथियोंके साथ उस स्थानमें मौजूद था। थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ सरदार-जिटकाको देख राज दलके सिपाही उन्मत्त हो उठे और उन लोगोंने चारों ओरसे सरदार तथा उसके सिपाहियोंको घेर लिया।

अब जिटका भयानक विपदमें पड़ा। एक ओर भयानक आग जल

कुछ देर बाद जब वह दुबारा होशमें आया तभी उसे मालूम हुआ, कि सरदार मिटकाफका वह पत्र, जिसमें उस शैतानी और आपदाओंको एक ही बताया था, पढ़कर ही वह बेहोश हो गया था।

वह अपने जीको हजार समझाता था, कि ये सब स्वप्नकी बातें नहीं थीं, परन्तु उस कमरेमें अपनेको अकेला पाकर और उस पासकी चीज़ोंको देखकर उसे उन घटनाओंपर विश्वास न होता था।

नहीं, जो कुछ उसने देखा था, वह केवल इतना ही नहीं था, बल्कि इसमें कुछ और बातें भी लिखी हुई थीं और यही कारण था, कि उसे बहुत सी बातें याद आने लगीं। आज वह जिस पलङ्गपर पड़ा हुआ था, उसका बिछावन पहलेकी अपेक्षा अधिक मुलायम था और दरवाजेपर एक मोटे कपड़ेका पर्दा भी लटक रहा था, जिसमें कि सर्दी कमरेमें न घुसने पाये। हवा न आने देनेके लिये खिड़कियोंके सूराखोंमें कागजोंके टुकड़े ठूंस ठूंसकर भर दिये गये थे और पलङ्गके पास कुछ दवायें भी रखी हुई थीं।

ज्यों ज्यों वह उन पदार्थोंको देखता था, त्यों त्यों उसका जी घबड़ाता था और वह इतना घबड़ा उठता था मानो उसके दिमाग पर बर्फ जम गयी हो। जो हो, इन दृश्योंको देखकर उसे इतना विश्वास तो हो गया, कि वह यहां कई दिनोंसे पड़ा है।

इसके बाद उसके चित्तमें शैतानी, मैदानमें शैतानकी [illegible]

सरदार-शिङ्काका अनुमान बहुत ही सत्य निकला, क्योंकि एक सप्ताहके बाद ही अल्टन-महलके अधिवासियोंके भूखों मरनेका समाचार जेनरल जिटकाके कानोंमें आ पहुंचा।

पच्चासीवां परिच्छेद।

रोगी वीर।

यद्यपि शरद ऋतुमें सर्दी पड़ा ही करती है; परन्तु दोपहरके समय सूर्य्यकी ताप कुछ बढ़ जानेके कारण दिन उत्तम मालूम होने लगता है और यही कारण था, कि टूटाफूटा खण्डहर-महल भी सूर्य्यकी चमकीली किरणे पड़नेके कारण इस समय चमक रहा था।

खण्डहर महलके ऊपरकी उस कोठरीमें, जो जलनेसे बच गयी थी, हमारा पूर्व परिचित वीर सर अर्नेस्ट अब होशमें आकर इधर उधर देखने लगा। वह आज उसी पलङ्गपर लेटा हुआ था, जिसपर उसने सुन्दरी ग्रेतानीको लेटे देखा था। यह बात उसे स्मरण आते ही सैकड़ों विगत घटनाये भी उसके मस्तिष्कमें स्मरण होने लगीं।

सबसे पहले उसके हृदयमें यही विचार उत्पन्न हुआ, कि यदि कोई मनुष्य मिल जाये, तो वह उससे पूछे, कि ग्रेतानीकी क्या दशा हुई और वह इस तरह क्यों पड़ा है?' क्योंकि अर्नेस्टके हृदयमें इस बातका विचार उत्पन्न हो रहा था, कि उसके हृदयमें उत्पन्न हुए विचार सत्य हैं या नहीं और यदि वे सत्य हैं, तो कहातक?

'परन्तु यह क्या?' ज्योंही सर अर्नेस्टने इधर उधर देखनेके लिये अपना माथा उठाया, त्योंही वह शीशेकी भारी चीजके समान तकियेपर गिर पड़ा और ज्योंका त्यों फिर बेहोश हो गया।

यह सुन्दरी दीवालसे हटकर खड़ी हो गयी और उसकी आंख फिर अर्नेस्टके चेहरेपर गड़ गईं। उसी समय एक विचारने उसके गालोंकी रंगत बदल दी; क्योंकि उसे स्मरण हो आया, कि अर्नेस्ट एक दूसरी ही स्त्रीको प्यार करता है, जिसका आचरण अब ये जोलासे छिपा नहीं है और वह अच्छी तरह जान गयी है, कि हेलेनी और आदेला दो नहीं, बल्कि एक ही जीव है।

अब अर्नेस्टने फिर पूछा,—"तू मुझे छोड़कर कहां चली जाती थी?"

इसपर ये जोलाने बड़े ही नम्र शब्दोंमें कहा,—"आपको आना मालूम करने और आपके प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये डाक्टरको बुलाने जाती थी; क्योंकि मैं जानती हूं, कि आप अवश्य ही बहुत सी बातें जानना चाहते होंगे।"

अर्नेस्टने उतनी मीठी और प्रेम भरी आवाजमें, जिससे कि ये जोलाको उस कमरेसे हटना कठिन हो गया कहा,—"और क्या तुम मेरे उन प्रश्नोंका उत्तर नहीं दे सकती। मुझे ऐसा मालूम होता है, मानो मेरी इस अवस्थामें तुमने ही मेरी सेवा की है और तुम्हारी ही कृपासे मैं होशमें आया हूं। अच्छा, अब कृपाकर तब तक इस कमरेसे न जाना जबतक तुम्हें मैं धन्यवाद न दे सकूं।"

ये जोला तुरन्त ही बोल उठी,—"मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया है, जिसके लिये आप मुझे धन्यवाद दें। मैंने एक क्रिश्चियनकी भांति केवल अपना कर्त्तव्य पालन किया है और अब, जब आप होशमें आ गये हैं, मेरा यहां रहना वृथा है, इसीलिये मैं ... "

इतना कहकर वह चुप हो गयी। उसकी मद भरी आंखें क्षण
भरके लिये अर्नेस्टके चेहरेपर जा पड़ी और वह उसे इस तरह
लगी, जिस तरह कोई प्रेयसी अपने प्रेमीको और
इस दृष्टिसे अर्नेस्ट भी समझ गया, कि ये जोला

यह प्रश्न भी उत्पन्न हुआ, कि वह इस कोठड़ीमें कितने दिनोंसे पड़ा हुआ है, किसने मुझे बिछावनपर सुलाया है, पर्दा डाला है और इस तरह दवाओंका प्रबन्ध किया है।

यह विचार उदय होनेपर वह कुछ देर तक आंखें बन्द किये पड़ा रहा और शान्तिसे गत बातोंका स्मरण करनेकी चेष्टा करने लगा।

इसी तरह उसके चित्तमें कितने ही विचार उत्पन्न होकर विलीन हो गये। अन्तमें उसने घबड़ा कर फिर आंखें खोल दीं। इसबार उसकी दृष्टि एक ऐसी स्त्री पर पड़ी, जो किवाड़ खोल धीरे धीरे भीतर घुस रही थी और अर्नेस्टको होशमें आया जान पर्देके पास खड़ी हो गयी थी।

यद्यपि सर अर्नेस्ट उसकी ओर देख रहा था, तथापि उसके मुंहसे किसी प्रकारकी आवाज न निकलती थी। वह बोलनेकी चेष्टा करता था, परन्तु बोल न सकता था। उसकी यह अवस्था देख उस स्त्रीके मुंहसे खुशीकी एक चीख उस समय निकल पड़ी, जब उसने सर अर्नेस्टको अपनी ओर देखते हुए देखा, क्योंकि इस समय उस बहादुरकी आंखें सुन्दरी ऐलीजाके चेहरेपर जमी हुई थीं।

यद्यपि अर्नेस्ट उसकी ओर देख रहा था, परन्तु बोल न सकता था। अर्नेस्टकी यह अवस्था देख उस स्त्रीपर संकोच और लज्जाने अपना अधिकार जमा लिया और वह उस कमरेसे हट जानेके विचारसे अर्नेस्ट परसे अपनी दृष्टि हटा पीछेकी ओर झुक पड़ी।

उसको जाते देख अर्नेस्टके हृदयमें बड़ा दुःख हुआ और इस दुःखने उसकी जबान खोल दी। उसने बड़ी ही नम्रतासे कहा,—"प्यारी ऐलीजा! मुझे छोड़कर चली न जाना।"

"प्यारी ऐलीजा" शब्दने उस कुमारीके चित्त पर कितना असर किया यह हम नहीं बता सकते। "प्यारी ऐलीजा" शब्द सुनते ही

अर्नेष्टने कहा,—"ओह, ऐ जीला! तूने मेरी जान बचा दी है। तू मेरी रक्षक ही नहीं बल्कि अग्निके समान है। अब आजसे तू जो कुछ कहेगी, मैं सब माननेके लिये तय्यार रहूंगा। परन्तु यह तो बता, कि क्या सचमुच ही मैं कई हफ्तेसे बीमार हूं?"

ऐ जीला बड़े दुःखसे बोली,—"हां, यह सत्य है। अफसोस! यह सत्य ही है।" इतना कहते कहते ऐ जीलाके बड़े बड़े नेत्रोंसे आंसुओंकी बूंदें टपक पड़ीं।

अर्नेष्ट उसकी यह दशा देख दुःख और घबराहटसे बोला,—"ऐ जीला! तू रो रही है, जिससे मालूम होता है, कि मैं सचमुच ही बहुत बीमार हो गया था। खैर जो होना था सो हो गया, अब सब बातें साफ साफ मुझे समझा दे।"

ऐ जीला दुःखसे बोली,—"हां, आप बहुत बीमार थे और आपके जीवनसे मैं कईबार निराश हो चुकी थी।"

अर्नेष्टने कहा,—"अच्छा, मेरी दवा किसने की? और सेवा करनेवालीका नाम पूछनेकी तो अब कोई आवश्यकता ही नहीं है।"

ऐ जीलाने कहा,—"दयालु भगवान्‌ने इस एकान्त स्थानमें ऐसी बूटियोंको इस तरह उत्पन्न रखा है, कि आपके बेहोश होते ही यह स्वयम् आपकी चिकित्सा करने लगा।"

अर्नेष्टने कहा,—"और कई हफ्तोंसे तू ही मेरी रक्षा और सेवा कर रही है?"

ऐ जीलाने हर्षसे कहा,—"मैंने जो कुछ किया, वह अपना कर्त्तव्य समझ कर ही किया है। ईश्वरको धन्यवाद है, कि आपकी जान बच गयी और मेरा परिश्रम सार्थक हुआ। आपका स्वास्थ्य अब सुधर रहा है और आशा है, कि आप शीघ्र ही आरोग्य हो

अर्नेष्टने कहा,—"प्यारी ऐ जीला! तू ह सहायकी

ऐ जीलाको इस तरह अपनी ओर देखते देख अर्नेस्टने कहा,—"तुम्हें उचित नहीं है, कि मुझे अकेले छोड़कर चली जाओ। तुमने मेरी सेवाकी है ; अतः मैं तुम्हें अपनी बहिनके समान समझता हूं। आओ, मेरे पास बैठ जाओ और सब बातें मुझे समझाकर कहो।"

अब ऐ जीला बहादुर अर्नेस्टकी बात टाल न सकी और सकुचाती हुई उसके पलङ्गके सिरहाने की ओर रखी हुई कुर्सीपर जा बैठी।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि ऐ जीला इस समय जंगी पोशाक नहीं पहने थी ; बल्कि उसके बदले साफ सुथरे जनाने कपड़े पहने हुए थी, जिससे मालूम होता था, कि वह अभी तक कुमारी ही है और इन स्वच्छ वस्त्रोंके कारण उसकी सौन्दर्य राशि और भी फूट निकली थी।

उस अंधेरी कोठरीमें ऐसी सुन्दरीको देखकर अर्नेस्ट इस तरह हृदयमें प्रसन्न हो रहा था, मानो कोई ईश्वरी दूत ही उसके पास आगया हो।

कुछ देरतक अर्नेस्ट एक शब्द भी अपने मुंहसे न निकाल सका। वह ऐ जीलाको कृपा, उसकी मधुर बोली, नम्रता और सीधेसादे स्वभावको देखकर चकित हो रहा था और उसके हृदयमें पवित्र प्रीति तथा दृढ़ भक्ति उत्पन्न हो गयी थी।

कुछ देर बाद अर्नेस्टने कहा,—"कहो, बताओ सुन्दरी! कितने दिनोंसे मैं इस तरह पलङ्गपर पड़ा हुआ हूं ?"

ऐ जीलाने बड़ी नम्रतासे कहा,—"आपको बीमार हुए आज छः सप्ताह हो चुके हैं।"

अर्नेस्टने आश्चर्यसे कहा,—"ऐं! यह क्यों ? क्या यह सम्भव है, कि मैं लगातार छः हफ्ते तक इस तरह बेहोश पड़ा रहा ?"

ऐ जीलाने कहा,—"आप शान्त हूजिये। ईश्वरकी दयासे अब दुःखके दिवस निकल गये और आप शीघ्र आरोग्य हो जायगे।"

है? नहीं, तू इस तरहकी अपराधिनी नहीं हो सकती। यह एकदम असम्भव है।"

एंजीलाने कहा,—"असम्भव नहीं, बल्कि सच है।"

इसपर अर्नेस्ट चोर भी चकराकर बोला,—"ऐं, एंजीला! इससे तेरा क्या मतलब है? और तूने किस लिये मेरे साथ छल किया था? वह छल किस प्रकारका था?"

एंजीलाने कहा,—"और कुछ नहीं, केवल मैंने अपना भेष बदल लिया था।"

अर्नेस्ट आश्चर्यसे बोला,—"भेष बदल लिया था? कैसा भेष?"

एंजीलाने कहा,—"मैंने लड़की पोशाक पहन ली थी।"

अर्नेस्टने कहा,—"ओह! मैं समझ गया।"

इसके बाद एंजीला चुपचाप बैठ गयी और मन ही मन विचारने लगी, कि क्या अर्नेस्ट सचमुच ही मुझे प्यार करता है।

कुछ देर बाद अर्नेस्टने कहा,—"अब मैं सब बातें समझ गया। तेरे धर्मपिता ड्यूक रोज़मण्डको पता हैं और उनको चिटकाने कैद कर रखा था। इसीलिये तू उन्हें छुड़ानेके वास्ते भग गयी थी और ईश्वरकी दयासे अपने कार्य्यमें सफल मनोरथ भी हुई। इसके बाद उन लोगोंके साथ ही तू सफेद महलमें आयी और वहां मेरी मदद की। ओह! मैं तेरा कितना ऋणी हूं, तूने मेरी कितनी सेवा की है और कईबार मेरी जान बचाई है।"

इसपर एंजीलाने हंसते हुए कहा,—"यह आप क्या कह रहे हैं? क्या मैं आपकी ऋणी नहीं हूं? क्या आपने उस जङ्गलमें दुष्ट रोडल्फके चंगुलसे मुझे नहीं छुड़ाया था? क्या आपने मुझे मोलडाव नदीमें डूबनेसे नहीं बचाया था?"

अर्नेस्टने कहा,—"यद्यपि तेरा कहना बहुत

मेरी सेवा कर रही है। आह! तूने कितनी नम्रता और दयालुतासे मेरी सेवा की होगी। अच्छा, ऐ जीला! इस कष्टके लिये तुझे अवश्य ही उत्तम पुरस्कार मिलेगा। हां, इसका बदला तुझे अवश्य ही मिलेगा। यह मेरा पहला कर्त्तव्य होगा, कि तुझे निर्धन अवस्थासे छुड़ाकर अच्छे पदपर बिठा दूं।"

इतना कहते कहते अर्नेस्टके चेहरेपर एक ऐसी प्रतिभा छा गयी और ऐसा भाव उत्पन्न हो गया, जिससे स्पष्ट मालूम होता था, कि वह उसे अपनी अर्द्धाङ्गिनी बनानेके लिये तय्यार है।

कुछ देरतक दम लेकर अर्नेस्ट फिर बोला,—"प्रिय ऐ जीला! वास्तवमें तू मेरी जान बचानेवाली है और दयालु बर्नार्डने मेरे प्रति जो दया दिखलायी है, उसके लिये भी मैं शीघ्र धन्यवादके साथ उचित पुरस्कार की व्यवस्था करूंगा।"

अर्नेस्टको उत्तेजित अवस्थामें देखकर ऐजीलाने कहा,—"नहीं नहीं,। अभी आप इस प्रकार अपने मनको उत्तेजित न करें। इससे बीमारी बढ़ जानेका भय है।"

अर्नेस्टने कहा,—"अब न डरो, प्यारी ऐ जीला! अब डरकी बात नहीं है। मैं जो कुछ कह रहा हूं, अपने होशहवासमें कह रहा हूं। अच्छा, अब उन बातोंको छोड़ दे, मुझे अभी बहुतसे प्रश्न करने हैं और तुझे भी उनका स्पष्ट उत्तर देना पड़ेगा। अब यह बता, कि तू किस प्रकारसे यहां आ पहुंची?"

ऐजीलाने बड़ी नम्रतासे माथा झुकाकर कहा,—"मैं आशा करती हूं, कि मैंने आपके साथ जो छल किया है, उसके लिये आप मुझे क्षमा करेंगे।"

अर्नेस्ट ऐ जीलाकी यह बात सुन चौंक पड़ा और बड़ी ही उत्कण्ठासे बोला,—"क्या, यह सम्भव है, कि तूने मेरे साथ छल किया

ऐलीसने कहा,—"नहीं, नहीं। ऐसी आज्ञा देकर मुझे दुखमें न डालिये।"

ऐलीसका यह उत्तर सुन अर्नेस्ट कुछ देरतक शान्त हो गया, फिर बड़ी व्यग्रतासे बोला,—"मैं हाथ जोड़कर विनती करता हूं, कि जबतक मैं बिल्कुल अच्छा न हो जाऊं, तबतक तू मेरे पाससे अलग न हो। [illegible] यदि जाड़ेपर यह शय्या मेरे लिये और भी कष्टमय हो जायगी और मेरा जी घबड़ाने लगेगा। इसलिये मैं प्रार्थना करता हूं, कि तू अभी मुझे छोड़कर न जा।"

अर्नेस्टकी बातें सुन कुमारी ऐलीस कुछ देरतक चुप रहकर बड़े ध्यानसे अर्नेस्टकी ओर देखती रही। इसी तरह कुछ देरतक देखनेके बाद वह बोली,—"अच्छा, मैं आपको न छोड़ूंगी।"

अभी ऐलीसके मुखसे इतना निकला ही था, कि दरवाजा खुल गया और भग्न मूर्त्ति दयालु बर्नार्ड कमरेमें घुस आया।

छयासीवां परिच्छेद ।

नाइट, वनकन्या और बर्नार्ड ।

अब इस विषयको छोड़ थोड़ी देरके लिये हम ऐलीसकी ओर झुकते हैं और यह बताना चाहते हैं, कि वह किस तरह इतनी दूर उस भग्न किलेमें आकर अर्नेस्टकी सहायिका बनी।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि जिस समय अर्नेस्ट तथा ग्रेतानो इस टूटे हुए किलेमें आये थे, उस समय डाकुओंके आक्रमण करनेपर ऐलीसने लड़केकी पोशाकमें वहां आकर उन दोनोंकी सहायता पहुंचायी थी और फिर जब अर्नेस्ट ग्रेतानोको बर्नार्डके पास छोड़ उससे मिलनेके लिये आया, तो वह नहीं मिली थी। [illegible]

होरा अधिक ऋणी हूं; क्योंकि उस मैदानमें, जहां, मैं बेहोश पड़ा था, तूने ही मेरी जान बचाई थी, इसके बाद सफेद महलमें तूने मेरी रक्षा की। फिर इसी मकानमें मुझे सहायता पहुंचायी, जब वह दुष्ट यादवी अपने दलबल समेत यहां आ पहुंचा था, और आज कई सप्ताहोंसे तू फिर मेरी सेवा कर रही है। प्यारी ऐ'जीला ! मैं सचमुच ही तेरे ऋणसे बहुत दबा हुआ हूं और किसी तरह भी उसका बदला नहीं चुका सकता।"

ऐ'जीला बोली,—"इन बातोंको ध्यानमें लानेकी आवश्यकता भी नहीं है। आशा है, आप मेरे उस दोस्ताना व्यवहारको, जो मैंने आपके साथ किया है, अस्वीकार कर बदला चुकानेका उद्योग न करेंगे और मुझे क्षमा करेंगे। अब आप अच्छे हो गये, अतः मुझे अपने जङ्गली मकानमें जाना आवश्यक है।"

अर्नेस्ट एकाएक उसके मुंहसे जानेकी बात सुन अकचका कर बोला,—"नहीं, ऐ'जीला ! ऐसा नहीं, इतनी जल्दीकी आवश्यकता नहीं है। जबतक मैं पूरी तरहसे अच्छा न हो लू, तबतक मुझे छोड़कर कदापि न जाना।"

इतना कह अर्नेस्टने ऐ'जीलाका हाथ अपने हाथमें ले लिया और बड़े प्रेमसे उसके मुंहकी ओर देखने लगा।

"क्यों, अब मेरे ठहरनेकी क्या आवश्यकता है?" इतना कह ऐ'जीलाने अर्नेस्टके हाथसे अपना हाथ छुड़ा लिया; क्योंकि वह जानती थी, कि कुछ दिन पहले अर्नेस्ट आयशाका हाथ बड़े प्रेमसे पकड़कर दबाया करता था।

अर्नेस्टने कहा,—"क्यों, अब ठहरनेकी क्या आवश्यकता है? ऐ'जीला ! तेरी यह बात मेरे कलेजेमें तीरकी तरह चुभती है। ऐ'जीला ! क्या तू मुझसे दोस्ती नहीं किया चाहती?"

पास बैठा हुआ बड़ी घबराहटसे उसकी ओर देख रहा है। उनके पास ही कागजका एक टुकड़ा पड़ा हुआ था। यह कागजका टुकड़ा वही पत्र था जो जिटकाने अर्नेस्टके पास भेजा था और जिसमें लिखा था, कि रोज़ामी और आयशा दोनों एक ही जीव हैं।

ऐञ्जीला शीघ्रही उस कोठरीमें चली गयी और उस कागजके टुकड़ेको उठाकर पढ़ने लगी। ओह! इस बार उसके आश्चर्य, विस्मय तथा डरका ठिकाना न रहा, परन्तु थोड़ी ही देरमें बर्नार्डने उसे सब हाल समझा दिया और अब वह सोचने लगी कि अर्नेस्टके समान चालाक मनुष्य भी आयशाकी दुरभिसन्धि को न समझ सका और उसके प्रेममें मतवाला हो गया तथा यह भेद खुल जानेके कारण ही उसकी यह दशा हुई है।

बिचारा बर्नार्ड अर्नेस्टकी दुरवस्था देख बहुत ही घबड़ा रहा था और अकेला रहनेके कारण कोई भी उपाय न कर सकता था। यद्यपि वह बहुत सी दवायें जानता था; परन्तु अर्नेस्टको अकेले छोड़कर दवा लेने जाना उसके लिये कठिन हो रहा था। ऐसी अवस्थामें ऐञ्जीलाका यहां आ जाना अत्यन्त उपयोगी हुआ।

बर्नार्ड ऐञ्जीलाको देखते ही प्रसन्न हो उठा और अर्नेस्टकी ओरसे उसके हृदयमें जो निराशा उत्पन्न हो चुकी थी; वह नाश हो गयी और वह उसके जीवित रहनेकी आशा करने लगा। उसी समय ऐञ्जीला तथा ईश्वरको बर्नार्डने बहुतसे धन्यवाद दिये और ऐञ्जीलासे रोगीकी सेवा करनेका अनुरोध करने लगा। ऐञ्जीलाने तुरत ही उसकी बात मान ली, अतः ऐञ्जीलाको अर्नेस्टके सुपुर्दकर बर्नार्ड जंगलमें जड़ी बूटियां खोजनेके लिये चला गया।

ऐञ्जीलाने यह काम सहर्ष ग्रहण कर अर्नेस्टके एक नौकर द्वारा यह समाचार अपने घर कहला भेजा, जिसमें उसके

ऐ जोला अर्नेस्टके दिये हुए उसी घोड़ेपर सवार हो, अपने घर चली गयी थी। जिस समय वह घर पहुंची है, उस समय उसके माता-पिता वहीं थे और इतने दिनों बाद अपनी प्रिय पालिता कन्याको देख उन्हें बड़ा हर्ष भी हुआ था; परन्तु साथ ही साथ उनके आश्चर्यका भी वारापार न था, क्योंकि ऐ जोला जड्डी पोशाक पहने हुए थी, परन्तु वह आश्चर्य उन्हें अधिक क्षणतक घबड़ाहटमें न रख सका, क्योंकि ऐ जोलाने शीघ्र ही सब वृत्तान्त उनसे कह सुनाया।

उसके माता पिता उसकी वीरताका समाचार सुन बारबार उसकी सराहना करने लगे और अपनी बड़ाई सुन ऐ जोला भी मन ही मन प्रसन्न होने तथा ईश्वरको अनकानेक धन्यवाद देने लगी।

ऐ जोलाको घुड़सवारीका बड़ा शौक था। वह नित्य घोड़ेपर चढ़ घूमने निकल जाया करती थी। एक दिन वह नित्यकी भांति ही घोड़ेपर चढ़ घूमने निकली थी, कि उसकी इच्छा डलडर-महल देखनेकी हुई और वह इधर ही चा निकली। डलडर महलसे ऐ जोलाका मकान अधिक दूर न था। अतः उसने मन ही मन तुरत ही लौट आनेका विचार भी कर लिया था।

बस ऐ जोला घोड़ेको एड़ लगाती हुई बातकी बातमें उस महलमें आ पहुंची और वहां उसने देखा कि लड़ाईके स्थानमें आज भी खूनका हल्का दाग पड़ा हुआ है। ऐ जोलाको स्मरण था, कि शैतानोंके घायल होनेपर बर्नार्ड उसे लेकर ऊपर चला गया था और अर्नेस्ट भी उसके पीछे पीछे दौड़ गया था। अब ऐ जोलाको भी ऊपर जानेकी इच्छा हुई और वह धड़धड़ाती हुई छतपर जा चढ़ी।

परन्तु ऊपर जाते ही बर्नार्डकी कोठरीका दरवाजा खुला रहनेके कारण उसे जो दृश्य दिखाई पड़ा, उससे वह चौंक उठी। उसने देखा, कि बेहोश अर्नेस्ट जमीनपर पड़ा हुआ है और बुड्ढा बर्नार्ड उसके

मर्माईंने कहा,—"वास्तवमें सुन्दरी एलीलाकी जितनी प्रशंसा की जाये उतनी ही थोड़ी है। इसकी प्रशंसा करनेके लिये भाषामें शब्द नहीं मिलते। हाय! यदि ईश्वरकी दयासे यह मेरी कन्या होती तो मुझे कितना आनन्द प्राप्त होता।"

अर्नेस्टने कहा,—"यद्यपि यह आपकी कन्या नहीं है, तथापि इससे घनिष्ट परिचय हो जानेके कारण आपको प्रसन्न होना चाहिये।"

इस बार इच्छा न रहनेपर भी एलीलाको अर्नेस्टकी ओर देखना पड़ा। क्योंकि अर्नेस्टके मुंहसे यह कई बार सुन चुकी थी, कि जिन लोगोंने उसकी सेवा की है, उन्हें वह बड़े बड़े पुरस्कार दिया चाहता है। इस घटनाके पहले जब एलीलाने सफेद महलमें अर्नेस्टकी सहायता की थी और दोनों उस महलसे बाहर निकले थे, उस समय भी अर्नेस्टने एलीलासे कहा था, कि वह ड्यूक ऐस्टर्टके दरबारमें उसे उत्तम पद दिला सकता है। और आज आरोग्यता प्राप्त करनेपर भी उसके मुंहसे ऐसी ही बातें निकली थीं।

ये बातें सुनकर एलीलाको कुछ पता न लगता था, कि वास्तवमें यह कौन मनुष्य है, तथा उसकी बातोंके उत्तरमें उसे क्या कहना चाहिये। जो हो, कुछ देर तक वहां सन्नाटा छाया रहा। इसके बाद मनाईंने कहा,—"हमें उचित नहीं, कि सर नाइटको बातोंमें लगा कर अधिक कष्टमें डालें अथवा यहां उपस्थित रहकर उन्हें उत्तेजित करें। चलो, अब उन्हें आराम करने दो।"

परन्तु इसी समय अर्नेस्टने घबड़ाहटसे कहा,—"नहीं नहीं, आप लोग यहांसे न जायें और कृपाकर मेरे दो तीन प्रश्नोंका उत्तर दे दें, जिनके लिये मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है। उत्तर हृदय शान्त हो जायगा और तभी सम्भव है, कि मैं कुछ सकूंगा।"

(बर्नार्ड की ओर देखकर) परन्तु आपने ये बातें मुझसे पहले क्यों न कहीं?"

बर्नार्डने कहा,—"आप सदा नाएटकी सेवामें लगी रहती थी ; उनकी आरोग्यता सम्बन्धी बातोंके अतिरिक्त आपका और कुछ न सोहाता था। इसके अतिरिक्त इस घटनासे आपका कोई सम्बन्ध भी न था, ये ही बातें सोचकर मैंने उस सम्बन्धमें आपसे कोई जिक्र नहीं किया।"

ऐ जीला बोली,—"आपका कहना सत्य है।"

इतना कहकर ऐ जीलाने अपना दाहिना हाथ पहले आँखों और पीछे होठों पर रखा और उदास होकर बैठ रही।

उसकी यह दशा देख अर्नेस्टने कहा,—"प्यारी ऐ जीला! वास्तवमें इस दुःख जनक घटनाको सुनकर तुम्हें बड़ा कष्ट हुआ है।"

ऐ जीलाने कहा,—"ओह! उन बातोंको न पूछिये।"

इतना कहती कहती ऐ जीलाको खयाल हो आया, कि कहीं उसके सु इसे घफेद सिडोसे सम्बन्ध रखनेवाली गुप्त बातें न निकल पड़ें, इसलिये उसे न अर्नेस्टकी बातोंका अधिक उत्तर न दे, बर्नार्डसे कहा,—"अच्छा! आप अपनी बातें कहिए।"

बर्नार्ड बोला,—"बहुत सी बातें थोड़े शब्दोंमें हो कही जा सकती हैं, अस्तु आप सुनिये, रानी एलीजाबेथके दफनके तीसरे ही दिन लिटका अपने दलबलके साथ अलटनमहलपर चढ़ गया।"

अब ऐ जीलासे चुप न रहा गया, वह बोली,—"यह बात तो आपने मुझसे न कही अच्छा फिर क्या हुआ?"

बर्नार्ड बोला,—"आक्रमण अभी तक चल रहा है, परन्तु उसकी रक्षाकी अच्छी तरह की जा रही है, परन्तु बनार्ड... गया है और सुननेमें आता है, कि महलमें के...

ये जीलाने चौंककर कहा,—"मूर्खो मर रहे हैं!"

इतना कहकर ये जीला चुप हो गयी और उसका दमकता हुआ चेहरा फीका पड़ गया; उसके हृदयमें सफेद सिंहोंका अत्यन्त प्रेम था अतः उसीसे उसीको चिन्ता व्यापी और वह फिर घबड़ाहटसे बोल उठी,—"बर्नार्ड! सच बताओ, क्या यह सच्ची खबरें हैं?"

बर्नार्ड बोला—"सच झूठ मैं नहीं जानता, परन्तु समाचार ऐसा ही सुननेमें आया है।"

अर्नेस्टने कहा,—'यह निश्चय है, कि विजय सरदार जिटकाकी ही होगी क्योंकि वह बड़ा बहादुर और नामी योद्धा है।"

बर्नार्ड बोला,—"टैबोराइट-दल सभी स्थानोंमें विजयी होता है। इस दलवाले पूर्व, पश्चिम तथा उत्तरमें राज्य कर रहे हैं यदि इस बार दक्षिणमें भी ये जीत गये तो सारी बोहेमिया उनके अधिकारमें आ जायगी।"

अर्नेस्ट बोला,—"अवश्य।" बर्नार्ड बोला,—"अभी तक तो मैंने बोहेमियाके राजकाजके विषयमें ही कहा है, पर आपकी जन्म-भूमि आस्ट्रियाके बारेमें कुछ भी नहीं कहा।"

अर्नेस्ट उत्कण्ठासे बोला,—"हाँ, वहाँका सब हाल मुझे सुनाइये।"

बर्नार्ड,—"मैं सब समाचार आपको सुनाता हूं। जर्मनीका बादशाह "

अर्नेस्टने कहा,—"आप इतना कहकर ही क्यों रुक गये? शीघ्र बताइये, जर्मनीके बादशाहका क्या हुआ?"

बर्नार्डने कहा,—"नहीं, रुकनेकी कोई आवश्यकता नहीं; मैं आपसे अब कुछ न छिपाऊँगा।"

अर्नेस्ट बोला,—"शीघ्र बताइये कि जर्मनीके बादशाहके सम्बन्धमें आपको क्या मालूम हुआ है?"

बर्नार्ड बोला,—"जर्म्मनोंका बादशाह 'सिगमण्ड' अब इस संसारमें नहीं है।"

अर्नेस्ट बड़ी घबड़ाहटसे बोला,—"एँ! जर्म्मनोंका बादशाह मर गया? ओह!!"

बर्नार्ड बोला,—"मुझे ऐसेही समाचार मिले हैं।"

अर्नेस्टने पूछा,—"वहाका और भी कोई समाचार मालूम हुआ है?"

बर्नार्ड बोला,—"सुना है, गद्दी किसी दूसरेको दी गयी है?"

अर्नेस्टने पूछा,—"गद्दी किसे मिली?"

बर्नार्डने कहा,—"सुना है, कि गद्दी एक ऐसे राजकुमारको मिली है, जिसने न तो कभी गद्दी पर बैठनेकी इच्छा ही प्रकट की थी और न उस समय वह वहा उपस्थित ही था।"

अर्नेस्ट बोला,—"क्या उनका नाम भी आपने सुना है?"

बर्नार्डने कहा,—"हा, सुना है, उनका नाम 'प्रिन्स एलबर्ट ड्यूक आफ आस्ट्रिया है।"

बर्नार्डकी बातें सुन अर्नेस्ट उठकर बैठनेकी चेष्टा करने लगा; परन्तु किसी तरह भी उठ न सका और उसका सारा पलंग हिल गया।"

इसके बाद अर्नेस्ट फिर बेहोश हो गया और ऐञ्जीला घबड़ाहटसे उसके नाक तथा मुहमें दवा छोड़ने लगी।

बिचारा बर्नार्ड भी अपनी बातों पर पश्चाताप करने लगा, परन्तु अब कोई उपाय न था। अस्तु, बर्नार्डने उठकर उसे एक ऐसी दवा पिलाई, जिससे उसे नींद आ गयी।



सत्तासीवां परिच्छेद ।

विदा ।

बारह बजे रातिके समय अर्नेस्टको आँखें खुलीं, इस समय भी कमरेमें चिराग जल रहा था और विचारी ऐजोला उसके पलंगके नीचे बैठी हुई थी।

ऐजोलाने अर्नेस्टके लिये एक बलदायक शोरवा तय्यार किया था और इसी आशामें बैठी थी, कि आँखें खुलें तो उसे पिला दे।

अर्नेस्ट ऐजोलाको इतनी कृपा और गाढ़ी प्रीति देख, मुग्ध होकर कहने लगा,—"ऐ बहिन ऐजोला, क्योंकि अब मैं तुझे बहिन कहकर ही पुकारूंगा, कृपाकर यह बताओ कि सचमुच 'प्रिन्स अरनेस्ट ड्यूक आफ अल्गुरिया ही राज्य पर बैठा है अथवा मैं स्वप्न देख रहा हूं ।"

ऐजोला बोली,—"हां, डाक्टरकी बातोंसे तो ऐसा ही मालूम होता है, परन्तु आप कृपाकर ऐसी ऐसी चिन्ताजनक बातोंमें न उलझिये, क्योंकि इससे हानिकी सम्भावना है।"

अर्नेस्ट बोला,—"मेरी दयालु ऐजोला! मैं भी तुम्हारे आदेशानुसार ही चलना चाहता हूं। इसी लिये मेरी इच्छा है, कि अपने एक नौकरको वायना भेजूं। अभी कितने बजे हैं।"

ऐजोला बोला,—"बारह बजे हैं। मैं शीघ्र बर्नार्डको जाकर जगाती हूं। वह आपके नौकरोंमेंसे किसी एकको अवश्य वायना भेज देगा।'

अर्नेस्ट बोला,—"नहीं नहीं, इस कामको अब सबेरेके लिये रख दो। मैं बेचैनी सहना इससे उत्तम समझता हूं, कि तुम्हें इस अन्धकारमें बाहर भेजूं।"

ऐंजीला बोली,—"क्या केवल इसी कारणसे आप इस कामकं सवेरेके लिये रख छोड़ना चाहते हैं?"

ऐंजीलाके इस कथनका बड़ा प्रभाव पड़ा और सर अर्नेस्ट समझ गया, कि ऐंजीला उसे हृदयसे प्यार करती है।

अब ऐंजीला अर्नेस्टके लाख मना करने पर भी उस कमरेसे बाहर चली गयी और थोड़ीही देर बाद एक नौकर अर्नेस्टके कमरेमें आ पहुंचा। लगभग बीस मिनिट तक मालिक नौकरमें बातें होतीं रहीं, इसके बाद वह नौकर अस्तबलमें चला गया और अपने तेज घोड़े पर सवार हो, वायनाकी ओर रवाना हो गया।

नौकरको घरसे निकलते देख, ऐंजीला फिर अर्नेस्टके पास आई परन्तु इस समय अर्नेस्ट सो रहा था। अत वह भी अर्नेस्टके पलंगसे कुछ दूरी पर एक कोनेमें लेट रही और आराम करने लगी।

दूसरे दिन सवेरे ही ऐंजीलाने फिर बलकारक ओषधा बनाकर सर अर्नेस्टको पिलाया और फिर अर्नेस्टके पास बैठकर बातें करने लगी।

अर्नेस्टने कहा,—"प्रिय ऐंजीला! कल वर्नार्डके मुंहसे सुलटन-महलकी बातें सुनकर तुम्हारा दिल कुछ घबड़ा गया था। ऐसा क्यों हुआ? यदि इसमें तुम्हारा कोई गुप्त भेद न हो तो कृपाकर कारण बताओ और यह अच्छी तरह जान रखो, कि मैं तुम्हारा गुप्त भेद नहीं जानना चाहता।"

ऐंजीला बोली,—"इसके लिये आपको धन्यवाद है, परन्तु आप कृपाकर यह तो बताइये, कि यहांसे टेबोराइट-दलमें घुसकर सुलटन-महलमें जानेका कोई उपाय है?"

—अर्नेस्ट बोला,—"मालूम होता है, वहां तुम्हारा कोई ऐसा सुहृद है, जिसकी सहायता करना तुम्हें अत्यन्त आवश्यक है।"

ऐंजीलाने कहा,—"हां ऐसीही बात है।"

अर्नेस्टने कहा,—"यह काम बड़ा कठिन है। कोई कितना ही बहादुर क्यों न हो, उसके लिये यह काम सहज साध्य नहीं है।"

ऐजोला बोली,—"इसी लिये मैं आपसे पूछ रही हूं, क्योंकि आप बहुत सी लड़ाइयां देख चुके हैं। यदि कोई उपाय हो तो बताइये।"

अर्नेस्ट बोला,—"उपाय कोई न कोई निकल ही आयेगा, परन्तु कृपाकर यह तो बताओ, कि वह कौनसा भाग्यवान पुरुष है, ? जिसको तुम्हें इतनी चिन्ता लग रही है।"

ऐजोला बोली,—"मैं जिसके लिये इतनी चिन्तित हूं, वह एक कैदी ही है। मैं समझती हूं, कि अब भी वह उसी महलमें है। आशा है, इसके अतिरिक्त आप और कुछ न पूछेंगे।"

अर्नेस्ट बोला,—"नहीं, अब कुछ पूछनेकी मुझे आवश्यकता नहीं है; परन्तु मैं चाहता हूं, कि स्वयं तुम्हारे साथ चलकर तुम्हारी कुछ सहायता करूं।"

ऐजोलाने कहा,—"यदि आप अच्छे रहते तो अवश्य ही मेरी सहायता करते। यह आपकी कृपाका ही फल है, कि कई बार मेरी रक्षा हुई और अभी तक आप को पिताके लिये जीवित रह सकी; परन्तु यह समय ऐसा नहीं है, कि मैं आपको सहायता करनेके लिये अनुरोध कर सकूं।"

अर्नेस्टने बड़े प्रेमसे कहा,—"प्यारी ऐजोला! मुझमें ऐसी सामर्थ्य नहीं कि तुम्हारे एहसानोंका बदला चुका सकूं।"

ऐजोलाने बड़ी नम्रतासे कहा,—"इन बातोंकी अभी कोई आवश्यकता नहीं है, मैं आपसे प्रार्थना करती हूं, कि ऐसी ऐसी चिन्ताओंसे अपना चित्त न दुखाइये। और यदि कोई ऐसा उपाय मालूम हो, जिससे मैं टेवोराइट दुर्गके भीतरी पत्थन-महलमें जा सकूं, तो कृपाकर बता दीजिये।"

अर्नेस्टने अपने हाथसे जिटकाकी दी हुई अंगूठी निकाल कर उसे देते हुए कहा,—"यह अंगूठी मुझे स्वयं सरदार-जिटकाने दी थी। इसका गुण तुम्हें स्वयं मालूम हो जायगा और अब तुम अनायास ही असटन-मण्डलमें पहुंच जाओगी।"

अर्नेस्टके हाथसे अंगूठी लेती हुई ऐ जीला बोली,—"यद्यपि आप कह रहे हैं, कि इस अंगूठीका गुण मुझे पीछे मालूम हो जायगा ; परन्तु मुझे यह जाननेकी प्रबल इच्छा है, कि इस अंगूठीमें क्या गुण नहीं हैं। आप कृपाकर इस अंगूठीके सब भेद मुझे बता दीजिये।"

अर्नेस्टने कहा,—"इसमें सबसे बड़ा गुण यह है, कि चाहे कितना ही सघन टेबोराइट दल क्यों न हो, और कितनी ही रोक टोकका स्थान क्यों न हो, जिसके हाथमें यह अंगूठी रहेगी, वह अनायास ही सब स्थानोंमें पहुंच सकेगा।"

अंगूठीका गुण सुन ऐ जीला प्रसन्न होती हुई बोली,—"यह आपकी दया है, जो आपने मुझे इतनी बड़ी सहायता पहुंचायी है।"

अर्नेस्टने कहा,—"इसमें कृपाकी कोई बात नहीं है। परन्तु यह निश्चित है, कि इस अंगूठीके बिना अपना काम कर लेना तुम्हारे लिये असम्भव था। अब तुम्हारा मनोरथ सिद्ध हो जायगा।"

ऐ जीलाने अर्नेस्टको धन्यवाद देते हुए कहा,—"मैं आपकी अत्यन्त अनुगृहीत हूं। मैं जो चाहती थी, वह आपकी कृपासे अनायास ही प्राप्त हो गया।"

इतना कह ऐ जीला विदा होनेके लिये उठ खड़ी हुई। इस समय उसके हृदयमें मानो भयानक कष्ट हो रहा था,-उसकी आंखें डबडबा । और कलेजा जोर जोरसे धड़कने लगा था।

उसके हृदयका यह भाव समझकर कहा,—"ऐ जीला ! सचमुच ही मुझे इस दशामें छोड़कर चली जाओगी?"

ऐ जौला कुण्ठित स्वरमें बोली,—"लाचार हूं। यद्यपि आपको इस दशामें छोड़ जाना अत्यन्त अनुचित मालूम होता है और इसी लिये मैं अभी तक जा भी नहीं सकी, तथापि अब देखती हूं, कि बिना गये काम न चलेगा। आप अब आरोग्य होरहे हैं और एक सप्ताह बाद यहांसे रवाना होनेके लायक भी जायंगे, जबतक आप यहां रहेंगे तबतक दयालु अर्माड आपकी रक्षा करेगा। इससे आपको किसी प्रकार का कष्ट भी न होगा। यही बातें सोच मैंने निश्चय किया है, कि अपनी उस, सहृदकी भी सहायता मुझे भी अत्यन्त आवश्यक है इसी लिये आज मैं आपसे प्रार्थना करती हुई विदा होना चाहती हूं।"

अर्नेस्टने कहा,—"यदि तुम दयाकर कुछ दिन और ठहर जाओ तो क्या तुम्हारी किसी प्रकारकी हानि होनेकी सम्भावना है।"

ऐ जौलाने कहा,—"हां, अवश्य है। सम्भव है, कि उस सफेद स्त्री-का फिर दर्शन ही न मिले।"

अर्नेस्टने कहा,—"इसका क्या कारण?"

अब ऐ जौला आश्चर्यसे अर्नेस्ट की ओर देखती हुई बोली,—"मालूम होता है, आप सब बातें समझ बूझकर मुझसे दिल्लगी कर रहे हैं, शायद

अर्नेस्टने अप्रतिभ होकर कहा,—"नहीं नहीं, मैं दिल्लगी नहीं करता। तुम क्या विश्वास करती हो, कि मैं तुमसे दिल्लगी करूंगा?"

ऐ जौला,—"फिर यह रोगके आक्रमणका कारण है, जो आप ऐसा सवाल कर रहे हैं।"

अर्नेस्टने कहा,—"हां, यह सम्भव है। परन्तु अब साफ साफ बताओ, कि इनके जीवनमें तुम संशय क्यों कर रही हो।"

ऐ जौला बोली,—"इसका कारण स्पष्ट ही है। सरदार भिटकाने अरटन-महलपर आक्रमण किया है, रसदखाना जला दिया गया है।

और सुनती हू, महलके रहने वाले भूखों मर रहे हैं, फिर वह सफेद स्त्री किस तरह जीवित रह सकेगी।"

अर्नेस्टने सकुचाकर कहा,—"तुम ठीक कहती हो, ऐंजीला ! बर्नार्डने ऐसा ही समाचार सुनाया था।"

ऐंजीला बोली,—"अच्छा, अब मुझे क्या आज्ञा होती है ?"

अर्नेस्टने उदास होकर कहा,—"अब तुम मुझसे क्या कहलवाया चाहती हो ? मेरे हृदयका कोई भाव तुमसे छिपा नहीं है। अत तुम जो उचित समझो, कर सकती हो।"

अर्नेस्टकी बाते सुन ऐंजीलाको रोमाञ्च हो आया। उसका गला भर्रा उठा और वह अपना चेहरा पीछेकी ओर फेर कुछ सोचने लगी।

ऐंजीला सोचने लगी, कि क्या अर्नेस्ट सचमुच ही उसे हृदयसे प्यार करता है। परन्तु साथ ही वह अभी तक यह भी न भूली थी, कि आयमासे भी उसकी गहरी प्रीति थी और वह उसके प्रेममें मतवाला मालूम होता था। जो कुछ हो अर्नेस्टके प्रति उसने अपना कर्त्तव्य पालन किया है और अब उसे एक दूसरा काम पूरा करना अत्यन्त आवश्यक है।

कुछ देर बाद ऐंजीलाने अपना हृदयवेग रोककर अर्नेस्टकी ओर मुंह फेरा, मानो वह बिदा होनेके लिये तय्यार हो गयी।

अर्नेस्टने उसका चेहरा उदास देखकर कहा,—"ऐंजीला ! तुम घबड़ाओ नहीं ! तुम अब प्रसन्नतासे जा सकती हो।"

ऐंजीलाने बड़े ही कातर शब्दोंमें कहा,—"इससे आपके हृदयमें किसी प्रकारका कष्ट तो न होगा ?"

अर्नेस्टने कहा,—"कष्ट तो अवश्य ही होगा, परन्तु.... "

ऐंजीला,—"परन्तु क्या ? आप चुप क्यों हो गये ?"

[illegible],—"अब उन बातोंको प्रकट कर लाभ ही क्या है।"

ऐञ्जीला बोली—"नहीं, आप किसी प्रकारका संकोच न करें, यदि आपके मनमें दुःख हुआ तो मेरा सब परिश्रम वृथा हो जायगा; क्योंकि मैं आपके हृदयको प्रसन्न रखना अपना कर्त्तव्य समझती हूं और अपना कर्त्तव्य समझकर ही मैंने आपकी इतनी सेवा की है। यद्यपि आपका रोग अब घट गया है, तथापि आप अभी पूरी तरहसे आराम नहीं हुए हैं। इसलिये आप विशेष चिन्ता या परिश्रम करेंगे तो आपका रोग फिर बढ़ जायगा और मेरा इतने दिनोंका किया कराया वृथा हो जायगा।"

अर्नेष्टने कहा,—"हां, तुम्हारा यह कथन सत्य है; परन्तु क्या करूं, जी नहीं मानता। ऐञ्जीला तू नहीं समझती कि मैं तुझे कितने प्रेम और आदरकी दृष्टिसे देखता हूं।"

ऐञ्जीलाने कहा,—"इसका बाध्य होनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। जिसको जितनी शक्ति रहती है, और जो जिस कामको अपना कर्त्तव्य समझता है, वह उसे पूरा करता है। आपने भी कई बार मेरी जान बचाई है और इस समय भी मेरी सहायता की है, फिर इसमें बाध्य होनेकी आवश्यकता ही क्या है?"

अर्नेष्टने कहा,—"जो कुछ हो, तुझे हानि पहुंचाकर अपने स्वार्थके लिये मैं तुझे नहीं रोका चाहता।"

ऐञ्जीला बोली,—"मैं भी आपके पास अभी और कुछ दिन रहती; परन्तु अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी मुझे भी आवश्यक मालूम होती है और इसी लिये आपसे बिदा होना चाहती हूं।"

अर्नेष्टने कहा,—"ऐञ्जीला! अच्छा जाओ; परन्तु मुझे आशा है, कि फिर तुझे देखनेका अवसर मिलेगा।"

ऐञ्जीला समझ गयी, कि अर्नेष्टके इस कथनका सिवा और कुछ नहीं हो सकता, कि वह उसे

जाया चाहता है; क्योंकि एक बार पहले भी जब वह जंगी पोशाकमें उससे मिली थी, तब अर्नेस्टने उसे उच्च पद देनेका जिक्र किया था।

ऐ जीला,—"यद्यपि ईश्वरकी इच्छासे सब काम हो सकते हैं; परन्तु अब आपका दर्शन मिलना किस तरह सम्भव है?"

अर्नेस्टने कहा,—"ईश्वरकी इच्छाके साथ ही साथ उद्योग करनेसे भी बहुतसे काम हो सकते हैं।"

ऐ जीला बोली,—"इसका क्या मतलब है?"

अर्नेस्टने हंसते हुए कहा,—"तो क्या मेरा तुम्हारा सम्बन्ध यहीं तक अन्त हो गया?"

अर्नेस्ट की यह बात सुन ऐ जीलाको अपना अनुमान और भी निश्चित मालूम होने लगा और वह बोली,—"क्या आप मुझे अपने साथ वायना ले जाया चाहते हैं?"

अर्नेस्टने कहा,—"क्यों? इसमें हर्ज ही क्या है?"

ऐ'जीला मुसकराती हुई बोली,—"नहीं नहीं', क्षमा कीजिये, मुझे महल अटारियों की अपेक्षा अपना जंगली मकान ही अच्छा मालूम होता है।"

यद्यपि ऐ जीलाका यह उत्तर सुन अर्नेस्टके हृदयमें दुःख हुआ, तथापि वह समझ गया, कि मायशासे घनिष्ट सम्बन्ध रहनेके कारण ही ऐ जीलाने ऐसा उत्तर दिया है। जो हो, अर्नेस्टके हृदयमें दृढ़ विश्वास था, कि ऐ जीलासे उसकी फिर भेंट होगी। यह विचारकर उसने उससे उसके जंगली मकानमें मिलनेकी प्रतिज्ञा ही कर डाली।

कुछ घंटा बाद ऐ जीला अर्नेस्टको धन्यवाद दे चलनेको तय्यार हो गयी, यह देख अर्नेस्टने जोरसे उसका हाथ पकड़ लिया और कुछ तक दबाये रहा।

ऐ जीला भी थोड़ी देरके लिये मुग्ध हो गई; परन्तु तुरत ही उसे

अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेका ध्यान हो आया और आयशाकी ओर धर्मिष्ठाका अनुराग भी स्मरण आ गया। अतः वह तेजीसे अपना हाथ छुड़ा वहाँसे बाहर निकल आयी और अपने घोड़े पर सवार हो अष्टन महलकी ओर रवाना हो गयी।

अड़तालीसवां परिच्छेद।

अष्टन महलपर आक्रमण असमाप्त।

हा! इधर कई दिनोंसे अष्टन-महलमें अकालने अपना भयानक प्रभाव जमा रखा था।

लगभग पाँच दिनों तक आक्रमण बराबर जारी रहा और इतने दिनोंमें अष्टन-महलमें अन्नके बिना हाहाकार मच गया; क्योंकि पहले ही कहा जा चुका है, कि टैबोराइट लोगोंने रसदखाना जलाकर खाक कर दिया था।

सरदार जिटकाकी इस बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता और चतुरतासे राजकीय दल,वालोंको बड़ा भारी धक्का पहुँचा था; परन्तु अन्नके बिना जान बचनी कठिन हो रही है, यह कष्ट उन्होंने बड़ी सावधानतासे छिपा रखा।

अब अष्टनका ड्यूक, फादर सोप्रियन तथा लार्ड रोडल्फ सभी मिलकर इस युद्धमें,विजय पानेका उद्योग करने लगे। उन लोगोंका यह अनुमान सत्य था, कि टैबोराइट-दलवालोंको यदि जरा भी सन्देह हो गया, कि अन्नके बिना महलके अधिवासियोंको बड़ा कष्ट हो रहा है, तो वे कदापि हटनेका नाम न लेंगे, क्योंकि उन्हें विश्वास हो जायगा, कि कुछ दिनोंतक महलके और भी घेर रखनेसे राजदल भूखों मर जायगे। परन्तु इसके विपरीत यदि टैबोर दलको

प्रवास दिलाया जाय, कि रसदखाना जल जाने पर भी महल वालोंको कोई विशेष हानि न हुई और न उन्हें किसी प्रकारका कष्टही पहुंचा बल्कि वे अभी तक उसी प्रकारसे महलकी रक्षा करनेके लिये तय्यार है, तो वास्तवमें टेवोराइट-दल अपने दलका तोप, गोला आदि यथेष्ट सामान व्यय करेगा, जिसका फल यह होगा, कि उनका समान घट जायगा और सामान घट जानेके कारण उन्हें महलका घेरा छोड़ पीछे हट जाना पड़ेगा।

वास्तवमें महल वालोंकी यह नीति सराहनीय थी, क्योंकि यदि ऐसा न किया जाता तो जिटका वृथा ही अपना धन बल और जन बल क्यों नष्ट करता।

यद्यपि जिटकाको धोखेमें डालनेके लिये बल्टन-महल वालोंने यह कार्रवाई कर रखी थी, परन्तु वास्तवमें उन लोगोंकी बड़ी खराब दशा हो रही थी और भूखने भयकर रूपसे उन लोगोंका शिकार करना आरम्भ कर दिया था।

जो हो, यह गुप्त भेद बहुत दिनों तक छिपा न रह सका। एक बार भयकर लड़ाई हुई और उसमें जिटकाके दल वालोंने राजकीय दलवालोंके कुछ मनुष्य कैदकर लिये, बस उन्हें थोड़ा कष्ट देतेही सब भेद खुल गया। यद्यपि दीवालकी लड़ाईमें गोलोंकी भयकर चोटके कारण टेवोराइट-दल वालोंको पीछे हटना पड़ा; परन्तु कैदियोंके कथनसे उन्हें यह विश्वास हो गया, कि अकालने महलमें घुसकर उन लोगोंकी अत्यन्तसहायता पहुंचायी है।

जो हो, जिस दिनसे रसद खाना जला, उसी दिनसे सेना तथा अधिवासियोंके भोजनमें कमी होने लगी और यह कमी धीरे धीरे कमूसी पहुंच गयी तथा अन्तमें अफसरोंको अपने सिपाहियोंसे साफ कह देना पड़ा, कि महलमें रसदकी कमी हो गयी है।

पहले तो उन लोगोंने यह बात इसलिये इनी अनसुनी करदी ; कि अब ब्रोमहो महलका फाटक खोल सम्मुख युद्धमें उतरना पड़ेगा तथा इस युद्धका फैसला भी जल्द ही हो जायगा क्योंकि विलम्ब होनेसे सामग्री दिनपर दिन घटती ही जाती थी और अन्तमें उन्हें भूखोंमर कर मृत्युके मुखमें जाना ही पड़ता ; परन्तु जब उन्हें एक दिन यह समाचार मिला, कि अब भोजनागारमें एक दाना भी अन्न नहीं है तथा सम्मुख युद्ध भी न होगा, तब तो वे सब घबड़ा उठे।

यह बात सुनतेही सिपाहियोंमें निराशाकी घटा छा गयी और लोग व्याकुल हो भेड़ तथा बैलोंको मार मारकर अपना उदर भरने लगे। महलमें जहां कहीं थे जानवर दिखायी देते वहीं सिपाही उन्हें मारकर खा जाते थे। अब सिपाही अपने अफसरोंको इतनी कड़ी दृष्टिसे देखने लगे, मानो वे ही उनके शत्रु हों। इस समय सिपाहियोंने एक और भी चाल चली, अर्थात् अफसरोंके सामने घोड़ोंको मारनेका विचार प्रकट न किया। नहीं तो अफसर लोग घोड़ोंको भगा देते या अपनी जान बचानेके लिये उन्हें छिपा रखते। जो हो, अब सिपाहियोंने छिपे छिपे घोड़ोंको भी साफ करना आरम्भ किया और कुछ ही दिनोंमें अस्तबल घोड़ोंसे शून्य हो गया। इसके बाद कुत्तोंकी बारी आयी और तीन चार दिनोंमें महलके सब कुत्ते भी सिपाहियोंके पेटमें घुसे

परन्तु अब बड़ी ही भयानक दशा आ पहुंची, महलमें कुत्तोंका तो क्या किसी जानवरका नाम निशान तक न रह गया, किसीकी उदर ज्वाला बन्द न हुई। अब सिपाही हताश हो दल बांधकर महलमें घा..... सामने एकत्र हुए और हाथ जोड़ उनसे इस तरह प्रार्थना करने लगे —

"ऐ मेरे प्रभु ! अब हम लोगोंके लिये विलम्ब करनेका समय नहीं। भूखके मारे हम लोगोंके प्राण निकलना चाहते हैं,

कुत्ते टूट पड़ते हैं। यदि महलके किसी भागमें भोजनका सामान रहनेका उन्हें सन्देह भी हो जाता था तो वे जी-जान छोड़कर उस ओर दौड़ पड़ते थे वे नौकर जो कुछ दिन पहले अपने मालिकोंके भयसे थर थर कांपा करते थे और सदा भक्ति भावसे उनकी सेवा किया करते थे, आज वही उनके मुखसे ग्रास छीननेके लिये तय्यार थे। अब ऊंचे नीचे दर्जेका कुछ भी विचार न रह गया था। भले भले तथा ऊंचे घरोंकी स्त्रियां नीच औरतों तथा मजदूरिनोंसे खाना छीनती झगड़ती तथा हाथापाई करती थीं। बहुत सी सुन्दर सुन्दर स्त्रियां तथा नवयुवतियां भूखकी ज्वालाका प्रभाव न पड़नेके लिये बेहद शराब पी जाती थीं और नशेकी झोंकमें नीच पुरुषोंको आत्म समर्पण कर देती थी और वे बदमाश उन अबलाओं पर मनमाना अत्याचार करते थे।

इस तरह महलकी भीतरी दशा अत्यन्त शोचनीय हो गयी थी, कोई भी सिपाही किसी अफसरकी आज्ञा नहीं मानता था, सैनिक नियम सब टूट गये थे और किसीको किसीकी पर्वाह न थी। अभी तक महलके बचे रहने का एकमात्र कारण यही था, कि फादर सीमियन सिपाहियोंको झूठी झूठी रिपोर्टें सुना उन लोगोंका हृदय न टूटने देता था।

परन्तु अन्तमें एक विचित्र किम्वदन्ती किले में फैलगयी जिसको सुनते ही सबके सब कलेजा थामकर बैठ गये और एक दूसरेका मुंह इस तरह देखने लगे मानो किसीको कुछ होश-हवास ही नहीं है।

ओह! - वास्तवमें यह किम्वदन्ती नहीं, बल्कि एक सच्चा समाचार था और सचमुच ही मनुष्य मनुष्यको खाने लगे थे। सबल निर्बलको मार उसका-मांस भूंजकर खा जाता था। कितने ही स्थानोंपर छोटे छोटे बच्चोंकी हड्डियां पड़ी हुई मिली थीं तथा कितने ही मस्तक

इधरसे उधर भेजी जाती थीं। यद्यपि बदमाश लोग इन इश्तहारोंका पता लगा लगाकर उन्हें जला देते थे, परन्तु यथार्थमें किसीकी हिम्मत न पड़ती थी, कि किसीको सज़ा दे।

क्योंकि सब लोग कानपुर लेनेके लिये तय्यार हो गये थे और उनमें एक प्रकारका जोश आ गया था, जिससे उनको दण्ड देनेकी किसीकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। यही दशा इस समय बल्टन महल की होरही थी। जब बहुतसे मनुष्य भूखसे पीड़ित हो, लोगोंको खानेके लिये तय्यार होगये और सब प्रकारके नियम भंग होगये, ऐसी अवस्थामें इस नर भक्षणको रोक देना कोई साधारण काम न था और न किसीकी हिम्मत ही पड़ती थी, कि यह नर भक्षण बन्द कर सके।

अब आक्रमण आरम्भ हुए पांच सप्ताह बीत चुके थे और छठा सप्ताह आरम्भ हो गया था। सर अर्नेस्टको बीमार पड़े भी छः दिन हो गये थे। यही समय था, कि हेलीना सर अर्नेस्टसे विदा हो, बल्टन महलकी ओर रवाना हुई थी।

अभी तक सरदार-जिटकाको बल्टन महलकी यथार्थ अवस्थाका समाचार न मिला था; परन्तु अब धीरे धीरे कैदियोंके द्वारा महलके सब समाचार उसे मिलने लगे, उसे यह भी मालूम हो गया, कि अब महलमें मनुष्य-भक्षण आरम्भ हो गया है। यह सब समाचार सुनकर उसने प्रतिज्ञा की, कि महलपर अधिकार जमाये बिना वह अब आराम न करेगा।

बल्टन-महल वालोंने भी भूखसे तंग आकर निश्चय कर लिया कि अब अन्तिम समय आ गया है और अब फैसला ही हो जाना चाहिये। या तो अब टेरोरिस्ट दल वालोंको कुचलकर यहांसे भगा देना चाहिये अथवा स्वयं हारकर विविध कष्टोंको झेलना चाहिये।

टेरोरिस्ट दल वाले भी इतने दिनों तक लड़ते लड़ते व्याकुल

गये थे और उन लोगोंकी इच्छा भी कुछ शीघ्र युद्ध समाप्त कर देनेकी थी। अत दूसरे ही दिवससे दोनो दलोंमें भयानक युद्ध आरम्भ हो गया।

नवासीवां परिच्छेद।

भयानक युद्ध।

आकाश स्वच्छ रहनेके कारण सूर्य्य देव अपनी अनन्तकिरणोंके साथ चमककर आंखे खोल युद्धका दृश्य देखनेके लिये तय्यार हो रहे थे। टेवीर पर्व्वतके योद्धागण अल्टन-महलको चारों ओरसे घेरनेके लिये तय्यार हो रहे थे और पूर्वको ओरसे सूर्यदेव को जो किरणे तालाव तथा महलको छतोंपर पड रही थीं तथा जिनको चमकसे ढाल, तलवार, वल्लम, बर्छे, सभी चमचमा रहे थे और ऐसा मालूम होता था, मानो बाग बगीचा, महल, अटारी सभी चमकीले शस्त्र बन गये हैं।

टेवीर दल वाले इस तरह दल बांधकर चलते थे, कि उनका रोकना असम्भव मालूम होता था। महल वाले भी भूख प्याससे व्याकुल शेरकी तरह लडनेके लिये तय्यार हो गये थे। एक ओरसे सरदार-फिटका अपनी सेनाके साथ आगे बढ रहा था तो दूसरी ओरसे ड्यूक-अल्टन तथा रोडल्फ उनका स्वागत करनेके लिये अपनी सेनाके साथ तय्यार खड़े थे। बहुतसे टेवीराइट दल वाले जंगलसे पेड काट काटकर तालावमें भरने लग गये थे और अन्तमें उस तालावको उन लोगोंने पाट दिया। अब अनायास ही सिपाही महल तक पहुं चने लगे। कुछ बहादुर सिपाहियोंने तैर कर हीमहलको छू लिया और शत्रुओंपर आक्रमण करने लगे। इस तरह सूर्य्योदयके दो घण्टे बाद ही लड़ाई धूमधामसे आरम्भ हो गयी।

एकबार फिर भी टौवासीवर चढ़नेके लिये सीढ़ियां लगायी गयीं और टेयोराइट सिपाही गोवालवर चढ़नेका उद्योग करने लगे; परन्तु इसका फल विपरीत ही हुआ और दोवालोंपर से बरसती हुई गोलियोंके शिकार बन वे धराशीश सिधारने लगे। दोपहर होते होते इस लड़ाईने और भी भयंकर रूप धारण किया क्योंकि मनटन-महलके भूखे सिपाहियोंने फाटक खोल दिया और झुण्डके झुण्ड सिपाही बाहर निकलकर इस तरह टेयोराइट दलपर टूट पड़े और इतनी तेजीसे उन्हें पीछे खदेड़ने लगे, जिस तरह भरवाहे भेड़ोंको खदेड़ा करते हैं।

अपनी सेनाको इस तरह पराजित होते देखकर सरदार जिटका बहुत ही घबड़ा गया, परन्तु उसने अपनी घबड़ाहट किसीपर प्रकट न होने दी ; क्योंकि वह अच्छी तरह समझ गया, कि राजकीय दलवालोंको यह अधिक सफलता प्राप्त हुई है और उनकी हानि बहुत ही भयानक हुई है। जो हो, घबड़ानेपर भी सरदार जिटकाने इसे अन्तिम युद्ध समझ अंत तक लड़नेका ही विचार स्थिर किया।

अन्तमें सरदार जिटकाका अनुमान सत्य निकला ; क्योंकि महलवाले वस्तुतः ही भूख प्याससे तङ्ग हो रहे थे। अब टेयोराइट सिपाहियोंको भागते देख उन्होंने मनटनके ड्यूकसे उनका पीछा करनेके लिये अत्यन्त हठ किया।

मनटनका ड्यूक यद्यपि अच्छी तरह जानता था, कि इसका परिणाम भयानक होगा, तथापि सिपाहियोंका इतना हठ देख, उसे आज्ञा देनी ही पड़ी और राजदलके अधिकांश सिपाही शत्रुओंके पीछे धावा करने लगे, क्षणभरमें ही समस्त सड़कें सिपाहियोंकी भीड़से भर गयीं तथा पैदल सिपाहियोंके पैरोंकी धाप, घोड़ोंकी टापोंकी धूलसे गगनमण्डल इस तरह भर गया मानो घनघोर घटा छा गयी हो।

सरदार-जिटकाने देखा, कि उसकी सेना चारों ओर-तितर-बितर हो गयी है, अतः उसने तुरत ही अपने चुने हुए बारह पैर्नोंको अपने भागते हुए सिपाहियोंको रोकनेके लिये भेजा। उन्हें यह भी कह दिया, कि उन्हें समझा दें, कि सरदार लड़नेसे पीछे नहीं हटते।

जिटकाकी इस चालने बड़ा काम किया। उन पैर्नोंके मुंहसे अपने सरदारकी इच्छा सुन, भागते हुए सिपाही जमकर खड़े हो गये और दूसरे ही क्षण पीछा करनेवालोंको खदेड़ते हुए, अस्टन-महलकी ओर बढ़ने लगे।

अब लड़ाई अस्टन-महलकी चहारदीवारीके बाहर होने लगी। धूल उड़ उड़कर आकाश मेघाच्छन्न सा हो गया और तोप तथा बन्दूकोंकी आवाज बिजलीकी कड़क सी मालूम होने लगी। ओह! सचमुच ही यह युद्ध बड़ा भयानक था।

लड़ाईके मैदानमें, जिस ओर सरदार जिटका जाता था, उसी ओर घमासान युद्ध होने लगता था; क्योंकि सरदारको देखते ही बहादुर टैबोरके हृदयमें एक प्रकारका जोश उत्पन्न हो जाता था। यह देख जेनरल जिटकाकी हिम्मत और भी बढ़ती जाती थी और उसके उस प्रचण्ड उत्साहके सामने किसीको खड़े रहनेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। वह जिधर जाता उसी ओर मानो प्रलय मच जाता था और उसकीलम्बी तथा न रुकनेवाली तलवार सामने पड़नेवालोंका सर धड़से अलग किये बिना न रहती थी तथा उस जगह पर लाशोंका ढेर लग जाता था।

देखते देखते दोनों दलोंके सरदारोंमें मुठभेड़ हो गयी और ड्यूक-अस्टनने बड़ी बहादुरीसे जिटकाको अपनी तलवारका शिकार बनाना चाहा पर बहादुर सरदार-जिटकाने उसका वार बचाकर बड़े वेगसे उसपर आक्रमण किया। दोनों सरदारोंकी तलवारें आपसमें गुथ गयीं। यह मौका रोडल्फको अच्छा मिल गया और उसने

जिटकापर दाहिनी ओरसे आक्रमण किया। लड़ाईके फनमें चतुर उस्ताद और बहादुर होनेके कारण जिटकाने रोजनबर्गका वार बड़ी तरह बचा लिया और अपनी तलवार इस जोरसे उसकी तलवारपर मारी, कि रोजनबर्गके हाथकी तलवार छूटकर जमीनपर गिर पड़ी।

जब ड्यूक अल्टनने देखा, कि उसका पुत्र नि:शस्त्र हो गया है और सम्भव है, कि वह शीघ्र ही जिटकाकी तलवारका शिकार बने, अत उसने एक क्षण भी विलम्ब न कर जिटकाके घोड़ेकी पीठमें अपना बर्छा घुसेड़ देना चाहा; परन्तु जिटकाका घोड़ा बर्छेकी चोट खाकर भी मरा न सका और इसके विपरीत जिटकाकी तलवारने अल्टनके ड्यूकको घोड़ेसे नीचे गिरा दिया।

दूसरे ही क्षण वह अभागा ड्यूक तथा उसका पुत्र बन्दी कर लिया गया और यह समाचार बिजलीकी तरह सिपाहियोंमें फैल गया, कि राजकीयदलका नेता ड्यूक अल्टन तथा उसका पुत्र कैद कर लिया गया।

यह समाचार सुनते ही राज-दलवाले सिपाही एकदम हतोत्साह हो गये और टैबोराइट दलवालोंका उत्साह दूना बढ़ गया।

इस समाचारके थोड़ी ही देर पहले दोनों सेनाओंके सिपाही अपनी अपनी जान हथेलीपर रखकर लड़ रहे थे, खूनकी धारा बह रही थी, लाशोंका ढेर लग गया था और लगता ही जाता था, कोई भी सिपाही अपनी जानकी पर्वाह नहीं करता था; परन्तु यह समाचार सुनते ही राज-दलवालोंका जोश एकदम ठण्डा पड़ गया, और सबके सब शिथिल हो गये। भूख प्यासके वे पहले ही व्याकुल हो रहे थे, इस समय केवल उत्साहमें आकर लड़ रहे थे। अब इस समाचारके सुनते ही वे मुर्दोंकी तरह थरथराकर जमीनपर बैठ गये और फिर कुछ कर न सके।

राज-दलवालोंका घमण्ड चूर हो गया, राजकीय झण्डा गिरा दिया गया और राज दलवाले हताश हो अपना भविष्य विचारने लगे।

इसके विपरीत प्रजातन्त्र-दलवाले मनुष्योंका हौसला बढ़ता ही गया। भागते हुए शत्रुओंका पीछा करनेसे वे बाज न आये और मूली गाजरकी तरह उन्हें काट काटकर जमीनपर गिराने लगे। कोई सरदार न रहनेके कारण ड्यूक अल्टनकी सेना एकदम निराश हो गयी और जिसे जिस ओर राह मिली वह उसी ओर भाग गया।

यह दृश्य बड़ा ही हृदय विदारक तथा भयङ्कर हो रहा था। जिस तरह किसान अन्न काटकर मैदानमें छोड़ देते हैं, उसी तरह इस युद्ध-क्षेत्रमें चारों तरफ मुर्दों का ढेर दिखाई देता था। सड़कोंपर लाशें पड़ी थीं, बाग बगीचोंमें मुर्दे सड़ रहे थे, तालाबके किनारे मरेहुओंकी संख्या बढ़ी हुई थी, घायलोंके कराहनेकी आवाजसे सुनने-वालोंका हृदय-विदीर्ण हो रहा था, कहीं प्यासके कारण घायल तड़प रहे थे, परन्तु मुंहसे बोलनेकी शक्ति न रहनेके कारण जल मांग नहीं सकते थे, वे केवल मुंह फाड़ फाड़कर अपने इधर उधर देखते और हाथ पैर पटक रहे थे।

तालाबका वह जल जो सदा चमका करता था, आज रक्तके कारण लाल हो रहा था, लाशोंपर चील, कौवे, गिद्ध, बैठ उनका मांस नोच नोचकर खा रहे थे, अधमरे और घायलोंपर जब वे पक्षी अपना अत्याचार करते तो उन्हें भयानक कष्ट होता था और वे अपने हाथ पैर पटक असह्य वेदना प्रकट करते थे।

अल्टनकाड्यूक और रोडल्फ दोनोंही काठके पुतले बने हुए थे। उन्हें किसी प्रकारकी रियायतकी आशा न थी और जान जिटकाकी प्रकृतिको वे अत्यन्त निष्ठुर समझते थे। इन दोनो घमण्डियोंकी इस समय वही दशा हो रही थी, जो विषैले सांपकी जहरमोहरा सुंघने बाद होती है।

दुर्दैव भयानक दर्शनपर दयाहमा हो आहती थे, सन्ध्याका समय हो चुका था, साथ ही भवटन महलभी उजाड़ हो गया था। जो कुछ बचेखुचे सिपाही थे, वे स्वयं मृतकके समान हो रहे थे और हताशपर भी टैलोरदमयन्तीके साथी अपनी जान बचनेकी उन्हें यद्यपि आशा न थी। महल, अटारियां, बाग, बगीचे, सभी श्मशानके समान मालूम हो रहे थे और अंधेरा पड़नेके कारण गीदड़, सियार, भयानक शब्दोंसे चिल्ला रहे थे।

जब सन्ध्या हो गयी तब सरदारने सिपाहियोंको अपने अपने खेमेमें जानेकी आज्ञा दे दी। बहुतसे घोड़े जिनके मालिक सवार मर गये थे और जो इधर उधर भागे हुए थे, अब निराश होकर मुर्दोंके बीचमें घूमने और अपने सवारको ढूंढनेके लिये लाशोंको सूंघने लगे। परन्तु जब उन्हें मालिक जीवित न मिले, तब पागल होकर इधर उधर दौड़ने लगे, मानो उनके हृदयमें किसी तरह शान्ति ही नहीं मिलती थी।

हां, इस समय रणभूमिकी बड़ी दशा हो रही थी। बाग तथा मैदानोंके वे पेड़, जो काट डाले गये थे, उनके अतिरिक्त जितने पेड़ थे, वे इस तरह खड़े थे, मानो अपने बन्धु वियोगमें वे भी उदास हो रहे थे। लाशोंके बीच ढाल, तलवार, बर्छे, बल्लम, आदि शस्त्र इधर उधर बिखरे पड़े थे। जङ्गली जानवरोंकी भयानक आवाजें सुन पड़ती थीं और इससे भी बढ़कर अवस्था उस स्थानकी थी, जहांकी जमीन खूनके कारण कीचड़के समान हो रही थी और उसमें सिपाहियोंकी हड्डियां तथा कपड़े लिपटे रहनेके कारण उस स्थानपर पैर रखना कठिन हो रहा था।

पीछे पीछे कितने ही स्थानोंमें तोपके गोलोंके गिरनेके कारण गड्ढे पड़ गये थे और तोपकी गाड़ियोंके भारी पहियोंने नहर सी

रखी थी, जिसमें रक्त भर रहा था और पेडको काटी हुई बडी बडी आखें हाथियोंके समान पडी हुई थी।

ऐसे भयानक दिल दहलानेवाले स्थानपर अस्त होते हुए सूर्यकी किरणे पड़नेके कारण उसका दृश्य और भी भयानक हो रहा था, परन्तु ओह! इन बातोंको, मुर्दों को, टूटे फूटे शस्त्रोंको तथा ऊबड खाबड भूमिको, कुछ भी पर्वाह न कर वनकन्या ऐ'जोला दृढ पदोंसे आगेकी ओर बढती ही चली जाती थी।

नव्वेवां परिच्छेद।

ऐ'जोला और टेबोराइट सिपाही।

हा, यह वही बहादुर स्त्री थी जिसने कुछ देर पहले सर अर्नेस्टसे एक ऐसे दूसरा उपकारका काम करनेके लिये विदाली थी, जिसे उसका उदार हृदय पूरा करनेके लिये बाध्य कर रहा था।

परन्तु ओह! उसके हृदय पर इस समय कैसे कैसे भयानक भाव उदय हो रहे थे। ज्यो ज्यों वह मुर्दों की बीचसे आगे बढती जाती थी, त्यों त्यो उसके हृदयमें भयानकसे भयानक भाव उत्पन्न होते जाते थे अन्तमें और एक ऐसा भाव उसके हृदयमें उत्पन्न हो गया, जिससे उसका सम्पूर्ण शरीर काप उठा, पैर लड़खड़ाने लगे और भयानक दृश्य न दिखाई देनेके लिये उसने अपनी आंखे बन्द कर लीं तथा धीरे धीरे ऐसा भाव उसके हृदयमें उत्पन्न हो गया और वह इतनी कमजोर हो गयी, कि उसे किसी वृक्ष अथवा तोप खींचनेवाली गाडीका सहारा ले खड़े हो जाना पडा।

कुछ देरमें जब उसका चित्त शान्त हुआ, तब वह फिर आगे बढ़ी और तुरत ही एक टेबोराइट सिपाहीसे उसकी चार आंखें हुई।



माधवाने जोरसे उसका माथा मूर्त्तिके भीतर ढकेल दिया।

(पो० मु० बानबेवां परिच्छेद)

Burman Press, Calcutta

इसे देखते ही वह सिपाही बोल उठा,—"तुम कौन हो?"

ऐंजोलाने बड़े ही मीठे स्वरमें उत्तर दिया,—"मैं शत्रु नहीं हूं।" इतना कह ऐंजोलाने अपना वह हाथ आगे बढ़ा दिया, जिसमें वह अर्नेस्टको दी हुई वह अंगूठी पहने हुए थी जो अर्नेस्टको स्वयं जान मिटकाफ़ने दी थी।

उस अंगूठीको देखते ही सिपाही बोला,—"चली जाओ।"

और ऐंजोला उस विचित्र अंगूठीके प्रभावसे मन ही मन प्रसन्न होती हुई, उस रुन्देलमें और भी आगे बढ़ने लगी।

इसी तरह दूसरा, तीसरा, चौथा, पांचवां और छठा सभी सिपाही उस अंगूठीको देखकर सन्तुष्ट होते गये और अब वह बनकन्या ठीक टेवोराइट डकाइतके पास जा पहुंची और उस स्थानको भी तेजीसे पार करती हुई उस चौरके गिरजेके पास पहुंची जो अरटन-महलके दक्षिण भागमें जङ्गलके बीचोबीच बना हुआ था।

वह उस गिरजेमें घुस गयी और यद्यपि ईसामसीहका क्रूस चिह्न टेवोराइट डकैतोंने उठा दिया था, तथापि वह घुटने टेककर प्रार्थना करने लगी और कुछ देर बाद उठकर यह देखने लगी, कि कोई उसे देख तो नहीं रहा है।

उस गिरजेका भीतरी भाग बहुत लम्बा चौड़ा न था और अस्त होते हुए सूर्यकी सुनहरी किरणें पेड़ोंके छिद्रोंसे छन छनकर उसमें आ रही थीं। इसी कारण उसमें वैसा अन्धेरा न था और वह उस पदार्थको अच्छी तरह ढूंढ़ सकती थी, जो उसे आवश्यक था। फिर इस बातकी परीक्षा करनेके लिये कि उसे कोई देख तो नहीं रहा है, वह उस गुप्त दरवाजेको खोजने लगी, जो अरटन महलके तहखानेमें घुसनेकी राह थी।

वह एक पत्थरकी पटिया थी, जिसके उठानेसे तहखानेमें

राह निकल जाती थी। गिरजेकी बदनमें जितने पत्थर जड़े हुए थे, उनमें से ही एक ऐसा पत्थर था, जिसका सङ्केत उस सफेद बुड्ढेने ऐ जीलाको बता दिया था।

परन्तु ऐ जीला उस पत्थरके निशानको भूल गयी थी, कईबार उसने मनमें सोचा, कि उस बुड्ढेने पत्थर पहचाननेके कौन कौनसे निशान बताये थे, परन्तु किसी तरह भी उसे वे निशान याद न आये, अन्तमें वह लाचार हो, उसी स्थानपर गाढ़ चिन्तामें निमग्न हो गयी।

इसी तरह दस मिनिटका समय और बीत गया, ऐ जीलाने बहुत खोज ढूं ढ की, परन्तु किसी प्रकार भी उसे तहखानेमें जानेकी राह न मिली।

अब धीरे धीरे रात्रिका अन्धकार बढ़ता ही गया और उसके लिये उस पत्थरका पहचानना और भी कठिन हो गया, पर उस राहका खोजना उसके लिये बहुत ही आवश्यक था।

अचानक उसके कानोंमें कुछ शब्द सुन पड़े और अब ऐ जीला, जो झुककर पत्थर खोज रही थी, सीधी होकर खड़ी हो गयी और ध्यानसे सुनने लगी, कि वे शब्द किधर से आ रहे हैं?

इसी समय किसीने पूछा,—"कौन पहरेपर है, जिसे छुट्टी देनी होगी और दूसरा कौन सिपाही पहरेपर आयेगा?"

यह शब्द किसी अफसरके मुंहसे निकला हुआ मालूम होता था। वह फिर बोला,—"क्या इस भागमें कोई पहरा नहीं है?"

सिपाहीने उत्तर दिया,—"नहीं।"

अफसरने फिर पूछा,—"क्यों?"

उस सिपाहीने कहा,—"नित्यका यही नियम है, कि इस छोटे गिर्जेके अतिरिक्त इस भागमें और कहीं पहरा नहीं रहता है"।

इसके बाद ही घोड़ों की टापोंके शब्द सुन पड़े और ऐंजीला तुरत ही समझ गयी, कि अपने मातहतोंके साथ कोई टेयोराइट अफसर इधर ही आ रहा है।

अब ऐंजीला डरी और गिर्जेके एक कोनेमें, जहां घोर अन्धकार था, छिपकर खड़ी हो गयी।

परन्तु उन सिपाहियोंमें से एक, जो अभी उस अफसरके साथ आये थे, हाथमें बड़ी मशाल लिये हुए आगे बढ़ा, जिसने गिर्जेका समस्त अन्धकार क्षणभरमें दूर कर दिया। रोशनीसे समूचा गिरजा जगमगा उठा।

भीतर घुसते ही उस मनुष्य की दृष्टि ऐंजीलापर पड़ी और वह घबड़ाहटसे बोल उठा,—"कौन इस गिर्जेमें छिपा है?"

यह बात सुनते ही वह अफसर अपने दस बारह सिपाहियोंके साथ गिर्जेमें घुस आया।

उस सिपाही की बात कानमें पड़ते ही ऐंजीलाने दृढ़तासे कहा,—"न तो मैं इस स्थान को रहने वाली हूं और न टेयोराइट-दलकी दुश्मन।"

इतना कह ऐंजीला उस अफसरके सामने आकर खड़ी हो गयी, साथ ही उसके हाथकी अंगूठी चमक उठी।

उस अंगूठी को देखते ही उस अफसरने कहा,—"अब इस स्त्रीसे कुछ पूछनेकी आवश्यकता नहीं है; क्योंकि इसके हाथ की अंगूठी ही सब प्रश्नोंका उत्तर दे रही है।"

इसी समय एक सिपाही आश्चर्यसे बोल उठा,—"ओह! क्या यह सम्भव है?"

इतना कह वह सिपाही बड़े आश्चर्यसे ऐंजीलाको घूर घूर कर देखने लगा।

तुरत ही ऐंजोलाको स्मरण हो आया, कि इस मनुष्यको उसने कहीं देखा है, परन्तु उसे यह स्मरण नहीं आता था, कि उसने उस सिपाही को किस स्थान पर देखा था।

कुछ देर बाद वह सिपाही फिर बोल उठा,—"ईश्वरकी कसम ! यह वही चेहरा है।"

दूसरा सिपाही बोला,—"नहीं, झूठ न बोलो, इनको तुमने कहाँ देखा होगा ?"

पहला सिपाही,—"ईश्वरकी कसम खाता हूं, फिर भी मुझे झूठा बनाते हो ?"

तीसरा सिपाही,—"अच्छा, बताओ इन्हें कहाँ देखा था ?"

पहला सिपाही,—"ये बातें पीछे होंगी पहले मुझे इनसे कुछ बातें पूछ लेने दो।"

चौथा सिपाही,—"तुम अच्छी तरह पूछ सकते हो, इस कामके लिये तुम्हे कोई न रोकेगा ?"

पहला सिपाही बोला,—"आह ! इस चेहरेको मैं मरने पर भी नहीं भूल सकता, यह वही चेहरा है। परन्तु आश्चर्य यह है, कि यह एक स्त्री है। (ऐंजोलाकी ओर देखकर) ऐ सुन्दरी ! पहले मैंने आपको एक वेशकी शकलमें देखा था, आपने जगी पोशाक भी पहन रखी थी। वास्तवमें आप बड़ी चोखिमाण हैं।"

अब अफसरने अपने सिपाहियोंको ऐंजोलाकी ओर घूर घूर कर देखते हुए देख बहुत ही बुरा माना और डपटकर कहा,—"तुम्हारा क्या मतलब है ; यह स्त्री कौन है ?"

सिपाही,—"आप कहते हैं, कि यह कौन है ?"

अफसर बोला,—"हां मैं यही जानना चाहता हूं।"

सिपाहीने कहा,—"हां, हां, मैं इसे अच्छी तरह पहचानता हूं।"

अफसर चिढ़कर बोला,—"फिर बताते क्यों नहीं, कि यह कौन है?"

सिपाही बोला,—"क्या यह वही जीव नहीं है, जिसने मुझे धोखा दिया था?"

अफसरने पूछा,—"स्पष्ट बताओ, कि कहां और कब धोखा दिया था?"

सिपाहीने पहले की तरह ही कहा; यद्यपि उसके हृदयमें स्वयं सन्देह हो रहा था,—"जब मैं पहरा दे रहा था।"

अफसरको सिपाहीका यह व्यवहार बहुत बुरा मालूम हुआ और उसने रूखी आवाजसे कहा,—"कहां पहरा था?"

सिपाही बोला,—"ब्रैगफ्रंड किलेमें, जहां तीन शरीफ कैद किये गये थे।"

अफसरने अब ध्यानसे ऐंजीला की ओर देखते हुए कहा,—"तो क्या इसने तीन कैदियोंको छुड़ानेका साहस किया?"

सिपाहीने कहा,—"अब मुझे कोई सन्देह नहीं है।

अफसर बोला,—"यह असम्भव बात है।"

सिपाहीने कहा,—"आप भले ही विश्वास न करें; परन्तु मैं कहता हूं, कि असम्भव कुछ भी नहीं है। मैं इस चेहरेको कदापि भूल नहीं सकता।"

इसी समय एक दूसरा सिपाही बोल उठा,—"तुमने कोई नशा तो नहीं खाया है, जो इस तरह बक रहे हो?"

इतनेमें ही तीसरा बोला,—"वास्तवमें बात ऐसी ही है।"

इसी समय चौथा सिपाही कह बैठा,—"नहीं नहीं; इसकी बुद्धि लोप हो गयी है। भला इस दुबली पतली छोकरी क्या कभी इतना

साहस हो सकता है, कि यह प्रेगके किले में घुसकर तीन तीन कैदियोंको छुड़ा दे?"

पांचवां सिपाही,—"यह अवश्य भूलता है।"

दूसरा सिपाही बोला,—"सम्भव है, कि यह भूलता हो और इसी प्रकारका कोई दूसरा चेहरा इसने देखा हो।"

पहला सिपाही,—"तुम लोग इतना हल्ला क्यों मचा रहे हो?"

अब अफसरको ये बातें अच्छी न मालूम हुईं और वह झिड़ककर बोला,—"इसीलिये, कि तुम्हारी ये बातें सबको असम्भव मालूम होती हैं।"

पहला सिपाही,—"यदि ऐसा ही है, तो फिर इस स्त्रीसे ही पूछा जाये।"

दूसरा सिपाही,—"और यदि इनकार कर दे।"

पहला सिपाही,—"मुझे विश्वास है, कि यह कदापि इन्कार न करेगी।"

दूसरा सिपाही,—"यह तुम्हे कैसे विश्वास होता है?"

पहले सिपाही ने कहा,—"इन बातोंसे तुम्हे कोई मतलब नहीं, स्वय सब बाते बता देगी। मुझे विश्वास होता है, और मैं कसम खाकर कह सकता हूं, कि यह एक बार का देखा हुआ चेहरा मुझे कदापि भूल नहीं सकता।"

अफसरने कहा,—"हां, इस चेहरेको देखने पर फिर भूलना असम्भव है।"

इतना कह उस अफसरने ऐञ्जीलाकी ओर देखा तो उसे कुछ घबड़ायी हुई पाया।

अब उस अफसरने ऐञ्जीलासे कहा,—"यदि हम लोगोंका कोई अपराध हो तो आप क्षमा करें। यदि आप यह अंगूठी न दिखाती

तो भी मैं आपकी शुभाभिलाषा करता हुआ कृपाकर यह बताइये, कि मेरे सिपाहियोंने जो कुछ कहा है, क्या वह सत्य है?"

ऐंजीला गर्वसे माथा उठाकर बोली,—"मैं यह कदापि नहीं कह सकती, कि इसका अनुमान असत्य है।"

इतना सुनते ही वह सिपाही बोल उठा,—"मैंने पहले ही कहा था ये।"

अफसर बोला,—"अच्छा, अब वृथा बकवाद न करो और सुनो कि यह सुन्दरी क्या कहती है।"

उस अफसरके मुंहसे इतना निकलते ही ऐंजीलाने कहा,—"अब मुझे कुछ कहना सुनना नहीं है। केवल इतना ही कहना है, कि यदि इस अंगूठीमें कुछ गुण है, तो आप लोग मुझे यहांसे जाने दें।

अफसरने कहा,—"नहीं; सुन्दरी! आप माफ करें, अब ऐसा नहीं हो सकता।"

ऐंजीला कुछ घबड़ाहटसे बोली,—"नहीं होनेका कारण? क्योंकि यह अंगूठी कई बार अपना प्रभाव जमा चुकी है।"

अफसरने कहा,—"और इसलिये इसका प्रभाव अच्छा हो सकता है।"

ऐंजीला बोली,—"फिर आपकी जो इच्छा हो करें।"

अफसर बोला,—"आप माफ करें, यह मेरी इच्छा नहीं, बल्कि सरदार की इच्छा है।"

ऐंजीला—"परन्तु मुझे आपकी बातें सुन आश्चर्य होता है।"

अफसरने कहा,—"इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।"

ऐंजीला,—"आश्चर्य की बात इससे अधिक और क्या हो सकती, कि सरदार फिटकाकी दी हुई अंगूठीका प्रभाव अब नहीं रहा?"

अफसरने कहा,—"कारणवश ऐसा होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है।"

गये थे, तब अर्नेस्ट नामके एक मनुष्यने यही अंगूठी दिखाकर उ
मनुष्यको छुड़ा दिया था।"

दूसरा सिपाही बोला,—"हां, उस समय इस अंगूठीके प्रभाव
कुछ भी उलट फेर न हुआ था।

तीसरा सिपाही बोला,—"सरदारने यह अगूठी देकर उसको भला
की थी; परन्तु उसके बदले इसका बुरी तरह उपयोग किया गया।"

चौथा सिपाही बोला,—"और यही कारण है, कि उसका फल भी
विपरीत हुआ।"

पहला सिपाही,—"मुझे अफसोस है, कि इस अंगूठीसे यदि अनुचित
कार्य न लिया गया होता तो यह सुन्दरी अवश्य ही बच जाती।"

दूसरा बोला,—"अब यह प्रमाणित हो गया, कि इसीने कैदियों
को छुड़ाया है, तब कौन इसे बचाना चाहेगा?"

अफसर बोला,—"ऐसी बातें कदापि अपने मुंहसे न निकालो
जो कुछ फैसला करना होगा; वह स्वयं सरदार करेंगे। हमें औरतों
के साथ भलमनसाहतसे पेश आना चाहिये।"

वह सिपाही बोला,—"आपका कहना ठीक है; क्योंकि हमा
सरदार औरतोंकी बड़ी खातिर किया करते हैं।"

दूसरा सिपाही ऐंजीलाकी ओर देखकर बोला,—"आशा है, आ
क्षमा करेंगी। यदि सरदार हम लोगोंकी बातें सुन पावेंगे तो बहुत
ही अप्रसन्न होंगे।"

अफसरने कहा,—"हां, हमलोग अपने अपराधके लिये आप
क्षमा मांगते हैं।

ऐंजीला चुप रही। अब वह अफसर ऐंजीलाको साथ ले वहांसे
बाहर निकलना ही चाहता था, कि उसके पैरोंमें एक पोटली लगी
वह आश्चर्य्यसे बोल उठा,—"अरे! यह क्या है?"

इतना सुनते ही सब सिपाही घबड़ा कर उस स्थानपर आ पहुंचे। इसी समय उस अफसरने कहा,—"ठहरो, पहले इस पोटलीकी परीक्षा करनी चाहिये।"

इसके बाद वह ऐंजीलाको और देखकर बोला,—"मालूम होता है, यह पोटली आपकी है और आपके प्रति कोई अनुचित व्यवहार करना मैं उचित नहीं समझता; परन्तु कर्त्तव्य वश पोटलीकी परीक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है।"

ऐंजीलाने कहा,—"आप अवश्य ही अपना कर्त्तव्य पालन करें। मैं आपकी दयालुता देखकर बहुत ही प्रसन्न हूं। आप अब किसी प्रकारकी चिन्ता न करें और आनन्दसे अपना कर्त्तव्य पालन करें।"

अफसरने कहा,—"मैं आपको इस कार्य में सहायता देनेके लिये धन्यवाद देता हूं।"

इतना कहकर उस अफसरने पोटली खोली तो उसमें किसानोंके पहिरनेके कपड़े दिखाई दिये। इसके अतिरिक्त उनमें कुछ खाने पीनेकी चीजें थीं। उनमें ऐसा कोई भी सामान न था जो टेबीराइट-दलके विरुद्ध मालूम होता। अत उस अफसरने वह पोटली ज्योंकी त्यों बाधकर ऐंजीलाको अपने पीछे पीछे आनेके लिये कहा।

अफसरने कहा,—"अब आप कृपाकर मेरे साथ आइये।"

ऐंजीलाने कहा,—"मैं चलती हूं।"

इसके बाद उस अफसरने अपने सिपाहियोंसे कहा,—"तुम लोग कुमारीसे दूर हटकर चलो, जिसमें उन्हें सन्देह न होने पावे कि हम लोग उनके साथ सख्तीका व्यवहार कर रहे हैं।"

ऐंजीलाने इस व्यवहारके लिये अफसरको धन्यवाद देते हुए कहा, —"वास्तवमें आपका व्यवहार बहुत ही उत्तम है और इससे सरदार-

जिटकाने इस तरह हसते हुए, जिससे उन सिपाहियोंके अफसरको पूरा पूरा विश्वास हो गया, कि ऐ'जौलाको कठोर दण्ड न मिलेगा, कहा,—"टैवोराइट-दलके विरुद्ध यह काम करनेसे तुम्हें क्या लाभ मिला ? तुम सत्य सत्य बताओ, कि इतने भय और खतरेमें अपनी जान डालकर तुमने यह काम क्यों किया ?"

ऐ'जौला बड़ी ही कोमल आवाजमें बोली,—"सरदार ! मैं जानती हू, कि आपको ऐसा प्रश्न करनेका पूरा पूरा अधिकार है और मुझे भी आपकी दया-भिक्षा मागते हुए आपको उत्तर देना ही चाहिये ; परन्तु कारणवश मैं आपके प्रश्नोंका उत्तर नहीं दे सकती।"

सरदारने फिर उसी तरह हसते हुए कहा,—"तब मालूम होता है, कि उन तीनोंमें से किसीके साथ तुम्हारा प्रेम था।"

ऐ'जौलाने जरा जोरदार और गम्भीर आवाजमें, जिससे उसके हृदयकी शुद्धता और दृढ़ता मालूम होती थी कहा,—"नहीं सरदार ! ऐसा नहीं है।"

सरदारने कहा,—"अच्छा, इस विषयमें मैं तुमसे कुछ अधिक न पूछ गा (उस अफसरकी ओर घूमकर) परन्तु यह क्यों कैद की गयी है ?"

अफसरने कहा,—"सरदारकी जय हो ! यह स्त्री सल्टन-महलके दाहिने ओरवाले गिर्जेमें छिपी हुई दिखायी दी।"

इसपर जिटकाने ऐ'जौलाकी ओर देखकर आश्चर्यसे कहा,—"ऐ ! तुम हमलोगोंके पड़ावके भीतर किस लिये आयी थीं और किस तरह उन सिपाहियोंकी दृष्टि बचाकर यहांतक आ पहुंची, जो जगह जगहपर पहरा दे रहे थे।"

उस अफसरने कहा,—"यह आपकी खास अगूठी पहने है।"

ऐ लीनाने कहा,—"सरदार! और इसी अगूठीके बदले क्या मैं आपकी दया-भिक्षा मांग सकती हूँ?"

लिटकाने आश्चर्यमें आकर कहा,—"मेरी अगूठी! यही तो मैंने उस आस्ट्रियन बहादुरको दी थी। यह क्या बात है! इस स्त्रीका और उस बहादुर गारटका क्या सम्बन्ध है?"

ऐ लीनाने कहा,—"केवल सामान्य प्रीति! वह प्रीति जिसकी बदौलत भाई बहनको और बहन भाईको सहायता करनेके लिये बाध्य है और यही कारण है, कि जब मैंने अपना काम उन्हें बतलाया तब उन्होंने यह आश्चर्यजनक अगूठी मुझे प्रदान की।"

लिटकाने कहा,—"और वह काम क्या है?"

ऐ लीनाने कहा,—"वह काम! वह काम क्रस्टन महलमें घुसना है। आप देखते हैं, कि मैं आपके प्रश्नोंका उत्तर सच और साफ साफ दे रही हूं।"

उस बहादुर सरदारने कहा,—"तुम्हारी प्रत्येक बातोंसे तुम्हारे हृदयकी उदारता और सत्यता मालूम होती है।" इसके बाद कुछ ठहरकर उसने उस अफसरको बाहर चले जानेका इशारा किया और फिर ऐ लीनाकी ओर देखकर बोला,—"अब हमलोग अकेले हैं और तुम और भी साफ साफ बातें बता सकती हो। मुझे मालूम होता है, कि तुम्हारी बातोंमें यह रहस्य-जाल छिपा है, जिसे मैं सुलझा नहीं सकता। अब यह बताओ, कि तुम कौन हो और क्यों तुमने इतने बड़े खतरेके काममें हाथ डालकर प्रेगके किलेसे उन राजकीय कैदियोंको छुड़ा दिया? फिर उस आस्ट्रियन बहादुरसे तुम्हारी किस तरह जान-पहचान हुई, जिसने तुम्हें यह अगूठी दी और इसके बाद तुमने इस भयानक क्रस्टन महलमें घुसनेकी इच्छा क्यों प्रकट की?"

ऐ लीनाने कहा,—"आपके तीनों प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिये

मुझे पहले यह कह देना अत्यन्त आवश्यक है, कि मैं ड्यूक रौशनवर्गके जङ्गलके रखवाले विल्सनकी पालिता पुत्री हूं और इसीलिये मेरा नाम ऐ जीला-विल्सन रखा गया है।"

जिटका बोला,—"ऐ जीला-विल्सन! हां मैंने यह नाम पहले भी सुना है। और! मुझे याद हो गया। ऐ सुन्दरी, तुमको सर अर्नेस्टने मोल्डाव नदीमें डूबनेसे बचाया था और इसके बाद तुम प्रेगके किलेमें कुछ दिनोंतक आयशाकी मेहमान भी रही थीं।"

उस जङ्गली कन्याने कहा,—"हां, मैं वही ऐ जीला-विल्सन हूं, और वह दूसरा सवाल जो आपने मुझसे पूछा है, बहादुर सरदार! उसका भी जवाब हो गया, क्योंकि आप जानते हैं, कि सर अर्नेस्ट डी कोमरने मेरी जान बचायी थी और इसी तरह आप खयाल कर सकते हैं, कि घटनाने मुझे आयशासे मिलाया और इसके बाद समयने उसे दोस्तियोंमें बदल दिया। आपका तीसरा प्रश्न अल्टन महलके सम्बन्धमें है। और मैं साफ साफ कहती हूं, कि उस महलमें एक ऐसी स्त्री है, जिसपर मेरी आन्तरिक भक्ति है और जिसे आराम पहुंचानेके लिये मैं सब कुछ सहनेको तय्यार हूं तथा उसी लिये अल्टन-महलमें जाना चाहती थी, ताकि उसे अकालके करालगालसे बचाऊं।"

इतना कहते कहते ऐ जीलाने अपनी पोटली खोलकर सरदार-जिटकाके पैरोंके पास रख दी।

सरदार जिटकाने बड़े प्रेमसे कहा,—"तुम एक ही सुन्दरी हो। जिस तरह तुम्हारा हृदय उदार है, उसी तरह तुम अत्यन्त बहादुर भी हो। परन्तु वह स्त्री कौन है, जिसने तुम्हारा हृदय आकर्षित कर लिया है? अच्छा, अब मुझे साफ साफ बताओ, कि वह कौन है? मैं इसी घड़ी उसकी रक्षाके लिये आवश्यक सामान और सहायता भेजूंगा

र यदि यह बचारा पीड़ित मनुष्य निरुद्ध मारा जायेगा तो उसे
ो मुला दूंगा। साथ ही मैं यह भी प्रतिज्ञा करता हूं, कि चाहे
महात्मा को कितनी बड़ी विरोधिनी क्यों न हो।" चाहे उसने
ोराइट इसके विरुद्ध कितने ही कर्म क्यों न किये हों और चाहे
उसने इस राज-दरबार के लिये कितना ही उद्योग क्यों न किया हो,
उसका भयंकर काम किया गया है, मैं उसे अवश्य अवश्य गल
सीके लिये क्षमा कर दूंगा। हां, अब शीघ्र बताओ, यह स्त्री कौन
? क्योंकि मैं अभी उसकी सहायता पहुंचाया चाहता हूं।"

ऐंजीनाने कांपते आंसू बहाते हुए कहा,—"हे दयालु सरदार!
आपका हृदय जितना बहादुर है उतना ही उदार भी है। आपने उसपर
अत्यन्त दया दिखायी है, पर मैं तुम्हें क्या उत्तर दूं, क्योंकि मैं स्वयं
नहीं जानती, कि यह स्त्री कौन है, जिसने मेरे हृदयपर इस तरह
अधिकार जमा लिया है। उसका नाम, ओहदा और विपत्ति जिसने
उसको दुखी दशामें पहुंचा दिया है—ये सब बातें मुझसे छिपी हुई हैं।"

जिटकाने कहा,—"तुम्हारी सभी बातें रहस्यमयी और मुझे
अचम्भे में डालने वाली हैं। अच्छा यही बताओ, कि तुम्हारी वह
मान मानिनी रहती कहां है और किस तरह मैं उसके पास सहा-
यता पहुंचा सकता हूं?"

ऐंजीनाने कांपते हुए कहा,—"सरदार! मुझे क्षमा करें और
सफेद स्त्री! तू भी मुझे क्षमा करना; क्योंकि मैं जो कुछ करना
चाहती हूं, वह तेरी भलाईके लिये ही है।"

इसके बाद उसने अपनी जाकेटके पाकेटमें से एक बेग निकाला।
उसने उस मखमली बेगके भीतरसे एक अंगूठी निकाली जो उस
सफेद स्त्रीने उसे दी थी और सरदार-जिटकाके आगे घुटने टेककर
घबड़ाहट भरी आवाजमें कहने लगी,—"कोई शुभ आवाज, मेरी

आलासे कह रही है, कि यह अगूठी मेरी जबानसे अधिक उस स्त्रीका हाल आपको बता सकेगी।"

ओह! इस समय यदि जिटकाके पास वज्र गिर पड़ता तो भी उसपर इतना प्रभाव न पडता, जितना कि उस अगूठीके जवाहरातकी चमकसे पडा। उसने झपटकर वह अगूठी ऐंजीलाके हाथसे छीन ली। उसपर एक दृष्टि पड़ते ही वह समझ गया, कि इस अगूठीमें क्या भेद भरे हैं और साथ ही हजारों तरहके गुप्त विचार, जिनमें प्रेम और परिताप सम्मिलित था, उसका घोर हृदय मसोसने लगा। साथ ही जिस तरह एक लम्प समूची झोपडीका अन्धकार दूर कर देता है, उसी तरह उस अगूठीने आइनेकी तरह उसे सब भेद समझा दिये।

वह टूटी-फूटी और कांपती हुई आवाजमें बोला,—"ऐ जोला! अब मुझे सन्देहमें न रख, शीघ्र बता, कि वह स्त्री, जिसने तुझे यह अगूठी दी है, क्या अभीतक जीवित है?"

ऐ जोलाने उदास शब्दोंमें कहा,—"वह अल्टन-महलके भयानक तहखानेमें कैदियोंकी तरह अभी भी जीवित है।"

इतना सुनते ही जिटका जोशमें आकर अपने हाथ मलने लगा। इसके बाद कुछ विचार मनमें उठते ही वह ऐ जोलाकी ओर झुका और उसके चेहरेकी परीक्षा करता हुआ बोला,—"हां—ओह! हां, यह वही है। परन्तु अब मुझे सन्देहमें न रहना चाहिये। अच्छा सुन्दरी! क्या तूने कभी अपने माता पिताको भी देखा है?"

ऐ जोलाने कांपते हुए कहा,—"नहीं, मैं अपने बचपनमें ही उन इमान्दार पुरुष और स्त्रीके जिनके विषयमें मैं पहले ही कह चुकी हूं, सुपर्द कर दी गयी थी।"

अब और भी जोशमें आकर जिटकाने कहा,—"और तेरी उम्र! उम्र क्या है?"

ऐ जोलाने उसी तरह कहा,—"तेरह वर्षकी।"

जिटका इतना सुनते ही बोल उठा,—"ओह! तब यह सही है। प्रकृति मुझे स्वयं बता रही है; मैं अच्छी तरह समझ रहा हूं, सब समझ रहा हूं। ओह! ऐ जोला! था, मेरी गोदमें था, कि जिस तरह हम दोनोंको मिलानेवाला ईश्वर सत्य है, उसी तरह यह भी सत्य है, कि तू मेरी बेटी है और मैं तेरा पिता हूं।"

"ओह! मेरे पिता!" यह कहती हुई ऐ जोला जोरसे चिल्ला उठी। उसपर एक विचित्र प्रकारका जोश आ गया और दूसरे ही पल वह बहादुर जिटकाकी गोदमें जा गिरी।

एकसौचवां परिच्छेद।

चस्टन-महम्मके गहस्थानेमें चन्तिम प्रवेश।

ऊपर कहे हुए दृश्यके लगभग आध घण्टे बाद ऐ जोला और जिटका दोनों ही उस छोटे गिरजेकी ओर चले, जो चस्टन-महलके दक्षिण भागमें था। इस समय जिटका अपनी पोशाक पहने था; परन्तु उसके माथेपर एक मखमली टोपी थी, जिसकी आभा उसके बहादुर चेहरेपर पड़ रही थी और वह कन्या वही सादी पोशाक पहने हुई थी। दोनों तेजीसे उस पड़ावको पार कर रहे थे और इस तरह वे शीघ्र ही उस स्थानपर पहुंच गये, जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है।

इस समय भी उस गिर्जेमें वही सिपाही पहरा दे रहा था, जिसने जोलाको पहचाना था। अब जिटकाको उसके साथ देख और यह समझकर, कि सरदारको इसपर बड़ी कृपा है, वह कांप उठा

ओर मन ही मन भय खाने लगा, कि पहचाननेके कारण यह कहीं कुछ शिकायत न कर दे; परन्तु ऐ जीलाने उसका डरा हुआ चेहरा देखते ही उसपर एक ऐसी स्नेहमयी दृष्टि डाली, कि उस सिपाहीका सारा भय दूर हो गया और उसका चेहरा दमक उठा।

गिर्जेमें पड़ेसकर दीवालसे लगा हुआ वह लोहेका चिराग, जिसकी धुंधली रोशनी उस छोटे गिर्जेमें फैल रही थी, जिटकाने अपने हाथमें उठा लिया और गौरसे गिर्जेकी सहनमें जड़े हुए पत्थरोंके जोड़ोंको देखने और पोला मालूम करनेके लिये पैरोंसे ठोंकने लगा, परन्तु बहुत कुछ परिश्रम करनेपर भी उसे ऐ जीलाके समान ही निराश होना पड़ा।

अब जिटकाने ऐ जीलाकी ओर देखकर कहा,—"क्या तुम्हें निश्चय है, कि अल्टन-महलमें जानेकी राह इसी जगहसे है और यहींका पता तुम्हें बताया गया था?"

ऐ जीलाने कहा,—"हां, प्रिय पिता! मुझे विश्वास है, कि मैं भूल नहीं कर रही हूं। वह गुप्त दरवाजा यहीं कहीं है।"

जिटकाने कहा,—"परन्तु वह अल्टन-महलपर आक्रमण होनेके कारण बन्द तो नहीं कर दिया गया?"

जिटकाकी बातने ऐ जीलाको चौंका दिया और वह कुछ कहना ही चाहती थी, कि इसी समय गिर्जेका वही पहरेदार भीतर घुस आया।"

जिटका उस पहरेदारका चेहरा देखते ही समझ गया, कि यह कुछ कहना चाहता है; इसलिये उसको अपने पास आते देख उसने पूछा,—"तुम क्यों हम लोगोंका पीछा कर रहे हो?"

उस सिपाहीने नम्र शब्दोंमें कहा,—"सरदार! क्षमा करें। आपको देखकर यही मालूम होता है, कि आप कोई चीज खोज रहे

है, जो आपको अभीतक नहीं मिली है, और आपके आनेसे यह भी मालूम होता है, कि इस गिर्जेके तहखानेमें आप कोई गुप्त दरवाजा जो किसी खटकेके सहारे खुलता है, खोज रहे हैं।"

विटकाने कहा —"परन्तु यह कदापि सम्भव नहीं है कि मेरी मौजूदगी देखकर ही तुमने इतनी बातें समझ ली हों। यह सच है, कि मैंने तुमसे कोई बात छिपानेका उद्योग नहीं किया है; परन्तु आप ही मैं यह नहीं समझ सकता, कि तुम इस गुप्त भेदको किस तरह समझ गये; तुम साफ साफ बताओ . . . "

उस सिपाहीने कहा,—"ओर सरदार! मुझे आपसे छिपानेकी कोई आवश्यकता नहीं है। सच बात यह है, कि आज दस दिन या दस रात हुई, मैं इसी स्थानपर पहरा दे रहा था। गिर्जेमें कोई चिराग नहीं था और केवल चन्द्रमाकी झलकी रोशनी पड़ रही थी। दिनभर थके रहनेसे थककर मैं गिर्जेकी चौकीपर बैठना ही चाहता था, कि "

विटकाने घबड़ाहटसे कहा,—"फिर क्या हुआ।"

उस सिपाहीने कहा,— सरदार! क्षमा करें। मैं उस दिन बहुत ही थक गया था और चौकीपर बैठते ही ऊँघने लगा था, कि एकाएक एक प्रकारकी आवाजने मुझे चौंका दिया और चन्द्रमाकी झलकी रोशनीमें मैंने देखा, कि कब्रसे उठते हुए मुर्देके समान एक मनुष्यकी गर्दन इस तहखानेसे बाहर निकली हुई है। ओह! उस मनुष्यका चेहरा बहुत ही पीला और दुबला हो रहा था तथा उसके सब केश पक गये थे। वह घबड़ाहटसे अपने चारों ओर देख रहा था।"

शीघ्र ही ऐलीना बोल उठी,—"हाँ, वह अल्टन-महलका बड़ा खानसामा हूबर्ट था। इस सिपाहीका कथन अक्षरशः सत्य है।"

उस सिपाहीने अब प्रसन्न होकर कहा,—"मैं धर्मपूर्वक

विश्वास दिलाता हू, कि मैंने कुछ ही चण उसका चेहरा देखा; परन्तु उस चेहरेको देखकर मैं इतना घबडा और डर गया, कि घण्टों-तक उसका प्रभाव मुझे मालूम होता रहा।"

जिटकाने पूछा,—"और क्या वह फिर तुरत ही गायब हो गया?"

सिपाहीने जवाब दिया,—"हा, वह तुरत ही गायब हो गया, क्योंकि मैं भयके कारण चिल्ला उठा था। बस मेरी आवाज सुनते ही वह फिर जमीनमें गायब हो गया और इसके बाद ही ऐसी आवाज आयी, मानो कोई भारी चीज गिर पडी हो।"

जिटकाने कहा,—"तुम ठीक कहते हो। अच्छा, फिर क्या हुआ?"

सिपाहीने कहा,—"आपकी कृपाके लिये धन्यवाद है। अब मैं अपना किस्सा शीघ्र ही समाप्त करता हू। मैं सत्य कहता हू, कि मैं कोई डरपोक मनुष्य नहीं हू, परन्तु मैं यह निःसङ्कोच कह सकता हू, कि इस घटनाने मुझे बहुत ही डरा दिया था। मैं इस तरह अपनी आखें मलने लगा, मानो मैं कोई स्वप्न देखकर जाग रहा होऊ, परन्तु बहुत गौरकर देखनेपर भी फिर उस मनुष्यका कोई चिन्हतक न दिखायी दिया। तब मैंने स्थिर कर लिया, कि आज अवश्य ही मैंने कोई भूत देखा है। इसलिये कि मेरी बातें सुनकर सब कोई हसेंगे, मैंने यह बात किसीसे न कही। दूसरे दिन सबेरे ही मैं यहा आकर पत्थरोंकी परीक्षा करने लगा, परन्तु उस घटनाके सम्बन्धमें कुछ भी स्थिर न कर सका। तब मैंने यह सिद्धान्त निकाला कि या तो मैंने स्वप्न देखा था अथवा सचमुच ही मुझे भूत दिखायी दिया था।"

अब दरवाजेका पता न लगनेके कारण निराश होकर जिटकाने कहा,—"क्या तुम्हें कुछ और भी कहना है या तुम्हारा कथन समाप्त हो गया?"

उस सिपाहीने कहा,—"मैं इस हीके लिये ठहरा था और अब इतना कहना है, कि अब मैं ठीक वहीं पहरा दे कि जिसे यहाँ नियुक्त किया गया, तब मैं बहुत ही अचम्भमें हो उठा था ; परन्तु मैं नहीं कह सकता, कि मर्म या लज्जा जिससे मेरी जबान रोक ली और मैं कुछ भी न कह सका । जो हो, ज्योंही मार्ड चला गया, मैं इन पत्थरोंकी परीक्षा करनेसे अपनेको रोक न सका और ठीक उसी जगह परीक्षा करने लगा, जहाँ उस बुड्ढेने माथा उठाया था । बड़ी प्रसन्नताकी बात है, कि एकबार मेरे हाथ एक ऐसा खटका लगा, कि जिसके दबाते ही तहखानेका दरवाजा आपही आप खुल गया ।"

जिटकाने एकबार बड़ी ही तेजी और घबराहटसे पूछा,—"कौनसा पत्थर ? कहाँ है वह खटका ?"

उस टैबोराइट-सिपाहीने हाथसे खटका दबाते हुए कहा,—"यहा इस पत्थरको दबातेही तुरत ही यह गुप्त द्वार खुल जायगा ।" और सचमुच ही वह दरवाजा खुल गया ।

एकबार जिटकाने उसे सम्बोधि कहा,—"मेरे प्रिय बन्धु ! तुमने मेरा बड़ा काम निकाला है और इसके लिये तुम्हे पूरा पूरा इनाम भी मिलेगा । अब तुम इस दरवाजेपर पहरा दो, मैं भीतर जाता हूं तथा ध्यान रखो, कि यदि मैं आध घण्टेमें भीतर न लौट आऊं, तो तुम पचास सिपाहियोंको सावधान कर इस तहखानेमें तुरत भेज देना ।"

उस सिपाहीने कहा,—"आपकी आज्ञा अच्छी तरह पालन की जायेगी ।"

"बहुत अच्छा ।" जिटकाने कहा,—(ए जोसाकी ओर घूमकर) 'अब हमलोगोंको इस तहखानेमें उतरना चाहिये ।"

इतना कह सरदार जिटका हाथमें मशाल ले तेजीसे ..

उतरने लगा और उसकी बेटी ऐ ञोला उसके पीछे पीछे जाने लगी। ज्यों ज्यों वे आगे बढ़ने लगे, त्यों त्यों वहांके भयानक दृश्य और भिन्न भिन्न प्रकारकी कब्रे देखकर उनका कलेजा हिलने लगा। उस तहखानेमें उन दोनोंके जूतोंकी आवाज गूंजने लगी।

इस स्थान पर हम उन लोगोंका भाव वर्णन करनेमें अधिक समय नष्ट न करेंगे, क्योंकि घटनाके भयानक चक्रने उन दोनोंको तुरत ही घेर लिया था।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि जिटकाने लोहेका चिराग अपने हाथमें ले लिया था और वह टेवोराइट-सिपाही गिर्जेके अन्धकारमें ही वहां रह गया था। यदि उसे किसी प्रकारकी रोशनी मिलती थी, तो वह पेड़ोंसे छनकर आती हुई चन्द्रमाकी चांदनी थी, जिससे उस छोटे गिर्जेका अन्धकार किसी कदर दूर हो रहा था। बिचारा सिपाही जिटका और ऐ ञोलाके सम्बन्धपर मन ही मन विचार रहा था और यह भी सोच रहा था, कि इतनी हड़बड़ीके साथ उनके तहखानेमें जानेका कारण क्या है? हां, जिस समय उसका ध्यान इन्हीं विचारोंमें लग रहा था, उस समय भी चन्द्रमा की धीमी रोशनी उस गिर्जेके भीतरी भाग पर पड़ रही थी और इसी रोशनीमें एक स्त्रीको आगे बढ़ते हुए देख, वह चौंककर घबड़ा उठा।

"कौन आ रहा है?" सिपाही ने जोरसे पूछा और इसके बाद ही उसकी तेज आंखोंने बता दिया कि एक लम्बी और सुन्दर स्त्री-काले लबादेसे अपनेको छिपाये हुई आगे बढ़ती चली आ रही है।"

सिपाही फिर जोरसे बोल उठा,—"कौन आ रहा है?"

अब उस स्त्रीने बड़ी ही मोहनी भाषामें कहा,—"कौन आ रहा है। तुम पूछते हो कौन आ रहा है? और मैं तुम्हे विश्वास दिलाती हू, कि मैं एक दास ही हू।"

इस गुप्त आवाजको सुनते ही सिपाही प्रसन्नतासे बोल उठा,—"वाह ! इस आवाजको मैं बखूबी पहचानता हूं ।"

"हां जिस तरह तुम मेरी आवाज पहचानते हो, उसी तरह मेरा चेहरा भी पहचानते होगे ।" इतना कहकर उस स्त्रीने अपने चेहरे-की जाली नकाब उलट दी और अपना चेहरा इस तरह घुमाकर उस सिपाहीके सामने कर दिया; कि चन्द्रमाकी निर्मल चांदनी उसके दमकते हुए चेहरेपर बखूबी पड़ने लगी ।

वह सिपाही चेहरा देखते ही प्रसन्न होकर बोला,—"ओह ! आप फिर हम लोगोंके दलमें आ गयीं ? आपके विषयमें तो बड़ी ही दु:खभरी बातें सुननेमें आयी थीं । परन्तु जो हो, अभी टैबोराइट-सिपाही आपको किसी प्रकारका कष्ट न पहुंचाकर आदर ही करेंगे ।"

उस स्त्रीने हंसकर कहा,—"नहीं, नहीं, सभीको मुझपर ऐसी ही दया नहीं है; परन्तु हां, तुम्हारी प्रकृति कुछ उदार मालूम होती है । अच्छा अब यह बताओ, कि सरदार जिटका उस स्त्रीके साथ किधर गये हैं ? मैंने यहां तक उनका पीछा किया था, उन्हें इस गिर्जेमें घुसते देखा था, परन्तु नहीं कह सकती, कि यहां आकर फिर वे लोग किधर गायब हो गये ।"

वह सिपाही बोला,—"वे यहीं तक गये हैं ।" इतना कहकर वह उस गुप्त दरवाजेकी ओर देखने लगा, जिसका पत्थर अभी तक खुला हुआ था ।

"ऐं; इस तहखानेसे क्या मतलब है ? और तुम्हारी बातों तथा दृष्टि से क्या मतलब निकल रहा है ।" उस स्त्रीने आश्चर्यमें आकर कहा और फिर कोई बात मनमें आते ही वह घबड़ाहट तथा आश्चर्यसे बोल उठी,—"क्या यह राह ब्लटन महलके उसी तहखानेमें पहुंचती है, जिसके विषयमें बहुत ही भयानक बातें सुननेमें आयी हैं ?"

उस सिपाहीने कहा,—"आपका अनुमान निःसन्देह ठीक है, और सरदार तथा वह स्त्री दोनों ही इसी तहखानेमें गये हुए हैं।"

"तब मैं भी जाऊ गी।" इतना कहकर वह तेजीसे उस दरवाजेमें घुसने लगी।

वह सिपाही अब घबड़ाकर बोल उठा,—"तुम उनका पीछा करोगी! परन्तु मैं कदापि ऐसी आज्ञा नहीं दे सकता।"

"ऐ, तुम मुझे न जाने दोगे, तो देखो, तुम्हारी यह बात मुझे अच्छी न लगेगी।" वह स्त्री बोली।

सिपाहीने कहा,—"मुझे क्षमा कीजिये, मैं क्या करू'? क्या सरदार जानते हैं, कि आप इस टेबोराइट पड़ावके भीतर ही हैं? यदि यह बात भी हो तो, फिर आप इस तरह उनका पीछा क्यों कर रही हैं?"

उस स्त्रीने कहा,—"बहुत ठीक, अब तुम्हारा प्रश्न बहुत ही उचित हुआ।"

सिपाहीने कहा,—"ईश्वरकी शपथ, मैं आपको दूसरे भावसे नहीं देखता। अच्छा, आप जाये और मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हू, कि वह आपको कुशलसे रखे।"

वह स्त्री बोली,—"अच्छा, तुम कुछ न डरो, तुम्हारा बाल बांका न होगा।" इतना कहकर वह तेजीसे उस तहखानेमें उतर गयी?

बानवेवां परिच्छेद।

घटना-चक्र।

हां, इस समय जिटका और ऐंजीला उस तहखानेमें आगे बढ़ते चले जाते थे और कुछ ही देर बाद वे उस स्थानपर आ पहु चे,

कहा, ऐंजेला बर्कलेवाली कब्र अभी खुदी थी। उस पर जल्दी उसपर लगे हुए पत्थरको और अपने पिताका नाम भी दिखाया, जो उसपर लिखी हुई इबारतको पढ़ते ही जोरसे बोल उठा,— "ओह ! इस तहखानेका भयानक गुप्त भेद और झूठी इबारत !"

इतना कह सरदार जिटका ने उस कब्र परसे अपनी दृष्टि फेर ली और ऐंजोलाके साथ तिजोरीकी ओर बढ़ने लगा। अब उस चिरागकी धुंधली रोशनी, जो जिटका हाथमें लिये हुए था, दो सफेद कब्रोंके बीचमें रखे हुए एक ताबूतपर पड़ी और ऐंजोला उस ओरको देखते ही सहसा चौंक पड़ी; परन्तु जिटका, जो बड़ा बहादुर दिलेर पुरुष था और जिसके हृदयसे मुर्दों का भय दूर हो गया था, तुरत ही उस ताबूतके पास जा पहुंचा और झटपट उसने उसपरका काला कपड़ा उठा दिया।

ऐंजोलाने उस ताबूतमें रखे हुए मुर्देपर दृष्टि न पड़नेके लिये अपनी आंखें घुमा ली थीं; परन्तु इसी समय जिटकाके मुंहसे निकली हुई आश्चर्यजनक बोलीने उसका ध्यान फिर उस ओर आकर्षित कर लिया और उसने भी बड़े आश्चर्यसे देखा, कि उस ताबूतमें मुर्दा और उसकी कफनकी जगह सोने-चांदीके गहने, सिक्के तथा जवाहरातका ढेर लगा हुआ है।

जिटकाने कहा,—"आह ! यही वह खजाना है, जो राजा वे जैस अपनी उस कन्याके लिये छोड़ गया था, जो बचपनमें ही इस संसारसे उठ गयी; परन्तु आश्चर्य की बात तो यह है, कि वह वेरोनिका-हैमलिन क्या हो गयी, जिसने एंजोलावेश तथा उसका खजाना मेरे सुपुर्द करनेकी प्रतिज्ञा की थी ?"

इतना कहते हुए जिटकाने उस ताबूतका ढकना ज्योंका त्यों रख दिया और फिर ऐंजोलाके साथ ही साथ आगे बढ़ने लगा और

कुछ ही देरमें वे दोनों उस कमरेमें पहुंच गये, जिसमें पीतलकी मूर्त्तिसे सम्बन्ध रखने वाली मेशीनरी रखी हुई थी।

"ओह ! यह बड़ा ही भयानक और भीषण दृश्य है।"—उस वन-कन्याने कांपते हुए कहा और भयसे वह अपने पिताकी बाहोंसे चिपट गयी। फिर बड़ी ही कांपती हुई आवाजमें कहने लगी,—"इसका भयानक काम याद आते ही मेरा हृदय "

"हां, मनुष्य की सूरत में रहने वाले दैत्योंका यह काम है—" इतना कहते कहते बहादुर जिटकाका वीर हृदय भी कांप उठा और उसकी लोहे जैसी मजबूत नसें तड़तड़ा उठीं तथा एक प्रकारका भय सूचक भाव उसके चेहरेपर उस समय छा गया, जब उसने ध्यानसे उस मेशीनरीकी ओर देखा।

इसी समय ऐ जोला बड़े ही मधुर शब्दोंमें बोल उठी,—"पिता जी ! मैंने तो आपसे पहले ही कहा था, कि आपको यहां बहुत सी कलें, भयानक मेशीनें और भीषण सन्नाटा दिखायी देगा और इन्हीं भयानक स्थानोंमें उस जीवको खोजना पड़ेगा, जिसे पानेके लिये आपका हृदय तड़प रहा है ? क्या मैंने आपसे पहले ही निवेदन नहीं कर दिया था, कि अरटन-महलका तहखाना ऐसे ऐसे गुप्त भेदों तथा डरावने पदार्थों से परिपूर्ण है, ।जिनका प्रभाव मनुष्यके हृदयको दहला देता है ?"

जिटका बोला,—"तुमने अवश्य कहा था, और मैं भी ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूं, कि मैं इस महलके इन नारकीय यन्त्रोंको शीघ्रही समूल नष्ट कर डालूंगा।"

इतना सुनते ही ऐ जोला घबड़ाहटसे बोल उठी,—"ऐसा न कहें पिता ! हम लोगोंको स्मरण रखना चाहिये, कि हम लोग एक उदार और धार्मिक कार्यके लिये यहां आये हैं।"

जिटका बोला,—"हाँ, तुम ठीक कहती हो। अच्छा, अब हम भयानक कमरेमें चलें चलो।" इसके बाद वह आप ही आप कहने लगा,—"सम्भव है, कि आपदा भी इसी पीतलकी मूर्त्तिके भयानक दाँतोंका शिकार हुई हो।"

इसी समय ऐलीनाने एक झोपड़ीकी ओर इशारा करके कहा,—"अब हमलोग शीघ्र ही उस स्थानपर पहुँच जायँगी, जहाँ अभिलषित पदार्थ मिल जानेकी मुझे पूर्ण आशा है।"

सरदारने एक ठण्ढी साँस लेकर कहा,—"मालूम होता है, कि वह इस तहखानेमें अब नहीं रहती। हाँ, शायद मुझे यह बात मनमें भी न लानी चाहिये।"

ऐलीनाने बड़ी घबराहटसे कहा,—"ऐ ईश्वर! कृपाकर उसे अकालके कराल गालमें बचा दे।" इतना कहते कहते उसका सारा शरीर काँप उठा। वह बड़ी व्याकुलतासे फिर बोली,—"परन्तु यदि वह जीवित है, तो अवश्य ही हम लोगोंको इसी अन्धकारमय तहखानेमें मिलेगी?"

जिटका बोला,—"ईश्वर करे, ऐसा ही हो।"

अब पिता पुत्री दोनोंने पीतलकी मूर्त्ति वाले कमरेमें प्रवेश किया और ज्यों ज्यों जिटका के हाथ वाली चिरागकी धुंधली रोशनी उस मूर्त्ति पर पड़ती गयी, त्यों त्यों बहादुर जिटकाका शरीर भी काँपने लगा।

जिटकाकी यह दशा देख ऐलीना बोली,—"यहाँ अधिक ठहरनेकी आवश्यकता नहीं। इस मूर्त्तिको देखतेही अबभी मेरी रगोंका खून जमने लग जाता है।"

जिटका बोला,—"अच्छा, चलो फिर इस भयानक

खोज अपना काम शुरू

अब जिटका तथा ऐंजीलाने एक गोल कमरेमें प्रवेश किया। अभी उस कमरेमें उन दोनोंने पैर ही रखे थे, कि इसी समय किसी कल-पुर्जेके चलनेकी भयानक आवाज उनके कानोंमें पड़ी, जिसके सुनते ही वे लोग घबड़ाकर एक दूसरेका मुंह देखने लगे और तुरत ही उन्हें दीवालके समान एक बड़ा दरवाजा अपने सामने ही खुलता हुआ दिखायी दिया।

ओह! जिटका और ऐंजीलाको आपसमें दृष्टि मिलाने और एक शब्द कहनेका भी अवसर न मिला, कि एक मनुष्य हाथमें एक तेज रोशनीका चिराग लिये हुए उस कमरेमें आ पहुंचा, परन्तु ज्योंही अपने हाथकी रोशनीमें उसने उस कमरेमें दो मनुष्योंका देखा, वह आश्चर्य और भयसे चिल्लाकर भागना ही चाहता था, कि ऐंजीला बोल उठी,—"हावर्ट! हावर्ट! हम लोग मित्र हैं, शत्रु नहीं।"

ऐंजीलाकी मधुर आवाज सुनते ही हावर्ट ठहरकर बोला,— "ओह! क्या यह सम्भव है? ऐ ऐंजीला! तू यहां क्या कर रही है, और यह तेरा साथी कौन है?"

ऐंजीलाने अपने पिताकी ओर घूमते हुए उसका हाथ पकड़कर कहा,—"ये, मेरे प्यारे पिता, टेवीराइट-दलके सरदार जान जिटका हैं।"

इसबार हावर्ट कांपती हुई आवाजमें बोला,—"ओह! तुम्हें सब भेद मालूम हो गये। तब तुमने सरदारको निश्चय ही वह अगूठी दे दी है, जो तुम्हें उस सफेद लेडीने दी थी, परन्तु अफसोस! अफसोस!! तुम पहले क्यों न आयीं? ओह! क्यों न आयीं?"

इतना कहते कहते हावर्टने आंखोंसे बहती हुई आंसुओंकी धारा अपने हाथसे पोंछ डाली।

ऐंजीला उसकी यह अवस्था देख घबड़ाकर बोली,—"हे ईश्वर!

इससे तुम्हारा क्या मतलब है? तुम्हारी ऐसी दशा क्यों हो रही है?"

सरदार जिटकाने भी अपना सब परिश्रम वृथा जाते देख उदास भावसे कहा,—"बोलो, हे मनुष्य, जल्द बतादो।"

हार्टने टूटी फूटी और घबड़ाहट मिली आवाजमें कहा,—"हाय! तुम दोनोंको सुनानेके लिये मेरे पास दुःख समाचार है।"

तुरत ही ऐलोसा बोल उठी,—"घोर दुःख समाचार? मैं प्रार्थना करती हूं, कि अब मुझे सन्देहमें न रखकर सभी बातें बतादो। क्या मेरी माको कोई दुःख पहुंचा है? हां, अब मैं जान गयी हूं, कि वे मेरी माता है?"

जिटका अब धीमी आवाजमें बोल उठा,—"ऐलोसा! दुःखद समाचार सुननेके लिये अब तय्यार हो जा। क्या तू नहीं देखती, कि यह दयालु बुड्ढा तेरी बातोंका उत्तर नहीं दे सकता है? रंज तथा दुःखसे इसका कण्ठ बन्द हुआ जाता है, तथा इसकी आंखोंसे लगातार आंसुओंकी धारा बह रही है। इसीसे हम लोग उस सत्य बातका पता लगा सकते हैं, जो इसके हृदयमें छिपी हुई है। (हार्टकी ओर देखकर) क्या मेरा अनुमान सत्य नहीं है?"

हार्टने रोते हुए कहा,—"बहादुर सरदार! आपने बहुत ही ठीक कहा है। वह दयामयी सो अब इस संसारमें नहीं है।"

जिटकाने बड़ी ही दर्दभरी आवाजमें कहा, जिससे मालूम पड़ता था, कि भीतरही भीतर उसका कलेजा मसोस रहा था,—"अब नहीं है!!"

ऐलोसा भी बोल उठी,—"हैं अब नहीं है!" इसके बाद ही वह कलेजा थामकर वहीं खाटपर बैठ गयी।

जिटकाने तिलोसे अपनी कन्याको उठाया और कुछ कहना ही

चाहता था, कि उस बड़े कमरेसे, जिसका दरवाजा अभी खुला हुआ था, बहुतसे स्त्री-पुरुष कई निकल आये। वे लम्बे लम्बे काले गाउन पहने हुए थे और स्त्रियां ननोंके समान सफेद वस्त्र पहने थीं। वे सभी ऐजीला, सरदार तथा हावर्टको घेरकर खड़े हो गये, परन्तु हावर्टके अनुरोध करनेपर वे जिटका तथा ऐजीलाको साथ लिये हुए एक दूसरे बड़े कमरेमें चले गये।

हावर्टने दरवाजा बन्द कर दिया। जिटका अपनी कन्याको सम्हालनेकी चेष्टा करने लगा। यद्यपि जिटकाके ढाढस दिलानेपर ऐजीला बहुत कुछ सम्हल गयी, तथापि उसके चेहरेपर आंसुओंकी धारा बराबर ही बहती रही और दुःखसे उसकी छाती फूलने लगी।

कुछ देर बाद हावर्ट बोला,—"यद्यपि इस महलके सभी मनुष्य भूख-प्याससे व्याकुल हो रहे हैं, तथापि हमारी मालिकिन अकालके कारण परलोक नहीं सिधारी है। बहुत दिनोंतक दुःखमें पड़ी रहनेके कारण एकाएक उनके हृदयकी चाल बन्द हो गयी। इसके अतिरिक्त छः हफ्ते पहले उनके हृदयपर मार्किस-सोमवर्ग और बैरोनेस हेमलनके बलिदानका ऐसा धक्का पहुंचा था, कि उनका हृदय और भी टूट गया और अन्तमें उनकी यह दशा हुई।"

यह सुन जिटका बोल उठा,—"ओह! बैरोनेस-हेमलेनकी यह दुर्दशा हुई! अच्छा हावर्ट! अब और हाल बताकर ऐजीलाका सन्देह निवृत्त करो।"

हावर्ट एक ठण्डी सांस लेकर बोला,—"उस स्त्रीको मरे आज केवल तीन दिवस हुए हैं और अभीतक उसकी लाश कब्रमें नहीं पहुंचायी गयी है। यद्यपि दुःख, शोक, सन्ताप तथा इस महलपर आयी हुई आफतने हम लोगोंको उनकी अन्तिम क्रिया करनेसे अभीतक

रोक रखा है तथापि आप देखते हैं, कि उनको खानेके लिये कुछ कठिनाइयोंकी शंका कम नहीं है।"

इतना कहकर डाक्टरने उन मनुष्योंकी ओर देखा, जो भय तथा विकलतासे निटकाकी ओर देख रहे थे। लार्ड और कौन्टेसने निटकाको देखते ही पहचान लिया था और अपने सामनेसे निटकाका नाम और उसके चालचलनपर आश्चर्य कर रहे थे।

निटकाने कहा,—"हां, बहुतसे कुछ करनेवाले हैं, यदि ये अभी इस पिंडके लिये आंसू गिरावें और प्रार्थना करनेके लिये तय्यार हों।"

डाक्टरने कहा,—"हां, ऐसा करना इन लोगोंको कभी न हुआ होगा; क्योंकि ये अभी उस स्त्रीको इसलिये मौतसे नरकके मार्ग बलिदान होनेसे बचाये गये हैं।"

इसपर उन दयावान आदमियोंमेंसे एकने डाक्टरकी ओर इशारा करके कहा,—"और आपकी दयानुतानसे इसमें विशेष सहायता मिल गयी है।"

अब उस पवित्र और दयालु खानसामाका हाथ पकड़कर उसका आंसू बहता हुआ चेहरा देखते हुए वे बोलाने कहा,—"अभी तुमने कहा है, कि उस स्त्रीकी लाश दफनायी नहीं गयी है?"

डाक्टरने कहा,—"हां प्रिय सुन्दरी! और तुम अपनी माका सुन्दर चेहरा अन्तिमबार देख सकती हो।"

इतना कह वह निटका तथा वे लोगोंको अपने साथ ले उस कमरेकी ओर चला, जिसमें वह लाश रखी हुई थी।

अब डाक्टरने बड़ी ही धीरतासे एक कमरेका दरवाजा खोला। उस कमरेमें एक पलङ्गपर उस स्त्रीकी लाश पड़ी हुई थी।

इस समय भी वह स्त्री सफेद कपड़े पहने हुई थी, जिन्हें अपने जीवन भर पहिननेका उसे अभ्यास पड़ गया था। उसके दोनों ट

छातीपर रखे हुए थे और उसके चेहरे पर इस समय भी उसके हृदयके छिपे हुए पवित्र भाव झलक रहे थे।

ऐ जीला अपनी मृत माताका मुख चूमकर पलगकी बगलमें बैठ गयी और उसकी आखोंसे लगातार आसुओंकी धारा वहने लगी। जिटका भी उस पलंगपर झुक पडा था और उसके पत्थरके समान हृदयपर भी उस समय जब, कि वह उस लेडीके चेहरेकी ओर देख रहा था, कैसे कैसे भाव उदय हो रहे थे, यह बताना किसी भी लेखककी शक्तिके बाहर है। ओह! आज कितनेही वर्ष बाद उसे उस स्त्रीकी सूरत दिखायी थी, जिसे जीवित या मृत देखनेकी उसे कदापि आशा न थी।

हा, इसके बाद सरदार-जिटका तथा ऐ'जीला दोनोंही घुटने टेककर उस पलंगकी बगलमें बैठ गये। इसी समय पादड़ियोंकी भांति दोनों हाथ फैलाकर ह्यूवर्ट कहने लगा,—"ऐ भाई और बहिनो! घुटने टेककर बैठ जाओ और बेरोनेस अर्मेनेग्डाकी आत्माकी शान्तिके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करो।"

और अब उन लोगोंको, जिन्होंने ह्यूवर्टकी आज्ञा पालनकी थी, मालूम हुआ, कि इतने दिनोंसे उनकी रक्षा और बच्चोंकी तरह पालन करने वाली कोइ दूसरी नहीं, बल्कि निर्दयी अरटनके ड्यूककी स्त्री प्रिन्सेस अर्मेनेग्डा ही थी, जिसकी कब्र उसकी मृत्युके पहले ही बनाकर संसारको उसकी मृत्युके सम्बन्धमें धोखा दिया गया था।

लगभग एक घण्टे तक वह दल प्रार्थना करता रहा। जिटका तथा ऐ जीला पलगकी बगलमें घुटने टेककर बैठे रहे, ह्यूवर्ट खड़ा रहा और उस दलके अन्य मनुष्य उस दूसरे कमरेमें घुटने टेके बैठे रहे, जो उस कमरेसे सटा हुआ था। इसके बाद जिटका, ऐ जीला तथा ह्यूवर्ट, तीनों प्रिन्सेसकी अन्तिम क्रियाके विषयमें विचार करनेके लिये उस कमरेसे बाहर चले आये।

जिटकाने कहा,—"तुम दिग्गजको आज रात रानीके छतरही रखवाली आपको और इनके दिनोंतक यह काम, जो किसन दियोगा करती हुई थी, सबके सम्मुख ही कामसे आयी जायगी। मैं अभी अपने घोड़ेसे जाता हूं और कुछ ही देर बाद लौट आऊंगा तथा अपने साथ इन लोगोंके जीवनका सामान तथा उनके मार्गमें पत्थर हटानेका औजार इत्यादि आवश्यक पदार्थ भी लेता आऊंगा। हे जोला! तब तक तू यहीं रह और घूर्टसे जो कुछ तू पूछेगी, वह तुझे बता देगा। साथ ही यदि तेरी माताने अन्तिम समय तुझसे कहनेके लिये कोई बात कही होगी, तो वह भी बता देगा। मैं ठीक आध घण्टेमें लौट आऊंगा और तब ही अन्तिम क्रिया आरम्भ होगी। इसके बाद हम लोग उन मनुष्योंको छोड़ देंगे, जिन्हें यहां कैद रखने-की अब कोई आवश्यकता नहीं है।"

इतना कहकर सरदारने अपनी दृष्टि उन मनुष्यों पर डाली, जो उसकी बातें बड़े ध्यानसे सुनकर मनही मन प्रसन्न हो रहे थे। परन्तु उससे बढ़कर प्रसन्नता अर्नेस्टके उन पैरोंको हुई, जो थोड़ेही दिन हुए कैद हुए थे।

इस समय जिटका अकेला ही उस कमरेसे आगे बढ़ गया था और हे जोला घूर्टके पास ठहर गयी थी। यद्यपि उन मनुष्योंने जिटकाको सुरंगके बाहर पहुंचा देनेका आग्रह किया; परन्तु उसने उनकी बातों पर कुछ ध्यान न दिया; क्योंकि उसे विश्वास था, कि वह शीघ्र ही सुरंगके मुहाने पर पहुंच जायगा। इसी आशासे उसने चिराग हाथमें उठा लिया और तेजीसे सुरंगके मुहानेकी ओर बढ़ने लगा। उसके उस कमरेसे बाहर निकलते ही घूर्टने पिछला दरवाजा बन्द कर लिया।

गोल कमरेको पार करता हुआ जिटका अब उस कमरेमें पहुंचा, जिसमें पीतलकी मूर्ति बनी हुई थी, और इस समय कुछ अधा

लिये घुस गया और उसकी बातें सुन जिटकाके खूनके प्यासे सिपाही बदला लेनेके विचारमें जोरसे हंस उठे।

फिर उन छुरियोंकी अच्छी तरह परीक्षा कर लेने बाद जिटकाको कष्ट देनेके लिये कुछ विलम्ब करनेके अभिप्रायसे फादर सीप्रियन कुछ क्षणों तक उन छुरियोंकी ओर देखता रहा, जो मूर्त्तिके भीतरी भागमें जड़ी हुई थी।

परन्तु इसी समय जिस तरह बाज अपने घोंसलेसे निकलकर शिकार पर झपट पड़ता है, अथवा शेर अपनी मांदसे निकल छोटे हरिनके बच्चे पर टूट पड़ता है, उसी तरह एक स्त्री उस कमरेमें झपटती हुई घुस आयी। यह स्त्री और कोई नहीं, पाठकोंको पूर्व परिचित आयशा थी। इस समय उसके कपड़े तेजीके साथ उड़ रहे थे, नकाब इधर उधर झूल रही थी, दोनों हाथ आगे पीछे जोरसे झोंके खा रहे थे और उसके मनोहर केश जोरसे लहरा रहे थे। इसी तरह शानदार आयशा दौड़ती हुई अपने मामा जिटकापर झपट पड़ी, परन्तु अभी किसीसे मुंहसे आश्चर्य्यकी चीख निकलना ही चाहती थी, कोई उसे पकड़नेके लिये हाथ बढ़ाया ही चाहता था, कि वह शेरनीकी तरह पीतलकी मूर्त्तिकी ओर झपट पड़ी। इस समय पादड़ी मूर्त्तिके बाहर अपना माथा निकालना ही चाहता था और आयशापर उसकी दृष्टि पड़नाही चाहती थी, कि आयशाने जोरसे उसका माथा मूर्त्तिके भीतर ढकेल दिया।

फिर क्षणभरका काम था। उस मूर्त्तिके भीतर चाण्डाल पादड़ी जोरसे घुस गया! उसके दोनों बहादुर साथी घबड़ाकर गिर पड़े और मूर्त्तिका हाथ सिमट जानेके कारण दरवाजा आपसे आप बन्द हो गया तथा बलिदानकी घण्टी जोरसे बजने लगी।

इसके बाद आयशा उपस्थित मनुष्योंकी ओर अपने दोनों हाथ

फैलाकर बोली,—"पापका भीषण प्रतिफल देखा ! इस तरह हम मरघातोंका नाश होता है, जो हिलोवाइका कांटा हुआ था।"

अभी ये शब्द उसके मुंहसे निकले ही थे, कि इसी समय सैकड़ों मनुष्योंके पैरोंकी आवाजें सुन पड़ी मनों और कुछ ही देर बाद टेरीबाइट-सिपाहियोंसे योलम्बकी मूर्त्तिका कमरा भर गया।

बात यह थी, कि आज पादरीके अधिक समय व्यतीत हो जानेके कारण, उस गिर्जेके रक्षक सिपाहीने अन्य सिपाहियोंको सावधान कर गिर्जेको घेरा प्रारम्भ की थी और उन्हींके आदेशानुसार इतने मनुष्य अस्त्र शस्त्रसे तत्परतासे पहुंच आये थे।

इसके बाद जिस समय फादर योलियन अपने कुकर्मका फल भोग रहा था, जिस समय दूसरोंको कष्ट देनेके समान वह आप भी कष्ट पा रहा था, और जिस समय दूसरोंको बलिदान चढ़ानेका प्रायश्चित्त-स्वरूप वह स्वयं कुमारीके चुम्बनका मज़ा लूट रहा था, ठीक उसी समय टेरीबाइट सिपाहियोंने योलमकी मूर्त्तिके भयानक हथियार खोलकर उन्हें बांध लिया। गिर्जेका छुड़ा दिया गया और आयशा इन मनुष्योंसे पता हो गयी, जो फादर योलियनका बदला उससे चुकाया चाहते थे।

इसके कुछ ही क्षण बाद उन भयानक कल-पुर्जों ने अपना काम समाप्त किया। हजारों घावोंसे पादड़ीका शरीर छिद गया, दोनों आंखें अन्धी हो गयीं और खूनसे लथपथ उसका मांसपिण्ड उन बड़ी बड़ी चर्खियोंपर जा गिरा। फिर इन चर्खियोंने घूम घूमकर पादड़ीके शरीर-को काटना आरम्भ किया और यह काम उस समयतक जारी रहा, जबतक उसके शरीरका खण्ड-खण्ड न हो गया। इसके बाद पानीकी प्रबल धाराने संसारसे पादड़ीका नाम निशानतक मिटा दिया।

एक आश्चर्य्यकी बात थी, तथापि उसे सबसे अधिक आश्चर्य इस बात पर हो रहा था, कि वह जिटकाकी बगलमें इस तरह आनन्दसे क्यों बैठी हुई है। इसके अतिरिक्त बूढ़े खानसामाको सरदारकी बगलमें खड़े देख उसके भय, विस्मय तथा आश्चर्य्यका न रह गया था।

उन पहरेवालोंको जो अल्टनके ड्यूकके साथ आये थे, चले जानेका इशारा कर जिटकाने अल्टनके ड्यूकको एक कुर्सीपर बैठनेके लियेकहा और अब वे चारों उस कमरेमें एकत्र हो आपसमें बातचीत करने लगे।

अल्टनका ड्यूक उस कुर्सीपर बैठ गया, जिसकी ओर जिटकाने इशारा किया था और आंखे फाड फाड़कर खानसामा ड्यूवटकी ओर देखने लगा। इसके बाद वह ऐ जोलाको भी इस टटोलनेवाली दृष्टिसे देखने लगा, मानो यह जानना चाहता हो, कि उनका क्या अभिप्राय है, और वे इस तरह क्यों एकत्र हुए हैं। परन्तु ड्यूवटने अपने इतने पुराने मालिकसे आंखे न मिलायीं और ऐ जोला इन घटनाओंके कारण अपने पिताकी ओर इस दृष्टिसे देखने लगी, मानों वह उससे ड्यूकके लिये दया भिक्षा मांगती हो।

कुछ क्षण बाद उस निस्तब्धताको भङ्गकर जिटकाने बडी ही दर्द नाक तथा गम्भीर आवाजमें कहा,—"मैं तुम्हारे प्राणके सम्बन्धमें अभी तुम्हारी चिन्ता दूरकर दूंगा। यद्यपि तुम्हारे अपराध बहुत ही अधिक हैं; परन्तु मैं तुम्हारा एक बाल भी बांका न होने दूंगा। परन्तु इतना और भी कह देना मैं उचित समझता हूं, कि भविष्यमें तुम्हारे साथ वही व्यवहार होगा, जिससे तुम फिर किसी प्रकारके अत्याचार करने योग्य न रहो। तुम्हे सदा कैद रहना पड़ेगा; परन्तु कैदमें तुम उसी तरह रहोगे, जैसा तुम्हे अभ्यास पडा हुआ है, और तुम्हें किसी प्रकारका कष्ट न होगा। यही वह सजा है, जो मैं तुम्हें दिया चाहता हूं।"

ड्यूक चन्दनने कहा,—"इस औषध-दानके लिये मुझे क्या धन्यवाद देना उचित है—बहादुर मिडेला ?"

मिटकाने और भी गम्भीर शब्दोंमें कहा,—"अपनेको संकुचित हृदय न बनाओ ; क्योंकि मुझे कुछ ऐसी बातें कहनी हैं, जो तुम्हारे हृदयपर चोट पहुँचायेंगी ; और मुझे विश्वास नहीं होता, कि तुम अभीतक कोई दूसरा मनुष्य भी मुझे ऐसा दिखाई देगा, जिसने अन्य मनुष्योंके साथ भी अपने मानव हृदयकी सब दयालुताओंका भी नाश कर दिया हो, तथा प्रेम और प्रीतिका सब सम्बन्ध तोड़ डाला हो।"

अपने हृदयकी उठती हुई घबराहटको दबाकर चप्टनके ड्यूकने कहा,—"आपके इस कथनका मतलब क्या है ?"

मिटका बोला,—"मैं तुम्हें बहुत सी बातें बताकर समय नष्ट न करूँगा। अच्छा, समझ जाओ, कि जिस स्त्रीकी मृत्युके सम्बन्धमें झूठ बोल गये पहले तुमसे　　　"

एकाएक घबड़ाकर बीचमें ही ड्यूक बोल उठा,—"आह ! मेरी स्त्री !! (खानसामाकी ओर देखकर) क्या तुमने यह भेद भी खोल दिया ?"

मिटकाने बड़े ही जोरदार शब्दोंमें कहा,—"ड्यूटने उस समय तक अपने मुँहसे एक शब्द भी नहीं निकाला, जबतक कि घटना-चक्रने, अथवा यों समझना चाहिये, कि ईश्वरने ही मुझे ये भेद इस तरह नहीं बता दिये, जिससे झूठ बोलना, बहाने बाजी करना अथवा छिपाना सब तरहसे वृथा हो गया, परन्तु ऐ ड्यूक ! मैं समझता हूँ, कि इस धार्मिक खानसामाको झूठा बनाकर तुम मुझे वृथा ही उत्तेजित न करोगे ; क्योंकि जिस समय मैं तुम्हें यह बताऊँगा, कि तुम्हारी वह स्त्री जिसकी मृत्युका समाचार त-

आजसे बीस वर्ष पहले चारों ओर फैला चुके हो और जिस केलिये कब्र भी बना दी गई है,—जीवित थी।"

जिटकाकी इस बातने अल्टनके ड्यूकपर अपना विचित्र प्रभाव जमाया और वह लगभग एक मिनिट तक आश्चर्य से उसके चेहरेकी ओर देखता ही रह गया; परन्तु एकाएक मानो किसी आकस्मिक विचारके हृदयमें उत्पन्न हो जानेके कारण वह अपनी कुर्सी परसे उठकर बोला,—"अब मैं सब समझ गया! हां, ऐसा हो सकता है, और जिटका! तुमने सत्य ही कहा है, परन्तु ह्यूबर्ट! तुमने मुझे धोखा दिया। तुमने उसको बचा लिया। तुमने ही उसे जीवित रहनेकी आज्ञा दे दी! और उस दिन, जब कि मेरा पुत्र बोहेमियाका राजा होने वाला था,—हां, हां, उसी दिन,—यह वही थी, अर्मेनेग्डा ही थी।"

इतना कहते कहते इस तरह कांपकर मानों उसे जड़ैया आ गई हो; वह फिर अपनी कुर्सीपर बैठ गया।

जिटका बोला,—"अच्छा, अब ध्यानसे सुनो और यदि सामर्थ्य हो तो अपनेको सम्हालो। क्योंकि इस मृत बैरोनेसकी स्मृतिमें मैं कुछ बातें कहना चाहता हूं"

बीचमें ही ड्यूक बोल उठा,—"ओह! अब एक बात मुझे और भी याद आ गयी और मुझे गत इतिहासकी एक घटना और भी स्मरण हो आयी! तुम—जेनरल जिटका, तुम ही मेरी स्त्रीके चाहने वाले थे।"

जिटकाने बड़ी ही गम्भीरता और दुःख भरी आवाजसे कहा,—"हां, यह मैं ही था; जिसे उसने अपने हृदयका समस्त प्रेम अर्पण किया था और जो उसे अपने प्राणोंसे भी बढ़कर मानता था। और ईश्वर ही जानता है, कि मैं भी उसे कितना प्यार करता था; परन्तु

बल्कि विवाहके पहले मुझे जितना प्यार न करती थी, मैं कसम खाता हूं ईश्वरको साक्षी करता हूं, कि उसके बाद वह कभी भी उस हृदयसे विचलित न हुई थी तुम्हारे साथ उसने निर्दोष व्याह की थी। यद्यपि इस पापीने उसका कलेजा मसोस डाला था और हृदय टुकड़े टुकड़े कर दिया था, परन्तु वह कदापि अपने पथसे नहीं डिगी थी।"

तब ड्यूक डस्टनने शरीर काँपकर कहा,—"हे, वह निर्दोष थी! अवश्य ही निर्दोष थी!! तब मैंने बोटमकी माताकी प्यारी माताको दण्ड देकर अपराध किया? ओ हो, ईश्वरको धन्यवाद है, कि वह इस भयानक मृत्युसे बच गयी, और मेरे निठुर व्यवहारपर धिक्कार देती हुई अबतक जीवित रही, पर"

सिडनीने डू पर्टकी ओर देखकर कहा,—"हां जीवित रही और इसका सब श्रेय इस धर्मात्मा डू पर्टकी दयालुता को है; परन्तु ड्यूक डस्टन! अभी मुझे बहुत कुछ कहना और जानना बाकी है; परन्तु वे बातें अभी नहीं कही सुनी जा सकतीं; कल सवेरे तुम्हें वे बातें मालूम होंगी। अभी तक मुझे भी केवल साधारण बातें ही मालूम हुई हैं, और डू पर्टने वादा किया है, कि पूरा पूरा हाल वह पीछे बतावेगा; परन्तु इस बीचमें एक आवश्यक और धार्मिक कार्य करना बहुत ही जरूरी है और मैं समझता हूं, कि तुम भी उसमें मेरा साथ दोगे। मैं मेंबोनिस की अन्तिम क्रियाके विषयमें कह रहा हूं।"

डस्टनके ड्यूकने बड़ी ही दुःख भरी आवाजमें कहा,—"आह! विवाहके बाद वह मुझे बहुत ही प्यार करती थी, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं; परन्तु इसके बाद मेरी ऐसी धारणा हो गयी, कि वह व्यभिचारिणी है। इसीलिये मैंने उसे इस तरहका दण्ड दिया था और यही धारणा आज बीस वर्षोंसे बनी हुई थी। परन्तु आह! ईर्ष्याने मुझे उचित पथसे दूर कर दिया था और इसीसे अन्धे होकर; मैंने

बिना विचारे ही उसे इतना कठोर दण्ड दे दिया था। हा, जिटका अब मैं अवश्य ही तुम्हारी बात मानू गा; क्योंकि अब मुझे विश्वास हो गया, कि वह निरपराधिनी थी और इसी लिये मैं उसकी कब्र तक जानेके लिये तय्यार हूं।"

जिटकाने कहा,—"तुम्हारे व्यवहारमें यह परिवर्त्तन देख मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं, परन्तु अभी उस कार्य्यमें थोड़ा विलम्ब और है। मैंने रोश्नवर्गके काउण्टको बुलानेके लिये मनुष्य भेजा है, क्योंकि वह उसका भाई है। उसकी राह देखना हम लोगोंके लिये आवश्यक है और इतने समयके बीचमें मैं तुम्हें उस बालिकाके सम्बन्धमें कुछ कहूंगा, जो मेरी बगलमें बैठी हुई है।"

जिटकाने इतना कहकर बड़े प्रेमसे ऐंजीलाकी ओर देखा, जो अपनी माताके सम्बन्धकी बातें सुन सुनकर आंसू बहा रही थी।

जिटका बोला,—"यह बहादुर लड़की जिसने प्रेगके राज-महलसे तुम्हें छुड़ाया था, मेरी ही कन्या है जो मृत अर्मेनेगड़ाके गर्भसे उत्पन्न हुई है।"

ड्यूक इतना सुनतेही चिल्ला उठा,—"हे ईश्वर! और रोडल्फ उसे प्यार करता था! और यदि घटना-क्रम इसमें बाधा न डालता तो वह उसे अवश्यही अपनी स्त्री बना लेता। परन्तु ईश्वरको हजार हजार धन्यवाद है, कि यह भयानक बात पूरी न हो सकी परन्तु आह! उस समय रोडल्फके हृदयमें कितना दुःख होगा, जब वह सुनेगा, कि उसकी माता भयानक तहखानेमें कैद पड़ी थी, संसारसे उसका सम्बन्ध छिन्न हो रहा था और वह केवल ड्यूवर्टकी दयासे ही उस भयानक मृत्युसे बच सकी थी! जब वह ये बातें सुनेगा, अवश्य ही मुझे शाप देगा और अपने पुत्रका शाप मैं किसी तरह भी सहन न कर सकूंगा। परन्तु यदि मैं स्पष्ट रूपसे सब बातें कह दूं"

लिटकाने कहा,—"इस समयको यह बात जाननी उचित नहीं है क्योंकि यह बात बहुतसे मनुष्योंको मालूम हो चुकी है, कि बेरोनेट कर्नेलका भाजा तीन दिन पहले तक उस भयानक तहखानेमें कैद थे। मैं सच कहता हूं, कि इस भेदको जब इतने मनुष्य जान गये हैं, कि यह बात रोबरटके कानों तक न पहुंचने देना एक प्रकारसे असम-भव ही है।"

बरटमके ब्रूकने कहा,—"और अपने पुत्रके सामने यह कहनेको कहता कि मैं जीत जब तक पीतलकी मूर्ति वाले दलका सरदार रहा, मार डालना ही उचित समझता हूं, क्योंकि यह अभी तक उस भयानक भेदके समझनेमें कुछ भी नहीं जानता और न उस तहखाने और काले पुर्जों का हाल ही उसे मालूम है। उस पीतलकी मूर्तिके दलके सरदार का पद मुझे अपने पितासे प्राप्त हुआ था। यद्यपि मैंने सत्य और धर्म पूर्वक अपने पिताकी आज्ञाको हुई शपथ पूरी की है, यद्यपि मैं अपने वचनके अनुसार पीतलकी मूर्तिके दलका धर्म बराबर पालन करता आया हूं और यद्यपि मैंने अपने पिताकी आज्ञा अक्षरशः पालन की है तथापि मैं इस भेदको कभी पसन्द नहीं करता, और इसीलिये मैंने एक अक्षर भी रोबरटके कानोंमें आजतक न जाने दिया। मैं उसे इस भेदको बतानेकी अपेक्षा मार डालना उचित समझता हूं। एक बात और भी है। एक रजिस्टरमें पीतलकी मूर्तिके आगे बलिदान पड़े हुए मनुष्योंका नाम लिखा हुआ है और सम्भव है, कि रोबरट उसमें अपनी माताका नाम देख ले। "

लिटका बोला,—"बस बस, बहुत हुआ, घटनाके प्रभावसे इन कई गत घण्टोंमें तो मैंने अपनी आंखों पीतलकी मूर्तिके भयानक दण्ड को सजा देख ली है।"

ब्रूकने घबड़ाकर कहा,—"तुमने अपनी आंखों देखा है?"

लगता है, उसी तरह ड्यूक अल्टनने सिपाहीकी बातका सहारा पाकर कहा,—"गोली मार दी! परन्तु तुम्हारा मतलब यह नहीं है, कि वह मर गया। मालूम होता है, वह जख्मी हो गया है, और उसने मेरे पास समाचार कहनेके लिये तुम्हें भेजा है। बताओ, बताओ, जल्दी बताओ।"

सिपाही बड़े ही दुःखसे बोला,—"मैं आपसे सत्य घटना नहीं कहा चाहता।"

ओह! इतना सुनतेही—"हा रोडल्फ! हा रोडल्फ!" कहकर,—ड्यूक चिल्ला उठा। वह दुःखसे कातर हो घुटनेके बल बैठ गया और अपने हाथोंसे माथा पीटता हुआ जोरसे बोला,—"हे ईश्वर, यह सच्चा बदला और सच्चा प्रायश्चित्त है।"

इसके बाद फिर दरवाजा खुला और सहसा कौण्ट रोशनवर्गने उस कमरेमें प्रवेश किया।

चौरानबेवां परिच्छेद।

ऐ जीनाका मामा।

कौण्ट रोशनवर्ग अल्टन-महलमें घटी हुई घटनाओंके सुननेके लिये पहलेसे ही तय्यार था, क्योंकि जिटकाके दूतके पहुंचनेके पहले ही वह टेवोराइट-दलकी बहादुरीके सब समाचार सुन चुका था और इसीलिये वह अपनी धनसम्पत्ति बटोर, जो कुछ नकद रुपये थे, उन्हें एकत्र कर और जो कुछ जवाहिरात मिल सके, उन्हें लेकर, वह बोहेमिया छोड़ अपने कुछ साथियोंके साथ आस्ट्रिया भाग जाना चाहता था। इसी समय जिटकाका पत्र लेकर दूत उसके पास आ पहुंचा था। यह पत्र जो जिटकाका दूत लेकर गया था और जिसमें

जिटकाने अपने हाथोंसे लिखा था, कि इसी पत्र पानेके बाद तुरन्त चले आना चाहिये; क्योंकि बहुतसे भयानक और दुःखदायी विषयोंपर उनके साथ विचार करना है; और इसी पत्रमें उसने यह भी लिख दिया था, कि उनकी स्वतन्त्रता तथा सुखमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं पहुंचायी जायगी, रोमनबर्गने कोरन्सी जिटकापर विश्वास कर लिया और उस दुष्टके साथ ही भल्टन-महलमें चला आया। वहाँ ही उस क्रियाओंसे उसे मालूम हुआ, कि भल्टन महलके तहखानेकी बहुत सी रहस्यमयी तथा भयानक गुप्त बातें प्रकट हुई हैं।

परन्तु इन घटनाओंका पूरा पूरा हाल कौण्ट रोमनबर्गको अबतक नहीं मालूम हुआ था और यद्यपि वह भल्टन महलकी घटनाओंको सुननेके लिये पूरी तरह तैयार था, तथापि उसे स्वप्नमें भी गुमान न था, कि ये घटनायें बड़ी भयानक होंगी, उसके परिवारसे भी उन घटनाओंका सम्बन्ध होगा और उसके हृदयपर भी उनकी चोट पहुंचेगी।

परन्तु इस उसकी मानसिक अवस्थाका वर्णनकर पाठकोंका समय नष्ट नहीं किया जायगा और उसके अनुमान करनेका भार पाठकों पर छोड़ दिये हैं, कि जब लगातार दुःखदाई घटनायें उसके कानोंमें पड़ी होंगी, तो उसके हृदयकी कैसी अवस्था हुई होगी, यह पाठक स्वयम समझ सकते हैं। सबसे पहले जब पीतलकी मूर्त्तिके सम्बन्धमें इतने दिनोंतक फैली हुई किम्वदन्तीके समाचारकी सत्यता, भल्टन-महलके तहखानेके गुप्त भेद, गत बीस वर्षोंमें बोहेमियासे बहुतसे मनुष्योंके गायब हो जाने तथा भल्टन महलके तहखानेमें रहने, कौण्ट रोमनबर्गकी बहिन येवोनिस धर्मशालाके गत तीन दिनोंतक जीवित रहकर घोर अन्धकारमय तहखानेमें मरने आदिका हाल, तथा किस तरह जान जिटका यही पुरुष है, जिसे अपनी –

लाश उस स्थानके ठीक बीचोबीचमें रखी हुई थी। उसके एक ओर भ्रातृ-समितिके पुरुष सभासद खड़े थे, और दूसरी ओर स्त्रिय खड़ी थीं। सब पुरुष काले वस्त्र पहने हुए थे और स्त्रियां ननों जैसे सफेद पोशाक पहने हुई थीं। वेदीके पास एक रोमन कैथोलिक मतका पादड़ी खड़ा था, क्योंकि सरदार-जिटकाने रोमन कैथोलिक मतके अनुसार ही उसकी अन्तिम क्रिया करनेकी आज्ञा दे दी थी; इसका कारण यही था, कि अर्मेनेगड़ा, उसके पति तथा भाईका उसी मतपर विश्वास था। कौण्ट रोशनबर्ग जिटकाकी इस उदारतापर बहुत ही प्रसन्न हो रहा था और उसे पूरी तरह विश्वास हो गया था, कि जिटका सचमुच ही उदार-हृदय मनुष्य है।

अब अन्तिम क्रिया आरम्भ हुई। भ्रातृदलके मनुष्योंने पादड़ीके स्वरमें स्वर मिलाकर उस अभागिनी बैरोनेसकी आत्माकी शान्तिके लिये बड़े प्रेमसे प्रार्थना की। प्रार्थना समाप्त होनेपर लाश कब्रमें उतार दी गयी और उसी स्थानमें उस लाशको मिट्टी दी गयी, जो उसके मरनेके बीस वर्ष पहले ही तय्यार कर ओर जो, अब सचमुच ही अपना नाम सार्थक करनेके लिये तय्यार की गयी थी। बस इसी तरह उस काले मार्बल पत्थरके नीचे अभागिनीने अर्मेनेगड़ा सदाके लिये सुला दी गयी।

अब यह कार्य्य समाप्त हो गया, शोक प्रकाश करनेवाले मनुष्य उस स्थानसे चले गये, बत्तियां बुझा दी गयीं और साथ ही रात्रि समाप्त हो गयी तथा उषाकी लालिमा अल्टन-महलके ऊंचे-ऊंचे गुम्बदोंपर अपनी प्रभा फैलाने लगी।

ऐ जीला अपने उस कमरेमें चली गयी, जो उसके आरामके लिये मुकर्रर किया गया था। ड्यूक अल्टन भी अपने कर्मपर पश्चात्ताप करनेके लिये अपने कमरेमें चला गया, परन्तु जान जिटका, कौण्ट-

रोडनवर्ग और कुरटा ग्रामवासी भी बड़े ही लोभी मनुष्य तथा विपत्तिपर विचार करते और इस घटनाको देखनेके सम्बन्धकी सब बातें प्रबन्धके लिये पत्थर रख रहे।

इस विषय अधिक लिखकर हम पाठकोंका समय नष्ट नहीं किया चाहते और अपने किस्सेके उसी भागपर आते हैं, जो सबसे आवश्यक है तथा जिसके सम्बन्धमें इन लोगोंमें बातें हुई थीं।

पच्चानवेवां परिच्छेद।

पर्सिनेण्डाका इतिहास।

उक्त घटनाके पचीस वर्ष पहले, जिसका जिक्र अभी अभी किया जा चुका है, बुड्ढा कौण्ट रोडनवर्ग अपने साथी जमींदारोंके साथही लड़ाईमें मारा गया। उसके मरनेके बाद उसके घरमें दो सन्तानें तथा एक विधवा स्त्री रह गयी। पुत्रको पिताका ही पद मिला और वह रोडनवर्गका कौण्ट कहलाने लगा जिसके विषयमें इस ग्रन्थमें कई बार जिक्र आ चुका है तथा कन्या बड़ी सुन्दरी परन्तु अभागिनी पर्सिनेण्डा थी।

मृत बुड्ढे कौण्ट रोडनवर्गकी स्त्री उन स्त्रियोंमेंसे थी जिनकी बढ़ी हुई सुन्दरता गजब ढाया करती है, जिनकी बड़ी बड़ी काली आंखोंसे सदा अहंकार और मद टपका करता है और जिनके ओठों पर आयी हुई मुस्कराहटसे सदा मिठास भरी टपका करती है तथा जिनकी प्रत्येक चालसे अमीराना ढंग झलका करता है। बोहेमियाके एक धनी मानी खानदानमें व्याही जानेके कारण उसे अपने पदका बहुत ही अभिमान था, साथ ही उसे अपने पुत्र तथा कन्याओंका भी बड़ा गर्व था जो उसकी प्रकृतिके अनुकूल तथा वैसे ही सुन्दर थे।

अपने पिताकी मृत्युके समय कौण्ट-रोशनवर्गकी अवस्था तेईस वर्षके लगभग थी और अर्मनेगडा पन्द्रह वर्षकी थी। जिस तरह कौण्ट-रोशनवर्ग देखनेमें सुन्दर था, उसी तरह अर्मनेगडा भी अद्वितीया सुन्दरी थी। कौण्ट-रोशनवर्गने अपनी माताके समान ही अपनेसे कम हैसियत वालों तथा रोशनवर्गकी जायदादके रक्षक तथा नौकर चाकरों पर दया करनी सीखी थी। कौण्टेस अपनी युवावस्थामें एक अच्छी शिकारिन थी, इसी लिये उसने अपनी कन्याको भी घोड़े पर चढ़ना सिखाना आरम्भ किया और इसी लिये केवल एक नौकरके साथ उसे शिकार खेलनेके लिये विदा करने लगी। यह नौकर, जो उसके साथ जानेके लिये चुना गया, सचमुच ही घुड़ सवारीके फनमें पक्का उस्ताद था, परन्तु उस समय कौण्टेसके हृदयमें ही यह विचार न उत्पन्न हुआ, कि बीस वर्षके एक सुन्दर युवकके साथ अर्मनेगडाको जङ्गलमें अकेले जाने देना उचित नहीं है और इस अवस्थामें उस युवककी सङ्गतिका उसपर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। यद्यपि कौण्टेस अपने पुत्र और पुत्रियोंको नौकरोंके साथ दयाका वर्त्ताव करनेके कारण सदाही झिड़का करती थी;परन्तु उसे स्वप्नमें भी यह विश्वास न था; कि रोशनवर्गके शरीफ और ऊंचे खानदानकी लड़की, एक साधारण पेज जान वैकटिनके प्रेम-पाशमें उलझ पड़ेगी।

हां, माताके अविचारके कारण एक निर्दोष अबोध बालिकाको एक खूबसूरत पेजकी सगतिमें सदा देनेके कारण ऐसा ही परिणाम हुआ; क्योंकि इन दोनोंको एकान्तमें मिलनेका अवसर बराबर ही मिला करता था। जान वेकटिन केवल सुन्दर ही नहीं था, बल्कि उसके शरीरकी गठन भी अत्यन्त सुडौल और मनोहर थी। घुड़-सवारीमें उसकी चालाकी ध्यान देने योग्य थी, उसकी शिकारकी दक्षता बुड्ढे बुड्ढे शिकारियोंका मानमर्दन कर देती थी और उसकी

प्रम प्राप्त करनेकी शक्ति ईश्वर कोई मनुष्य उससे प्रभुता करनेका साहस न करता था। इन गुणोंके अतिरिक्त वह दयालु तथा उदार था। दीनोंमें जब कभी झगड़ा होता तो वह निर्मलका पक्ष लेनेके लिये सदा तैयार रहता था। लेकटिजके इन व्यवहारोंने तथा उसकी सुन्दरताने धीरे धीरे एक निर्दोष, अबोध बालिका धर्मनेष्ठाके हृदयपर एक तरह प्रभाव जमाना आरम्भ किया, कि बिचारी धर्मनेष्ठाको कुछ भी मालूम न हुआ, कि वह क्या कर रही है। इस तरह धर्मनेष्ठा धीरे धीरे लेकटिजको प्यार करने लगी, और केवल धर्मनेष्ठा ही क्यों, लेकटिज भी ठीक उसी तरह हृदयसे प्यार करने लगा।

हां, लेकटिजका प्रेम भी उस बालिकापर उतना ही छिपा तथा पवित्र था, जितना कि धर्मनेष्ठाका। परन्तु दोनों ही दोनोंके प्रेमसे अपरिचित थे,क्योंकि न तो धर्मनेष्ठाने ही कभी अपना प्रेम लेकटिजपर प्रकट किया और न कभी लेकटिजने ही धर्मनेष्ठाके सामने इस विषयमें कुछ कहा। परन्तु घटनाके प्रभावसे एक दिन वह भण्डा आप ही आप फूट गया। धर्मनेष्ठा आप ही आप विचारने लगी, कि यह क्या हो गया? क्योंकि एक दिन सूअरका शिकार करता हुआ लेकटिज भयानकरूपसे आहत हुआ और यह समाचार धर्मनेष्ठाके कानोंमें पहुंचते ही वह फूट फूटकर रोने लगी। इसी समय उसके हृदयमें यह प्रश्न भी बराबर उठने लगा, कि वह ऐसा क्यों कर रही है?

बस इस घटनाके बादसे ही उसके हृदयमें यह बात निश्चित हो गई, कि वह लेकटिजको प्यार करती है। उसके हृदयमें प्रेमका बीज उत्पन्न हो गया है और इस घटनाके बाद जब वे दोनों एकत्र हुए, उसी समय दोनोंकी दृष्टिने आपसमें हृदयकी बातें कह डालीं। इसके बाद प्रतिज्ञा-सूचक कई शब्द दोनोंने कहे, दोनोंने आपसमें हाथ

मिलाये, कुछ क्षणमें खायीं और प्रतिमाकी मूर्त्तिकी ओष्ठके समान फिर दोनोंके ओठ आपसमें मिल गये।

इसके बाद कितने ही सप्ताह और महीने बीत गये। अर्मनेग्डा तथा जैकटिक दोनों ही इतने प्रसन्न रहने लगे, मानो यह पृथिवी उनके लिये स्वर्गके समान हो। वे मौका मिलते ही आपसमें मिलते—तस्वीरोंकी गैलरीमें, किलेके रसदखानेमें, बागमें तथा जङ्गलमें उनका आनन्द निकेतन होता। उनका यह प्रेम उस मकानमें रहनेवाले नौकरोंसे भी छिपा न रह सका, परन्तु, जैकटिनके विरुद्ध एक शब्द भी किसीको मुंहसे निकालनेका साहस न हुआ। हां, इतना अवश्य हुआ, कि जैकटिन तथा अर्मनेग्डाके प्रेमपर वेलोग बराबर तर्कवितर्क करने लगे। जो हो, यह बात अभीतक नवीन कौण्ट-रोम्रनवर्ग तथा उसकी माताको न मालूम होने पायी। परन्तु ओह! जैकटिनका इतना पवित्र चरित्र तथा अर्मनेग्डाका निर्मल प्रेम और हृदयकी स्वच्छता, कोई भी उन्हें रोक न सकी, और कामदेवने अपना जबर्दस्त प्रभाव दिखला ही दिया।

इसके बाद महीनों बीत गये और इस तरह अर्मनेग्डाने अपने सत्रहवें वर्षमें पदार्पण किया एक दिन सबेरे ही उसकी माताने उसे अपने दरबारके कमरेमें बुला भेजा। इस बुलाहटको सुनते ही अर्मनेग्डाके हृदयमें भयानक सन्देह उत्पन्न हो गया और भेद खुल जानेके भयसे वह कांप उठी। परन्तु यह भेद ऐसा नहीं था, जो अधिक दिनोंतक छिपा रह सकता और यही आश्चर्यकी बात थी, कि उसकी माता अभीतक उसे न जान सकी थी।

वह कांपते हुए हृदय और झुकी हुई आखोंसे उस कमरेमें घुसी। इस समय भयसे उसका चेहरा पीला हो रहा था। उसकी माता, जिसकी अवस्था इस समय लगभग पचास वर्षके होगी, एक मखमली

कुर्सीपर बैठी हुई थी। उसके भाई और उसका पुत्र छोटा रोबर्ट गोदमें बैठा हुआ था और उसके दाहिनी ओर एक लम्बा, खूबसूरत परन्तु अधेड़ उम्रका मनुष्य खड़ा था। उसकी अवस्था लगभग छत्तीस वर्षकी थी और वह बड़े ही भड़कीले वस्त्र पहने हुए था।

इस कमरेमें कोई नौकर नहीं था। यह सब दृश्य देखते ही धर्मिष्ठा समझ गई, कि उसीके सम्बन्धमें आज कोई नवीन बात होनेवाली है। उसकी शङ्कित दृष्टि सबसे पहले भाईकी ओर देखने लगी, जिसने केवल एकबार मुस्कराकर उसकी ओर देखा और उसकी माताने भी उसी तरह उसका साथ दिया। अब धर्मिष्ठाको विश्वास हो गया, कि उसका गुप्त भेद अभी नहीं खुला है; परन्तु इसी समय उस घटनाका एक आभास उसके हृदयमें आ गया और वह समझ गई, कि यह घटना उसके विवाहसे सम्बन्ध रखती है। हां, उसका अनुमान सच था, क्योंकि धर्मिष्ठाके भविष्य सुखकर जीवनके विषयमें दो चार बातें कहकर तथा उस मनुष्यको कुछ इशारा करते हुए, जो उसके दाहिने ओर खड़ा था, उसकी माताने उस मनुष्यका हाथ पकड़ कर धर्मिष्ठासे कहा,—"प्रिय पुत्री! तुम बकटन सर्फके साहबसे ब्याही जानेवाली हो।"

इसके बाद लगभग पन्द्रह मिनिटतक धर्मिष्ठाकी माता अपनी वक्तृत्व शक्ति दिखलाती रही और इस बीचमें धर्मिष्ठा भयसे कांपती हुई केवल उसके चेहरेकी ओर देखती रही। इन घटनाओंको देखकर वह घबड़ा गई थी। और उसके हृदयमें भयानक धड़कन उठ रही थी। वह मानो एक कलदार पुतलीके समान खड़ी थी और ऐसा मालूम होता था, मानो एक इञ्च हटते ही वह गिर पड़ेगी। उसके ऊपर एक तरहका भय छाया हुआ था और उसी भयने उसका मुंह उस समयतक बन्दकर रखा था, जबतक कि उसकी

माता बोल रही थी ; परन्तु ज्योंही उसकी माता चुप हुई और उसने अर्मेनेस्डाकी ओर मुस्कुराकर देखा, त्योंही मानो उसका भय दूर हो गया, उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो उसकी नस नसमें साहस भर आया, उसके हृदयमें एक विचित्र उत्साह और मस्तिष्कमें एक विचित्र भाव पैदा हो गया। सहसा वह पागलोंकी तरह जोरसे कह उठी,—"नहीं, नहीं, मैं इस मनुष्यकी स्त्री नहीं हो सकती। मैं प्यार करती हूं। हे प्रभो! मैं दूसरेको प्यार करती हूं,—मैं जान अेकटिनको प्यार करती हूं और—ओह! मुझपर दया करो! दया करो।"

इतना कहकर उसने अपने बर्फके समान सफेद हाथ अपनी माताकी ओर फैला दिये और उसके शब्द जोरकी दखनाही हवाके समान सुननेवालोंके कानमें घुस गये। इसके बाद अभागिनी अर्मेनेस्डा बेहोश हो गिर पड़ी, परन्तु अभीतक उसकी बातोंकी सत्यतापर न तो कौण्टेसको विश्वास हुआ और न उसके भाईको ही, परन्तु इसके बाद जब कि उसे होशमें लानेके लिये डाकर बुलाया गया, तब उसने लार्ड असटनडर्फके सामने ही कह दिया, कि अर्मेनेस्डा गर्भवती है; और वास्तवमें अर्मेनेस्डा शीघ्र ही एक बच्चेकी माता हुआ चाहती थी।

पाठकोंको स्वयं ही समझ लेना चाहिये, कि उस समय कौण्टेस तथा रोशनबर्गके कौण्टकी क्या अवस्था हुई होगी, जब उन्हें इस घटनाकी सत्यतापर विश्वास हुआ होगा। कौण्ट रोशनबर्ग डाकरके मुंहसे इतनी अपमानजनक बात सुनते ही उससे अपनी बहिनके अपमानका बदला लेनेके लिये झपट पड़ा और चाहता था, कि उसे गर्दनिया दे महलसे बाहर निकलवा दे, इसी समय उसकी माता, बूढ़ी कौण्टेसने उसे रोका; क्योंकि उसे पूरा विश्वास हो गया था, कि डाकरका कथन सत्य है और सबसे आवश्यक और विचारकी बात यह थी, कि अब यह बात किस तरह छिपाई जाये, जिससे केवल

स्टेफेनिया का ही कलङ्क नहीं था, बल्कि रोज़मबर्ग घरानेकी उज्ज्वल कीर्त्तिमें सदाके लिये कलङ्क-कालिमा लग जाती थी।

जो हो, काउण्टके पुत्रने प्रतिज्ञा की, कि जब यह भेद किसी पर प्रकट न होने देगा और अपनी ज़बानसे इस विषयका एक अक्षर भी बाहर न निकालेगा; क्योंकि धर्मनिष्ठाकी सुन्दरताने उसपर अपना विलक्षण प्रभाव जमा लिया था। इसीलिये उसने काउण्ट रोज़मबर्ग तथा उसकी मातासे यह भी प्रार्थना की, कि उसपर किसी प्रकारकी कठोरता न की जाये। डाक्टरसे यह भेद छिपानेके लिये एक बहुत बड़ी रकम घूसमें दी गयी और नवयुवक पेज जान बेकटिन इसी समय रोज़मबर्गके किलेसे निकाल बाहर किया गया। उसको बहादुरी तथा उस कारनामेका उसे यही पारितोषिक मिला, कि उसे किसी प्रकारकी सज़ा न दी गई और उससे प्रतिज्ञा करा ली गयी, कि अब वह कोई ऐसा काम न करेगा जिससे धर्मनिष्ठाके सम्मानमें बाधा पहुंचे।

इसके कुछ दिन बाद काउण्ट रोज़मबर्ग, उसकी माता तथा दुःखित हृदया धर्मनिष्ठा सभी चटरन महलमें चले गये। इसका प्रधान कारण यही था, कि इसमें धर्मनिष्ठाका भेद छिपा रहनेकी विशेष सम्भावना थी। इस तरह लगभग तीन मासतक सब लोग चटरन महलमें रहे और यहीं धर्मनिष्ठाके गर्भसे एक सुन्दरी कन्या उत्पन्न हुई।

इस भेदको छिपानेका पूरा पूरा उद्योग किया गया। कन्या उत्पन्न होते ही काउण्टके पुत्रके विश्वासी खानसामा पुअर्टके सुपुर्द कर दी गई और वह उसे लेकर एक ऐसे परिवारकी खोजमें निकल पड़ा, जो दरिद्र हो तथा बिना विशेष जांच किये ही, कन्याको रखनेके लिये तैयार हो जाये। साथ ही वह परिवार ऐसा हो, जो उस कन्याका अच्छी तरह लालन पालन कर सके। यह सब प्रबन्ध हो गया और इस

तरह रौशनवर्गका खान्दान एक भारी अपमानसे बच गया। अब सब कोई लौटकर रौशनवर्गके किलेमें चले गये और इस घटनाके कई सप्ताह बाद ड्यूक-अल्टन उनसे मिलनेके लिये फिर वहां जा पहुंचा।

अर्मेनेगडाकी विपद्का क्या पूछना था। उसका एक मात्र प्रेमी, जिसके आगे संसारके यावत पदार्थों को वह तुच्छ समझती थी, उससे अलग कर दिया गया ; उसके प्रेमकी निशानी एकमात्र कन्या जन्म लेते ही उसकी गोदसे छीन ली गयी। सन्तान होनेके समय उसकी विशेष सेवा-सुश्रुषा भी न हो सकी और सबसे बढ़कर बात तो यह हुई, कि लार्ड अल्टनकी बात माननेके लिये उसे वाध्य होना पड़ा।

अल्टनका ड्यूक उसकी सुन्दरतापर इतना मोहित हो गया था, कि इतना सब होनेपर भी उसने अर्मेनेगडासे विवाह करनेकी इच्छा न त्यागी। अन्तमें लाचार होकर अपमान तथा समाजके भयसे अर्मेनेगडाको भी उसकी बात माननी ही पड़ी और जिस समय अल्टन महलके ड्यूकको उसने यह समाचार भेजा, कि वह उसकी सब आज्ञायें माननेके लिये तय्यार है, उस समय उसकी प्रसन्नताका ठिकाना न रहा। इसका एक कारण और भी था। अर्मेनेगडा सब ओरसे निराश हो जा रही थी, उसकी माताने उसकी एकमात्र सन्तानके मरनेका झूठा समाचार उसे सुना दिया था, साथ ही यह भी कह दिया था, कि स्वयं हार्वर्ट उसे इस मृत्युकी सूचना दे गया है। यह समाचार सुन अर्मेनेगडा बड़ी ही कातर हो गई और वहीं एकान्तमें बैठकर आसू बहाती रही। इसके बाद उसका शोक कुछ ही कम हुआ था और इस घटनाको लगभग दो मास हो बीते थे कि एक दिन उसकी माताने फिर उसके पास जाकर कहा, कि उसे और भी हृदय-भेदी समाचार सुननेके लिये तय्यार हो जाना चाहिये। अपनी माताके ये शब्द सुनकर वह एकबार जोरसे कांप

उठी और बाद ही जनाई गई, कि कोई भयानक समाचार फिर यह सुना चाहती है! हाँ, उसका अनुमान सच ही था; क्योंकि इसके बाद ही उसे ओकटेवियसका मृत्यु समाचार सुनाया गया।

परन्तु इस समाचारपर धर्मनिष्ठाको विश्वास न हुआ। वह उस समाचार पर विश्वास न कर सकी, या उसकी धर्म-बुद्धि अन्तिम आशाको रखनेमें भेजनेके लिये तय्यार था। परन्तु वह दुःख शीघ्र उन्मादिनी-सी बन गयी और उसे रह-रहकर मूर्छा आने लगी। इसके बाद ही वह खाटपर जा पड़ी और इस अन्तिम आशाके टूटनेके बाद ही अपना जीवन विसर्जन करनेके लिये तय्यार हो गयी; परन्तु कौल्टिनको कोई आशाका भी न थी। जब उसने देखा, कि धर्मनिष्ठाको विश्वास नहीं हुआ; तब उसने उसे एक पत्र दिखाया, जिसमें रोमन लोगोंसे युद्धमें युद्ध होनेका समाचार लिखा था और साथ ही यह भी लिखा था, कि मोरीनियाका रहनेवाला ओकटेवियस नामक मनुष्य मारा गया है। अब धर्मनिष्ठाको उस समाचार पर लाचार होकर विश्वास करना ही पड़ा और इसबार उसने बड़ी धीरताके साथ दुःख सहन करते हुए पवित्र जीवन बितानेकी प्रतिज्ञा की।

इसके बाद ही बुड्ढी कौल्टिन नाम रोगायमें बीमार पड़ी। उसकी बीमारी बढ़ती ही गई और अन्तमें जब उसने देखा, कि अब वह कुछ ही दिनोंके लिये इस संसारकी मेहमान है, तब अल्टनके ड्यूकके पास मनुष्य भेजकर पुछवाया, कि क्या वह अब भी धर्मनिष्ठासे विवाह करनेके लिये तय्यार है? उत्तर उसकी इच्छाके अनुकूल ही मिला और ड्यूक-अल्टन विवाह करनेके लिये तय्यार हो गया। तब उसने धर्मनिष्ठाको अपनी मृत्यु-शय्याके निकट बुला उससे प्रतिज्ञा करा ली, कि वह अल्टनके ड्यूकसे विवाह करेगी। पागलपनके झोंकमें ही धर्मनिष्ठाने यह प्रतिज्ञा कर ली। उसने रोते, काँपते तथा हाँफते हुए अपनी

माताकी अन्तिम आज्ञापर अपनी सम्मति प्रकट कर दी। इसके बाद एक हल्की मुस्कुराहट कोंस्टेंसके मुर्देके समान पीले चेहरेपर दिखाई दी और कुछ ही देर बाद उसने अपनी आत्माको ईश्वरके सुपुर्द कर दिया।

इसके बाद एक वर्ष बीत गया। एक खूबसूरत पत्थर मत कोंस्टें-सकी कब्रपर लगाया गया और अब सुन्दरी, परन्तु अभागिनी अर्मे-नेगडा उस प्रतिज्ञाको पूर्ण करनेके लिये तय्यार हुई, जो उसने अपनी माताकी मृत्यु-शय्याके पास की थी। वह भरटनके ड्यूकके साथ गिर्जेमें गई और इस तरह उस लेडीने अपने हाथों ही अपने कलेजेको कुचल डाला। यह कह देना भी आवश्यक है, कि भरटनका ड्यूक अर्मेनेगडाके साथ सदय तथा प्रीतियुक्त व्यवहार करता था और उसने वह लज्जाजनक भयानक भेद इसके बाद कभी भी अपने मुंहसे बाहर न निकाला। विवाहके दस महीने बाद ही अर्मेनेगडाके गर्भसे भरटन-महलकी बड़ी जायदादका एक वारिस उत्पन्न हुआ और उस लड़केका नाम रोडल्फ रखा गया।

यद्यपि अर्मेनेगडा अपनी शक्तिभर सच्चे दिलसे अपने पतिकी सेवा करती थी, यद्यपि वह गिर्जेमें की हुई शपथके अनुसार ही सब काम करती थी, यद्यपि अपने पुत्र रोडल्फपर पूरी पूरी प्रीति दिखलाती थी, तथापि कभी कभी निराशाके भयानक बादल अर्मेनेगडाके हृदयपर फैल जाते थे और वह उन्मादिनीकी भांति अकेली जङ्गलोंमें घूमने निकल जाती थी। कुञ्जोंके अन्धकारमय कुञ्जोंमें शान्ति खोजती थी या कभी कभी कटे हुए पेड़ोंके बड़े बड़े कुन्दोंपर बैठकर घण्टों सोचा करती थी।

इसी तरह रोडल्फके जन्मके एक वर्ष बाद एक ऐसे ही अवसरपर अर्मेनेगडाने एक लम्बे, पथश्रान्त मनुष्यको उसी जङ्गलकी राहसे जाते देखा। परन्तु, ओह! जिस समय उन दोनोंकी आंखे चार हुईं, उस

कमरे आचार्य, प्रसन्नता और कहकहाहटसे वे दोनों मिला उठे और इसके दूसरेको वह एक दूसरेके नहीं दिखाई पड़े ।

छानवेवां परिच्छेद ।

अर्मेनेल्डाके इतिहासकी समाप्ति ।

हां, सन्देह उस समय विश्वासमें परिणत हो गया, जिस समय बहुत देरतक उन दोनोंके ओठ आपसमें मिले रहे और आंखोंसे अविरल आंसुओंकी धारा बहती रही, जिसने दोनोंके गालोंको तर कर दिया । इसके बाद बहुत ही धीरे धीरे, मानो सुगन्धित फूलोंके भीतरसे आवाज आ रही हो,—"प्यारे लैकटिन !" "प्यारी अर्मेनेल्डा !" इसके दूसरे ही क्षण अविरल चुम्बनोंके शब्दोंकी आवाज आने लगी, मानो छोटे-छोटे हृदय कोई खोल रहे हों, और फिर मुंहसे निकली हुई आवाज इस तरह आने लगी, जिस तरह वसन्तकी सुगन्धित हवा झोंका मिलते ही कभी जोरसे और कभी धीरे-धीरे शब्द करने लगती है ।

इसके बाद उन घटनाओं तथा वियोग व्यथित हृदयोंके समाचारोंके वर्णनका समय आया, जिन्हें सुननेके लिये दोनों ही लालायित हो रहे थे । जो हो, पहले अर्मेनेल्डा ही अपनी कहानी कहनेके लिये तय्यार हुई, कि वह किस तरह अष्टन महलमें लाई गई, किस तरह उसकी कन्या उसकी गोदसे छीन ली गई, किस तरह उसे विश्वास दिलाया गया, कि लैकटिन मर गया, फिर किस तरह उसने अपनी माताकी मृत्यु-शय्याके पास खड़े हो अष्टनके ड्यूकसे विवाह करनेकी प्रतिज्ञा की, उसने किस तरह अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और किस तरह उसे रोडल्फ नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ ।

और ! यह सुनते ही, कि अर्मेनेल्डा दूसरेकी स्त्री है, लैकटिन

दुःखसे मर्माहत हो गया और कुछ समय तक उसे होश हवास न रहा, परन्तु अन्तमें अपने उठते हुए भावोंको दबाकर वह अपनी कथा कहनेके लिये तय्यार हुआ। अर्थात् जब अर्मेनेएडाकी प्रीतिका भंडा फूट गया, तब कौण्ट-रोमनवर्गने उसे बुलाकर कहा,—"तुम्हारी सब चालोंका पता लग गया और अब तुम्हें इसी समय यह महल छोड़ देना पड़ेगा। यह तो तुम जानते ही हो, कि अपने वतबे तथा सम्मानकी ओर ध्यान देकर मैं या मेरी मा कोई भी अर्मेनेएडाके साथ तुम्हारा विवाह करनेमें प्रस्तुत नहीं हो सकता, क्योंकि तुम कईबार स्वयं कह चुके हो, कि तुम्हें डाकू उठा लाये थे और तुम अपने माता-पिताका नाम भी नहीं जानते, न तुम्हारे पास सिवा तलवार या चालचलनकी उत्तमताके कोई दूसरा सुबूत ही है। तब क्या तुम समझ सकते हो, कि एक ऐसे मनुष्यको, जिसके वंशका पता तक नहीं है, मेरी माता अपनी प्रिय कन्याको सौंप देगी और अपने मान सम्मानमें बट्टा लगायगी? मैं तुम्हारे साथ कोई कठोर व्यवहार नहीं किया चाहता, बल्कि एक सम्माननीय मनुष्यके समान समझता हूं और तुम्हें सावधान करता हूं कि मेरी बहिनके प्रेमके कारण अब तुम उसे कुराहपर ले जानेकी कदापि चेष्टा न करना। यह थैली लो, इसमें भरपूर रकम है और मेरे अस्तबलसे सबसे बढ़िया घोड़ा लेकर, शान्तिके साथ यहांसे चले जाओ।"

जेकटिनने कहा,—"हां, मैं अभी चला जाता हूं। परन्तु मैं अपनी चालोंसे अपनेको ऊंचे पदपर पहुंचाकर प्रमाणित कर दूंगा, कि मैं अर्मेनेएडासे विवाह करनेके सर्वथा योग्य हूं। आपके दिये हुए घोड़ेको मैं स्वीकार करता हूं; परन्तु यह थैली नहीं लिया चाहता, क्योंकि मैं अपने भागनेके लिये घूस लेना नापसन्द करता हूं। नहीं, मेरा प्रेम ऐसा नहीं है, जो सोने चांदीके बदलेमें बेचा जा सके।"

इसका अब बाकी घटना अभाव और सुन्दर लेकटिन यह जान रहा सबसे छोड़कर भाग दिया और इलौको रिमामें करतो और सुख चैनमें मस्त रहा, क्योंकि इस प्रकार शासन लोगोंका इनमेंसे ज्यादा काम सुख किया हुआ था। इस युद्धमें लेकटिनने इतनो बहादुरी दिखाई, कि वह भी किसीसे कम इस दलका सरदार बना दिया गया। इसके बाद लेकटिनने कौन्ट-रोजमण्डको पत्र लिखा, जिसमें उसने इन सब घटनाओंका वर्णन करने बाद धर्मनिष्ठाको इनामको भी सुरक्षा पूरी की। इस पत्र रोजमण्डके कौन्टके हाथोंमें पहुँचने न पहुँचने पाया, कि वोन्ही भी धर्मनिष्ठाको जवानी उसे गायब कर दिया था और उसी पत्रको फेर-फारकर उसने धर्मनिष्ठाको सुनाया था, कि काम लिटिया भर गया। परन्तु

लिटियामें जब यह लड़ाई छोड़ दी और इलनोके ढेरा छू कर बहुत गारदके समान, पकवान तथा शराबमें दिये, तब यह [illegible] पर्वतको राहसे फिर वोहिमियाको ओर लौटा; परन्तु राहमें ही डाकुओंका एक ऐसा दल मिला जिसने उसके पासको सब सामान-पूँजी लूट ली और उसका घोड़ा भी छीन लिया, क्योंकि लेकटिनने उनके बहुत कुछ कहनेपर भी उनके दलमें मिलना अस्वीकार कर दिया था। इसलिये उसे निकोलस तक पैदल ही अपनी सफर पूरी करनी पड़ी और केवल उन किसानोंकी दया और कृपापर निर्भर करना हुआ, जिनके यहाँ वह रात बिताने ठहर जाता था, लेकटिन इस आशामें किसी तरह रोजमण्डको जमींदारीमें जा पहुँचा, कि उसे धर्मनिष्ठा अभी तक अविवाहिता ही मिलेगी।

परन्तु जब धर्मनिष्ठाकी जबानी उसे यह मालूम हुआ, कि उसका विवाह हो चुका है, तब वह बड़ोही निराशाजनक आवाजमें बोला,—"मेरे-हृदयमें आज भयानक [illegible] है। आजसे यह समस्त

संसार मेरे लिये अन्धकारमय हो गया है। आजतक मेरे हृ
केवल एक ही आशा लहलहा रही थी, जो प्रेममयी थी, परन्तु
वह प्रेम मन्दिर भी चूर चूर हो गया। अब मेरी इच्छा तनिक भी
होती, कि इन सांसारिक झगडोंमें पडूं; क्योंकि संसारके प्र
कर्त्ताओंपर मुझे एक प्रकारकी विरक्ति सी हो गई है। (कुछ
हित होकर) सम्भव है, कि एक दिन वह आये, जब मैं इस संसा
शासनप्रणाली ही पलट दूं।"

अर्मेनेयडा घबडाकर बोल उठी,—"हे ईश्वर! यह क्या ?
क्या ?" इतना कह वह जैकटिनके शरीरमें जोरसे चिपट गयी
टक लगाकर उसका चेहरा देखने लगी।

जैकटिन बोला,—"नहीं अर्मेनेयडा! मैं पागल
हूं; परन्तु अब मेरे मस्तिष्कमें नवीन विचार और हृदय
उत्पन्न हो रहे हैं। अब मैं केवल तुम्हारे प्रेमके
रह सकता, क्योंकि वह आशा टूट गई। अत अब
दूसरी ही सामग्री होनी चाहिये। बस, अब मेरे
उद्देश्य अपने भाइयोंकी उन्नति करना है। यह उद्देश्य
होगा, यह अभीतक ईश्वर ही जानता है और मेरे-
कितने दिन लगेंगे, यह भी ईश्वर ही जानता है; परन
दिन वह अवश्य आवेगा, जब मेरा उद्देश्य निश्चय सिद्ध
अर्मेनेयडा! तुमने मेरे हृदयका भाव नहीं समझा; पर
कि एक दिन ऐसा आवेगा, जब तुम्हें मालूम होगा, कि
था। तुम एक दूसरेसे व्याही गई हो, इसलिये तबतक
प्रेमसे निराश हो जाना चाहिये, जबतक कि वह दिन
मैं तुम्हें उद्धार कर सकूं और जब कि हम दोनोंका हाथ
मिल सके, जिस तरह हृदय मिला हुआ है। अच्छा

हम लोगोंको अलग हो जाना चाहिये, क्योंकि अब हम लोगोंका
...थ रहना उचित नहीं है। और यह गुप्त सम्मिलन भयानक और
...हारे स्वभावमें बट्टा लगाने वाला भी है; क्योंकि यदि हम लोगोंको
...ई देखता देख लेगा और यदि यह कह देगा कि धर्मिष्ठा एक
...युवकके साथ .. "

धर्मिष्ठा दुःखी होती हुई बोली,—"मेरे प्यारे! मेरी ओरसे
...हारे जैसे विचार हैं, उसके लिये मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूं; परन्तु
...रे! क्या हम लोगोंको इतना शीघ्र अलग हो जाना चाहिये?
...र क्या हमलोग अब न मिलेंगे?"

जैकटिनने धीमी, दुःखभरी तथा गम्भीर आवाज़में कहा,—
...ोचो—बिचारी, धर्मिष्ठा! अब तुम दूसरेकी हो चुकी हो। मैं अपने
...ार्थके लिये तुम्हें अपने पतिकी ओरसे उचित कर्त्तव्य, धर्म तथा
...म्हारी जो हुई शपथ है उससे हटाना नहीं चाहता। तुम्हारे प्रेमके कारण
... तुम्हें अपमान, लज्जा तथा भयमें न गिरने दूंगा। और! गत
...टनाओंने मुझे अच्छी तरह सिखा दिया है, कि ऐसे भीषण कार्य्य न
...रने चाहियें। जवानीकी ये आनन्दमयी बातें, मेरा निराश प्रेम और
...रा अपमान .. ।"

धर्मिष्ठाने कोमल स्वरमें कहा,—"तुम्हें कैसे मालूम हुआ, कि
...मारी सन्तान मर गयी? क्या जिस तरह तुम्हारी मृत्युके विषयमें
...झे धोखा दिया गया था; उसी तरह उस लड़कीके विषयमें भी न
...किया गया होगा? क्या ये सब रचनायें तुम्हारी ओरसे मेरा ध्यान
...टानेके लिये नहीं की गई होंगी? हां, अब मैं अच्छी तरह समझती हूं,
...क ये बातें अल्टनके साथ विवाह करनेमें बाधाके समान थीं और
...न्हीं बाधाओंके दूर करनेके लिये यह चाल चली गयी थी।"

जैकटिनने कहा,—"परन्तु तुम मुझे अभी कह चुकी हो, कि

संसार मेरे लिये अन्धकारमय हो गया है। आजतक मेरे हृदयमें केवल एक ही आशा लहलहा रही थी, जो प्रेममयी थी, परन्तु आज वह प्रेम मन्दिर भी चूर चूर हो गया। अब मेरी इच्छा तनिक भी नहीं होती, कि इन सांसारिक झगड़ोंमें पड़ूं, क्योंकि संसारके शासन कर्त्ताओंपर मुझे एक प्रकारकी विरक्ति सी हो गई है। (कुछ उत्साहित होकर) सम्भव है, कि एक दिन वह आये, जब मैं इस संसारकी शासनप्रणाली ही पलट दूं।"

अर्मेनेयडा घबड़ाकर बोल उठी,—"ऐ ईश्वर! यह क्या? वह क्या?" इतना कह वह लेकटिनके शरीरमें जोरसे चिपट गयी और टक लगाकर उसका चेहरा देखने लगी।

लेकटिन बोला,—"नहीं अर्मेनेयडा! मैं पागल नहीं हो गया हूं; परन्तु अब मेरे मस्तिष्कमें नवीन विचार और हृदयमें नये ही भाव उत्पन्न हो रहे हैं। अब मैं केवल तुम्हारे प्रेमके भरोसे जीवित नहीं रह सकता, क्योंकि वह आशा टूट गई। अत अब मेरे जीवनको दूसरी ही सामग्री होनी चाहिये। बस, अब मेरे जीवनका एकमात्र उद्देश्य अपने भाइयोंकी उन्नति करना है। यह उद्देश्य किस तरह पूरा होगा, यह अभीतक ईश्वर ही जानता है और मेरे उद्देश्यकी पूर्त्तिमें कितने दिन लगेंगे, यह भी ईश्वर ही जानता है; परन्तु एक न एक दिन वह अवश्य आवेगा, जब मेरा उद्देश्य निश्चय सिद्ध होगा। ओह! अर्मेनेयडा! तुमने मेरे हृदयका भाव नहीं समझा; परन्तु याद रखो कि एक दिन ऐसा आवेगा, जब तुम्हें मालूम होगा, कि मैंने क्या कहा था। तुम एक दूसरेसे व्याही गई हो, इसलिये तबतक मुझे तुम्हारे प्रेमसे निराश हो जाना चाहिये, जबतक कि वह दिन न आवे, जब मैं तुम्हें उद्धार कर सकूं और जब कि हम दोनोंका हाथ फिर उसी तरह मिल सके, जिस तरह हृदय मिला हुआ है। अच्छा, अर्मेनेयडा!

अब प्राण-पूर्वक, ईमानदारीसे करूंगा, और जो कोई उपाय मैं अपने जीवन बितानेका करूंगा, वह कल्याणसे परिपूर्ण होगा। चाहे बहुत दिनोंतक मुझे कष्ट भोगना पड़े, चाहे बरसों मैं एक कोनेमें 'पड़ा पड़ा रहूं', परन्तु जैसा कि अभी, अभी कह चुका हूं, एक दिवस अवश्य ऐसा आवेगा, जब मैं अपने भाई भाइयोंका उपकारकर सकूंगा। चाहे मैं कितनी ही विपत्तिमें क्यों न पड़ूं, तुम्हारी स्मृति, तुम्हारा प्रेम और तुम्हारे सुन्दर मुखमण्डलकी याद मुझे सदा ही बनी रहेगी। साथही यह भी स्मरण रखो, कि सम्भव है, कि ऐसी घटना आ पड़े, जिससे मुझे अपना नाम भी बदल देना पड़े, ऐसी हालतमें तुम स्मरण रखना, कि मेरे नाममें वही अक्षर रहेंगे, जो इस समय हैं। इस तरह चाहे मेरी जो दशा हो और चाहे संसार मुझे कोई दूसरा ही मनुष्य समझे, परन्तु तुम इन बातोंका यदि स्मरण रखोगी, तो मुझे प्रत्येक समाज और दलमें पहचान लोगी, करोड़ों मनुष्योंमें भी पहचाना जा सकूंगा और तुम्हें कभी अड़चन न पड़ेगी। अच्छा अब विदा—अर्मेनेण्डा,—विदा,—तब तकके लिये विदा, जब तक हमलोगोंके लिये सुखका समय नहीं आता,—नहीं तो फिर सदाके लिये ही विदा!"

अब अर्मेनेण्डा और जेकटिज अन्तिम मिलनके समान ही गले गले मिले, परन्तु इस अन्तिम मिलनमें दो बाधा आ पड़ी और शिकारियोंका एकदल एकाएक जंगलकी झाड़ीमेंसे उनके पाससे निकल पड़ा। इस दलमें धूक-धड़कनको देखतेही अर्मेनेण्डा जोरसे चीख उठी और जेकजिट अपने हाथकी तलवार म्यानके बाहर खींच, शेरकी तरह सिपाहियोंके समूह दलपर झपट पड़ा। ओह! जिस समय अर्मेनेण्डाके कानोंमें शस्त्रोंकी झनझनाहट सुन पड़ी, उसी समय वह बेहोश हो गिर गयी। और जेकटिजको भी उन शिकारियोंने गिरफ्तार कर लिया। *

खानसामा ह्यूवटकी सबबिलता पर तुम्हे कुछ कुछ विश्वास है और उसने कई बार तुमसे नहीं कहा है, कि बिचारी लड़की जन्मसे कुछ ही दिन बाद परलोक सिधार गयी ?"

अर्मेनेगड़ाने कहा,—"हां, बात तो ऐसी ही है और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि ह्यूवर्टका हृदय उदार तथा दयालु है। मैं नहीं समझती, कि उसने मुझे धोखा दिया होगा।"

मानो किसी आकस्मिक विचारसे चौंककर जेकटिन बोल उठा,—"सुनो, अर्मेनेगड़ा! अब हमलोगोंको अलग हो जाना चाहिये! तुम्हारी इज्जत तथा पद-मर्य्यादा मुझे अब यहासे चले जानेके लिये बाध्य करती है। परन्तु सुनो सुनो, ऐ सुन्दरी! तुम्हे मैंने सदासे प्यार किया है और जबतक जीवित रहूंगा, करता रहूंगा, लो इस अगूठीको देखो (इतना कह उसने अपनी जेबसे एक अगूठी निकाल अर्मेनेगड़ाके हाथमें देदी) यही वह एक मात्र पदार्थ है, जो उन डाकुओंने भूलसे मेरे पास छोड़ दिया था, नहीं तो यह भी चला जाता। अस्तु, तुम इसे ग्रहण करो, हिफाजतसे छिपाकर मेरी स्मृतिमें इसे अपने पास रखो और यदि ईश्वरने वह दिन दिखाया, कि हमलोग मिल सके, तो यही अगूठी मुझे तुम्हारी पहिचान और तुम्हारी आज्ञाओंके पालन करनेका आदेश बतावेगी। साथही यदि तुम्हे यह मालूम हो जाये, कि तुम्हारी सन्तान जीवित है . "

अर्मेनेगड़ा रोती हुई बीचमें ही बोल उठी,—"तब यही अगूठी देकर मैं उसे तुम्हारे पास इस लिये भेज दूंगी, कि वह तुम्हें पिता कहकर पहचान ले। परन्तु आह! तुम अब कहा जाते हो? तुम्हारी क्या इच्छा है? तुमने अपने लिये अब क्या विचारा है?"

जेकटिनने कहा,—"मैंने अभी तक कुछ निश्चित नहीं किया है। परन्तु सुनो, मैं कह सकता हूं, कि अबसे जो कुछ मैं उपार्ज्जन करूंगा,

लोगने कहा, कि शायद वह बिचारी डूब मर गयी अथवा उसके पति
उसीने मरवा डाला है। इसी तरह बातें सोच सोचकर जब एक दि
न महलमें बैठा हुआ वह आंसू बहा रहा था, तब उसे उन्हीं मनुष्योंमें
का एकने ठीक किया, जिससे पहले दिवस उसकी मुठभेड़ हो चुकी
थी। एकबार फिर मंजूषामें शोर गुल हुआ; परन्तु जेफटिनने फिर
अपनी नाम बनायी और इस्टर-महलमें जाकर नौकर हो गया।

यह जिस अवस्थामें इस्टर-महलमें पहुंचा, तथा जिस तरह राजा
इस्टडने उसको दया पर दयाकर उसे अपनी नहीं रख लिया, आदि
बातें समर्थ अपने इतिहासमें वर्णन कर चुका है, अत यहां इतनाही
कहना है, कि इस्टर-महलमें जाकर केवल अर्नेस्टाके ढूंढ़नेकी दृष्टिसे
उसने तथा अपना वह उद्देश्य पूरा करनेके लिये, जो अर्नेस्टाके
कहा था, उसने केवल अपना नाम बदल डाला और जेफटिनकी जगह
लिटका रख लिया। अपना भविष्य कर्तव्य भी जेफटिनने ठीक कर
लिया था, तथापि अर्नेस्टाके वियोगके कारण कभी कभी उसका
चेहरा उदास हो जाता था और वह पागलोंकी तरह सोच विचारमें
बैठा रह जाता था।

परन्तु अर्नेस्टा मरी नहीं थी, उसके पतिने उसपर अविश्वास कर
कुमारीके कुमनका दण्ड देनेके लिये उसे अपने विश्वासी खानसामा
शूवर्टके सुपुर्द कर दिया था और यह शूवर्ट ही पीतलकी मूर्तिका उस
समय निरीक्षक और प्रबन्धकर्ता था। उसकी कृपासे ही बिचारी
अर्नेस्टा जीवित रह गयी परन्तु शूवर्टने उससे कसम खिलाकर
प्रतिज्ञा करायी थी, कि जब तक समय आपसे आप उसे बाहर निक-
लनेका अवसर न दे, तब तक वह मुर्दोंकी भांति ही अल्टन महलके
तहखानेमें पड़ी रहे। इसी लिये वह एक मुर्देके समान अल्टनमहलके
तहखानेमें रहने लगी और फिर उन दोनोंने मिलकर पीतलकी मूर्तिके

इसी समय मलटनके ड्यूकने चिल्लाकर कहा,—"इन्हें जल्द किलेमें ले जाओ।" और जिस समय उस दलके कुछ मनुष्य बेहोश अर्मेनेडाको घोड़े पर लाद महलकी ओर ले चले उसी समय ड्यूक-मलटनने जैकटिजके पास जाकर बहुत ही धीमे स्वरमें कहा,—"तूमने आज फिर मेरा अपमान किया। यह तुमने दुबारा अपमान किया है और इसका दण्ड मृत्यु है। इस ढंगकी, इतनी कष्ट दायक तुम्हारी मृत्यु होगी, कि इसका पूरा प्रतिफल तुम्हे मिल जायगा। (अपने साथियोंकी ओर देखकर) इसे ले जाओ।"

परन्तु अपनी शक्ति, बहादुरी तथा चालाकी से जैकटिजने झटका देकर उनके हाथोंसे अपनेको छुड़ा लिया और उनके खाली घोड़ेपर झपटकर इस तरह सवार हो वहासे हवाकी तरह भागा, कि वे किसी तरह उसे पकड़ न सके। बहुत दूर तक उन लोगोंने उसका पीछा किया और कुछ देर बाद मृत अवस्थामें उन्हें अपना घोड़ा दिखायी दिया। परन्तु जैकटिज का अब भी पता न मिला। मृत घोड़ेको देख उन लोगोंको बड़ी प्रसन्नता हुई, कि अब जैकटिज शीघ्रही पकड़ा जायगा, परन्तु वृथाही उन्होंने जङ्गलमें टक्करें मारीं, वृथा ही समूचा जंगल छान डाला, मलटनकी विवाहिता स्त्री मेरीनेस अर्मेनेयडाके प्रेमीका उन्हे बिलकुलही पता न लगा।

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि जैकटिज उसी स्थानपर जंगलमें ही कहीं छिपा था, परन्तु उसने अपनी चालाकीसे अपनेको इस तरह छिपा रखा था, कि उन लोगोंको किसी तरह पता न लगा और वे लाचार हो लौट गये। कई दिनों तक वह उस जंगलमें और मलटन-महलके आसपास अर्मेनेयडाका समाचार जाननेके लिये घूमता रहा। और अन्तमें उसे यह समाचार मिला, कि अर्मेनेयडा मर गयी। ओह! इस समाचारको सुनते ही वह विकल होगया और मनही मन

भी बहुत कुछ भार उसी पर था । इसी लिये उसे कभी किसी बातको कमी न खलती थी और इस भातृ-समितिके लिये सब प्रकारके सामान वह बनायास ही जुटा लेता था । यही कारण था, कि उस पर किसीको कभी सन्देह भी नहीं होता था । परन्तु उस तहखानेमें रहनेके कारण जब डायटने देखा, कि बेरोनेस धर्मभैरवाका शरीर दिनों दिन खराब हुआ जाता है, तब उसने उसे बल्टन महलके दक्षिण-भागकी छतोंपर घूमनेकी आज्ञा देदी। इस तरह बेरोनेसको दो तीन बार वहाँ मनुष्योंने देख भी लिया, परन्तु सदा सफेद वस्त्र पहननेके कारण लोगोंने उसे भूत बेरोनेसकी आत्मा समझ लिया और इसी समझके भयके कारण कोई कुछ भी न बोला। अब फिर क्या था, थोड़े ही दिनोंमें यह खबर प्रान्त भरमें फैल गयी, कि बल्टन महलके दक्षिण भागमें प्रेत-लीला दिखायी दिया करती है। यह बात भी डायट की धर्मभैरवाके भागनेकी ही हुई और अब महलके दक्षिण भागकी ओर से रखनेका भी कोई कारण न रह सका। महलका दक्षिण भाग बिलकुल बन्द कर दिया गया और इस तरह धर्मभैरवाको स्वतन्त्रता पूर्वक उस भागमें घूमनेका अवसर मिल गया। परन्तु अब भी उसे साफ हवा न मिलती थी, इसलिये डायटने उसे जङ्गलमें घूमनेकी आज्ञा भी देदी जहाँ भी वह कई बार देखी गयी और इस तरह यह बात और भी पक्की हो गयी, कि बल्टन महलमें भूतोंका डेरा है।

अब पाठक सहजमें ही समझ सकते हैं, कि उस प्राचीन कमरेसे ही लौरा तथा बर्नरने जो सफेद भूत देखा था, वह असलमें क्या था और उसके एकाएक गायब हो जानेका यही कारण था, कि वह जरा भी सन्देह होते ही गुप्त राहसे तहखानेमें उतर जाती थी।

बेरोनेसके कैद होनेके आठ महीने बाद तीनों खार्ल-भाई भी उस समितिके सभासद बनाये गये। ये तीनों पीतलकी मूर्तिके आगे

आगे बलिदान पड़ने वाले मनुष्योंको बचाना आरम्भ किया। इसी तरह कितने ही मनुष्य बचाये गये और अन्तमें एक भ्रातृ-समिति ही स्थापित हो गयी। इसके बाद उन बचाये हुए मनुष्यों पर धार्मिक प्रभाव डालनेके लिये उसने ननों सा सफेद वस्त्र पहनाना और समयोचित दयार्द्र व्यवहार करना आरम्भ किया। अन्तमें उसके इसभावका इतना प्रभाव पड़ा था, कि ऊंचेसे ऊंचे दर्जेके स्त्री पुरुष भी उन किसानों तथा छोटे दर्जके मनुष्योंके साथ भी समान ही व्यवहार करने लगे और किसी प्रकारका प्रभेद न मालूम होने लगा। इसके अतिरिक्त धर्म-सेवाकी दया, सहानुभूति तथा कृपाने उन मनुष्योंका हृदय अपनी ओर इतना आकर्षित कर लिया, कि सभी उसके लिये प्राण देने और उसके एक इशारे पर सब प्रकारका काम करनेके लिये तय्यार होगये।

यह सफेद लेडी, जो अब घटनाक्रमसे धर्म सेवा प्रमाणित हो चुकी है, समय समय पर हावर्टसे उन लोगोंका समाचार पूछ लेती थी, जिनका उससे सम्बन्ध था, और इस तरह उसे बाहरके सब हाल मालूम हो जाया करते थे। सबसे अधिक खयाल उसे अपने पुत्र रोल्डफका था और उसकी चाल-चलनके विषयमें वह अधिक पूछताछ किया करती थी। इसके बादही उसे यह भी समाचार मिला कि 'जिटका' नामका कोई मनुष्य राजा मंगलकी कृपासे बहुत ही ऊंचे दर्जे पर पहुंच गया है। इतना सुनतेही उसे मालूम हो गया; कि यह वही मनुष्य है, जिसकी मूर्त्ति अभीतक वह भूल नहीं सकी है और जिसकी उन्नतिके लिये वह नित्यप्रति ईश्वरसे प्रार्थना किया करती है।

उसे भ्रातृ-समितिको हावर्ट ही सब प्रकारके भोजन पहुंचाता था, क्योंकि उसने परटनके ड्यूकको इस तरह अपने वशमें कर रखा था, कि केवल उसके घराऊ कामोंमें ही उसका अधिकार न था, बल्कि किसानोंसे अन्नकी पैदावार लेने और किलेकी देख रेख करनेका

इस तहखानेका यह गुप्त भेद यदि किसी तरह खुल जाता और किसी तरह इसकी तलवारोंका खटका जा पड़ता, तो यह बात कदापि छिपी न रह सकती, कि धर्मशीला अभीतक इसी तहखानेमें जीवित है और फिर हाराल्ड हृदय चूक धर्मशीलाको मारे बिना नहीं छोड़ता। तीसरे पोलकको दुर्गका इस इतना बड़ा, विस्तृत तथा भयानक था, कि उसके लोग दूसरे दूसरे देशोंमें भी घूमा करते थे और इस तरह दूसरे देशोंमें भाग जानेवाले कैदियोंका पता लग जाना कोई कठिन बात न थी। इसीलिये सब तरहसे सोच विचारकर यही निश्चित किया गया था, कि पोलककी मूर्तिके आगे बलिदानमें बनाये हुए मनुष्योंको अन्धेरे तहखानेमें ही रखना चाहिये।

इसी तरह बरसों बीत गये और अब हारार्टके हृदयमें धर्मशीलासे सम्बन्ध रखनेवाले भेद भारी मालूम होने लगे; क्योंकि अब उसकी वृद्धावस्था आ गयी थी और वह मन ही मन विचार करता था, कि सम्भव है, कि मेरी मृत्यु हो जाय और यह भेद छिपाही रहे। यह भेद और कुछ नहीं, केवल धर्मशीलाको मौतिका उपहार, जान जिटका तथा धर्मशीलाकी औरस जात कन्या थी, जो अबतक जीवित थी। अन्तमें यह भेद हारार्टने धर्मशीलासे कह दिया और यह भी बता दिया, कि उसकी कन्या केवल जीवित ही नहीं है, बल्कि उससे अत्यन्त निकट, केवल कई कोसोंकी दूरीपर रहती है। ओह! यह बात सुन धर्मशीलाके हृदयमें बहुत ही अधिक आनन्द हुआ। यदि इस समय हारार्ट धर्मशीलाको समस्त बनाये हुए मनुष्योंकी कुशल तथा अन्य कितने ही भेद समझाकर न रोकता, तो सम्भव था, कि धर्मशीला उसी समय ऐ जीवाको गले लगानेके लिये पिटरनकी झोपड़ीकी ओर दौड़ पड़ती और उसे जिटकाकी दी हुई अंगूठी देकर, प्रेममें जिटकाके पास भेज देती; परन्तु हारार्ट अच्छी तरह जानता था, कि जिटका

बलिदान देनेके लिये लाये गये थे ; परन्तु जल्लादोंकी कमी रहनेके कारण वे जल्लाद बना लिये गये, क्योंकि वे पुरुष, जो जल्लादका काम करते थे, एक एक कर क्रमशः मर गये थे।

जब भलटनके ड्यूकने उन तीनोंको जल्लादके कामका भार लेनेके लिये कहा, तब पहले तो उन लोगोंने इस कामका भार लेनेसे इन्कार किया, पर ड्यूवटने उन्हें इशारेमें ही स्वीकार करनेके लिये समझा दिया। उन लोगोंने उसकी बात मान ली और इस तरह जब उन लोगोंको यह मालूम हुआ, कि कैसी भयानक मृत्युसे वे बचा लिये गये हैं, तब उन लोगोंकी कृतज्ञताका वारापार न रहा और वे ड्यूवटको बड़ी ही श्रद्धा और भक्तिसे देखने लगे। इसके बाद वे सब शिकारोंको अवसर मिलते ही बचा लेते थे; परन्तु जब वे ड्यूक-सोमवर्ग और बैरोनेस-हेमलिनको न बचा सके, तब उन लोगोंके हृदयमें बड़ा ही कष्ट पहुंचा।

यह बात पाठकोंको आगे चलकर मालूम होगी, कि तीनों स्वार्ण-भाई किस तरह उस भयानक मृत्युके लिये पौतलकी मूर्त्तिके आगे लाये गये थे, क्योंकि उनके किस्सेसे सफेद महल तथा हेमलिन कैसलका बहुत बड़ा सम्बन्ध है। अब हमें यह बताना है, कि ड्यूवट तथा अर्मेनेगडा उन मनुष्योंको, जो मृत्युसे बचा लिये जाते थे, उसी महलमें क्यों रोक रखते थे और दूसरे देशमें क्यों न भाग जाने देते थे।

सबसे बड़ी बात तो यह थी, कि उन्हें उन मनुष्योंसे भेंट हो जानेका सन्देह था, जो इधर उधर बराबर घूमा ही करते थे और जो उन लोगोंको पकड़ लाये थे। यदि किसी तरह वे लोग पहचान कर पकड़ लिये जाते, तो सब दोष ड्यूवट खानसामापर मढ़ा जाता और फिर उसकी जान बचनी कठिन हो जाती। दूसरे भलटन-महलके

लिये इस भाईके मरते हावर्डने धर्मनैष्ठाको यह बात कह दी। धर्म-नैष्ठाका निज नाम रखनेके लिये हावर्ड बराबर उसे एंजेलोका समाचार पुछवाया करता था और सदा इस बातपर दृष्टि रखता था, कि धर्मनैष्ठाकी कन्याको किसी प्रकारका कष्ट ना नहीं पहुं-चता। इसी तरह हावर्डको यह भी मालूम हो गया था, कि जिसकरनेने उस कन्याका नाम अपने एक मित्र पादड़ीके सम्मानके लिये एंजेलो ही रख दिया है, क्योंकि उस पादड़ीका नाम एंजेलो था। उसी उच्च, हृदयी तथा धार्मिक पादड़ीसे एंजेलोने उत्तम गुणोंकी शिक्षा पायी थी और उसी सुन्दर जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे भेद मालूम हुए थे, जिन्होंने उसके हृदयको उदार तथा धर्मात्मा बना दिया था। यद्यपि वह पादड़ी मर गया; परन्तु उसकी शिक्षाका प्रभाव एंजेलोके अन्तःकरणमें वर्तमान रह गया।

ये सब बातें दुःखिनी धर्मनैष्ठा बड़े प्रेमसे सुना करती थी; परन्तु इसके कुछ ही दिन बाद हावर्डको मालूम हुआ, कि रोडल्फकी दृष्टि एंजेलोपर पड़ी है और वह उससे मिलनेके लिये बराबर उसकी झोंप-ड़ीके चारों ओर जङ्गलमें चक्कर लगाया करता है। यह बात सुनते ही उसे विश्वास हो गया, कि रोडल्फका अपनी बहिनपर ही अनुचित प्रेम उत्पन्न हुआ है। हावर्डने यह बात भी धर्मनैष्ठासे कह देनी उचित समझी और बहुत देरतक आपसमें विचार करने बाद यह स्थिर हुआ, कि एक पत्र लिखकर एंजेलोको इस विषयसे सावधान कर दिया जाये। इसी विचारके अनुसार बेरोनेस धर्मनैष्ठाने एक पत्र लिखा और उसे एक मखमली थैलीमें बन्दकर एंजेलोके पास भेज दिया।

इस पत्रके भेजनेके एक वर्ष बाद हावर्डने एक दिन धर्मनैष्ठासे कहा, कि उसकी लड़कीको रोडल्फने शाही कमरेमें कैद किया है। यह घटना सुन बेरोनेस धर्मनैष्ठा बहुत ही घबड़ा उठी;

जिस प्रकृतिका मनुष्य है; उससे इन सब बातोंका पूरा पूरा पता लगाये बिना वह कदापि चुप नहीं रह सकता और इस तरह पीतलकी मूर्त्तिका भेद, उसके बलिदानसे इतने मनुष्योंका बचाये जाना आदि सभी बाते खुल जातीं और फिर हावर्ट तथा अर्मेनेल्डा दोनोंकी ही जान बचनी कठिन हो जाती। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कि जिन मनुष्योंकी जाने इस तरह बचाई गई थीं, वे भी फिर मृत्यु-मुखमें जा पड़ते। अस्तु, ये बातें विचारकर हावर्टने अर्मेनेल्डापर इतना असर डाला, कि वह एक ठण्ढी सांस लेकर आसू बहाती हुई चुप रह गयी। अस्तु।

जब अर्मेनेल्डाके गर्भसे सुन्दरी ऐञ्जोला उत्पन्न हुई थी, तब वह घटना भलीभांति गुप्त रखी गयी थी और हावर्टको यह आज्ञा मिली थी, कि यह कन्या ऐसे मनुष्यको सौंप दी जाये, जो यह जाननेकी इच्छा भी न प्रकट करे, कि यह किसकी कन्या है। इसी विचार और आज्ञाके अनुसार हावर्टने ऐञ्जोलाको एक गरीब स्त्रीके हाथोंमें दे दिया, परन्तु कुछ ही दिनों बाद उसने उसे विल्डनके सुपुर्द कर दिया। विल्डन तथा उसकी स्त्रीने निःसन्तान रहनेके कारण बड़े ही प्रेमसे ऐञ्जोलाका लालन-पालन किया और कुछ ही दिन बाद उस स्त्रीकी मृत्यु हो जानेके कारण विल्डनसे भी ऐञ्जोलाके माता पिताका भेद बिल्कुल ही छिपा रह गया और इस भेदका जाननेवाला केवल हावर्टके दूसरा कोई न रहा। अर्मेनेल्डाकी माताने उसकी पुत्रीका मृत्यु-समाचार केवल उसे धोखा देनेके लिये कहा था और जब वह ब्याह कर अरटन-महलमें आई, तो हावर्टने भी अर्मेनेल्डासे यह कहना उचित न समझा, कि उसकी कन्या वर्त्तमान है और जिसे अपने जीवनमें वह कदापि देख नहीं सकती।

परन्तु अन्तमें अपनी मृत्यु होजाने तथा इस भेदके सदाके लिये

लिये रह जानेसे भरसे हार्टलेने धर्मनिष्ठाको यह बात कह दी। धर्म-निष्ठाका चित्त शान्त रखनेके लिये हार्टले बराबर उसे एंजीलाका समाचार सुनाया करता था और सदा इस बातपर दृष्टि रखता था, कि धर्मनिष्ठाकी कन्याको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं पहुंचता। इसी तरह हार्टलेको यह भी मालूम हो गया था कि विल्सनने उस बालाका नाम अपने एक मित्र पादड़ीके सम्मानार्थ लिये ही एंजीला ही रख दिया है, क्योंकि उस पादड़ीका नाम ही एंजीलो था। उसी उदार-हृदयी तथा धार्मिक पादड़ीसे ही एंजीलाने उत्तम गुणोंकी शिक्षा पायी थी और उसे मनुष्य जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे भेद मालूम हुए थे, जिन्होंने उसके हृदयको उदार तथा महाशय बना दिया था। यद्यपि वह पादड़ी मर गया; परन्तु उसकी शिक्षाका प्रभाव एंजीलाके अन्तः-करणमें वर्त्तमान रह गया।

ये सब बातें दुःखिनी धर्मनिष्ठा बड़े प्रेमसे सुना करती थी; परन्तु इसके कुछ ही दिन बाद हार्टलेको मालूम हुआ, कि रोडल्फकी दृष्टि एंजीलापर पड़ी है और वह उससे मिलनेके लिये बराबर उसकी झोप-ड़ीके चारों ओर जङ्गलमें चक्कर लगाया करता है। यह बात सुनते ही उसे विश्वास हो गया, कि रोडल्फका अपनी बहिनपर ही अनुचित प्रेम उत्पन्न हुआ है। हार्टलेने यह बात भी धर्मनिष्ठासे कह देनी उचित समझी और बहुत देरतक आपसमें विचार करने बाद यह स्थिर हुआ, कि एक पत्र लिखकर एंजीलाको इस विषयसे सावधान कर दिया जाये। इसी विचारके अनुसार मेरीनेस धर्मनिष्ठाने एक पत्र लिख और उसे एक मखमली थैलीमें बन्दकर एंजीलाके पास भेज दिया।

इस पत्रके भेजनेके एक वर्ष बाद हार्टलेने एक दिन धर्मनिष्ठासे कहा, कि उसकी लड़कीको रोडल्फने अपने कमरेमें कैद किया है। यह घटना सुन मेरीनेस धर्मनिष्ठा बहुत ही घबड़ा उठी; क्योंकि

जिस प्रकृतिका मनुष्य है; उससे इन सब बातोंका पूरा पूरा पता लगाये बिना वह कदापि चुप नहीं रेह सकता और इस तरह पीतलकी मूर्त्तिका भेद, उसके बलिदानसे इतने मनुष्योंका बचाये जाना आदि सभी बाते खुल जातीं और फिर हावर्ट तथा अर्मनेण्डा दोनोंको ही जान बचनी कठिन हो जाती। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कि जिन मनुष्योंकी जाने इस तरह बचाई गई थीं, वे भी फिर मृत्यु-मुखमें जा पड़ते। अस्तु, ये बाते विचारकर हावर्टने अर्मनेण्डापर इतना असर डाला, कि वह एक ठण्ढी सांस लेकर आंसू बहाती हुई चुप रह गयी। अस्तु।

जब अर्मनेण्डाके गर्भसे सुन्दरी ऐंजोला उत्पन्न हुई थी, तब वह घटना भलीभांति गुप्त रखी गयी थी और हावर्टको यह आज्ञा मिली थी, कि यह कन्या ऐसे मनुष्यको सौंप दी जाये, जो यह जाननेकी इच्छा भी न प्रकट करे, कि यह किसकी कन्या है। इसी विचार और आज्ञाके अनुसार हावर्टने ऐंजोलाको एक गरीब स्त्रीके हाथोंमें दे दिया, परन्तु कुछ ही दिनों बाद उसने उसे विल्डनके सुपुर्द कर दिया। विल्डन तथा उसकी स्त्रीने निःसन्तान रहनेके कारण बड़े ही प्रेमसे ऐंजोलाका लालन-पालन किया और कुछ ही दिन बाद उस स्त्रीकी मृत्यु हो जानेके कारण विल्डनसे भी ऐंजोलाके माता पिताका भेद बिल्कुल ही छिपा रह गया और इस भेदका जाननेवाला केवल हावर्टके दूसरा कोई न रहा। अर्मनेण्डाकी माताने उसकी पुत्रीका मृत्यु-समाचार केवल उसे धोखा देनेके लिये कहा था और जब वह ब्याह कर अलटन-महलमें आई, तो हावर्टने भी अर्मनेण्डासे यह कहना उचित न समझा, कि उसकी कन्या वर्त्तमान है और जिसे अपने जीवनमें वह कदापि देख नहीं सकती।

अपनी मृत्यु होजाने तथा इस भेदके सदाके लिये

लिये इस भावसे अपनी शादीमें धर्मभैयाओंको यह बात कह दी। ए
भिक्षाका चित्त शान्त रखनेके लिये हाबर्ट बराबर उसी ऐंजोला
समाचार पूछता रहता था और सदा इस बातपर दृष्टि रख
था, कि धर्मभैयाओंकी भरकाकी किसी प्रकारका कष्ट ना नहीं पा
सका। इसी तरह हाबर्टको यह भी मालूम हो गया था, कि विशु
इस कारागारमें आता उस एक भिन्न पादड़ीके बन्धकके लिये ऐ जो
ही रख दिया है, क्योंकि उस पादड़ीका नाम ऐ जोला था। उसी प्र
इरादों तथा धार्मिक पादड़ीसे ऐंजोलाने उत्तम गुणोंकी शिक्षा पा
थी और उसी मनुष्य जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे भेद मालूम हुए थे, जिन्
उसके हृदयको उदार तथा सहायक बना दिया था। यद्यपि
पादड़ी मर गया, परन्तु उसकी शिक्षाका प्रभाव ऐंजोलाके च
प्रकृतमें वर्णनातीत रह गया।

वे सब बातें छिपकी धर्मभैयाएं बड़े प्रेमसे सुना करती थीं, पर
इसके कुछ ही दिन बाद हाबर्टको मालूम हुआ, कि रोडल्फ कोड़
ऐंजोलापर पड़ी है और वह उससे मिलनेके लिये बराबर उसकी गी
कोठी जाती और आसपासमें चक्कर लगाया करता है। यह बात सु
को उसी विश्वास हो गया, कि रोडल्फका अपनी भक्तिनपर ही अनुरा
ग न उत्पन्न हुआ है। हाबर्टने यह बात भी धर्मभैयाओंसे कह दे
उचित समझी और बहुत देरतक आपसमें विचार करनेके बाद य
निश्चय हुआ, कि एक पत्र लिखकर ऐंजोलाको इस
कर दिया जाये। इसी विचारके अनुसार मेरीनेस धर्म
किया और उसे एक मकानकी पेटीमें बन्दकर ऐंजोलाके

इस पत्रके भेजनेके एक वर्ष बाद हाबर्टने एक दिन
कहा, कि उसको लड़कीको रोडल्फने अपने कमरेमें
— — — मेरीनेस धर्मभैया बहुत ही घबड़ा

जिस प्रकृतिका मनुष्य है; उससे इन सब बातोंका पूरा पूरा पता लगाये बिना वह कदापि चुप नहीं रह सकता और इस तरह पीतलकी मूर्त्तिका भेद, उसके बलिदानसे इतने मनुष्योंका बचाये जाना आदि सभी बातें खुल जातीं और फिर हावर्ट तथा अर्मेनेगडा दोनोंको ही जान बचनी कठिन हो जाती। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कि जिन मनुष्योंकी जानें इस तरह बचाई गई थीं, वे भी फिर मृत्यु-मुखमें आ पड़ते। अस्तु, ये बातें विचारकर हावर्टने अर्मेनेगडापर इतना असर डाला, कि वह एक ठण्ढी सांस लेकर आसू बहाती हुई चुप रह गयी। अस्तु।

जब अर्मेनेगडाके गर्भसे सुन्दरी ऐलीला उत्पन्न हुई थी, तब वह घटना भलीभांति गुप्त रखी गयी थी और हावर्टको यह आज्ञा मिली थी, कि यह कन्या ऐसे मनुष्यको सौंप दी जाये, जो यह जाननेकी इच्छा भी न प्रकट करे, कि यह किसकी कन्या है। इसी विचार और आज्ञाके अनुसार हावर्टने ऐलीलाको एक गरीब स्त्रीके हाथोंमें दे दिया, परन्तु कुछ ही दिनों बाद उसने उसे विलडनके सुपुर्द कर दिया। विलडन तथा उसकी स्त्रीने निःसन्तान रहनेके कारण बड़े ही प्रेमसे ऐलीलाका लालन-पालन किया और कुछ ही दिन बाद उस स्त्रीकी मृत्यु हो जानेके कारण विलडनसे भी ऐलीलाके माता पिताका भेद बिल्कुल ही छिपा रह गया और इस भेदका जाननेवाला केवल हावर्टके दूसरा कोई न रहा। अर्मेनेगडाकी माताने उसको पुत्रीका मृत्यु-समाचार केवल उसे धोखा देनेके लिये कहा था और जब वह ब्याह कर अरटन-महलमें आई, तो हावर्टने भी अर्मेनेगडासे यह कहना उचित न समझा, कि उसकी कन्या वर्त्तमान है और जिसे अपने जीवनमें वह कदापि देख नहीं सकती।

परन्तु अन्तमें अपनी मृत्यु होजाने तथा इस भेदके सदाके लिये

लिये रख जानेके पहले डाक्टरने धर्मनिष्ठाको यह बात कह दी। धर्म-निष्ठाका चित्त शान्त रखनेके लिये डाक्टर बराबर उसे ऐंजेलाका समाचार सुनाया करता था और सदा इस बातपर दृष्टि रखता था, कि धर्मभ्रष्टाकी कन्याको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं पहुंचता। इसी तरह डाक्टरको यह भी मालूम हो गया था, कि विवडनने उस कन्याका नाम अपने एक मित्र पादड़ीके सम्मानके लिये ऐंजेला ही रख दिया है, क्योंकि उस पादड़ीका नाम ऐंजेलो था। उसी उस, इन्द्रियों तथा धार्मिक पादड़ीसे ऐंजेलाने उत्तम गुणोंकी शिक्षा पायी थी और उसे मनुष्य जीवन सम्बन्धी ऐसे ऐसे भेद मालूम हुए थे, जिन्होंने उसके हृदयको उदार तथा महाशय बना दिया था। यद्यपि वह पादड़ी मर गया; परन्तु उसकी शिक्षाका प्रभाव ऐंजेलाके अन्तकरणमें वर्त्तमान रह गया।

ये सब बातें दुखिनी धर्मनिष्ठा बड़े प्रेमसे सुना करती थी; परन्तु इसके कुछ ही दिन बाद डाक्टरको मालूम हुआ, कि रोडल्फकी दृष्टि ऐंजेलापर पड़ी है और वह उससे मिलनेके लिये बराबर उसकी झोपड़ीके चारों ओर चक्करमें चक्कर लगाया करता है। यह बात सुनते ही उसे विश्वास हो गया, कि रोडल्फका अपनी बहिनपर ही अनुचित प्रेम उत्पन्न हुआ है। डाक्टरने यह बात भी धर्मनिष्ठासे कह देनी उचित समझी और बहुत देरतक आपसमें विचार करने बाद यह स्थिर हुआ, कि एक पत्र लिखकर ऐंजेलाको इस विषयसे सावधान कर दिया जाये। इसी विचारके अनुसार बेरोनेस धर्मनिष्ठाने एक पत्र लिखा और उसे एक मखमली थैलीमें बन्दकर ऐंजेलाके पास भेज दिया।

इस पत्रके भेजनेके एक वर्ष बाद डाक्टरने एक दिन धर्मनिष्ठासे कहा, कि उसकी लड़कीको रोडल्फने अपने कमरेमें कैद किया है। यह घटना सुन बेरोनेस धर्मनिष्ठा बहुत ही घबड़ा उठी, क्योंकि

उसे उसके प्रतिकारका कोई उपाय न सूझता था। वह नहीं चाहती थी, कि ऐ जीला और रोडल्फ दोनों भाई बहिनमें काममय प्रेम उत्पन्न हो; परन्तु उस ग्रादी कमरेसे उसे एकदम भगा देना कोई ऐसा काम न था, जो रोडल्फको बिना सन्देह हुए पूरा हो जाता। और रोडल्फको जरा सा सन्देह होते ही वह उसके प्रत्येक भाग को तलाश लेता तथा तहखानेका गुप्त भेद भी, जो अभी तक उससे छिपा हुआ था, उसके सामने प्रकट हो जाता। इन्हीं विचारों तथा घबड़ाहटमें तीन दिन और भी बीत गये। यद्यपि अर्मेनेगडा गुप्त पथसे बराबर उस कमरे तक जाकर ऐ जीलाके कमरेके बगलमें हो खड़ी रहती थी, परन्तु उसके छुटकारेका कोई उपाय नहीं कर सकती थी। अन्तमें वह दिवस आ पहुंचा, जब कि रोडल्फने उसके पास जाकर उसे बहुत तरहसे धमकाते, प्रलोभन दिखाते तथा समझाते हुए बहुत सी बाते कहीं। ये बातें भी अर्मेनेगडाने सुन लीं।

आह! इन बातोंने अर्मेनेगडाके हृदयपर इतना प्रभाव जमाया, कि वह आपेसे बाहर हो गयी। घबड़ाहट, चिन्ता, तथा मानसिक वेदनाने उसकी अवस्था खराब कर दी और वह बड़े ही भयसे ऐ जीलाके छुटकारेका उपाय सोचने लगी। अन्तमें यही स्थिर हुआ, कि जो होना हो सो हो, ऐ जीलाको भगाना ही होगा, और इसी विचारके अनुसार उस रात्रिमें ऐ जीला उस ढंगसे भगायी गयी, जो पहले ही वर्णन किया जा चुका है।

अर्मेनेगडाने ऐंजीलाको भगाकर रोग्रनवर्गके ड्यूकके यहां ही भेजना स्थिर किया था, परन्तु उसी समय हावर्टको यह समाचार मिला, कि जिटकाने अर्मेनेगडाके भाई ड्यूक-रोग्रनवर्ग, उसके पति ड्यूक ब्रटन तथा सोमवर्गके मार्किसको प्रेगके महलमें कैद कर रखा है। इसलिये हावर्टने यह सलाह दी, कि ऐ जीला ही उनके उद्धारके लिये

भेज दी जाये; क्योंकि हावर्टको विश्वास हो गया था, कि ये लोग यह काम अच्छी तरह पूरा कर सकेंगे और इसका नतीजा भी यह होगा, कि इस पीतलकी मूर्तिसे इसका नाम हो जायगा।

अब तक किसी धर्मनिष्ठाके सम्बन्धमें थोड़ी ही बातें और लिखनी रह गयी हैं, अतः, अब हम उस घटनाकी ओर झुकती हैं, जो रोडरिक और एञ्जोलाइनके विवाहके समय हुई थी। पाठकोंको स्मरण होगा, कि उस घटनाके एक दिन पहले हावर्ट खानसामा उस कमरेके बगलवाले कमरेमें छिपा था, जिसमें ड्यूक एल्टन तथा पादड़ी बातें कर रहे थे और बहुत देर तक एञ्जोलाइनके साथ रोडरिकके विवाहके सम्बन्धमें वादविवाद हुआ था। उस समय जो कुछ कहा गया था, उसीसे हावर्ट अच्छी तरह समझ गया था, कि रानी एञ्जोलाइन अपनी सतीत्व रत्नसे वंचित हो गयी है। निःसन्देह उसका यह रत्न, जो सब रत्नोंमें श्रेष्ठ है, पादड़ीने नाश कर दिया था, और यही कारण था, कि ड्यूक-एल्टन भी अपने पुत्रके साथ उसका विवाह होनेमें राजी न था; परन्तु पादड़ीके बहुत जोर देनेपर तथा धमका दबाव देकर उसको बात भी माननी पड़ी थी। ये सब बातें हावर्टने धर्मनिष्ठासे कह दी थीं और यही सबब था, कि उस समय उसका चेहरा बहुत ही दुःखित तथा चिन्तित था, जब बर्नार्डके दोनों पिताने धर्मनिष्ठासे उसके दुःखित रहनेका कारण पूछा था। अस्तु यह समाचार सुन धर्मनिष्ठाने यह विवाह होने देना उचित नहीं समझा और इसका उपाय भी सोच लिया गया। परन्तु आह! उस समय धर्मनिष्ठाके ध्यानमें ही यह बात नहीं आयी, कि इस उपायका परिणाम इतना भयानक और उसीके लिये दुःखप्रद हो उठेगा। असलमें यह उपाय उन मनुष्योंको घबड़ा देने तथा उनका विचार बदल देनेके लिये किया गया था; जिनका सम्बन्ध उस विवाहसे था। और इसीलिये उस गिर्जेके पीछे की राहमें, जो अल्टन-महलके

तहखानेमें गयी थी, उन पीतलकी मूर्त्तिके दलसे बचाये हुए एक रासायनिक मनुष्यने एक प्रकारकी लाल आग, जो बारूद मिलाकर बनायी गयी थी, छुड़वादी और,उन स्वार्ल-भाइयोंमें से एक इस तरह चिल्ला उठा, जिस तरह मृत्युकालमें मनुष्य चिल्ला उठता है।

यद्यपि इस उपायसे काम निकल गया; परन्तु यह ढङ्ग ठीक नहीं उतरा क्योंकि भयके कारण बोहेमियाकी अभागिनी रानी ऐलीजावेथ परलोक सिधार गयी और यह दशा देख, अर्मेनेगडा निराश तथा दु:खित हृदयसे अपने अन्धकारमय तहखानेमें लौट आयी। उसी समयसे अर्मेनेगडाका हृदय बहुत ही दु:खित रहने लगा। इसके पहले उसके हृदयपर बैरोनेस तथा ड्यूक-डीमवर्गकी भयानक मृत्यु का- जो धक्का पहुंचा था, उसका प्रभाव अभी दूर न हुआ था, कि एकाएक यह दूसरा सदमा पहुंचा और इसने उसका शरीर तथा कलेजा एकदमसे तोड़ दिया। इसके बाद अल्टन-महलपर आक्रमण आरम्भ हुआ, और,अल्टन-महलके अधिवासी भूखों मरने लगे। इन सब घटनाओंने एकत्र होकर अर्मेनेगडाके हृदयपर इतना प्रभाव जमाया, कि उसे वह रहकर ज्वर आने लगा और थोड़े ही दिनोंमें वह परलोक सिधार गयी। अब भ्रातृ-समिति के स्त्री और पुरुष सभासदोंको ऐसा मालूम होने लगा मानों कोई ईश्वरीय दूत उन लोगों को निराशामें छोड़ कर चल दिया हो। इसके बाद उस समय उनके जीमें जो आया; जब सरदार-जिटका और ऐ लीला उस तहखानेमें आ पहुंचे।

इस तरह अल्टन-महलके गुप्त भेद तथा उस सफेद स्त्री अर्मेनेगडा के सम्बन्धकी कुल घटनायें पाठकोंपर प्रकट कर दी गयीं।



सत्तानवेवां परिच्छेद।

जिटकाकी उदारता तथा न्याय।

हम पहले कह चुके हैं, कि पुबरकी पुरानी अल्टन महलकी बुर्जी-दर उस समय वीरान सी जान पड़ती थी, जब कि जिटका, हावर्ट तथा कौण्ट रोशनबर्ग, ये तीनों विगत घटनाओंपर विचार करनेके लिये एकत्र हुए थे। इस तरह तीनोंने अपनी बीती घटनायें कह डालीं।

परन्तु इसके पहले, कि हम किसीके सिलसिलेकी ओर झुकें, हमें दो तीन छिपे हुए गुप्त भेद प्रकट कर देने आवश्यक मालूम होते हैं, जिससे कि आगे की घटनायें पाठक भलीभांति समझ सकें।

सबसे पहले ध्यान देनेकी बात यह है, कि जिटकाके इतने उत्तम काम देखकर तथा कई बार उससे मुलाकात होनेपर भी कौण्ट रोशनबर्ग अथवा ड्यूक अल्टन किसीके मनमें भी यह गुमान न हुआ, कि यह वही मनुष्य है, जो इतने दिनों तक एक सामान्य वैद्य था और जिसे सभी बहुत ही प्यार करते थे। न उन लोगोंने उस समय ही इसे पहचाना, जिस समय वह प्रेमकी किलेमें बैठी हुई कौन्सिलमें घुस गया था, कि यह वही लेकटिज है, जो अब घटनावश एक ओरसे वीर तथा रंगमें भरा हो गया है।

इसके सिवा जिस समय सरदार-जिटकाने ड्यूक-अल्टन, कौण्ट रोशनबर्ग तथा मार्किस लोमबर्गको, प्रिन्सेस एलोनावेय तथा उसका खजाना उसके हवाले करनेके समय तक कैदमें रखने और निश्चित समयपर पता न मिलनेपर इन्हें मार डालनेकी आज्ञा दी, उस समय यह भी निश्चित था, कि अर्नेस्टा की वजहसे जिटकाके हृदयमें कुछ विद्वेषाग्नि इन तीनोंकी ओरसे अवश्य ही उत्पन्न हो गयी थी; क्योंकि वह अच्छी

तरह जानता था, कि ये ही दोनों मनुष्य हैं, जिन्होंने मर्मैनेयडाके प्रेमसे उसे वञ्चित किया है। यद्यपि जिटका बहुत ही उचित पथपर चलनेवाला मनुष्य था और अपने स्वार्थके लिये किसीसे बदला नहीं लिया चाहता था, न अपने निज-स्वार्थके लिये उन्हें कैद ही किया चाहता था, तथापि जब उसे उसके भाई और पतिको दण्ड देनेके लिये यह मौका मिल गया था, तब जिस तरह मनुष्य-हृदयमें प्रकृतिका प्रभाव पहुंच जाता है, उसी तरहकी दशा जिटकाकी भी होगई थी।

एक बात और भी है, जिसपर ध्यान देनेकी परम आवश्यकता है और जिसका सम्बन्ध कौण्ट-रोग्रनबर्गसे है, जिसे आज बीस वर्ष पहले ही धोखा देकर कहा गया था, कि उसकी बहन मर गयी है। बात यह थी, कि कौण्ट रोग्रनबर्गने अपने बहनोई पर पूरी तरह विश्वास कर लिया था, क्योंकि उसने उसे कहला भेजा था, कि मर्मैनेयडाको प्लेगके समान ही एक रोग हो गया था, जिससे दो घण्टेके भीतर ही उसकी मृत्यु हो गयी। साथ ही अल्टनके ड्यूकने जिटका और मर्मैनेयडासे सम्बन्ध रखने वाली सब घटनायें इस तरह छिपा रखी थीं, कि उसका एक अक्षर भी कौण्ट रोग्रनबर्ग तथा उसके परिवार वालोंके कान तक न पहुंच सका था। इसके सिवा उसने विवाहके बाद उससे किसी प्रकारका बुरा व्यवहार भी न किया था। यद्यपि ड्यूक-अल्टनका हार्दिक प्रेम उसपर न था, तथापि उसका व्यवहार उत्तम था और इन सब घटनाओंने एकत्र होकर कौण्ट-रोग्रनबर्गके हृदयमें किसी प्रकार-का सन्देह न उत्पन्न होने दिया।

अस्तु अब हम फिर अपने किस्सेके सिलसिलेकी ओर झुकते हैं।

सूर्यास्त हुए लगभग डेढ़ घण्टा बीत चुका था और उन तीनोंने जो कुछ करना था, वह निश्चय कर लिया था, अपनी-अपनी गत घटनायें सभी वर्णन कर चुके थे और एक दूसरेके हृदयका भाव अच्छी तरह

समझ गया था; इसलिये वह टैबोराइट-दलके सरदार जान जिटकाने अपना ध्यान दूसरी ओर फेरा और एक पेजको बुलाकर उससे पूछा, कि पीतलकी मूर्त्तिके सम्बन्धमें उसने जो आज्ञा दी थी, उसके अनुसार अभी काम हुआ है या नहीं? उत्तरमें उस पेजने कहा, कि प्रोको रकोनियरोंने उस भयानक वस्तुका नाश कर दिया है।

हाँ, सचमुच ही टैबोराइट दलवालोंने बड़ी निर्दयता और एकाग्रताके साथ उस मूर्त्तिको नाश कर दिया था। वे भयानक कमल पुष्प तोड़ डाले गये थे और वह खूबसूरत मूर्त्ति हथौड़ोंकी चोटसे टुकड़े टुकड़े कर भट्ठीमें गलानेके लिये डाल दी गयी थी, जो खासकर उसके लिये ही तय्यार की गयी थी। वे बड़ी और छोटी छुरियां लगी हुई पत्तियां अलग की गयी थीं और तीव्र अग्नि शिखाने पीतलकी मूर्त्तिको गलाकर धातुके रूपमें परिणत कर दिया था।

वायर्टके कथनानुसार उस भयानक दलसे सम्बन्ध रखनेवाले सब कागज पत्र लोहेके बक्सेसे निकालकर, जिसमें वे बड़ी हिफाजतसे रखे हुए थे, जला दिये गये थे और पीतलकी मूर्त्तिसे सम्बन्ध रखनेवाले सभी पदार्थों का नाश हो चुका था। इस तरह पीतलकी मूर्त्ति, उससे सम्बन्ध रखनेवाले कागज पत्र और उस दलकी स्मृतितक विलुप्त कर दी गयी थी और अब उनका नाम निशान तक न रह गया था।

अभी, जब जिटका, ह्यूबर्ट तथा कौण्ट-बोथनवर्गको यह समाचार मिला ही था, कि पीतलकी मूर्त्तिका अच्छी तरह अन्तिम संस्कार हो गया है, इसी समय सुन्दरी एंजीला उस कमरेमें आ पहुंची। उसके पिता तथा मामाने बड़े प्रेमसे उसका स्वागत किया और ह्यूबर्टने बड़ी भक्ति और सम्मानके साथ उठकर उसका आदर किया। इस समय उसका चेहरा पीला पड़ रहा था और यह उन भिन्न-भिन्न विचारोंका परिणाम था, जो उसके हृदयमें उठ रहे थे; क्योंकि

कितनी ही विषम घटनाओंने उसका कलेजा हिला दिया था। उसकी वह माता, जिसे उसने अपने जीवनमें केवल एक ही बार देखा था, परलोक सिधार चुकी थी और उसका वह भाई, (रोडल्फ) जिसे अब अपनी माताके समान ही वह प्रेम-दृष्टिसे देखा चाहती थी, मर चुका था। यदि खुशीकी बात थी, तो इतनी ही, कि उसे उसका पिता मिल गया था, उस भयानक मूर्त्ति तथा यन्त्रका नाम निशान नहीं था और इसीलिये अब उसके हृदयमें उस आस्ट्रियन बहादुरकी याद आ रही थी, जिसे वह प्यार करती थी; परन्तु परिवर्त्तनमें जिससे प्यार की जानेकी उसे आशा न थी।

जो कुछ हो, कुछ ही देर बाद एक दूसरे दृश्यने उसका ध्यान उस नाटककी ओरसे फेर दिया और ज्यांही सवेरेका जलपान समाप्त हुआ, त्योंही सरदार-जिटकाने उन मनुष्योंको बुला भेजा, जो पीतलकी मूर्त्तिका दण्ड पाकर अभीतक कैद भोग रहे थे। उनके सामने आते ही बड़ी प्रेममयी तथा दुःख भरी भाषामें जिटकाने उन्हें समझा दिया, कि अब वे सदाके-लिये स्वतन्त्र हो गये और अब अपने नातेदार, परिवार वाले तथा उन मनुष्योंके पास स्वच्छन्द जा सकते हैं, जिनसे उनका सम्बन्ध है। उनमें कितने ही मनुष्य ऐसे भी थे, जिनके परिवारवालोंका अब पता मिलना कठिन था और लावारिस होनेके कारण जिनकी सब सम्पत्ति या तो दूसरोंने हजम कर ली अथवा खरीद ली थी। इन सब बातोंको विचारकर तथा विगत घटनाओंकी उलझनोंको समझकर सरदार-जिटकाने आज्ञा दे दी, कि रानी-ऐलीजाबेथकी समस्त सम्पत्ति उन लोगोंमें बाट दी जाये।

जिटकाकी यह आज्ञा सुन सभीके आश्चर्य तथा प्रसन्नताका ठिकाना न रहा और उदार-हृदय द्यूकटकी देख-रेखमें सब धन उस भ्रातृ-समितिके सभ्योंमें बांट दिया गया। अर्नेस्के दोनों पैज लानेल

और कोमलाङ्गीपर दृष्टि पड़ी हो जिटकाने उन्हें अपने पास बुलाकर कहा, कि तुम्हारा मालिक बीमार होकर इस्कंदर महलमें पड़ा है। और! यद्यपि उन्हें अपने मालिकके इतना निकट रहनेका समाचार सुन बड़ी ही प्रसन्नता हुई; परन्तु उसकी बीमारीका समाचार सुन उनका जी दुःख भी हुआ। इसी कारणसे यद्यपि वे वहांसे शीघ्र विदा होनेके लिये घबड़ा रहे थे, तथापि जिटकासे इतना पूछे बिना रहनेको न रोक सकीं, कि ज़ोलानी तथा उसकी दोनों सहेलियां लिज्जा और बेटारिस इस समय कहां हैं?

यह प्रश्न सुनते ही जिटकाके हृदयपर कुछ चोट पहुंची और वह उन्हें इस सम्बन्धमें एक बात भी मुंहसे न निकालनेके लिये कहना ही चाहता था, कि एकाएक कमरेका दरवाजा खुल गया और एक टेबो-राइट-सिपाहीने भीतर आकर कहा,—"बेटो आयशा भाग गयी।"

हां, बात ऐसी ही थी; क्योंकि उस कोठरीको देखते ही, जिसमें वह कैद थी, यह अच्छी तरह मालूम हो गया, कि अपने बिछावनके परदोंकी सहायतासे वह बीस फुट ऊंची खिड़कीसे नीचे उतर गयी है। उस खिड़कीके नीचेकी भूमि दलदलके समान थी और उसपर उसके खूबसूरत पैरोंका चिह्न स्पष्ट दिखायी देता था, जिससे साफ मालूम होगया था, कि इसी राहसे वह भाग कर महलकी चहारदीवारीके पास पहुंची है। चहारदीवारीमें तोपके गोलोंने कितने ही बड़े बड़े छेद बना दिये थे, उन्हीं छेदोंका सहारा था, आयशा उस चहारदीवारीको पारकर भाग सकी। इन बातोंपर ध्यान देनेसे स्पष्ट मालूम होता था, कि आयशाने बड़े ही साहसका काम किया है।

इस घटनाने जिटकाका दिल हिला दिया और उसने अपने बहुतसे मनुष्य उसकी खोजमें इधर उधर भेज दिये, परन्तु साथ ही उन लोगोंको भलीभांति समझा दिया, कि यह घटना अच्छी तरह

छिपायी और गुप्त रखी जाये। इसतरह उसने अपना दुःख छिपानेका भी पूरा पूरा उद्योग किया और इस बातका पता किसीको भी लगने न दिया, कि इस घटनाने उसके हृदयपर कोई प्रभाव जमाया है।

इस बीचमें पिलीआवेथका खजाना अच्छी तरह बराबर बराबर भागोंमें बांट दिया गया था और अब जिटकाने उस महलके तहखानेके कैदियोंको अपने-अपने इच्छित स्थानोंपर जानेकी आज्ञा दे दी। पुरुषों तथा युवती स्त्रियोंके लिये घोड़ोंका प्रबन्ध कर दिया गया और बूढ़ी तथा अवस्था प्राप्त उन स्त्रियोंके लिये, जिनका शरीर खराब हो रहा था, गाड़ियां मगा दी गयीं। इस तरह दोपहर होते होते इस मातृ-समितिके सभी मनुष्य उस अलटन-महलसे चले गये, जहां उनका जीवन-इतने कष्टसे कटा था, जहां वे कबके मुर्दोंके समान हो कैद पड़े थे और जहांसे इस तरह छुटकारा मिलनेकी उन्हें स्वप्नमें भी आशा न थी।

जितने मनुष्य इस कैदसे छूटे थे, उनमें लानेल और कोनाडके समान किसीका भी घोड़ा तेज जाता हुआ न दिखायी दिया। इस समय उन दोनोंके घोड़े हवासे बातें करते जङ्गली झाड़ियोंकी चोटोंपर बिना ध्यान दिये हुए, सरपट इल्डर-महलकी ओर चले जाते थे। अस्तु, पीतलकी मूर्त्तिके कैदियोंको छोड़ देने बाद जिटकाका ध्यान अब उन शरीफों, उनकी स्त्रियों तथा उन पुरुषोंकी ओर आकर्षित हुआ; जिन्हें उसने अलटन-महलमें कैदकर रखा था। इन पुरुषोंमें जिनका सम्बन्ध पीतलकी मूर्त्तिसे था और जिन्हें डावटेने बताया था, कि ये पीतलकी मूर्त्तिके शपथ ग्रहण किये हुए सेवक हैं, उन्हें जिटकाने तुरत ही आस्ट्रियामें चले जाने और फिर कभी बोहेमियामें पैर न रखनेकी आज्ञा दे दी, साथ ही उन्हें समझा दिया, कि अब वे यदि

कहेगा। इन बातोंको छोड़ देनेके बाद उसने उन शर्तोंको पास देखकर, जिन्हें उसने पेश कर रखा था बोहेमिया इसी पल त्याग देनेकी आज्ञा दे दी और कह दिया, कि अगर यदि कभी बोहेमियाके प्रजा तथा देशमें दिखायी दिये, तो उन्हें फांसीकी सजा दी जायेगी; परन्तु उसमें इन पादड़ी, भिक्षु, फकीर तथा सिपाहियोंको एकदम क्षमाकर दिया, जिन्होंने केवल राजतन्त्र वालोंका साथ दिया था।

इतनी देरमें जिस्का भी इस सम्मेलनमें आ पहुंचा; क्योंकि पहले ही लिखा जा चुका है, कि उसे बुलानेके लिये भी मनुष्य भेजा गया था। उसके आते ही लोगोंने उसका बड़ा सत्कार किया और समस्त गत घटनायें उसे सुना दीं।

परन्तु अभी जिटका ऊपर कहे हुए कामकर निश्चिन्त भी हुआ था, कि इसी समय एक जासूस दौड़ता हुआ आ पहुंचा और बड़ी ही घबड़ाहटसे जिटकाके पास जाकर बोला,—"पोलैण्डके जर्मन-अधिवासियोंने बहुत बड़ी सेना लेकर बोहेमियापर चढ़ाई कर दी है और प्रजा-तन्त्र देशको वापस लिगिटके सुपुर्द करनेके लिये बड़ी ही तेजीसे प्रेगकी ओर बढ़ते चले आ रहे हैं।"

यह सुन जिटकाने एक क्षणका समय भी नष्ट करना उचित न समझा और एकबार अपनी कन्याको गले लगा, उसे फिर विल्डनके सुपुर्द कर दिया तथा अपनी बहादुर सेनाको एकत्र कर जर्मन आक्रमण कारियोंकी ओर चल पड़ा।

जानेसे पहले उसने एक मजबूत सेना दल अल्टन महलकी रक्षाके लिये भी छोड़ दिया और अब उस महलकी मालकिन लेडी ऐञ्जीला-जिटका हुई।

जिटकाकी उदारता, दयालुता तथा बहादुरीने कौण्ट-रोजनबर्गका ध्यान भी राज-तन्त्रसे हटाकर प्रजा-तन्त्रकी ओर फेर दिया था।

लिये वह भी जिटकाके साथ ही अपने प्रजा तंत्र देशको रक्षा करनेके इरादेसे, भाततायी कारियोंको राकनेके लिये चल पडा।

परन्तु अरुटनका ड्यूक उसी महलमें कैद रहा, जो अबतक उसका महल ही कहलाता था, और जिसे अपने भयानक कर्मोंके कारण उसने इस दुर्दशा पर पहुंचा दिया था।

अट्टानवेवां परिच्छेद ।

हुल्डर-महलमें हमारा उपन्यास नायक ।

ऐ जोलाके चले जाने बाद अर्नेस्टको अपना समय बिताना बड़ा ही भार मालूम होने लगा। समस्त दिन वह ऐ जोलाकी सज्जनता, उसके उत्तम व्यवहार, वीरता तथा दयालुतापर विचार करता हुआ अपनी खाटपर पडा रहा, और ज्यों ज्यों अपनी उस एकान्त कोठड़ीमें, जिसमें बीमारीके कारण वह पड़ा हुआ था, इन विषयोंपर विचार करता गया, त्यों त्यो उसके दुःख और चिन्ताकी मात्रा बढती ही गयी। उस सुन्दरीके वियोगके कारण, जिसकी आवाज सदा उसके कानोंमें संगीत सी गूंजा करती थी और आखें सदा उसकी ओर टकटकी लगाये देखा करती थीं, इस समय उसे बड़ा ही कष्ट हो रहा था। यद्यपि धर्मात्मा बर्नार्ड कई घण्टो तक उसके पास बैठकर उसका जी बहलाता रहा; परन्तु उस वृद्ध मनुष्यकी बातें उसके सन्तप्त हृदयपर अपना प्रभाव न जमा सकीं।

इसी तरह सन्ध्या हो गयी। रात्रिने अपनी घोर नीले रंगकी चादर समस्त जगत्पर डाल दी और फिर चमकीला निर्मल चन्द्रमा उदय हो गया। अब सर अर्नेस्टको लाचार हो, सोनेके लिये अपनी आखें बन्द करनी पड़ीं; परन्तु जितने स्वप्न उसने देखे, सभीमें उसे

हेलोनाकी ही दिखाई देती रही। एकबार उसने देखा, कि एक स्वर्गीय कुञ्ज उसी स्थानपर खड़ा है, जहां वह बैठा हुआ है, और उस स्वर्गीय कुञ्जके पास भी उसे हेलोनाकी सुन्दर मूर्ति दिखायी दी। दूसरी बार उसने देखा, कि माथेपर ताज पहने तथा अन्यान्य सुन्दर रत्न आभूषणोंसे सुसज्जित कोई देवी प्रतिमा उसके पास खड़ी है; परन्तु ज्योंही उसने दृष्टि उठाकर उसके चेहरेकी ओर देखा, त्योंही उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो वह चेहरा उसकी प्यारी हेलोनाका ही है। यह देखकर ज्योंही वह मुस्कराया, त्योंही उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो वह देवी-मूर्ति भी उसकी ओर देखकर मुस्कराई है। इस तरह हेलोनाकी मूर्ति ही उसके सब स्वप्नोंमें नायिकाका वेश बनाये रही और उसका यह परिणाम हुआ, कि उसका मुर्झाया हुआ चेहरा फिर प्रफुल्लित हो उठा और उसकी सन्तप्त आत्मा शान्त हो गयी।

सवेरे जब अर्नेस्टकी आंखें खुलीं, तब सूर्य देव उदय हो चुके थे। आज वह कलकी अपेक्षा अधिक प्रसन्न, उत्साहित तथा बलवान मालूम होता था। कुछ देर बाद कसाई भी उस कमरेमें आ पहुंचा और अर्नेस्टके हाथमें एक पत्र देकर बोला,—"एक मनुष्य यह पत्र लेकर बहुत सवेरे ही आया था; परन्तु आप घोर निद्रामें सो रहे थे, इसलिये मैंने आपको जगाना उचित न समझा। वह मनुष्य अपने साथ एक बड़े टोकरेमें बहुतसे ऐसे सामान भी लेता आया है, जिनकी रोगी मनुष्योंको आवश्यकता पड़ा करती है, और वह इसी-लिये अभी तक बैठा हुआ है, कि शायद इन चीजोंके भेजने वालेको आप कोई उत्तर भी देंगे।"

अर्नेस्टने वह पत्र खोल डाला, जो लाल रेशमी फीतेसे बंधा हुआ था और जिसपर लाल मोहर पड़ी हुई थी। उसमें ये बातें लिखी थीं ——

"मैं, टेरीराइट-दलका सरदार, ये पदार्थ उस मनुष्यके लिये भेजता हूं, जिसका नाम कारणवश मैं नहीं लिया चाहता। सम्भव है, कि किसी तरह यह पत्र उस मनुष्यके हाथमें न पड़कर, जिसके लिये ये भेजा गया है, किसी दूसरेके हाथोंमें पड़ जाये।

"बहुत सी घटनायें घटी हैं, कितनी ही आश्चर्यजनक बातें मालूम हुई हैं और बहुतसे छिपे हुए भयानक भेद खुल गये हैं। राज तलका नाश हो गया है। अल्टन-महल मेरे अधिकारमें है और उस महलके तहखानेमें छिपा हुआ, भयानक भेद भी प्रकट हो गया है। परन्तु ये बाते और ये घटनाये उतनी आनन्दवर्द्धक नहीं है, जितनी कि एक नवीन बात मुझे मालूम हुई है। अर्थात् सुन्दरी ऐजीला खास मेरी ही कन्या है।

"अति शीघ्रतामें उससे आपका जो कुछ हाल सुना है, उससे मालूम हुआ है, कि आप बीमार होकर हलडर-महलमें पड़े हैं। यह निश्चित है, कि ऐजीला वह भेद नहीं जानती, जिसका सम्बन्ध आपसे है और न मैं उसे यह भेद उस समय तक कहूंगा ही, जब तक, कि आप बोहेमियाके बाहर न हो जायगे, इसलिये आपसे प्रार्थना है, कि आप शीघ्र ही हलडर महल छोड़कर अल्टन-महलमें, जहांसे यह पत्र लिखा गया है, चले आवें। यहां आपको भली प्रकारसे सेवा-सुश्रुषा तथा चिकित्सा हो सकेगी और आपको आराम मिलेगा। परन्तु इसके विपरीत यदि आप अपने देशमें जानेके लिये बड़े ही उत्सुक हों, तो लिखे, आपके जानेको सब प्रकारसे सुविधा कर दी जायगी, जिससे आपको राहमें किसी प्रकारका कष्ट न होगा।

"मैंने आपके लिये कुछ पदार्थ भेजे हैं, जो इस समय मेरे पास मौजूद थे और मेरी पुत्री ऐंजीलाने आपको हार्दिक धन्यवाद दिया है।

"आपकी जिनता तथा सज्जनता का मुझे बड़ा भरोसा है ।

"—जान जिटका ।"

इस पत्रने अर्नेस्टका हृदय आश्चर्यसे परिपूर्ण कर दिया । वह बारम्बार पत्र का मन ही मन विचारने लगा,—"वन कन्या है जोला-जिटका सरदार जिटकाकी कन्या है, यह विश्वासमें नहीं आता; परन्तु यह पत्र स्पष्ट जिटकाके हाथका लिखा हुआ है और इस पर जिटका की का हस्ताक्षर तथा चिह्न भी वर्त्तमान है ।

"लन्दन महलका पतन हो गया है, वह टेवोर-इनके हाथोंमें है तथा उसके सब भेद खुल गये हैं ।" सर अर्नेस्ट भी पीतलकी मूर्त्ति, आतङ्क मैशीन, गाल कमरे, गुप्त पथ और तहखाने आदिकी बात ही विचारने लगा; परन्तु बहुत कुछ सोचनेपर भी उसे इस बातका कुछ भी पता न लगा, कि वे भेद और क्या हैं, जिनकी ओर सरदार-जिटकाने इशारा किया है। क्योंकि बेरोनिस अर्नेस्टइन, जो है जोला की यथार्थ माता थी, उसका हाल अर्नेस्टको कुछ भी मालूम न था।

सर अर्नेस्ट ने यह पत्र अनाईको न दिखाया; क्योंकि उसमें उसे एक गुप्त भेद का सम्बन्ध बताया गया था, परन्तु उसने और सब हाल उससे कह दिया ।

यह सुनते ही अनाई चिल्ला उठा,—"हैं ! है जोला जान-जिटका-की कन्या है ! अहा ! मैं यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुआ हूं; क्योंकि अब यह एक सम्माननीया लेडी हो गयी, और वह उसी योग्य है भी। हां हां, वह राजकुमारी ही है; क्योंकि उसका पिता किसी राजासे कम नहीं है और अब उसके आगे कितनी ही टोपियां उतारी जायगी, कितने ही सर झुकेंगे, जो पहले एक सामान्य जंगली किसानकी कन्या समझी जाती थी। (अर्नेस्टके चेहरेपर ध्यानसे देखते हुए) नाइट ! निःसन्देह अब यह वन कन्या, जिसने कुछ दिनों तक आपकी

सेवा मजदूरिनोंके समान की है,अवश्य ही यूरोपके किसी नामी राजाके साथ व्याही जायगी, क्योंकि कौनसा ऐसा राजा होगा, जो बहादुर जिटकासे अपना सम्बन्ध न स्थापित किया चाहता हो।"

अर्नेस्टने कहा,—"यदि वह अब भी बन-कन्या ही रहती, तो भी वह एक ऐसा उत्तम रत्न है, जो यूरोपके अच्छेसे अच्छे रत्न-भाण्डारमें रखने योग्य है।"

बर्नार्डने कहा,—"पर इस पत्रके उत्तरमें क्या आप भी कुछ लिखा चाहते हैं? वह मनुष्य आपके उत्तर को राह देख रहा है।"

अर्नेस्टने कहा,—"उत्तर जबानी ही देना होगा, क्योंकि मेरी ऐसी अवस्था नहीं है, कि मैं कुछ लिख सकूं। ऐ बर्नार्ड! तुम दयाकर उससे कह दो, कि मैंने सरदारके भेजे हुए पदार्थ धन्यवाद पूर्वक स्वीकार कर लिये हैं; परन्तु मुझे भय है, कि वहां रहनेसे मेरा स्वास्थ्य फिर न बिगड़ जाय। यद्यपि अल्टन-महलमें जान-जिटका तथा उसकी कन्याके साथ रहकर मैं अवश्य ही प्रसन्न होऊंगा, तथापि अपने स्वास्थ्यके विचारसे मैं अभी वहां जाना उचित नहीं समझता। इसके अतिरिक्त मैंने एक आवश्यक कार्यके लिये अपना मनुष्य वायना की ओर भेजा है, क्योंकि वायनामें शीघ्र ही पहुंचना, मेरे लिये अत्यन्त आवश्यक है, और सम्भव है, कि मेरा मनुष्य राहकी सुविधाओंके सब सामान अपने साथ लिये शीघ्र ही यहां आ पहुंचे। तुम यही बातें उत्तरमें कहला दो।"

यह सुन दयावान बुड्ढा बर्नार्ड तुरतही उस कमरेसे निकल अर्नेस्ट-का सन्देसा उस मनुष्यको सुनानेके लिये चला गया और कई घण्टों तक अब अर्नेस्ट बिस्तरेपर पड़ा पड़ा जिटकाके पत्र पर विचार करता रहा।

* * * * *

इस घटनाके छठे दिन चार घोड़ोंकी एक खूबसूरत और भड़कीली

गाड़ी लण्डनसे हडसन मण्डलके दरवाजे पर आ पहुंची और सर अर्नेष्ट भी ओलर, जो अब एक प्रकारसे आरोग्य हो गया था, उसपर सवार हो लण्डनकी ओर रवाना हो गया।

अपने समय पर अर्नेष्ट, आरामसे अगाध तथा सुखपूर्वक शेष जीवन बितानेकी स्वतंत्रता ऐलिका वचन देकर बनार्डको भी अपने साथ ही लेता गया और वह पतित बुड्ढा उन ग्राम्य मनुष्योंके साथ, जो सर अर्नेष्टको सेवाके लिये आये थे लण्डनकी ओर रवाना होगया।

निन्नानवेवां परिच्छेद।

समाप्तिकी ओर।

कई महीने बीत गये और अब पेड़ोंकी पत्तियोंको ऐंठाने वाला, झरनोंके पानीको बहुत ठण्ढा बनाने वाला तथा हडसन मण्डलके कुञ्जोंको अर्द्ध नग्न कर देने वाला जाड़ा गुजर गया। परन्तु इसके बाद ही समस्त संसार पर प्रसन्नताकी तरंग उठाने वाली वसन्त ऋतु आ पहुंची। जङ्गलोंने फिर अपना पूर्व्वोक्त सुहावना रंग धारण किया, झरने फिर उसी प्रकारसे झरझराकर शब्द करते बहने लगे और हडसन मण्डलका किला फिर उसी तरहसे शोभा दिखाने लगा, जिस तरह पहले दिखायी देता था।

हां, वह अप्रैलका महीना था और चिड़ियायें चहक चहककर चारों ओरके जंगलोंको प्रतिध्वनित कर रही थीं। इसी समय ऐञ्जी-लाको याद आया—परन्तु ओह! क्या वह कभी भूल गई थी? वह प्रतिज्ञा, जो आष्ट्रियन माउट पर अर्नेष्टने उस समय उसके साथ की थी, जब वह हडसन-मण्डलके टूटे-फूटे कमरेमें उससे विदा हुई थी; क्योंकि यह वही महीना था, जब कि वह एक ऐसे मनुष्यसे मिलनेकी

बाट जोह रही थी, जिसने उसे एक दोस्त और भाईके समान प्यार करनेका वचन दिया था।

परन्तु ऐंजीला इस समय कहा है ? और उसका पिता टैबोराइट-दलका सरदार जान जिटका ही कहां है ?

इस बीचमें वीर हृदय बहादुर सरदारने जर्मन-हौस्पिटेलरोंपर आक्रमण कर उसकी सेनाको छिन्न-भिन्न कर डाला और उसके जेनरल तथा प्रधान प्रधान अफसरोंको क़ैद कर लिया था, परन्तु इसके बाद ही एक नयी और ताजा दम फ़ौज फिर पोलेण्डसे आ पहुंची और इस दूसरे युद्धमें भी आक्रमणकारियोंको जिटकाने भूसेकी तरह उड़ा दिया। मगर इतने पर भी पोलेण्डकी सीमापर एक बहुत बड़ी सेना एकत्र थी। सरदार जिटकाने मनही मन उसको भी तहस नहस कर डालनेका विचार किया। परन्तु इसके लिये और भी अधिक सेनाकी आवश्यकता थी, तथा इस सैन्य-सग्रहके लिये समयकी बड़ी जरूरत थी, अतः जिटका प्रजा-तन्त्र शासित बोहेमियाका उत्तरीय अंश देखनेके लिये चला गया। इसी अवसर पर उसे पोपका भी एक पत्र मिला, जिसमें उन्होंने बोहेमियाका शासन-भार जर्मन-हौस्पिटेलरोंके नेता कार्डिनेल लिगरेको देदेनेके लिये लिखा था ; परन्तु जिटकाने पोपकी आज्ञापर कुछ भी ध्यान न दिया, बल्कि उत्तरमें उन्हे लिख भेजा, कि पोपको बोहेमिया परसे अपना समस्त अधिकार हटा लेना चाहिये। इसके बाद जिटका पोलेण्डकी रक्षित सेनाकी ओर बढ़ा और उसने अपनी वीरता, दूर दर्शिता तथा परिश्रमसे सहजमें ही उसे परास्त कर दिया। इस तरह बोहेमियामें फिर दोनों दलोंमें सन्धि हुई और शान्ति स्थापित होने बाद जान-जिटका वीरता और विजयके सम्मानसे सम्मानित न होता हुआ फिर प्रेगमें लौट आया।

पाठकोंको याद रखना चाहिये, कि कुछही दिन बाद ड्यूक-

मकटन देनेके लिये फौज रखनेके लिये अफटन-महलसे निकालकर प्रेग भेज दिया गया था तथा वह महल जिसमें ऐलीनाके रहनेके लियेही उसके अधिकारसे छीन लिया गया था, परन्तु यद्यपि ऐलीना अफटन-महलकी अधिकारी बनायी गयी थी, और यद्यपि वह अपने मामा और बोहेमियाके यहाँ भी रह सकती थी, तथापि उसने कुछ दिनोंके लिये अपने उस पुराने जंगली मकान में ही रहना स्थिर किया, जहाँ उसके जितने ही वर्ष अपना बचपनाई बीत चुके थे। वहीं वह पहुँची तथा जिटकाके साथ उस समय तक रहनेके लिये चली गयी, जब तक पूरी तरहसे शान्ति स्थापित न हो जाये और वह अपने पिताके प्रेगमें न मिल सके।

इसीतरह जब दूसरी बार फिर बसन्त ऋतु आयी, तब भी ऐलीना अपने उसी पुराने जंगली झोपड़ेमें मिली, परन्तु हाय! क्या ऐलीना बिना किसी कारणके उस जंगली मकानमें आकर रहने लगी थी? क्या उसके हृदयमें किसीके आगमनकी आशा उस समय नहीं लहलहा रही थी; जब कि वह अपने झोपड़ेके बाहर एक शिला-खण्डपर बैठी शून्य दृष्टिसे जंगलकी ओर देख रही थी? हाँ, अवश्य ही कितनेही प्रकारके विचार उस सरल हृदया सुन्दरी ऐलीनाके हृदयमें उस समय उठा करते थे, क्योंकि उसके हृदयको विश्वास नहीं होता था, कि वह आस्ट्रियन बहादुर उसे इतना शीघ्र भूल गया है, कि यदि वह न आ सका तो एक पत्र भेजकर भी उसकी सुधि न लेगा।

अभी अप्रैल महीनेका पहला सप्ताह ही बीता था, कि प्रेगसे एक दूत आ पहुँचा। वह जिटकाका एक बहुतही लम्बा-चौड़ा तथा प्रीतिपूर्ण पत्र लेकर आया था, जिसमें कितनी ही घटनायें लिखी थीं, और यह भी लिखा था; कि सन्धि हो जानेके कारण शान्ति स्थापित हो गयी है और अब उसे बिना विलम्ब प्रेग चले आना चाहिये।

अपने पिताकी आज्ञानुसार, एक ठण्डी सांस लेकर तथा आंसू बहाते हुए, ऐ जीलाने सफरकी तय्यारी की। यह निश्चित हो गया, कि सवेरा होते ही यह सफर आरम्भ हो जायगा। विलडन और स्टुवर्ट दोनों ऐंजीलाके साथही जायंगे और बारह सिपाहियों का एक दल अवटन-महलकी रक्षक-सेनामें से चुनकर उसकी रक्षाके लिये साथ ले लिया जायगा।

सन्ध्याके पांच बजनेका समय था, जब ये सब बातें स्थिर हो गईं और ऐंजीला अन्तिमवार उस जंगलको प्रेमसे देखनेके लिये अपनी झोपड़ेसे बाहर निकल आयी, जिसके प्रत्येक भागसे वह भली-भांति परिचित थी। बाहर निकलकर दरवाजेके पासही रखी हुई एक बेंचपर वह बैठ गयी और बड़े ध्यानसे उस जंगलको देखने लगी। इसी समय उसके हृदयसे ठण्डी सासें निकलने लगीं और चेहरा सुर्झा गया।

वह उस समय भी इसी स्थानपर बैठा करती थी, जब वृद्ध पादड़ी फादर-ऐंजीलो उसे शिक्षा दिया करता था। यहीं वह अपनी पालिता भेंडको खिलाया करती थी और नाना प्रकारके फूलोंसे उसका शृंगार किया करती थी। यही वह उस समय तक अपने छोटे टट्टूपर चढ़कर इधर-उधर घूमा करती थी, जब तक कि सर अर्नेस्टने उसे दूसरा बढ़िया घोड़ा नहीं दिया था। ये सब बातें याद आ आकर उसका कलेजा मसोस रहीं थीं और यद्यपि वह अब उस जंगली स्थानको छोड़कर अपने प्रिय पिताके पास जाया चाहती थी, तथापि उसकी आत्माको भयानक कष्ट पहुंच रहा था।

परन्तु ओह! अप्रेलका महीना लगकर बीत रहा था, सूर्यकी चमकीली किरणें वृक्षोंपर शोभा दे रही थीं और चिड़ियाओंके चहकनेकी आवाजें ऐंजीलाके कानोंमें पड़ रही थीं, परन्तु अभी तक उससे साथ किया हुआ वादा पूरा न हुआ था। अर्थात् सर अर्नेस्ट ही

भीतर भगी जाती था और उसे अंधेरा होते ही वह स्थान छोड़कर कहीं जाना आवश्यक था।

इस समय इसी तरहके विचार ऐंजीलाके हृदयमें उठ रहे थे और वह बड़ी ही व्याकुलतासे इधर उधर देख रही थी; परन्तु आह ! सुनो ये कैसी आवाजें हैं, जो ऐंजीलाके कानोंमें पड़कर उसे चौंकाती हुई धीरे धीरे निकट ही होती जाती हैं। उनका वाणीको सुनते ही वह खड़ी हो जाती है और आगसे घूमने लगती है। हां, गाया आगे बढ़ाकर इस तरह घूमने लगती है, जैसे कोई हरिणी किसी शिकारीकी आहट पा घबराकर चारों ओर देखने लगती है।

परन्तु ओह ! यह घोड़ोंके टापोंकी आवाज और शस्त्रोंका शब्द था, जो ऐंजीलाके कानोंमें पड़ा था और जिससे एक प्रकारकी आशा-सी, तुरंत उसकी नस नसमें इस तरह दौड़ गई थी, जिस तरह जीवकी नस नसमें ताजा खून दौड़ा करता है।

परन्तु एकाएक वह आवाज रुक गयी, मानो कोई चीज गायब हो गयी हो अथवा घुड़सवारोंका कोई दल सहसा ठहर गया हो। यह देख फिर ऐंजीलाका गर्म खून एकाएक जम गया तथा उसका चेहरा उदास हुआ ही चाहता था, कि इसी समय भड़कीले वस्त्र पहने हुआ एक घुड़सवार खटाक उसके सामने आ पहुंचा।

ऐंजीलाने एकबार आश्चर्य भरी दृष्टिसे उसकी ओर देखा और साथ ही उसके मुंहसे प्रसन्नताकी एक चीख निकल पड़ी ! इसके बाद ही उसके बदनमें एक प्रकारकी कमजोरी छा गयी, मानो उसे इतनी प्रसन्नता हुई, जिसका भार वह सम्हाल न सकी, अथवा उसने ऐसा पदार्थ देखा हो, जिसपर सहसा वह विश्वास नहीं कर सकती थी।

परन्तु दूसरे ही क्षण वह बहादुर घुड़सवार अपने घोड़े से कूद पड़ा और तेजीसे झपटते हुए ऐंजीलाके पास जाकर उसने उसे गलेसे

लगा लिया; क्योंकि यह वही बहादुर आस्ट्रियन नाइट था, जिसे वह हृदयसे प्यार करती थी।

हा, अब वाटा पूरा हुआ और अन्तमें वह दिन आ गया, जब ऐ जीलाने देखा, कि जंगल भेदकर उसके दरवाजे पर, उसके सामने आने वाला कोई दूसरा मनुष्य नहीं, बल्कि वही पुरुष है, जिसके प्रेमको अपने हृदय मन्दिरमें स्थापित कर वह इतने दिनोंसे पूजन कर रही है।

सर अर्नेस्टने ऐ जीलाको बेंचपर बैठाकर उसके बगलमें स्वयं भी बैठते हुए कहा,—"क्या तुमने कभी विचारा भी था, कि मैं यहां आऊंगा, प्रिय ऐ जीला?"

ऐ जीलाने बहुतही धीमे स्वरमें कहा,—"हां, मैंने सोचा था,—मुझे आशा थी,—मुझे विश्वास था, सर नाइट! कि तुम मुझे भूल न जाओगे।"

सर अर्नेस्टने कहा,—"क्या तुमने क्षणभरके लिये भी यह विचारा था, कि मैं तुम्हें भूल जाऊंगा? नहीं, नहीं, मैं एक क्षणके लिये भी तुम्हें भूल नहीं सका और अब भी मैं केवल उस प्रतिज्ञाको पूरी करनेके लिये, अथवा तुम्हें अपनी सेवाके बदलेमें धन्यवाद देनेके लिये ही यहां नहीं आया हूं। नहीं, प्यारी ऐ जीला! मैं इन सामान्य बातोंके लिये तुमसे यहां मिलने नहीं आया हूं, बल्कि तुम्हें यह कहने आया हूं, कि तुम्हारे बिना अब यह जीवन भार हो रहा है। मैं एक क्षण भी तुम्हें छोड़कर नहीं रह सकता। एक विचित्र पागलपनने मुझे अभीतक एक ऐसे जीवकी मोहव्व्तमें उलझा रखा था, जिसने मुझे सब तरहसे धोखा दिया, और इसीलिये मेरे हृदयमें पवित्र भाव उदय हो गये जिससे तुम्हारी सच्चरित्रता, वीरता तथा उदारता आदि गुण देख, तुमपर मेरी एकान्त प्रीति उत्पन्न हो गयी। और ऐ जीला!

यदि तुम भी मुझे इसी तरह प्यार करती हो, तो मैं अपना हाथ तुम्हें देनेके लिये तैयार हूं और कसम खाकर कहता हूं, कि तुमने मेरे हृदयपर अधिकार जमा लिया है।"

यद्यपि ऐञ्जेला उसकी बातोंका शब्दोंमें कोई उत्तर न दे सकी, तथापि उसने ज्यों ही अपनी दृष्टि उस बहादुरके चेहरेपर डाली, और एक बारके लिये माथा उठाकर उसके खूबसूरत चेहरेकी ओर देखा, त्यों ही उसने इतना स्पष्ट उत्तर दे दिया, कि जितना एक दस बातोंमें भी नहीं दिया जा सकता। उसके चेहरेपर इतनी अधिक प्रसन्नता दिखायी दी, जितनी कि उस मनुष्यको होती है, जो कोई दुर्लभ वस्तु पा जाता है।

यह देखते ही अर्नेस्ट आनन्दसे गद्गद हो बोल उठा,—"तब तुम मेरी हो।"

इसी समय विलसन अपने झोपड़ेसे बाहर निकल आया और उसने तुरत ही पहचान लिया, कि यह वही बहादुर मनुष्य है, जिसने रोडरिकके हाथोंसे ऐञ्जेलाको बचाया था। इसके बाद ही दयावान हार्वर्ट भी झोपड़ेसे बाहर निकल आया और उसने भी पहचान लिया, यह वही मार्ग्रियम मार्ट है, जिसे लार्ड रोडरिकने पहटन-महलके किसी कमरेमें टिकाया था।

जिस समय हार्वर्ट तथा विल्सन उस झोपड़ेसे बाहर निकले, उस समय उनके आश्चर्यका वारापार न रहा, क्योंकि उन दोनोंने देखा, कि ऐञ्जेला उस मनुष्यके हाथका सहारा लिये खड़ी है, जिसका सुन्दर चेहरा प्रसन्नतासे दमक रहा है और पोशाक बादशाहों जैसी भड़कीली है।

इसी समय एक आश्चर्यजनक घटना और भी हुई—अर्थात् बहुमूल्य वस्त्र आभूषणोंसे सुसज्जित कितने ही शरीफ तथा लेडियां उस जङ्गलसे निकल झोपड़ेकी ओर आती हुई दिखाई दीं।

इसके बाद ज्यों ही वे भास्ट्रियाके अधिवासी शरीफ अपनी सुन्दरी लेडियों सहित उस झोपड़ेके अत्यन्त निकट, उस स्थानपर आ पहुंचे, जहां ऐ जीलाके बगलमें खड़ा अर्नेस्ट खड़ा हो बड़े प्रेमसे उसके चेहरेको निहार रहा था, त्योंही सभोने अपनी अपनी टोपियाँ उतार लीं और अर्द्धचन्द्राकार व्यूहके आकारमें घुटने टेककर खड़े हो गये।

अब अर्नेस्टने अपनी पूरी ऊंचाईमें तनकर आगन्तुकोंकी ओर देखते हुए कहा,—"मेरे लार्ड और लेडियो! बहादुर जिटकाकी इस कन्याको देखो, जिसे मैं अपनी प्राणप्यारी बनाना चाहता हूँ। (जोरकी प्रसन्नता भरी आवाजमें) यदि कभी वह अवसर आया, कि मैं तख्तपर बैठा, तो मैं वचन देता हूं, कि संसारके सबसे बड़े राज्यके तख्तकी यह बहादुर और सुशीला स्त्री अर्द्धभागिनी बनेगी।"

इतना सुनते ही ऐ जीलाने जो घबड़ाकर अपने चारों ओर देखा, तो उसे एक ओर धनाढ्य शरीफ तथा लेडियोंका अर्द्धचन्द्राकार व्यूह बड़ी भक्ति और आदरसे उसके प्रेमीकी ओर देखता हुआ दिखायी दिया, और दूसरी ओर हावर्ट तथा विल्डन घुटने टेककर खड़े दिखायी पड़े, क्योंकि अब वे समझ गये थे, कि वास्तवमें यह पुरुष कौन है। अब ऐ जीलाने घबड़ाकर एक दृष्टि उस पुरुषके चेहरेपर डाली, जिसने अभी अभी उसे अपनी अर्द्धाङ्गिनी बनानेकी प्रतिज्ञा की थी और जिसकी बाहोंका सहारा लिये वह अभीतक खड़ी थी।

उसने कहा,—"हां, मेरी प्राण प्यारी! अब भेद और छिपावके दिन गये। तेरे इन गुणोंके कारण ईश्वरने तुझे संसारमें सबसे बड़ा पद दिलाया है और वह तुझे शीघ्र ही मिलनेवाला है। वहां तुझे अपने गुणोंको काममें लानेका पूरा पूरा अवसर मिलेगा। आह! क्या अब तू भी नहीं समझ सकी, कि मैं कौन हूं? और क्या मुझे कहना

होगा, कि यह मनुष्य, जिसे तू अमोलक 'गट वर्सेस्ट हो कोमर' समझे हुए थी; वास्तवमें जर्मन सम्राट् हेनरट है?"

यह सुन हेलोनाने धीमी तथा कांपती हुई आवाजसे कहा,—"ओह! सत्य हो? हां, हां, सच हो यह सब बातें एक मनोहर स्वप्न है, जिसके टूटनेपर कोई भयानक परिणाम होगा।" इतना कहते कहते वह इस तरह घबरा गयी, कि यदि जर्मन-सम्राट उसे न पकड़ लिये होते, तो वह अवश्य ही भूमिपर गिर पड़ती।

"नहीं, यह स्वप्न नहीं है, बल्कि प्रसन्नता और आशा मिश्रित एक मनोहर दृश्य है!"—इतना कह जर्मन सम्राट हेनरटने अपनी बातोंके सबूतमें बड़े प्रेमसे उसके दोनों गाल चूम लिये।

यह देखते ही उपस्थित सभी स्त्री पुरुष जोरसे चिल्ला उठे,—"ईश्वर जर्मनोंकी भविष्य सम्राज्ञी हेलोना जिटकाको चिरंजीव रखे'।" यह देख हेलोनाको किसी प्रकारका सन्देह न रह गया और वह समझ गयी, कि अब उसे सच्ची प्रसन्नता मिली है।

इसके बाद जर्मन-सम्राटके अनुरोधसे हेलोनाका प्रेग जाना स्थगित रहा और उसी राजदूतके हाथ, जो जिटकाका पत्र लेकर आया था, सब हाल लिखकर एक पत्र जिटकाको भेज दिया गया।

इस विवडनके अनुरोधसे जर्मन-सम्राटने अपने साथियों सहित रात भरके लिये उसकी मेहमानी मञ्जूर की और दूसरे दिन सवेरे ही हेलोना, विवडन पति पत्नी तथा दयालु घूर्थटको साथ ले जर्मन-सम्राटने दलबल सहित आस्ट्रियाकी ओर कूच कर दिया।



सौवां परिच्छेद ।

एक्स-ला चैपेल ।

इस घटनाको दो महीने बीत गये और अब जूनका महीना जा रहा है। इस महीनेमें जर्म्मनीकी राजधानी एक्सलाचैपेलमें दो बड़े उत्सव हुए। पहला उत्सव जर्मन-सम्राट ऐलवर्टका लेडी ऐंजीला-जिटकाके साथ विवाह, और दूसरा उस प्रसन्न-हृदय जोड़ीका चौलरके जगत् प्रसिद्ध सिंहासनपर बैठना।

पहला उत्सव जर्म्मनीके उस प्रधान गिर्जेमें हुआ था, जिसमें उसके बनाने वाले बहादुर चारमैलेन की कब्र बनी हुई थी और जहां पीतल तथा मार्बल-पतथरके बने ऐसे ऐसे राजाओंके स्मारक रखे हुए थे, जिनका नाम इतिहासमें विख्यात हो रहा है।

अहा! उस समयका दृश्य बड़ा ही शानदार, भड़कीला तथा दर्शनीय था, जब कि लेडी ऐंजीला, सम्राट 'ऐलवट' की धर्म्म पत्नी बनी। यह उत्सव सन्ध्याके समय हुआ था और उस गिर्जेका भीतरी भाग रोशनीसे जगमगा रहा था। सभी खम्भोंमें सुनहली दीवालगीरें लगी हुई थीं, जिनमें सुगन्धित मोमबत्तियां जल रही थीं, और उसकी ऊंची तथा बड़ी छत रेशमी वस्त्रोंसे मढ़ दी गयी थी। केवल यही गिर्जा नहीं, बल्कि उस दिन जर्म्मनीके सभी गिर्जों और उन महात्माओंकी कब्रोंपर भी रोशनी जला दी गयी थी, जिन्होंने धार्मिक भावके प्रचारमें ही अपना जीवन बिता दिया था। प्रधान गिर्जेकी संगमर्मरकी बनी हुई भूमि पर बैंगनी रंगकी मखमल बिछी हुई थी। दीवालोंपर भाड़े तथा छोटी छोटी भाड़ियां, जिनपर कीमती जरदोजीका काम किया हुआ था, शोभा दे रही थीं और उसी प्रकारसे सुगन्धित फूलोंकी

लटकी हुई कामदार चादरें भी जिसको सुशोभित कर रही थीं और फलकोंकी रोशनीकी आभा सम्मेत जिसके रत्न जटित कलशोंपर पड़कर लोगोंकी आँखोंमें चकाचौंध पैदा कर रही थी। मेहमानोंकी गद्दीयोंपर बिछी हुई, जिसकी चमकीली चाँदी और जिसकी अनोखी बनावट, सभीने मिलकर बड़ा ही मनोहर तथा हृदयग्राही दृश्य बना रखा था।

इस सुअवसर पर राज्यके प्रधान प्रधान पदाधिकारी और अमीरोंके कितने ही छोटे बड़े राजकुमार, सभी उपस्थित थे। कितने ही बहादुर शरीफ और खूबसूरत पेज सम्राट्के आगे पीछे घूम रहे थे और ऊँचे खानदानकी कितनी ही सुन्दरियां रेशमी लोगा-लिटकाकी छविलिया बनी हुई थीं। इस महोत्सवमें सम्राट्के दोनों प्यारे पेज 'कोल्ट हानिस फार्लैन' तथा 'देवन को राउंडी विनी' भी उपस्थित थे। पर इन दोनोंके चेहरेपर उदासीकी एक घोर छाया भी लिखी तथा चेष्टाकी छविलिपि पड़ी हुई थी।

इन सिंहासन सजाने हुई कुर्सियोंकी अगली कतारमें सबसे आगे एक विस्मय अपनी जोंकि बगलमें बैठा हुआ था। वह सुनहरा तगमा, जिसे यह सज्जन पुरुष अपनी छातीपर लगाये हुआ था, उसीसे मालूम होता था, कि सम्राट्ने उसे कितना उत्तम पद दिया है, क्योंकि अब बिल्कुल अंग्रेजोंके समस्त अङ्गोंका प्रधान रक्षक बन गया था। दोनों ही बड़े पुरुष अपने पदके अनुसार सुन्दर-सुन्दर वस्त्र पहने हुए थे और मालूम होता था, कि अपनी बुद्धि, सद्विचार तथा उत्तम प्रबन्धके कारण इन दोनोंने अपना पद और भी गौरवमय बना लिया है। परन्तु इस समय उनके चेहरेपर जो प्रसन्नता दिखायी देती थी, वह वास्तवमें इतना उत्तम पद पानेके कारण न थी, बल्कि इसका घनिष्ट सम्बन्ध सुन्दरी ए जोलासे था, जिसे इन दोनोंने इतने दिनोंतक बड़े प्रेमसे पाल-पोसकर बड़ा किया था।

पवित्र बर्नार्ड भी दूसरी ओरकी सबसे आगेवाली कुर्सीपर बैठा हुआ था और शाही दरबारमें एक ऊंचा पद मिल जानेके कारण उसकी गणना भी अमीरोंमें हो गयी थी। हां, और सामनेवाली कुर्सी पर सबसे आगे हमारा दयावान बुड्ढा ह्यूबर्ट बैठा हुआ था, जो इतने दिनोंतक यद्यपि अल्टन-महलका एक खानसामा था; परन्तु अब सम्राटकी कृपासे जर्मनीके समस्त शाही महलोंका प्रबन्धकर्त्ता हो गया था।

अहा! क्या विल्डनने अपनी खुशीके उत्तमसे उत्तम अवसरपर भी कभी यह विचारा था, कि उसकी पालिता पुत्रीको हठात् इतना सौभाग्य प्राप्त होगा? क्या ह्यूबर्टने ही ऐञ्जोलाको यह कहते समय, कि किसी दिन इसका नाम इतिहासमें अमर हो जायगा, विचारा था, कि उसकी भविष्यवाणी सत्य निकलेगी? और क्या बुड्ढे बर्नार्डको कभी स्वप्नमें भी यह गुमान था, (जब कि उसने कहा था, कि ऐञ्जोलाको अपनी प्रियतमा बनाकर यूरोपका बड़ेसे बड़ा सम्राट भी अपनेको गौरवान्वित समझेगा) कि ऐञ्जोला इतने उत्तम पदपर पहुंच जायगी और उसके पैर यूरोपके सबसे ऊंचे तख्तपर जा पड़ेंगे?

परन्तु इस समय उस नव-वधूका पिता जान-जिटका कहां था? वह बहादुर सरदार, जो अपनी कन्याको प्राणसे भी बढ़कर प्यार करता था, इस अवसरपर न तो गिर्जेमें उपस्थित था और न इस राजनगर में ही आया था। बल्कि वह प्रेगमें—प्रजातन्त्रशासन-की राजधानीमें बैठा हुआ था। तब क्या अपनी पुत्रीके इस अभ्युदयसे वह अप्रसन्न था? अथवा क्या उसका प्रेम जानकर उसने उसका साथ देना छोड़ दिया था? नहीं, वह हृदयसे हर्षित था और उसे इस बातका बड़ा ही आनन्द था, कि उसकी कन्याने एक ... मनुष्यको वरण किया है और चाहे वह प्रजातंत्रका कितना ही

पक्षपाती था; परन्तु राजकुमारीकी एक मात्र पुत्रीको इतने ऊंचे पदपर पहुंचती देख, उसका हृदय प्रसन्नतासे गद् गद् हो रहा था।

इसीलिये जब इस प्रेमका समाचार उसे मिला, उसी समय उसने आनन्दसे अपना मत भी प्रकट कर दिया। केवल इसी विचारसे नहीं, कि उसकी कन्या एक सुशिक्षित, सुयोग्य तथा ऊंचे पदपर पहुंच गयी है; बल्कि वह क्योंकि धार्मिक विचार और प्रेममें कदापि बाधा न पहुंचाया जाना चाहता था। इसके अतिरिक्त वह सम्राट एलबर्टको महा-रानी, उसके गुण तथा व्यवहारसे अत्यन्त ही आह्लादित हो रहा था। इसीलिये सरदार जिटकाने इस विषयमें अपनी सम्मति दे दी थी; परन्तु उसने मन ही मन निश्चय कर लिया था, कि उसका जर्मनी जाना किसी अवस्थामें भी उचित न होगा; क्योंकि यह विवाह उस रोमनमतके अनुसार होगा, जिसपर टेवोराष्ट दल सदासे घृणा प्रकट करता आया है तथा दूसरी बात यह थी, कि वहां सभी काम राज तथा शासनके अनुसार होते हैं, जिनपर प्रजा-तन्त्र शासन चाहने वालोंको आन्तरिक घृणा रहती है। ये ही कारण थे, कि जिटका मौनसे हो रह गया; परन्तु उसके आशीर्वाद ईलीजापर उसी समय फलीभूत हुए, जब कि वह कोइनिगा त्याग जर्मनीकी ओर सिधारी।

और अब देखिये। वह सुन्दरी एक्सला-चैपेलके प्रधान गिर्जेके पास किस ठाटसे खड़ी है और उसका मामा कौण्ट रोमनवर्ग किस उत्साहसे उसका हाथ सम्राटके हाथमें देनेके लिये खड़ा है। आयनाके प्रधान पादड़ी आर्च-बिशप अपने चेलों तथा अन्य छोटे छोटे पादड़ियोंके साथ किस तरह उत्साहसे यह वैवाहिक कार्य सम्पादन करनेके लिये तय्यार है। ईलीजा इतनी सुन्दरी, इतनी मनोहर तथा इतनी सुन्दर आजके पहले कभी दिखायी नहीं दी थी। वह सफेद वस्त्र पहिने हुई थी, बड़े बड़े मोतियोंका कंठा उसके गलेमें शोभा दे

था और बहुमूल्य हीरेके टुकड़े उसकी गाउनमें लगे हुए थे। साथ ही एलबर्ट भी बड़ी प्रीतिसे इस समय अपना समस्तध्यान उसको ओर ही आकर्षित किये उसे देख रहा था।

इस तरह उस जीवको, जिसे वह पहले एक गरीब 'सर अर्नेस्ट-डी-कोमर' जानती थी और जिसकी सुन्दरता तथा वीर-कार्यावली पर प्रसन्न होकर, उसने अपना हृदय दान कर दिया था, वही आज ईश्वरको साक्षी रखकर सदाके लिये उसका हाथ पकड़नेको तय्यार था, अपने सुविशाल राज्यकी उसे अर्द्धभागिनी बनाना चाहता था, क्योंकि वह राजा नहीं, राजाओंसे भी बड़ा सम्राट था, जो इस समय उसका पति बना! और वह स्त्री, जो अब तक ऐंजीला जिटकाके नामसे परिचित थी, वैवाहिक कार्य समाप्त कर ज्योंही उठी, त्यों ही जर्मनीकी सम्राज्ञी कहकर सभोंने उसका सम्मान किया।

दूसरे दिन समस्त एक्स-ला-चेपेल प्रसन्नताकी उमङ्गमें हिलोरे ले रहा था। सवेरा होते ही मनुष्यों की भीड़ पुराने गिर्जेके पास एकत्रित होने लगी थी। सड़कोंपर फूल बिछा दिये गये थे और खिड़कियोंमें मखमली पर्दे उड़ रहे थे। शहरमें जगह बजगह फूलोंके महराब बना दिये गये थे। गिर्जेके घण्टोंकी आवाजें आ रही थी और फौजी बाजोंकी आवाज, मनुष्योंकी ध्वनिसे मिलकर आकाश मार्गमें गूंज रही थी।

और सुनो, कुछ ही क्षण बाद किलेसे तोपोंकी आवाज सुन पड़ने लगी। वह इस बातकी सूचना थी, कि सम्राट किलेसे रवाना हो चुके। यह जुलूस किलेसे निकलकर प्रधान सड़कपर होता हुआ गिर्जेमें आ रहा था, हजारों शरीफ, पादड़ी तथा बड़े बड़े शरीफोंके साथ सम्राट सम्राज्ञीकी गाड़ी आ रही थी।

तोपोंकी आवाज गगनमें पहुंच रही थी। घण्टे बज रहे थे तथा बाजोंकी मधुर ध्वनि गूंज रही थी। हम समझते हैं, कि पाठकोंको अब यह बतानेकी आवश्यकता नहीं है, कि ए लोना देवियोंके समान रूपवती तथा सम्राट देवताओंके समान रूपवान मालूम होते थे, जब वे प्रजाके सामने उत्सवमें हाथ मिलाते हुए जा रहे थे।

अब धारा जो गर्जके पुराने गिर्जेके भीतर सम्राट तथा सम्राज्ञी पहुंच चुके थे।—उनके सामने कितने ही राजकुमार, पदाधिकारी और सरदारगण बैठे हुए थे। इसी समय आयरलैंडके प्रधान पादड़ीने उन दोनोंको सम्राट तथा सम्राज्ञीके पदपर अभिषिक्त किया। इस विवाहका विवरण गिर्जेके रजिस्टरमें इस तरह लिख लिया गया—

"एल्बर्ट-बर्जिन्ड मूर, काउंट आफ कोमर, बैरन आफ ऐलबर्ग, आर्च-ड्यूक आफ आस्ट्रिया, किंग आफ हंगरी और जर्मनीका सम्राट।

"ए लोना गिल्डन जिटका, लेडी आफ कोमर, बैरोनेस आफ ऐल्बर्ग, आर्च डचेस आफ आस्ट्रिया, हंगरीकी रानी और जर्मनीकी सम्राज्ञी।"

इस तरहपर बैठकका उत्सव समाप्त हो जानेपर सम्राट तथा सम्राज्ञी उस गिर्जेसे चले गये। जाते समय उसी प्रकारका जुलूस नये ढंगसे ही निकला और तोपोंकी गरज, घण्टोंकी घनघनाहट, बाजोंकी मधुर ध्वनि तथा जन समूहके कोलाहलके बीचमें होते हुए, वे ऐक्सला-शेपेलमें जा पहुंचे।

एक महीना बीत गया, तीस दिवस स्वप्नकी तरह सम्राट तथा सम्राज्ञीको मालूम हुए। इसके बाद एक ऐसी घटना घटी, जिसने पहलेके कितने ही छिपे हुए भेदोंको प्रकट कर दिया।

एक दिन संध्याके समय सम्राट एलबर्ट और सम्राज्ञी ए लोना, दोनों हाथमें हाथ मिलाये महलसे सटी हुई वाटिकामें टहल रहे थे।

घटनाओं पर विचार कर रहे थे, कि एकाएक कौण्ट लानेल आलन उनकी ओर आता हुआ दिखायी दिया।

वह तेजीसे उनकी ओर बढ़ रहा था। और ज्यों ज्यों पास आता जाता था, त्यों त्यों मालूम होता था, कि किसी प्रसन्नता जनक घटनाने उसके हृदयको हर्षित तथा प्रफुल्लित कर दिया है यहां तक कि उस खुशीने उसे सम्राट-सम्राज्ञीके दिखायी देने पर भी चाल कम करने और चेहरा गम्भीर बनाने न दिया और वह लपकता हुए उनके पास जा पहुंचा।

सम्राट ऐलबर्टने उसे देखतेही कहा,—"प्रिय लानेल! मालूम होता है, कि किसी नवीन घटनाने तुम्हें प्रसन्न कर दिया है। इसीसे आज तुम्हारा ढंग कुछ बदला हुआ दिखायी देता है। (ऐ जीलाकी ओर देखकर) तुम्हें भी स्मरण होगा, कि जिस समय दरबारके प्रत्येक अवसर पर सभी मनुष्योंका चेहरा प्रसन्नतासे दमक रहा था, उस समय इसके तथा लार्ड कोनार्ड डी पिर्नाके चेहरे पर गम्भीर उदासीकी छाया दिखायी देती थी।"

ऐ जीला हसती हुई धीमा विनिन्दित स्वरमें बोली,—"आपने दो सुन्दरी स्त्रियों, लियडा तथा बेटारिसके सम्बन्धमें एकबार मुझसे कुछ कहा भी था।"

ऐलबर्टने कहा,—"हां हां, मुझे याद आ गया (लानेलकी ओर देखकर) क्या तुम्हें उन दोनोंके विषयमें कोई समाचार मिला है?"

कोनार्डने बड़े भक्ति भावसे कहा,—"सम्राटकी जय हो। वे स्त्रियां, जिनके विषयमें श्रीमान पूछ रहे हैं, इस समय इसी महलमें हैं और कोनार्ड उनके पासही बैठा हुआ है। मैं भी उनका साथ इतना शीघ्र नहीं छोड़ना चाहता था। न मैं श्रीमानके एकान्त सम्मिलनमें [illegible] डालना चाहता था यदि [illegible]"

इतना कहता कहता एकाएक घबड़ाकर लार्नेल चुप हो गया और डरी हुई दृष्टिसे सम्राट एडवर्डकी ओर देखने लगा ; क्योंकि सम्राटके सामने इस तरह बातचीत उसे उचित न था।

परन्तु उदार हृदय एडवर्डके हृदयमें इन बातोंका कोई विचार न था, उसने लार्नेलको यह घबड़ाता देख हंसते हुए कहा,—"मैं तुम्हारा मतलब समझ गया। मालूम होता है, ये दोनों स्त्रियां जान-विटका की भांजी आयशाका कोई सन्देशा लेकर आयी हैं। क्योंकि वह विदेशी सम्राज्ञीकी बहन होती है।" इतना कह एडवर्ट अपनी नव-वधूके चेहरेको बड़े प्रेमसे देखने लगा।

लार्नेलने कहा —"लिण्डा तथा थेटारिस कोई सन्देशा लेकर नहीं आयीं। बल्कि उनकी स्वामिनी लेडी आयशा

सोफी भी एकाएक बोल उठी,—"यदि मेरी बहिन इस महलमें आई होगी तो उसका पूरा पूरा सत्कार किया जायगा। (एडवर्टके कानमें बहुत ही धीरे धीरे) प्यारे एडवर्ट ; तुम जानते हो, कि चाहे उसने कितनेही अपराध किये हों पर मैं उसे अवज्ञाकी दृष्टिसे नहीं देख सकती। सम्भव है, कि किसी घटना वश उसे ऐसे कार्य करने पड़े हों, अतः अब उसकी ओरसे चित्तमें मैल रखना उचित नहीं है।"

एडवर्टने प्रेम भरी और कृतज्ञता सूचक भाषामें कहा,—"तुम दया तथा कृपाकी देवी हो (लार्नेलकी ओर देखकर) लेडी आयशा-को सम्राज्ञीके कमरेमें बैठाओ, कुछ ही क्षणमें हम लोग आते हैं।"

लार्नेल माथा झुकाकर चला गया। कुछही क्षण बाद सम्राट तथा सम्राज्ञी, बिना किसीको साथ लिये उस कमरेमें जा पहुंचे, जिसमें आयशा बैठी हुई घबड़ाहटसे उनकी राह देख रही थी।

इस समय आयशा काले वस्त्र पहने हुई थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसके गालोंका वह चमकता हुआ गुलाबी रंग

गायब हो गया था, परन्तु अभी तक उसकी आंखोंकी वह चमक दूर न हुई थी और न उसके ओठोंकी वह लाली ही अभी तक गायब हुई थी। उसके वे मनोहर केश अभी तक उसी तरह हवामें लहराते थे। जो कुछ हो, उसके चेहरे पर उदासी की एक भयानक छाया पड़ी हुई थी और उसकी चमकीली आंखे उस समय और भी अधिक चमक उठीं जब उसने सम्राट तथा सम्राज्ञी पर अपनी दृष्टि डाली।

हा, एकबार ऐलबर्टका भी हृदय उस सुन्दरीको देखकर कांप उठा, जो उसके सामने इस समय खड़ी थी; जो उसे अपने प्राणोंसे अधिक प्यार करती थी और जिसने शैतानोंके स्वरूपमें उसका हृदय हर लिया था। परन्तु इस समय सम्राटके हृदयमें विगत घटनाओंकी तरङ्गें उठ रही थीं और मौतिके बदले दयाने उसके हृदय पर अधिकार जमा लिया था। उसकी सुन्दरी सम्राज्ञी भी किसी तरहसे ईर्षान्वित दिखायी देती थी, जब कि उसकी बहिन और उसके पतिकी आंखें मिल रही थी, क्योंकि वह अच्छी तरह जानती थी, कि उसके पति ऐलबर्टके हृदयमें यह भाव दृढ़ हो गया है, कि आयशा उसे प्यार न करके धोखा देना चाहती थी। वह निःस्वार्थ प्रेम नहीं था, बल्कि स्वार्थमय कार्य-साधन था। इसीलिये ऐ जीलाको पूर्ण विश्वास था, कि उसके पतिके समस्त प्रेमकी एकमात्र वही स्वामिनी है।

कुछ देर बाद ऐ जीला बड़े प्रेमसे बोली,—"प्यारी बहिन! मैं तुम्हारा हार्दिक स्वागत करती हूं। यदि तुम्हारे हृदयमें किसी प्रकारका दुःख हो तो हमलोग उसमें शान्ति पहुंचाये गे। यदि तुमहारे कोई शत्रु हों, तो हमलोग उनसे तुम्हारी रक्षा करे गे और यदि तुम किसी आनन्दमय स्थानमें रहना चाहती हो तो, यह महल तुम्हारे लिये तय्यार है। यद्यपि मैं ही ये बातें कह रही हू, तथापि ऐलबर्ट भी इन सब बातोंको पूर्ण करनेके लिये तय्यार है।"

पेलर्टने कहा,—"तुम्हारा कहना यथार्थ सत्य है। आयशाको पहली बातें बिलकुलही भूल जानी चाहिये और अब भविष्यत्‌की ओर ध्यान रखना चाहिये।"

आयशाने गम्भीर, मीठी तथा मनोहर आवाजमें कहा,—"और वह अतीत न तो तुम्हारे मनमें, न तुम्हारी स्मृतिमें ही होना चाहिये। तथापि हे पेलर्ट और हेलीना! मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूं, कि तुम दोनोंने मुझपर बड़ी दया दरसायी है और तुम्हारी बातें, तुम्हारा व्यवहार और तुम्हारी उदारता सभी तुम दोनोंके उच्च हृदय का परिचय दे रही है। हे लीना! एक समय वह था जब मैं तुमसे घृणा करती थी, हां, जब कि तोका निनेवेहमें तुम्हारी जान भी ले लेती, और फिर तुम्हारी ही क्यों, उस पुरुषका जीवन भी समाप्त कर देती जो तुम्हारा पिता तथा मेरा स्वामी है। परन्तु वह समय बीत गया है। अब मैं तुम्हें हृदयसे प्यार करती हूं। मैं तुम्हारे उत्कर्ष और सम्मानको देख ईर्षान्वित नहीं होती, मुझे तुम्हारा सफल देख डाह नहीं उत्पन्न होता, न मुझे उस पुरुषसे ही किसी प्रकारका द्वेष या ईर्ष्या है, जिसने तुम्हें इतने ऊंचे पदपर पहुंचा दिया है। तुम दोनों सुखी रहो। आज यह आयशा स्कुटरगाडी स्वच्छ हृदय से तुम्हारी उन्नतिके लिये धन्यवाद और आशीर्वाद दे रही है।"

ज्यों ज्यों आयशा ऊपर लिखी बातें कहती गयी, त्यों त्यों उसकी आवाजकी कपकपी भी बढ़ती ही गयी और अन्तमें एकबार मुंह फेरकर उसने अपने गालोंपर बहते हुए मोतियों समान आंसुओंको पोंछ डाला।

यह देख बाइसो हेलीनाकी आंखोंमें भी आंसू भर आये और पेलर्टका उदार हृदय भी एकबार कांप उठा।

कुछ क्षण ठहरकर आयशा फिर बोली—"मैं आज थोड़ी ही देरके

लिये तुम दोनोंहि मिलने आयी हूं और इस थोड़े ही समयमें सब बातें समाप्त किया चाहती हूं। यह काला गवन मैं इसी लिये पहने हूई हूं, कि यह मेरा ध्यान सांसारिक आशाओं तथा अपराधोंसे दूसरी ओर फेर दे। मैंने एक वर्ष तक यही वस्त्र पहननेकी शपथ की है और आशा है, कि मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर सकूंगी। जब मैं सवेरेके वक्त पहन लेती हूं, उस समय समस्त गत घटनायें मुझे स्मरण हो आती हैं, और जब इसे उतारकर रख देती हूं, तब याद आ जाता है, कि मेरा एक ऐसा दोस्त भी है, जिसने कभी भी मेरा बाल बांका नहीं होने दिया—और मैं उसी मंगलमय ईश्वरको इसकेलिये धन्यवाद दिया करती हूं। इस तरह तुम देख सकते हो, कि मेरी अब पहली जैसी अवस्था नहीं है और मेरे मतके इस परिवर्त्तन होनेपर भी आज मुझे एक खास कामके लिये तुम लोगोंके पास एकाएक नैपेलसमें आना पड़ा—"

आयशाको चुप होते देख ऐंजोलाने कहा,—"प्यारी बहिन! बताओ कि क्या बात है?

आयशा बोली,—"ऐ मेरे बन्धुओ! पहले यह बताओ, कि क्या तुम लोगोंको मालूम है, कि कौण्ट लानेल आर्लन और बेरन कोनार्ड की प्रिमोंकी प्रीति मेरी दोनों सहेलियोंपर है; जिनका नाम लिखा और वेटा विस है?"

सम्राट ऐल्बर्टने कहा,—"हां, आयशा! तुम्हारा अनुमान बिलकुल सत्य है और हमलोग धर्मपूर्वक सत्य सत्य कह सकते हैं, कि बात ऐसी ही है। साथ ही हमलोगोंको सन्देह है, कि यदि तुम यहांसे जाना चाहो तो वे दोनों नवयुवक शायद तुम्हारी सहेलियोंको जाने न दें।"

आयशाने सम्राज्ञी ऐंजोलाका हाथ अपने हाथमें ले उसे दबाते हुए —"तब मैं बड़ी प्रसन्नतासे उन दोनोंको तुम्हारे सपुर्द करती

है। मेरे यहां आनेका एक उद्देश्य तो यह था, सफल हुआ और दूसरा उद्देश्य तुम्हारे प्रति ऐलवर्टको कुछ कागज पत्र सौंप देना भी पूरा हो जायगा।"

इतना कह उसने कागजोंका एक पुलिन्दा निकाला और एलवर्टके हाथमें दे, उनका मुंह देखने लगी।

ऐलवर्टने पूछा,—"ये कैसे कागज हैं, आयशा ?" क्योंकि जिस समय उन कागजोंपर उनकी नजरें पड़ गयी थीं, उसी समय वह समझ गया, कि यह किसी सुन्दरी स्त्री द्वारा लिखे हुए हैं।

आयशा बोली,—"इन कागजोंमें मेरे जीवनकी कितनी ही ऐसी घटनाएं लिखी हैं, जिनका भेद अभीतक नहीं खुला है। इसके अतिरिक्त इसमें कई भेद भी लिखे गये हैं, जिनका सम्बन्ध तुमसे है। (कुछ देर ठहरकर) और अब मेरे सारे काम पूरे हो गये; क्योंकि उन दोनों लड़कियोंको मैंने तुम्हारे सुपुर्द कर दिया और सब भेद खोल देनेवाले यह कागज भी तुमको दे दिये। अतः अब मुझे बिदा होना चाहिये।"

इसके बाद उसका माथा एक ओर झुक गया, और हृदयमें उठती हुई पीड़ासे आंखोंको यद्यपि उसने बड़ी दबा रखनेका उद्योग किया, तथापि आंखोंने अश्रुधारा बहाकर उसके हृदयकी यातना प्रकट कर दी। फिर अपने दोनों हाथोंसे आंसू पोंछती हुई वह बोली,—

"बिदा, मेरी बहिन ऐलोसा! बिदा, अंग्रेजोंके सम्राट ऐलवर्ट।" इतना कहकर उसने उन दोनोंका हाथ बड़े जोरसे दबा दिया और ऐसी दृष्टिसे उनके चेहरेकी ओर देखने लगी, जिससे न तो किसी प्रकारका भय और न ईर्षा ही प्रकट होती थी।

इसके बाद हाथ छोड़ वह तेजीसे उस कमरेके बाहर निकल गयी।

अब आयशा उस कमरेमें गयी, जिसमें लियना और मेटारिष लानेल तथा कोनाडंसे बातें कर रही थीं। वहां उन दोनोंको थोड़े ही शब्दोंमें

यह समझकर, कि ऐंजीलाको रक्षा करना ही अब उनका भविष्य-कर्त्तव्य होगा, उस कमरेसे हटना ही चाहती थी, कि उसकी दोनों सहेलियाँ जोरसे रोती हुई उससे लिपट गई और उससे वहीं रहनेके लिये बार बार प्रार्थना करने लगीं ; परन्तु अन्तमें आयशाने उनकी लिपटसे जबर्दस्ती अपनेको छुड़ा लिया और लपकती हुई उस स्थान पर पहुंची जहाँ उसका घोडा था और उसपर सवार हो, बिना किसीको साथ लिये ; परन्तु आखोंमें आसू भरकर तेजीसे एक ओर चली गयी।

उस समय सूर्य्य देव अस्ताचल पर्वतपर पहुंचा ही चाहते थे, जिस समय आयशा एकाएक चैपेलसे निकल अपने घोड़ेपर सवार हुई और जब वह महलकी खाईं पारकर सदर सड़कपर पहुंची, तब एकबार उस ऊंचे महलपर उसने अन्तिम दृष्टि डाली।

बड़े बड़े तथा ऊंचे महलोंके बीच वह किला बना हुआ था, जिसे छोड़ आयशा अभी अभी बाहर निकली थी। इस समय अस्तगामी सूर्यदेवकी सुनहली किरणे पड़नेके कारण यद्यपि वह किला सुनहला चमक रहा था, तथापि आयशाको आखोंमें आसू भरे रहनेके कारण वह उसे धुधला मालूम होता था। अब उस किलेकी ओर देखती हुई ठंढी सांस लेकर वह बोली,—"ऐ अहंकारी दुर्ग! आज मैं तुझसे भी बिदा लेती हूं, क्योंकि तू अपने आश्रयमें एक ऐसे पुरुषको रखे हुए है; जिसे मैं प्यार करती थी, करती हूं, तथा आजन्म करूंगी।"

इसके बाद उसके हृदयमें अत्यधिक वेग उत्पन्न हो जानेके कारण उसने किलेकी ओरसे अपनी दृष्टि फेरली और घोड़ेको ऐड लगा एक ओरको रवाना हो गयी।

उसी दिन सन्ध्याके बाद सम्राट एलवर्टने आयशाके दिये हुए कागजोंका समूचा पुलिन्दा पढ़ डाला और अब उसके हृदयमें भेदकी सभी बातें आइनेकी तरह प्रकट हो गयीं।

एक सौ एक परिच्छेद ।

आयशाके सम्बन्धमें ।

हमारे पाठकोंको स्मरण होगा, कि इमीलिया-रडडग्गी प्रेगके पास ही एक झोंपड़ेमें मरी थी और मरते समय उसने अपनी कन्या आयशाको अपने भाई जान जिटकाके सुपुर्द कर दिया था और जिटकाने भी वादा किया था, कि वह आयशाके विताकी वह प्रतिज्ञा पूरी करेगा, जो उसने आयशाके सम्बन्धमें, उसकी मृत्यु होनेसे पहले ही की थी। जो कुछ हो, उसकी माताकी मृत्युके बाद जिटकाने आयशाको अपनी एक किसानके यहां रख दिया, क्योंकि मैरियेटा मारा गयी थी कारण अब उसके पकड़े जानेका भी भय न था।

जब आयशा छोटह वर्षकी हुई तो वह प्रेगके पास वाले एक कोन्वेण्ट (मठशाला) में रख दी गई। वह कोन्वेण्ट उस जङ्गलके पास ही था जहां टेनीराइट सिपाहियोंका पड़ाव पड़ा हुआ था, और जहां हमारे पाठकोंने पहले पहल शैतानोंको देखा था। जिटकाको मालूम था, कि इस कोन्वेण्टकी रक्षा करने वाली अधिष्ठात्री एक बड़े ही उत्तम स्वभावकी दयालु तथा भक्तिमती स्त्री है और यही कारण था, कि आयशा उसी कोन्वेण्टमें भेजी भी गयी। उस समय जिटकाके ध्यानमें भी यह बात न आयी, कि कोन्वेण्टकी अधिष्ठात्री स्त्री यद्यपि दयालु तथा भक्तिमती मालूम होती है, तथापि उसके हृदयमें सांसारिक विचार बहुत ही अधिक भरे हुए हैं और वह उस प्रकृतिकी स्त्री है, जो अवसर पड़नेपर भयानक, निठुरता, कपटता तथा अन्यायकी

महलके गुप्त भेद, न बताये गये थे, परन्तु उस चालाक, धूर्त तथा बदमाश बेरोनिसने धीरे धीरे बुराईका पानी कोमल हृदया आयशाके हृदयपर ढालना प्रारम्भ कर दिया था। यह शिक्षा उसे इस ढगसे दी जाती थी, कि आयशा मन ही मन यह समझती थी, कि उसे बहुत ही ऊचे दर्जेकी ओर आवश्यक शिक्षा दी जा रही है, परन्तु बेरोनिस जिस समय उसे बुराइयोंसे बचनेका उपदेश देती थी, उस समय उन बुराइयोंका वर्णन इतनी सुन्दरतासे करती थी, कि उनसे बचनेके बदले उस ओर जाने को ही प्रवृत्ति मनुष्यके हृदयमें उत्पन्न हो जाना एक साधारण बात थी। इस तरह कोमल हृदया आयशा-की हृदयपर बुराइयोंका बीज बोया गया और सांसारिक वासनाओं-की लालसा उसके हृदयमें भयानक रूपसे भडक उठी। बुरे विचार हो गये, और अन्तमें जब बेरोनिसने देखा, कि अब यह कामके योग्य तथा उस महलके भेद जाननेके लायक हो गयी, तब एक रात्रिमें ज्यों ही चांदीकी घडी बजी त्यों ही वह उसे साथ ले उस बडे कमरेमें जा पहुंची, जहां बहुतसे खूबसूरत मनुष्य तथा सुन्दरी स्त्रियां एक-त्रित थीं।

ओह! उस समय आयशाके हृदयमें एक विचित्र भाव तथा आंखोंमें भयानक चकाचौंध उत्पन्न हो गयी, जब उसने उस बड़े कमरेमें, जो बहुत ही सुन्दरतासे सजा गया था, तथा जिसका हाल पहले ही वर्णन किया जा चुका है, बहुमूल्य तथा भडकीले वस्त्र पहने हुए सुन्दर सुन्दर पुरुष तथा बडी ही सुन्दरी स्त्रियोंका हाथमें हाथ दिये घूमते और बैठे हुए देखा और जब कि वह उस कमरेकी सुन्दरता तथा मनोहर दृश्योंको आखे फाड़ फाड़कर देख रही थी, उसी समय बेरोनिस उसे घुमाती-फिराती हुई पासके ही एक छोटे कमरेमें ले गयी, जहां लोहेका एक बड़ा पिंजरा जल रहा था। ओह उस

कमरेमें जातेही एक भयानक भय आयशापर छा गया ; जब उसने उसको भीतरी कमरा दिखा। उसके मनमें डर जमने लगा और उसके हृदयमें ठीक इस तरह धकधकी सी लगी मानो उसमेंसे आगकी लपट निकलने लगी हो। बात यह थी, कि उसके सामने दो मुर्दे पड़े थे, जिनके शरीरमें मांसका नाम निशान न था और केवल हड्डियोंका ढांचा रह गया था। उनके दोनों बिना मांसके सूखे हुए हाथ सामने की ओर बैठे हुए थे तथा उनकी अंगुलियां आयशाकी ओरको फैली हुई थीं।

कुछ देरके बाद आयशाने चौंककर बेरोनिसकी ओर देखा ; परन्तु इस समय भी उसकी दृष्टि भयानक हो रही थी और आंखें जल रही थीं। बेरोनिस-एमलीनने उसको अपनी ओर देखते देख एक खंजर निकाल उसकी हथेलीका निशाना साधती हुए उसे यह कसम खानेके लिये, जो वह कहना चाहती थी, अथवा मरकर इसी तरहका तीसरा मुर्दा बननेके लिये कहा। ओह! आयशा घबड़ा गयी और मृत्युके भयसे उसने बिना समझे बूझे वह कसम खा ली, जो उस बदमाश बेरोनिसने उसे खिलायी। हम उस भयानक दूषित शपथका वर्णनकर इस पुस्तकके कई पृष्ठ रंगना तथा पाठकोंका समय वृथा ही नष्ट करना उचित नहीं समझते और इतना ही लिख देना काफी समझते हैं, कि उसने उसे यह कसम खिलायी जिसने स्वर्ग नर्क दोनोंको समान प्रमाणित कर दिया और जिसका अन्तिम शब्द सब भेदोंको गुप्त रखना था। परन्तु यह भी उसी समय कह दिया गया, कि यह किया शपथ उसी समय तकके लिये है, जबतक बेरोनिस-एमलीन जीवित है।

यह शपथ खाकर, जिसका प्रत्येक शब्द नवीन अपराधके समान आयशाके मुखसे निकला तथा जिसके प्रत्येक शब्दका भयानक प्रभाव सरल हृदया आयशाके हृदय पर पड़ा, आयशाने बेरोनिसके हाथका खंजर चूम लिया। अब बेरोनिस उसे अपने साथ ही उसके पास वाले

एक दूसरे कमरेमें गयी जहां सब तरहके भोजन तय्यार थे। वहां बैरोनेसने एक गिलासमें एक प्रकारकी शराब भरकर आयशाको पिलायी और अब वह आयशा, जो कुछ देर पहले भयके कारण कांप रही थी, फिर अपनी पूर्व अवस्था पर आने लगी और बिजलीके समान उसके शरीरमें उत्साह भर गया।

उसके चेहरेका गुलाबी रंग, जो भयके कारण गायब हो गया था, फिर उसके गालोंपर दिखाई देने लगा; उसके ओठ जो कुछ देर पहले पीले पड़ रहे थे, फिर लाल हो गये और उसकी वे चमकीली आखें, जो घबराहटसे धुधली पड़ गयी थीं; फिर पूर्व्वत चमकने लगीं। और कुछही क्षणबाद उसका समूचा चेहरा प्रसन्न तथा चमकता हुआ दिखाई देने लगा। अब उस कमरे तथा शवकी भयङ्करता उसकी स्मरण शक्तिसे बिलुप्त हो गयी और उसे ऐसा मालूम होने लगा मानो उसने कोई भयानक स्वप्न देखा था तथा गत घटनायें सत्य न थीं और यही कारण था, कि आयशा बैरोनेसके साथ फिर हंसती तथा अठखेलियां करती हुई उस बड़े कमरेमें आ पहुंची।

अब हम पाठकोंका ध्यान कुछ देरके लिये बैरोनेस-हैनलेनकी ओर दिलाना चाहते हैं।

गत घटनाओं तथा इस किस्सेकी आरम्भिक घटनाओंको पढ़नेसे पाठकोंको मालूम हो गया होगा, कि बैरोनेस हैनलेन पीतलकी मूर्त्तिकी एक प्रभावशालिनी सेविका तथा उसके दलको पुष्ट करनेवाली थी। इसी लिये बैरोनेस-हैनलेनने कितनी ही ऐसी ऐसी सुन्दरी स्त्रियोंको अपने घरमें फसा रखा था, जो बड़े बड़े धनवान शरीफों और खूबसूरत नौजवानोंको अपने प्रेम पाशमें फसातीं तथा फिर उन्हें पीतलकी मूर्त्तिकी सेवामें लगाती थीं। इस गुप्त समितिका यह भी एक नियम था, कि इसके दल वाले पुरुष स्त्रियोंका सतीत्व, इसलिये

दिखाई देते थे, कि मानो मूर्तिके मध्यसे वे सदा पीतलकी मूर्तिको दिखा करती हैं। इस तरह जबकि उनका सतीत्व भ्रष्ट हो जाता, उनके हृदयकी लज्जा, शर्म दूर हो जाती तथा धोखा देना और बातें बनाना वे अच्छी तरह जान जातीं, तब वे लीलाके उपयुक्त समझी जाती थीं।

पश्चात् इन कामोंको पूरा करने, उन दलके भेद गुप्त रखने तथा अपना दल दृढ़ करनेके लिये जोसेफिनाके भिन्न भिन्न स्थानोंमें जितनेही मकान बनाये गये थे। इन मकानोंमें उत्तम, भड़कीला, प्रभावशाली तथा निर्दिष्ट काम करने वाला नहीं पड़ता था; जो बेरोनेस एमलेनका महल कहलाता था। अपने पतिकी मृत्युके बाद बेरोनेस-एमलेनने यह कारबार जमाया था और उसी समय इस सफेद महलकी नींव भी पड़ी थी। यह नींव एमलेन-केसलसे थोड़ी ही दूरपर डाली गयी थी। जब सफेद महल बन गया तब उसने तीनों इटालियन भाइयोंके अतिरिक्त अपने सब पुराने नौकर चाकर विदा कर दिये। इन तीनों भाइयोंको उसने गुप्त रीतिसे सफेद महल तथा एमलेन केसलके बीच सुरंग बनानेके लिये नियुक्त किया; परन्तु जब यह सुरंग तैयार हो गयी, तब उसने विचारा, कि इन तीनोंको स्वतन्त्र न छोड़ना चाहिये नहीं तो ये भेद प्रकट कर देंगे। इसीलिये उसने इन तीनोंको पीतलकी मूर्त्तिके आगे बलिदानके लिये भेज दिया और पाठकोंको मालूम हो चुका है, कि जल्लादका काम ग्रहण कर किस तरह उन लोगोंने अपने प्राण बचाये। जब एमलेन-केसल तथा सफेद महलमें सब सामानोंका पूरा पूरा प्रबन्ध होगया, तब सफेद महलमें विधवायें तथा युवतियां रक्खी जाने लगीं और एमलेन केसलमें वे निराश्रय तथा अनाथ मनुष्य रखे जाने लगे जिनका कोई सहायक न था। फादर जोसियम एमलेन-केसलका प्रधान रक्षक तथा स्वयं बेरोनेस सफेद महलकी अधिष्ठात्री नियुक्त हुई।

इसके बाद काम आरम्भ हुआ तथा सफेद-महल और हेमलेन-केसलमें गुप्त पथ रहनेके कारण वहांके स्त्री पुरुष खूब आनन्द लूटने लगे।

यह चादीकी घड़ी सिर्फ इस इशारेके लिये लगायी गयी थी, कि उसके बजते ही मालूम हो जाय कि आनन्द लेनेका समय आ गया है। इस अवसरके कुछ पहले ही पुरुष हेमलेन-केसलकी सुरंगोंमें तथा स्त्रियां सफेद महलमें भड़कीले वस्त्र पहनकर तय्यार रहती थीं। जब घण्टी बजती थी, तब वे सब उस बड़े कमरेमें एकत्र हो जाते थे, बढ़िया बढ़िया शराब तथा शरबत सीधे फ्रान्ससे मगाये जाते थे और संसारमें जहा जहां जो जो चीजें उत्तम उत्पन्न होतीं, सभी इस महलके अधिवासियोंको तृप्त करनेके लिये मगायी जाती थी।

स्त्रियोंका आनन्द बढ़ानेके लिये बाहरके मनुष्योंको फंसाकर लाने का भी नियम रखा गया था और प्रेगके लिये डेमनार्थाको ही यह काम सौंपा गया था, जैसा कि लानेल और कोनार्डको फंसाते समय पाठक जान चुके हैं। शायद पाठकोंको यह भी मालूम हो चुका है, कि वहा आने वाले मनुष्य किस तरह शपथ खिलाकर यह भेद प्रकट कर देनेसे लाचार कर दिये जाते थे और किस तरह वे महलमें लाये और फिर निकाल बाहर किये जाते थे। यदि कभी ऐसा अवसर पड़ जाता, कि वहा आने वाला पुरुष बैरोनेस-हेमलेनको पहचान जाता और उसपर अपने हृदयका भेद प्रकट करता तो वह उसे तुरत ही इस तरह मरवा डालती कि फिर उसका पता तक न लगता।

ऐसा भी होता था, कि सफेदमहलकी स्त्रियों तथा हेमलेन-केसलके रहने वाले पुरुषोंमें विवाह भी उस अवस्थामें करा दिया जाता था, जब कि स्त्री गर्भवती हो जाती थी। इसके बाद उनको धनकी यथेष्ट सहायता दे दी जाती थी तथा वे विवाहित स्त्री पुरुष सफेद महल और हेमलेन-केसल छोड़ किसी दूसरी ही जगह जा बसते थे।

यह भी एक नियम था, कि थर्कंट महल तथा ईमलिन केसलके मनुष्य कैदियोंके समान तब तक बन्द रखे जाते थे, जब तक वे ऊपर लिखे अनुसार पीतलकी मूर्त्तिको देखनेके उपयुक्त न समझे जाते थे। इन दोनों महलोंके नौकर भी कैदियोंके समान ही रहते थे और यद्यपि वे इस महलको भीतर-बाहरसे भलीभांति परिचित थे, तथापि पीतलकी मूर्त्ति के सम्बन्धमें कुछ भी नहीं जानते थे। इसीलिये सर थर्नेट या ईमकंट्के पूछने पर चरमक लालिस और फोलाकोंके विषयमें कुछ भी न बता सका था।

अब हम अपने किस्सेका सिलसिला ठीक करनेके लिये आयशाकी ओर झुकते हैं। कुछ दिन बाद बेरोनेस आयशाको उस बड़े कमरेमें ले गयी। अभी तक उसे उस महलके सब भेद नहीं मालूम हुए थे। कुछही देर बाद फादर सोमियन उसको बगलमें आ बैठा। ओह ; इस समय वह पादड़ी की पोशाकमें न था, बल्कि एक बड़ेही शौकीन मनुष्य तथा बहादुर नौजवानकी सी भड़कीली पोशाक पहने हुए था। परन्तु एकाएक उसे देखते ही आयशाके हृदयमें एक दूसरा ही भाव उदय हो गया। उसको तिरछी दृष्टिने पहचान लिया, कि यह पादड़ी सोमियन है। इसलिये जब पादड़ीने उसका हाथ उठाकर चूमना चाहा तब उसने झटककर अपना हाथ छुड़ाते हुए उसे अपने पाससे हट जानेके लिये कहा। परन्तु फादरसोमियन कोई साधारण मनुष्य न था। उसने व्यंगसे हंसते हुए कहा, कि मैं वही मनुष्य हूं, जो पीतलकी मूर्त्तिका प्रधान सेवक हूं और जिसके सामने तुम अपनी सब गुप्त बातें प्रकट कर चुकी हो। इतना सुनते ही आयशा घबड़ाकर बेहोश हो जमीन पर गिर पड़ी और उस बड़े कमरेमें एक प्रकारकी हलचल मच गयी। उसी समय बेरोनेस-ईमलिनने आयशाको उठवाकर एक दूसरे कमरेमें भेज दिया, कितनी ही प्रकारकी दवायें दी गयीं और दूसरे दिवस

जब उसको बेहोशी दूर हुई, तब उसने देखा, कि फादरसीप्रियन उसकी बगलमें पड़ा हुआ है तथा उसका सर्वनाश हो चुका है!

इस घटनाका विशेष वर्णन कर हम पाठकोंका हृदय नहीं दुखाया चाहते; परन्तु इतना कह देना आवश्यक समझते हैं, कि जब आयशाने देखा, कि उसका सर्वनाश हो चुका है, तब उसने अपना ढंग ही बदल दिया। वह पादड़ीके साथ प्रेम पूर्वक व्यवहार करने लगी, क्योंकि वह जानती थी, कि जरा भी सन्देह होते ही वह पीतलकी मूर्त्तिकी शिकार बनेगी। अब उसने धीरे धीरे उस सफेद-महलमें भी यही भाव दिखाना आरम्भ किया और पादड़ीके साथ ही रहने लगी। इस तरह पादड़ीको पूरा विश्वास हो गया, कि वह उसे अच्छी तरह प्यार करती है। धीरे धीरे उसे सब प्रकारकी स्वतंत्रता मिल गयी और अब सफेद-महलमें भी वह कैदी न समझी जाने लगी।

इस तरह सफेद-महलसे भागनेका उसे अनायास ही अवसर मिल गया और वह जान जिटकाके पास जा पहुंची, तथा रो रोकर पादड़ीकी सब दुष्टता और अपने सर्वनाशका हाल जिटकाको सुनाने लगी। जिटकाके हृदयपर इस बातका बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा था और उसने पादड़ीसे बदला लेनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली। पाठकोंको मालूम हो चुका है, कि जिटका जिद्दी स्वभावका मनुष्य था, अतः उसने उस सफेद-महलके बहुतसे भेद पूछने चाहे; परन्तु शपथके भयसे आयशाने एक दूसरा ही किस्सा गढ़कर उसे सुनाते हुए कहा, कि "उस मठके एकान्त वाससे ऊबकर मैं प्रेगसे भाग निकली। राहमें ही एक पादड़ी मिला, जिसने मुझे दुःखी देख, आश्रय देनेका वादा किया। मैं उसके यहां जा रही। उसने धीरे धीरे बातोंसे मेरे हृदयका सब भाव जान लिया। इसके बाद उसने प्रकट किया, कि वह मूर्त्तिका सेवक है और यदि वह उससे मिलना न चाहेगी

तो वह उसी अवदंशी पीतलकी मूर्त्तिकी उपाधि कर देगा। ओह! यह बात सुनते ही, मैं बेहोश हो गयी। इसके बाद जब मैं होशमें आयी, तब समझ लिया, कि वह मेरा सर्वनाश कर चुका है।"

इतना सुनते ही जिठका चिल्ला उठा,—"बस बस बहुत हुआ। मेरे हृदयका बहुत दिनोंका दबा हुआ भाव आज फिर भभक उठा,—बहुत दिनोंसे मैं विचारता था, कि इन अत्याचारी पादड़ियोंका नाश करूँगा; परन्तु सब विचारमेंही दिन बीत गये। अब उस विचारको कार्य्यमें लानेका समय आ पहुँचा और अब इन पादड़ियोंका नाश करना आवश्यक हो गया। (कुछ ठहरकर) परन्तु मायग्रा! इन थोड़े दिनोंके लिये, जबतक उनका नाश नहीं होता, तबतक तुझे उसी स्थानमें जाकर रहना चाहिये, जहां मैंने तुझे उस समय रख दिया था जब तेरी माता परलोक सिधारी थी और जहां तू उस दिनतक थी, जबतक मठमें न भेजी गयी थी। उस स्थानपर तेरी दोनों सहेलियां भी हैं; परन्तु यह क्या? तू उदास क्यों है? क्या तू उस स्थानपर नहीं जाया चाहती?"

मायग्रा बोली,—"नहीं, मेरे प्यारे बाबा! मैं वहां जानेसे नहीं हिचकती; परन्तु आपका साथ छोड़नेसे हिचकती हूं; क्योंकि पीतलकी मूर्त्तिके दलवाले न जाने मुझपर क्या अत्याचार कर बैठें और आप जानते हैं, मैं मठसे भाग आयी हूं, वे मठवाले क्या मुझपर अत्याचार न करेंगे? ओह! मैं इस समय बड़ी विपदमें हूं। मुझे इस समय जिस तरह मठवालोंसे भय है, उसी तरह पीतलकी मूर्त्तिके

अतिरिक्त मैं अपनेको शीघ्र ही एक भयानक विपत्तिमें डालना चाहता हूं, इसलिये इस संसारको दृष्टिसे अब तुमको छिप जाना चाहिये और इसी तरह गत घटनाओंको छिपा रखना चाहिये, जिनका सम्बन्ध तेरे परिवारसे है, और अब आयशा, बिना सोचे-विचारे तू लियडा और थेटारिसके पास चली जाओ, वे दोनों तुझे अपने प्राणोंसे भी बढ़कर प्यार करेंगी।"

लाचार आयशाको जाना ही पड़ा और बड़े दुःखसे उसने प्रेग छोड़ा। उसी दिन बहादुर जिटकाने "मौरट टेवोरहलकी" नींव डाली और—"जानहंस" की मृत्युके सम्बन्धमें बोहेमियामें जो हलचल मची, उसीका पक्ष लेकर उसने कार्य करना आरम्भ किया, जिसका जिक्र इस किस्सेमें आ चुका है।

ज्यों ज्यों दिन बीतते गये, त्यों त्यों जिटकाका दल बढ़ता ही गया और आयशाको भी आने-जानेवालोंसे सब समाचार मिलते गये। इसी तरह एक फकीरसे आयशाको एक और भी विचित्र पदार्थ मालूम हुआ। उस फकीरने कहा, कि एक प्रकारका फल बोहेमियामें उत्पन्न होता है, जिससे बहुत ही सुन्दर काला रङ्ग तय्यार होता है और शरीरपर उसके लगानेसे ही बढ़िया आबनूसका रङ्ग हो जाता है, जिसे देखनेपर बड़ा ही बुद्धिमान और तीक्ष्ण दृष्टि मनुष्य भी यह नहीं समझ सकता, कि यह रंग असली नहीं है। यह रंग धोनेसे ही बिना मसालेके नहीं निकल जाता। इस तरह यदि कितनी ही आंसुओंकी बूंदे तुम्हारे गालोंपर ढलका करेंगी, परन्तु वह रंग कभी न दूर होगा। उस रंगको हटानेके दो ही उपाय हैं, एक तो उसी वृक्षकी जड़का रस तथा दूसरा मनुष्य या पशुका रक्त, ये दो पदार्थ मलनेसे वह रंग उतर जाता है। आयशाने इसकी परीक्षाकी और उस फकीरका कथन सत्य निकला! इस तरह आयशा रंग-

बदलकर ग्रीनवुडकी मूर्ति अपना मठ वालोंके सदा निश्चिन्त होगयी। इसी तरह उसने अपनेको और भी छिपानेके लिये अपना लिबास भी दूसरी ही तरह गढ़ लिया और अपना नाम ग्रीनवुडकी लड़की "ग्रेतानो" रख लिया।

उधर स्थिटकामें टैगोर-दल स्थापित कर लिया था, हजारों मनुष्य इसमें सम्मिलित हो गये थे, तथा राज तन्त्रके विरुद्ध पूरा पूरा षड्यन्त्र रचा जा रहा था। कुछ ही दिन बाद बादशाह मैनोल मर गया और पादड़ी मौन्शियमके विशेष परिचय तथा अतुल विश्वास रखनेके कारण वह भावी समय अपना खजाना तथा राजकुमारी एलोनाबेलको इन्हीके सुपुर्द कर गया। इसके बाद एलोनाबेलको सुरक्षित स्थानमें रखनेके बहाने, वह इसी सफेद महलमें ले गया और वहां योथेनियाकी राजकुमारी ऐलोनाबेलका भी उसी तरह सर्वनाश किया गया; जिस तरह आयशाका किया गया था।

फिर इसमें आश्चर्यकी क्या बात है, यदि वह पादड़ीकी बातें सुन उस समय कांप उठी थी, जब कि ऐलबर्ट 'सर अर्नेस्ट डी कोमर' के वेषमें उससे मिलने गया था, अथवा उस समय जब, कि रोडल्फका उससे विवाह हुआ चाहता था। हां, वह पादड़ीकी घड़ी और सफेद महलके नामसे ही कांप उठती थी, क्योंकि वह जानती थी, कि सफेद महलके दुराचारोंका भण्डा फूटतेही वह किसी कामकी न रह जायगी और दुःख, भय तथा निराशामें उसे प्राण त्यागना पड़ेगा। यही कारण था; कि उस महल तथा घाटीकी घड़ीकी याद दिलाकर दुष्ट पादड़ी उसे अपने वशमें कर लेता था।

अब हम फिर आयशाकी ओर झुकते हैं। ज्यों ही उसने अपना नाम तथा वेश बदला, त्यों ही वह प्रेगके पास ही पड़े हुए अपने [illegible] के पहाड़में जा पहुंची। स्थिटकासे उसका सम्बन्ध एक

गया और पूछने वालोंको एक दूसरे ही प्रकारका आश्चर्य्य जनक किस्सा गढ़कर सुनाया जाने लगा। तथा जिटकाके विषयमें तो यही प्रसिद्ध था, कि वह अनाथोंका आश्रयदाता और वही काम करने वाला है, जिससे संसारका उपकार होता है। अत एक अनाथा, दुःखिनी, निर्दोष बालिकाको आश्रय देना उसके लिये कोई आश्चर्य्यकी बात नहीं है। जान जिटकाने भी यही बात प्रचारित करनेमें प्रश्रय दिया तथा आयशा आदरसे जिटकाके साथ ही रहने लगी।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि उस समय मठोंका बहुत ही अधिक प्रभाव फैला हुआ था और गिर्जेमें विवाह तथा अन्य प्रकारकी की हुई शपथोंका बहुत ही मान्य था तथा ये शपथ बिना किसी उचित और प्रभावशाली कारणके नहीं तोड़ी जा सकती थी। इस तरह यद्यपि आयशाने मठका सम्बन्ध त्याग दिया था और सुधारक दलमें सम्मिलित हो गयी थी, तथापि वह अच्छी तरह समझती थी, कि जब तक उचित रीतिसे शपथ भंग न की जायगी तब तक वह स्वतन्त्र नहीं हो सकती। साथही वह यह भी जानती थी, कि यदि नियत समयके भीतर वह मठमें न चली जायगी, तो उसके नाम, तथा सूरत शक्लका प्रचार कर उसे पकड़नेके लिये मनुष्य छोड़े जायंगे और सब गिर्जोमें यह समाचार भेज दिया जायगा। इस तरह यदि कभी उसे विवाह करनेका अवसर आ पड़ा तो किसी गिर्जेमें जाकर वह विवाह न कर सकेगी और गिर्जेमें पैर रखतेही पकड़ी जायगी।

गिर्जे वाली बातका भय दूर करनेका उसने एक उपाय रचा और अपनी सहेली लिपझायी उस मठकी अधिष्ठात्रीके पास वह प्रतिज्ञा पत्र लानेके लिये भेजा, जिसपर उसने ग्रवजीवन(देवताकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की थी, क्योंकि वह नहीं जानती थी, कि वह बुड्ढी पादरी सोमियमसे मिली हुई है। बल्कि वह यही जानती थी, कि पीतलकी

मूर्त्तिसे इसका कोई सम्बन्ध है और पादड़ीको कुछ सामान्य ज्ञान अधिकार है। वह इसी मारे उसे विश्वास था, कि उसका भेद प्रकट न होगा।

जब मठकी अधिष्ठात्रीने निटकाका बड़ा स्वागत किया और उसकी बात बड़ी खुशीसे स्वीकार कर ली। आयशाकी ओर से उसे एक बड़ी रकम देनेकी प्रतिज्ञा की गई और उस मठकी अधिष्ठात्रीने प्रतिज्ञा की कि जोपहि वह गुप्त रीतिसे एक पत्र मंगाकर उसकी इच्छा पूर्ण कर देगी। यही समाचार लेकर निटका आयशाके पास पहुंची। निटकाके स्वामीने भी इस बातको पसन्द किया और सुधारक रखनेके कारण वह कठिनतासे इस कार्यको पूरा करनेके लिये तय्यार हुआ। इसके बाद ही टेवोर सभा-दल उस गिर्जेके पास ही जा पड़ा था। इसके बाद उस मठकी अधिष्ठात्रीसे कहलाया गया, कि आयशा कुछ दिनके लिये यहां आयी है और इसी अवसरपर सब काम हो जाने चाहिये'। अतएव निटकाने यह भी प्रतिज्ञा की, कि वह सीमन लैथोलिक एक भाईको किसी प्रकारका कष्ट न देगा और इसी लिये मठकी अधिष्ठात्रीको टेवोरीका गुप्त संकेत भी बता दिया गया था, जिसमें कि वह अपने सम्बन्धके मनुष्योंको आसानीसे बुला सके। अब इन सब बातोंके स्थिर हो जानेपर गुप्त रूपसे यह समाचार फादर ग्रीपियमको भेज दिया गया, जो वहांसे थोड़ी ही दूरपर रहता था।

एकसौ दो परिच्छेद।

पिछली बातोंका अन्त।

यह उसी समय की घटना है, जब कि सर अर्नेस्ट जो बीमर नाम-धारी पेरूटे बोहेमियामें सफर करता हुआ, टेवोराइट-पड़ावमें आकर ठहरा था। निटकाको टर्किश युद्धमें लड़ने तथा आष्ट्रियाके इस

गया और पूछने वालोंको एक दूसरे ही प्रकारका आश्चर्य जनक किस्सा गढ़कर सुनाया जाने लगा तथा जिटकाके विषयमें तो यही प्रसिद्ध था, कि वह अनाथोंका आश्रयदाता और वही काम करने वाला है, जिससे संसारका उपकार होता है। अत एक अनाथा, दुःखिनी, निर्बोध वालिकाको आश्रय देना उसके लिये कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। जान जिटकाने भी यही बात प्रचारित करनेमें प्रश्रय दिया तथा आयशा आदरसे जिटकाके साथ ही रहने लगी।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि उस समय मठोंका बहुत ही अधिक प्रभाव फैला हुआ था और गिर्जेमें विवाह तथा अन्य प्रकारकी की हुई शपथोंका बहुत ही मान्य था तथा ये शपथ बिना किसी उचित और प्रभावशाली कारणके नहीं तोड़ी जा सकती थी। इस तरह यद्यपि आयशाने मठका सम्बन्ध त्याग दिया था और सुधारक दलमें सम्मिलित हो गयी थी, तथापि वह अच्छी तरह समझती थी, कि जब तक उचित रीतिसे शपथ भंग न की जायगी तब तक वह स्वतन्त्र नहीं हो सकती। साथही वह यह भी जानती थी, कि यदि नियत समयके भीतर वह मठमें न चली जायगी, तो उसके नाम,तथा सूरत शक्लका प्रचार कर उसे पकड़नेके लिये मनुष्य छोड़े जायंगे और सब गिर्जों में यह समाचार भेज दिया जायगा। इस तरह यदि कभी उसे विवाह करनेका अवसर आ पड़ा तो किसी गिर्जेमें जाकर वह विवाह न कर सकेगी और गिर्जेमें पैर रखतेही पकड़ी जायगी।

गिर्जे वाली बातका भय दूर करनेका उसने एक उपाय रचा और अपनी सहेली लिजाको उस मठकी अधिष्ठात्रीके पास वह प्रतिज्ञा पत्र लानेके लिये भेजा, जिसपर उसने यावज्जीवन[देवताकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की थी, क्योंकि वह नहीं जानती थी, कि वह बुड्ढी फादर ,हुई है। बल्कि वह यही जानती थी, कि पीतलकी

भूमिमें उसका कोई अन्त है और दादकोही कुछ मालूम न्याय परिणाम है। अब इसी लिये यही विचार था, कि उसका भेद प्रकट न होता।

उस मनुको अधिकारियोंने लिखापढ़ा बड़ा हङ्गामा किया और उनकी बात बड़ी खुशीसे स्वीकार कर ली। आसमानकी ओर ही उसी एक बड़ी रकम देनेकी प्रतिज्ञा की गई और उस मठको अधिकारियोंने प्रतिज्ञा की, कि पोथी यह गुप्त रीतिसे एक पत्र लिखकर उसकी इच्छा पूरी कर देंगे। यही समाचार लेकर लिख्नवा आसमानके पास पहुंचे। लिटकाके कामोंमें भी इस बातको समझ पड़ी और सुधारक होनेके कारण यह कठिनताई इस कार्यको पूरा करनेके लिये तय्यार हुआ। इसके बाद ही टेसोर लामा-उस इस निर्णयके पास भी आ पहुंचा। इसके बाद उस मठको अधिकारियोंसे कहलाया गया, कि आपका कुछ दिनके लिये गड़ी आयी है और इसी अवसरपर अब काम हो जाने चाहिये। सरकार-लिटकाने यह भी प्रतिज्ञा की, कि वह तिब्बत जैसोलिक इस मार्गको किसी प्रकारका कष्ट न देगा और इसी लिये मठको अधिकारियोंको टेसोरीका कुछ संकेत भी बता दिया गया था, जिसमें कि वह अपने मन्त्रमें मनुष्योंको आसानीसे बुला सकें। अब जब सब बातोंका निश्चय हो जानेपर गुप्त रूपसे यह समाचार फादर औग्रियनको भेज दिया गया, जो यहांसे थोड़ी ही दूरपर रहता था।

एकसौ दो परिच्छेद।

पिछली बातोंका अन्त।

यह उसी समय की घटना है, जब कि सर अर्नेस्ट ही कोमर नाम-धारी देशमें वोहेमियामें सफर करता हुआ, टेसोराइट-पड़ावमें आकर ठहरा था। लिटकाको टरकिस युद्धमें छड़ने राया, आमिनियाके इस

गया और पूछने वालोंको एक दूसरे ही प्रकारका आश्चर्य जनक किस्सा गढ़कर सुनाया जाने लगा तथा जिटकाके विषयमें तो यही प्रसिद्ध था, कि वह अनाथोंका आश्रयदाता और वही काम करने वाला है, जिससे संसारका उपकार होता है। अत. एक अनाथा, दुःखिनी, निर्दोष वालिकाको आश्रय देना उसके लिये कोई आश्चर्य की बात नहीं है। जान जिटकाने भी यही बात प्रचारित करनेमें प्रश्रय दिया तथा आयशा आदरसे जिटकाके साथ ही रहने लगी।

पाठकोंको स्मरण रखना चाहिये, कि उस समय मठोंका बहुत ही अधिक प्रभाव फैला हुआ था और गिर्जेमें विवाह तथा अन्य प्रकार-की की हुई शपथोंका बहुत ही मान्य था तथा ये शपथ बिना किसी उचित और प्रभावशाली कारणके नहीं तोड़ी जा सकती थी। इस तरह यद्यपि आयशाने मठका सम्बन्ध त्याग दिया था और सुधारक दलमें सम्मिलित हो गयी थी, तथापि वह अच्छी तरह समझती थी, कि जब तक उचित रीतिसे शपथ भग न की जायगी तब तक वह स्वतंत्र नहीं हो सकती। साथही वह यह भी जानती थी, कि यदि नियत समयके भीतर वह मठमें न चली जायगी, तो उसके नाम, तथा सूरत शक्लका प्रचार कर उसे पकड़नेके लिये मनुष्य छोड़े जायगे और सब गिर्जों में यह समाचार भेज दिया जायगा। इस तरह यदि कभी उसे विवाह करनेका अवसर आ पड़ा तो किसी गिर्जेमें जाकर वह विवाह न कर सकेगी और गिर्जेमें पैर रखतेही पकड़ी जायगी।

गिर्जे वाली बातका भय दूर करनेका उसने एक उपाय रचा और अपनी सहेली लिज़ाको उस मठकी अधिष्ठात्रीके पास वह प्रतिज्ञा पत्र लानेके लिये भेजा, जिसपर उसने यवज्जीवन दिवताकी सेवा करनेकी प्रतिज्ञा की थी, क्योंकि वह नहीं जानती थी, कि वह बुड्ढी फादर औमियनसे मिली हुई है। बल्कि वह यही जानती थी, कि पीतलकी

इंगलैंडमें साधारणतः कोई सम्बन्ध है और पादड़ियोंसे कुछ सामान्य लाभ परिणाम है। अब इसी बातसे उसे विश्वास था, कि उसका भेद प्रकट न होगा।

उस मठके अधिष्ठाताओंने जिटकाका बड़ा स्वागत किया और उसकी बात बड़ी खुशीसे स्वीकार कर ली। आयशाकी ओर से उसे एक बड़ी रकम देनेकी प्रतिज्ञा की गई और उस मठके अधिष्ठाताओंने प्रतिज्ञा की, कि योरपसे गुप्त रीतिसे एक पत्र मंगाकर उसकी इच्छा पूर्ण कर देंगे। यही समाचार लेकर जिटका आयशाके पास गई थी। जिटकाके स्वामीने भी इस बातको समझ लिया और सुधारक रहनेके कारण यह कठिनतासे इस कार्यको पूरा करनेके लिये तय्यार हुआ। इसके बाद ही टेबोर सभा-इस उस गिर्जेके पास भी जा रहे थे। इसके बाद उस मठके अधिष्ठाताओंसे कहलाया गया, कि आयशा कुछ दिनके लिये यहीं आयी है और इसी अवसरपर सब काम हो जाने चाहिये। सरदार-जिटकाने यह भी प्रतिज्ञा की, कि वह रोमन कैथोलिक इस भाईको किसी प्रकारका कष्ट न देगा और इसी लिये मठके अधिष्ठाताओंको टेबोरीका गुप्त स्थान भी बता दिया गया था, जिसमें कि वह अपने सम्प्रदायके मनुष्योंको आज्ञाओंसे बचा सके। जब इन सब बातोंके स्थिर हो जानेपर गुप्त रूपसे यह समाचार फादर बोनिफेसको भेज दिया गया, जो वहांसे थोड़ी ही दूरपर रहता था।

एकसौ दो परिच्छेद ।

पिछली बातोंका अन्त ।

यह उसी समय की घटना है, जब कि सर अर्नेस्ट हो नीमर नाम-धारी ईसवर्ट बोहेमियामें सफर करता हुआ, टेबोराइट-पड़ावमें आकर ठहरा था। जिटकाकी टरकिश युद्धमें लड़ने तथा आस्ट्रियाके

राखाको कई बार देखनेका अवसर मिलनेके कारण, उसने ऐलवर्टको देखतेही पहचान लिया, परन्तु उसे न पहचाननेका बहाना दिखाते हुए बड़े प्रेम तथा आदरसे उसका स्वागत किया। साथही उसने मनही मन यह भी विचारा, कि ऐलवर्टके इस आगमनसे कुछ लाभ उठाना चाहिये और उसका यह विचार उस समय और भी दृढ़तर हो गया, जब उसने देखा, कि आयशाकी अलौकिक सुन्दरताका ऐलवर्ट पर बहुतही अधिक प्रभाव पड़ चा है; जो कि उस समय शैतानीका वेश धारण किये हुए थी। इसके अतिरिक्त ऐलवर्टकी मनोहर सुन्दरताने आयशाके हृदय पर भी अपना विलक्षण प्रभाव जमा लिया था और सन्ध्याके समय जब दोनों अलग हुए, तब जिटकासे मालूम हुआ, कि आयशाके हृदयमें ऐलवर्टकी ओर भयानक प्रेमाग्नि भड़क उठी है।

अन्तमें शपथ भग करनेके कार्यका अवसर आ पहुंचा और फिर उस घटनाका समय आया जब कि गिर्जेमें वह घटना घटी थी, कि सर अर्नेस्ट गिर्जेसे आयशाको बाहर उठा लाया था। घटनाके प्रभावके कारण ही अचानक ऐलवर्ट उस गिर्जेमें जा पहुंचा और उसे पादड़ीके हाथोंसे बचा सका था। पादड़ीकी इच्छा थी, कि वह आयशाको उठा ले जाये। मठकी अधिष्ठात्री उसकी सहायिका थी। इसी लिये पीतलकी मूर्त्तिके दलके बारह बहादुरोंको भी वह अपने साथ ले आया था, और यह तय हो गया था, कि यदि आयशाकी भगानेमें जिटका किसी प्रकारकी बाधा दे तो ये बारह मनुष्य उसे रोकें तथा पादड़ी जिटकाके कामों पर ध्यान रखे। इस लिये जब फादर सोम्रियन आयशा पर झपटा और जिटका उस मठ में घुसा, तब इन्हीं मनुष्योंने धोखेमें जिटका पर प्रहार किया, जिससे वह बेहोश हो भूमि पर गिर पड़ा। परन्तु भाग्यवश उसी समय, बहादुर ऐलवर्ट उस मठमें जा

पहुंचा और इस तरह आयशाका उद्धार हुआ। इसके अतिरिक्त उस लड़की अन्यान्य घटनाओंसे पाठक भलीभांति परिचित हैं। अपनी बार हैच स्ताहर ओरियम मेलो भाग गया और जिटकाने आयशाका भेद खुल जानेके भयसे इस विषयमें कुछ समझकर उन लोगोंको बाधा देना उचित न समझा।

जिटका ऐलवर्टकी उदारता, बहादुरी तथा सज्जनताको देख बहुत ही प्रसन्न था। उसने अपना मतलब साधनेके अभिप्रायसे ऐलवर्टको यह अंगूठी दे दी थी, जिसे टैरीरके सभी मनुष्य पहचानते थे, और जिसका यह प्रभाव था, कि ऐलवर्टके किसी काममें भी बाधा न पड़ सकती थी।

पहले पहल जिटकासे ऐलवर्टका प्रथम परिचय था तथा उसकी सुन्दरता पर मोहित हो जानेके कारण आयशा प्रेममें बराबर उससे मिलती रही। कभी वह ज़ेनानी और कभी आयशाके वेशमें उससे ऐसी रीति मिलती थी, कि देखूं किस वेशका उसपर अधिक प्रभाव पड़ता है और कुछ ही दिन बाद उसे मालूम होगया, कि दोनोंही वेशमें वह उसी आयशा प्यार करता है।

इसके बाद चालाकी तथा धूर्तताका काम आरम्भ हुआ। क्योंकि जिटकाने देखा, कि मोरेमियाके कारबारमें बिना आस्ट्रियाके कोई दूसरा हस्तक्षेप करने वाला राज्य नहीं है। आस्ट्रियाके पास उस समय एक जबर्दस्त सेना थी और जिटका अच्छी तरह जानता था, कि ऐलवर्टके जोड़का कोई दूसरा योद्धा इस समय नहीं है; इसीलिये जब उसने देखा कि आयशाकी सुन्दरताका प्रभाव ऐलवर्ट पर बहुत ही अधिक पड़ गया है, तथा उसकी रूप-सुधा पाकर वह उन्मत्त हो रहा है, तब उसने अपनी चाल आरम्भ की।

"वह ऐलवर्टको क़ैदकर तथा आस्ट्रिया पर दबाव डालकर मनमाना

इसके बाद शैतानसे युद्ध वाली घटनाका समय आ पहुंचा और अब यह कल्पना तथा ही मालूम होता है, कि वह योद्धा, जिसे ऐलवर्ट न जीत सका था जिटकाके अतिरिक्त कोई दूसरा न था। उसने शैतानके वेशमें ऐलवर्टसे जो शर्त्तें करायी थीं, वे उसके तथा उसकी भांजी आयशाके स्वार्थसे परिपूर्ण थीं ; क्योंकि पहली शर्त्त यही थी, कि उसे शीघ्रही प्रेग त्याग देना चाहिये और दूसरी यह थी, कि बोहेमियाके कारबारके सम्बन्धमें वह एक वर्ष तक किसी प्रकारका हस्तक्षेप न करे। इन शर्त्तोंसे जिटकाका स्वार्थ अच्छी तरह पूर्ण होता था ; क्योंकि ऐलवर्टके आस्ट्रिया चले जानेपर जिटका बोहेमियामें मनमाना उलटफेर कर सकता था। तीसरी तथा चौथी शर्तोंमेंसे एकमें उसने ऐलवर्टको शैतानीसे फिर भेंट करनेके लिये मना किया था तथा दूसरीमें आयशाको अपने साथ लेजानेकी प्रतिज्ञा कराई थी ; क्योंकि आयशाको पूरा विश्वास था, कि शैतानीकी ओरसे निराश होने तथा कुछ दिनों तक उसके साथ रहने पर ऐलवर्ट उसे प्यार करने लगेगा।

इसके बाद गोल्डन-फ़ैकनमें शैतानीके वेशमें वह उससे इसी लिये मिली थी, कि दूसरे दिन आयशाके रूपमें उससे मिलनेकी प्रतिज्ञा करा ले। यही हुआ और दोनों मोल्डाव नदीके तटपर मिले। और यही वह अवसर था, जब कि आयशाके खञ्जरने बुड्ढी डेम मार्थाका रक्त पान किया था। यद्यपि वह जानती थी, कि इस घटनाने ऐलवर्टके चित्तमें विकार उत्पन्न कर दिया है, तथापि उसे विश्वास था, कि यह काम उसने अपनी जान बचानेके लिये किया था, अतः यह किसी प्रकारका अपराध नहीं है, और यही कारण था। कि वह समझती, कि आयशाके वेशमें रहने पर भी वह शैतानीकी भांति ही ऐलवर्टका हृदय विजय कर सकेगी। परन्तु जब प्रेगसे जाते समय दक्षिण दरवाजे पर दोनों

लिये सब आयशाने देखा, कि ऐलबर्ट यद्यपि उससे प्रेम पूर्वक व्यवहार करता है, तथापि शैतानीके समान प्रेम-दृष्टिसे नहीं देखता।

पाठक आयशाके भय तथा विस्मयका पता इसी बातसे लगा सकते हैं, कि जब ऐलबर्टने सफेद महलमें जानेका शौक प्रकट किया, तब आयशा कितनी डर गयी थी; परन्तु उसने अपनी आशाकोसे यह बिलकुल प्रकट न होने दिया, कि वह कभी उस महलमें रहती थी। अब एक दूसरी बाधाके रूपमें अरमक आ पड़ा था। आयशाको उसने उस समय देखा था, जब कि वह सफेद महलमें रहती थी। उसे देखते ही वह उसपर आसक्त हो गया था। यद्यपि अरमककी अवस्था उस समय चौदह वर्षकी थी, तथापि कामका प्रभाव उसपर बहुतही अधिक पड़ा था और इसीलिये उसने कईबार आयशाके पैरोंपर गिरकर उससे प्रेम भिक्षा मांगी थी, परन्तु आयशाने उसकी बात न मानी और इसके थोड़े ही दिन बाद वह सफेद महलसे भाग गयी। अब अरमकका भी उस महलमें जी न लगने लगा और वह किसी तरहसे उस महलसे निकल भागनेका उपाय सोचने लगा। इसी तरह दो वर्ष बीत गये और अन्तमें वह अवसर आ पहुंचा, जब कि ऐलबर्टने उसे सफेद-महलसे मुक्त किया और फिर आयशा तथा अरमककी आपसमें इस तरह भेंट हुई।

परन्तु इस बार अरमकको देखते ही आयशाका क्रोध भड़क उठा। यद्यपि आयशा किसी तरहका अपकर्म नहीं किया चाहती थी तथापि वह यह बर्दाश्त कभी नहीं कर सकती थी, कि ऐसा कोई काम हो, जिससे उसका प्यारा उसे घृणाकी दृष्टिसे देखने लगे। आस्ट्रियन नाइटको ओर उसका जितना बढ़ा हुआ प्रेम था वह पागलपनकी अवस्थापर जा पहुंचा था। इसके बाद अरमकने उसे भेद खोलनेका डर दिखाया और आयशाने उसकी हत्याकी; परन्तु ओह!

ताकत नहीं, कि आयशाको उस समयकी अवस्था, घबड़ाहट, दुःख तथा भयका वर्णन कर सके। जब उसने देखा, कि अर्नेस्टने अपनी आखों उसे अरमकको हत्या करते देख लिया, तब वह उसी समय समझ गयी, कि आयशाके रूपमें अब अर्नेस्टका प्रेम प्राप्त करनेको सब आशा दुराशा हो गयी। इसीलिये उसने वीरतासे अपना अपराध स्वीकार कर लिया; क्योंकि उसे विश्वास था, कि उसके मार्गमें किसी प्रकारकी अड़चन न आ पड़ेगी और अपने विचारके अनुसार ही वह शैतानीका रूप धारण कर वहांसे भाग गयी।

रात्रिके समय वह फिर अपने प्यारे ऐलवर्टसे मिलनेके लिये आ पहुंची, परन्तु इस समय वह शैतानीके रूपमें थी; क्योंकि आयशाके रूपमें ऐलबर्टकी प्रेम पात्री बननेकी सब आशा दूर हो गयी थी, अत उसने यही निश्चित किया, कि जन्म भर काला रंग धारण कर ही अपने प्रिय ऐलबर्टके पास रहेगी। अब एक दूसरी अड़चन ऐ जीलाकी थी, जो योबाके रूपमें ऐलवर्टके साथ आ रही थी, अत उसे किसी तरह भगानेके अभिप्रायसे आयशा अपने असली रूपमें उस कमरेमें घुसी, जिसमें वह सोयी हुई थी। अभी तक आयशाके हृदयमें इस बातका सन्देह भी न था, कि योबाके रूपमें यह कोई स्त्री है; परन्तु जब चुपचाप उस कोठड़ीमें घुसकर उसने देखा, कि यह स्त्री है, तब तो उसके आश्चर्यका ठिकाना न रहा और इससे भी बढ़कर आश्चर्य उसे उस समय हुआ, जब उसने पहचाना, कि यह ऐ जीला है।

अब सब बातें पाठकोंके सामने प्रकट कर दी गयीं। अब जब ऐलबर्टके साथ शैतानीके रूपमें आयशा उस स्थानपर पहुंची, जहां इंलडर-महल था, तब उसके हृदयमें एकाएक यह विचार उत्पन्न कि अब वह निश्चय आस्ट्रियाकी रानी हो जायगी, अत. अन्तिम

बातके लिये इसी अपना जन्मस्थान अवश्य देख लेना चाहिये। यही सोचकर वह ऐलवर्टको उस महलमें ले गयी; परन्तु वहां पहुंचते ही उसके सब विचारोंका अन्त हो गया।

जब वह ऐलवर्टके साथ उस नगन इग्हर-महलमें पहुंची, उस समय उसे गत समयकी घटनायें स्मरण आ गयीं और वे दृश्य उसकी आंखोंके सामने आ गये, जो वहीं हो चुके थे। उनके आंखोंके सामने आते ही वह कातर हो गयी और उसका कठोर हृदय पिघल कर पानी हो गया। इसके बाद जब उसका साथी ऐलवर्ट, उससे अन्य दोनों किलोंके विषयमें पूछने लगा, तब उसपर एक प्रकारकी घबड़ाहट छा गयी और वह उससे वहांसे भाग चलनेके लिये बार बार प्रार्थना करने लगी, परन्तु इसके बाद ही मर्नाड आ पहुंचा और उसके आगमनने आयशापर और भी आतङ्क छा दिया। इसीलिये जब ऐलवर्ट तथा मर्नाड बातें करने लगे, तब आयशा बड़ी ही भयङ्कर दृष्टिसे उनकी ओर देख रही थी। वहांके हरएक पदार्थ उसके हृदयमें दुःख उत्पन्न कर रहे थे और यद्यपि उन किलोंकी दुर्दशाके समय वह केवल छः वर्षकी थी, तथा इसी अवस्थामें अपनी माताके साथ मेनफ्री महलमें कैद हुई थी, तथापि उस बुड्ढेका चेहरा देखते ही उसे स्मरण हो गया, कि इसे उसने पहले भी कभी देखा था। इसीलिये उसने उसका चेहरा देखते ही उसका परिचय पूछा था। जो उत्तर मिला उससे उसकी चिन्ताकी मात्रा और भी बढ़ गयी। इसलिये वह वहांसे भागनेके लिये घबड़ा उठी, परन्तु इसके बाद ही घटनाका प्रभाव आरम्भ हुआ। याद्रकों सोमियनका आक्रमण हुआ और ऐलवर्ट-को मर्नाडके इतिहास सुननेका पूरा पूरा अवसर मिल गया। इसके बाद उसकी गिरफ्तारीका परवाना लेकर सिपाही आ पहुंचे; क्योंकि चिटकाकी खबर मिल गयी थी, कि आयशा खूनी है और

उसकी आत्माने ऐलवर्टको सावधान कर देना और उसे अपनी स्त्री न बनानेके लिये सूचना दे देना उचित समझा।

सरदार-जिटकाकी आज्ञानुसार आयशा पकड़कर प्रेग पहुंचाई गई तथा उसे एकान्त स्थानमें रहनेकी आज्ञा मिली। इस अवस्थामें भी उसकी सहेलिया उसके पास ही रहीं और इस तरह एक सप्ताह बाद ही उसे भाग जानेका अवसर मिल गया। वह अपनी मामासे भी अप्रसन्न हो गयो; क्योंकि उसीने ऐलवर्टको सावधान कर दिया था, अतः उसने जिटकासे भी बदला लेनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा कर ली। इस समय अल्डन-महल पर टैवोराइट-दलका आक्रमण आरम्भ हो चुका था और कितनी ही गहरी लड़ाइया भी हो गयी थीं, इसी अवसरपर अपने मामासे बदला लेनेके लिये आयशा उसी समय वहा पहुंची, जब घटनाचक्रके प्रभावसे ऐंजीला भी उसके पास पहुंच गयी थी। आयशाने अपने मामा जिटकाको मार डालना ही विचारा था, इसीलिये वह उसके खीमेके पास ही छिपी हुई मौका देख रही थी। कुछ ही देर बाद ऐंजीलाके साथ सरदार-जिटका बाहर निकला और दोनों घूमते हुए उसी ओर चल पड़े जिधर आयशा छिपी हुई थी। वह शेरनीकी भाति जिटकापर झपटना ही चाहती थी, कि इसी समय उसके मुंहसे निकले हुए कुछ शब्दोंकी भनक उसके कानमें पड़ी और वह आश्चर्यसे जहाकी तहा ही बैठी रह गयी, क्योंकि उन शब्दोंसे उसे केवल इतना ही नहीं मालूम हुआ, कि वह स्त्री ऐंजीला-विल्डन है, बल्कि उसे यह भी ज्ञात हो गया, कि यह स्वयं सरदार-जिटकाकी कन्या है।

इतनी बात ध्यानमें आते ही ईर्ष्या तथा प्रेमकी आग उसके हृदयमें धधक उठी; क्योंकि उसे सन्देह हो गया, कि ऐंजीला ऐलवर्ट-
करती है और अब जिटकाकी कन्या रहनेके कारण वह

अनायास ही अपना अभिलषित पद प्राप्त कर सकती है। इसलिये उसने अपने भागनेके पहले हेलीना पर ही अपना हाथ साफ करना चाहा और एक ही वारमें दोनों काम निकालना विचारा; क्योंकि इसीसे क्रिटफाका भी बदला पूरा हो जाता। इसीलिये ब्रुटन-महलके तहखाने तक उसने उन दोनोंका पीछा किया; परन्तु ईश्वरने उसे इस बार पाप करनेसे बचा लिया; क्योंकि अन्धकारमय तहखानेमें कुछ देरतक भटकनेके बाद, आयशा "पीतलकी मूर्त्ति" वाले कमरेमें ठीक उसी समय जा पहुंची, जब कि उसका नाश करने वाला धोखेबाज पादड़ी पीतलकी मूर्तिके भीतरी भागकी परीक्षा कर रहा था। ओह! उसे देखते ही क्रिटफा तथा हेलीनाको छोड़ उसका समस्त क्रोध उसीकी ओर भभक उठा और उसने पादड़ीको उसी समय परलोक पहुंचाकर अपना कलेजा ठण्ढा किया। इसके बाद वह फिर पकड़ी गयी।

परन्तु ब्रुटन-महलसे भी वह अपने प्राणों पर खेलकर बाहर निकल गयी; क्योंकि कैद रहनेकी अपेक्षा वह अपनी जवानीमें मर जाना ही उत्तम समझती थी। इसके बाद अपनी दोनों सखियोंको (जिन्हें वह ब्रुटन महलके पास जङ्गलमें छोड़ आयी थी) साथ ले समस्त यूरोपमें चक्कर लगाती रही और अन्तमें जब उसे हेलीना और हैरवर्डके विवाहका समाचार मिला तब एकबार उनसे मिलना निश्चित कर वह उनके पास ऐक्स-ला-चैपेलमें जा पहुंची।

उससे मिलनेका सब हाल पहले ही वर्णन किया जा चुका है, और अन्तमें यह भी कहा जा चुका है, कि आयशा बिना किसीको साथ लिये, केवल आंखोंमें आंसू भर, वहांसे रवाना हो गयी।

परन्तु अब वह हम लोगोंको कहां मिलेगी? उसका भटकना उसे कहां पहुंचायेगा? और अब उसके लिये क्या बाकी रह गया है?

पाठक ! ऐसा कदापि न समझें, कि उस विचित्र स्त्रीका पूरा हाल बताये बिना ही यह ग्रन्थ समाप्त हो जायगा।

एकसौ तीन परिच्छेद।

उपसंहार।

अब यह किस्सा समाप्त हो हुआ चाहता है। अब हमें थोड़ी ही बातें और बतानी बाकी हैं। थोड़ा ही वर्णन उन पुरुषोंका समस्त हाल प्रकट कर देगा, जिनका जिक्र इस ग्रन्थमें आ चुका है और इस तरह पाठकोंके हृदयका रहा सहा सन्देह भी दूर हो जायगा।

इसके पहले ही हम बता चुके हैं, कि अलटन-महलपर जिटकाका अधिकार हो गया था, साथ ही हम लोग पीतलकी मूर्त्तिकी दुर्दशा भी अच्छी तरह देख चुके हैं, अब उसका दल नाश हो गया था और यह घटना किस्से कहानीकी भांति सुनकर लोग भीत, चकित तथा स्तम्भित होते थे। जिस समय यह समाचार प्रेगमें पहुंचा, उस समय हिमलेन कैसल तथा सफेद महलके सब अधिवासी उस सुसज्जित महलको छोड़ भाग गये और कितने ही जबदस्ती बोहेमियासे निकाल बाहर किये गये। इस तरह उस भयानक मूर्त्ति और उसके दलका तो सदाके लिये नाश हो गया ; परन्तु उसका नाम न मिटा और केवल बोहेमियामें ही नहीं, बल्कि जमनीमें भी अभी तक कितने ही मनुष्योंकी जबानी इसका भयानक हाल किस्से कहानीकी भांति सुननेमें आता है।

अलटन महलसे हटाये जानेपर ड्यूक-अलटन अपने पुत्रके शोकमें एक प्रकारसे पागल हो गया। अपने कैद होनेके एक वर्ष बाद वह बीमार पड़ा और अपने अन्त समयमें, प्रेगके महलमें वह पीतलकी मूर्त्ति और उसके भयानक मठोंके विषयमें भी प्रलाप बकने लगा और

ज्यों ज्यों उसका समय निकट आता गया, त्यों त्यों उसे ऐसा ही मालूम होने लगा, मानों वह स्वयं पीतलकी मूर्तिका बलिदान करता जा रहा है। ओह ! उसकी मृत्यु बड़ी ही भयानक हुई, बड़ी कठिनताई उसके प्राण गये, क्योंकि मरते समय तक वह यही सोच रहा था, कि वह पीतलकी मूर्तिमें ढकेल दिया गया है और वे भीषण चर्खियां उसके बदनके टुकड़े टुकड़े कर काट रही हैं। इसमें सन्देह नहीं, कि उसने कल्पना द्वारा ही वह दुःख भोग लिया, जो पीतलकी मूर्तिके आगे बलिदान चढ़ने वालोंको यथार्थमें भोगना पड़ता था।

ब्रायनाके इस भाँति नेपिल्स छोड़नेके थोड़े ही दिन बाद 'कोण्ट वालेंस आर्बन'का विवाह 'लिडा'से तथा 'बैरन कोलाई डी पिनो' का विवाह 'बेटारिस' से बड़ी धूमधामके साथ शाही गिर्जेमें हुआ और स्वयं सम्राट तथा सम्राज्ञीने इस शुभ कार्यमें योग दान दिया। वालेंस और कोलाई दोनों ही सदा शाही महलमें ही रहे, उनकी बड़ी उन्नति हुई और जब वे अन्त समयमें कबरमें दफनाये गये, तब कई सन्तानें' अपनी अगाध सम्पत्ति तथा सम्मानका उपभोग करनेके लिये छोड़ गये।

इसी तरह सम्राट तथा सम्राज्ञीको भी कई लड़के तथा लड़कियां हुईं। लड़कोंने ऐश्वर्यका स्वरूप तथा अनुकरणीय सुयश पाया और कन्याओंने अपनी माताकी अलौकिक सुन्दरता तथा हृदयकी महानता प्राप्त की। अन्तमें बुढ़ापा पारकरके नाती, पोते तथा लड़कोंसे घिरे हुए दोनों शान्तिसे परलोक सिधारे।

धर्मात्मा मनोलेने भी बड़ा सुख पाया और जब कभी सम्राट तथा सम्राज्ञीके लड़कोंको अपने जर्जरित घुटनोंपर बैठाकर वह खिलाता, तब उसे वही समय स्मरण आ जाता, जब कि ऐलवर्ट ब्लडर महलमें बीमार पड़ा था और सुन्दरी ऐञ्जीला उसकी सेवा कर रही थी। यह

स्मरण आते ही उसकी आखोंमें आनन्दाश्रु उमड़ आते, और वह प्रसन्नतासे कहने लगता,—"संसारमें सज्जनताका पुरस्कार अवश्य ही मिलता है।" इसी तरह उसके धार्मिक भाव दिन पर दिन दृढ़ होते गये और उसके हृदयमें दिनों दिन एकान्त भक्ति, दृढ़ अनुराग, अपरिवर्त्तनीय शान्ति उत्पन्न हो गयी तथा अन्तमें उसकी आत्मा बड़ी ही शान्तिसे परलोक सिधारी।

अस्टन-महलका बुड्ढा खानसामा हावर्ट, एक दूसरा मनुष्य था, जिसने ईश्वर द्वारा अपने उत्तम कार्य्यों का उत्तम फल पाया। वह अपनी मृत्युके दिनों तक सम्राट तथा सम्राज्ञीकी सेवा, तथा शाही महलका शासनकर्ता बननेके साथ ही साथ उन दोनोंका प्रिय बन्धु भी बना रहा।

विल्डन तथा उसकी स्त्री दोनों हीकी ऐंजोला सदा इस तरह भक्ति करती थी मानो सचमुच ही उनकी कन्या हो। वह उनके साथ प्रेममय व्यवहार करती थी, जिससे उसके हृदयकी महानता तथा आत्माकी उच्चताका स्पष्ट पता मिलता था।

कौण्ट रोशनबर्ग सदा एक्स-ला-चैपेलमें अपनी भांजीके पास ही रहने लगा। इसका यह कारण न था, कि उसकी भांजी इतने ऊंचे पदपर पहुंच गयी थी, बल्कि यह कारण था, कि वह अत्यन्त नम्र, दयालु तथा धार्मिक रहनेके साथ ही साथ जर्मनी‌खिनी अर्मेनेराडाकी नयन तारा थी।

परन्तु बहादुर जिटकाका क्या हुआ? कई वर्षों तक वह बहादुर बोहेमियाका प्रजातन्त्र-शासन-कार्य्य चलाता रहा। यदि उसे उसी तरहके उत्तम सलाह देनेवाले मनुष्य मिलते जाते, जैसे इमानदार मनुष्य उसे मिले थे, तो इसमें सन्देह नहीं, कि जिटका प्रजातन्त्र शासनकी जड़ सदाके लिये मजबूत कर जाता। यद्यपि वह उसके कायदे समझ

गया था, तथापि वह बड़ा परिश्रम करता था ; लेकिन जैसा पहले कहा जा चुका है, वह उदार हृदय योद्धा परन्तु राजनीतिज्ञ नहीं था और यह काम पूरा करनेके लिये उसे कोई सुयोग्य मन्त्री न मिला था। इसके अतिरिक्त मोरेनियाके प्रजातन्त्र शासनपर आक्रमण कारियोंका बड़ा प्रभाव पड़ता था, और यद्यपि जिटका आक्रमण कारियोंको बराबर हराता हो जाता था, तथापि युद्धके कारण वह अपनी इच्छानुसार राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक उन्नति नहीं कर सकता था।

मोरेनियाके प्रजातन्त्र शासनपर आक्रमण करनेवालोंमें साइलीशियनोंका दल अधिक था। वह दस तीस हजार सेनाके साथ उमड़ती हुई नदीके समान मोरेनियापर आक्रमण कर बैठा। यद्यपि टैवोराइट सिपाही बड़ी बहादुरीसे लड़े तथापि साइलीशियनोंने अपनी प्रबल सेना द्वारा आगेके कितने ही किले दखल कर लिये और सेनोंसे प्रेगको ओर अग्रसर होने लगे। परन्तु जान-जिटकाने राहमें ही उन्हें रोका और एकाएक टैवोराइट-सेनाके आ पहुंचनेका ऐसा भय आक्रमणकारी सेनामें समा गया, कि सब सेना भागकर रैवीके किलेमें जा छिपी। जिटकाने किला घेर लिया और जब वह अपनी सेनाको आगे बढ़ा रहा था, उसी समय तोपकी गोलोंके कारण एक दरख्तकी डाल गिरी, जिसकी एक टहनी जिटकाकी अच्छी आंखमें घुस गयी और इस तरह वह दोनों आंखोंका अन्धा हो गया। तथापि उसने युद्ध न बन्द किया। मित्रोंकी सहायतासे वह बराबर युद्ध करता और इस तरह शत्रु-सेनाको काटता गया, जिस तरह किसान खेत काटते हैं, इस तरह साइलीशियनोंको पूरी पराजय मिली। रैवी का किला उनके अधिकारसे छीन लिया गया और उसका सेनापति जिटकाकी मस्तावित शर्तों पर सन्धि करनेके लिये बाध्य किया गया।

सन्ध्या हो जानेपर जिटका-प्रेग लौट आया और दोनों आंखोंका अन्धा हो जानेपर भी राजनीतिक तथा सामाजिक सुधारोंका उद्योग उसी तरह करता रहा। * इसके कुछ ही दिन बाद फिर बोहेमियांकी शान्ति भङ्ग हुई और क्यूमन तथा सर्वियनोंने उसपर आक्रमण किया और जिटका फिर सेना साथ ले गाड़ीपर सवार हो युद्धके लिये चल पड़ा। इसी तरह ज्योंही जिटकाकी सेना शत्रु सेनाके सामने पहुंची, त्यों ही गाड़ीसे उतर जिटका घोड़ेपर सवार हुआ और अपनी सेनाके आगे आगे पैलोंके सहारे जाने लगा। पहले तो सर्वियन और क्यूमन बड़े जोशसे लड़े; परन्तु एकाएक उस अन्धे बहादुर जिटकाने इस तरह जोरसे उनपर आक्रमण किया, कि वे घबड़ा कर जिधर राह मिली, उधर ही भाग गये और जिटका विजय-पताका उड़ाता हुआ फिर प्रेगकी ओर लौट पड़ा।

इसबार वह सीधा प्रेग न आकर चुपचाप उस सरहदके पास चला गया, जिसके निकट ही एकस ला-चैपेले था। वहां वह अपनी कन्या और जामातासे मिला। यह मिलन बड़ा ही दुःखमय हुआ। इस दुःखमय मिलनका सम्बन्ध पिता-पुत्री अथवा अर्नेस्टाके विषयकी दुःखित घटनाओंके कारण न था, बल्कि तीनोंको यह विश्वास हो गया था, कि यह उनका अन्तिम मिलन है; क्योंकि बराबर युद्धमें लिप्त रहनेके कारण जिटकाका स्वास्थ्य बिगड़ गया था और बोहेमियाके कार्य्यमें अत्यधिक जवाबदेहीका भार उसीके हाथों रहनेके कारण यह अवसर न था, कि वह शान्तिसे चुपचाप बैठता और एंजीला उसकी सेवा करती। जो हो, उसकी यह परिवर्त्तित अवस्था देख, एंजीलाको भयानक दुःख हुआ और वह फूट फूटकर रोने लगी।

* प्रेम तथा उत्तम व्यवहारके लिये।

भी बहुत ही अधिक हार्दिक धन्यवाद दिये तथा कुछ ही देर बाद जिटका प्रेगकी ओर और पेत्रर्ट ऐ लोलाके साथ अपने महलकी ओर रवाना हो गया। प्रेग पहुंचनेपर जिटकाको अपनी भाभी बायशाका एक पत्र मिला, जिससे उसे मालूम हो गया, कि उसका भविष्य जीवन अब सुखमें बीतेगा। उसने बायशाके पत्रका बड़ा ही प्रेममय उत्तर दिया तथा उसका जो उत्तर मिला, उससे जिटकाको विश्वास हो गया, कि यद्यपि जवानीकी अवस्थामें बायशाकी चाल-चलन अच्छी न थी, तथापि उसका हृदय अब सुधर गया और प्रकृति शान्त हो गयी है।

बोहेमियाकी शान्ति फिर भङ्ग हुई और मोरेवियनोंने उसपर आक्रमण किया। एकबार जिटका फिर अपने पुराने बहादुरोंके साथ, जिन्होंने कईबार अपना रक्त बहाया था, युद्धक्षेत्रमें उतर पड़ा; परन्तु इसबार घटना कुछ विचित्र ही घटी। ज्योंही टेबीराइट-सेना मोरेवियनोंके सामने पहुंची, त्योंही मोरेवियनोंने मारे भयके बिना लड़े-भिड़े शस्त्र फेंक दिये और क्षमा भिक्षा मांगने लगे। जिटकाने अपनी स्वाभाविक उदारता वश उन्हें क्षमा कर दिया तथा फिर शान्ति स्थापित हुई। इसके बाद जब वह लौटकर प्रेग आ रहा था, तब रास्तेमें ही भयानक रूपसे बीमार हो गया, जिससे कुछ ही क्षणमें उसका जीवन जानेकी आशङ्का उपस्थित हो गयी। जिटका समझ गया, कि अब उसका अन्त आ पहुंचा और अन्तिम शब्द जो उसके मुंहसे निकले, वे ये थे —

"अब कुछ दिनोंके लिये नैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक सुधारोंका होना बन्द हो जायगा। इसके बाद धार्मिक वितण्डा ही फिर ...के अभ्युदयका कारण होगा, इसके बाद राजनीतिक प्रश्न सामने ... होगा और फिर अन्तमें सामाजिक जीवनका वह कार्य, जिसे

मैंने प्रारम्भ किया था, संसारकी दृष्टि आकर्षित करेगा। ओह! मालूम होता है, भविष्यकी बातें मेरे हृदयमें उठ रही हैं और मैं देखता हूं—कितने ही भविष्य वर्षों के बीचमें देखता हूं, आनेवाली, शताब्दियोंका हाल देखता हूं, ओह! ईश्वरने भविष्यका जो दृश्य इस समय दिखाया है, वह बड़ा ही मनोहर है। हां, मैं वह सब देखता हूं, भविष्य मुझसे छिपा नहीं है, मैं परमात्माके हाथके लिखे हुए इतिहासके पन्ने देख रहा हूं। और ओह! ऐ परमेश्वरके दूतो! मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं, कि तुमने मेरे अन्तिम समयमें अपने भविष्य कार्यों का उत्तम आभास दिखा दिया है; क्योंकि मैं अब अपनी आत्मा तुमको सौंपता हूं। ऐ दयामय भगवान! क्या मैं उन सज्जनोंसे अपने मनोभिलषित उद्देश्यकी सफलताकी आशा कर सकता हूं? तब उन परिश्रम करनेवाले पुत्र पुत्रियोंको निराश न करो, जिन्हें यथेच्छाचारी मनुष्य दासत्व तथा कुलीगिरीमें भरती कर लेते हैं। सम्भव है, कि तुम्हारा यह नवजीवनमय कार्य धीरे धीरे चिर स्थायी हो। इसमें अकसर बाधायें भी पड़ सकती हैं, परन्तु उस-की अन्तिम विजय अवश्यम्भावी है। ओह! और अब सब बातें साफ हुई जाती हैं, मैं इस पृथ्वीपरसे उठता हुआ मालूम हो रहा हूं और वर्त्तमान संसारसे छुड़ाया जा रहा हूं। मैं किसी अदृश्य हाथों द्वारा ऊपर उठाया जा रहा हूं, मैं समयकी सीमाके पार जा रहा हूं और उन्नीसवीं शताब्दिमें पहुंचा ही चाहता हूं। आह! प्रसन्नता! मैं देखता हूं, कि ताज गिर रहे हैं, तख्त टुकड़े टुकड़े हो रहे हैं, राज्य एक छिन्न भिन्न हो टुकड़े टुकड़े हो गया है और मनुष्य उत्तेजित हो क्रिश्चियन राज्योंमें घूम रहे हैं। हां, मैं यह सब देखता हूं। समाज उभे उठी है, साधारण मनुष्योंने अपना बन्धन तोड़ डाला है, उन्नतिके दिन आ गये हैं और गुलाम तथा बेगार अपना हक पा रहे

हैं; और वह ईश्वर स्वयं साधारणकी ओरसे उसी तरह लड़ता है, जिस तरह वह इसरायलके लड़कोंके लिये लड़ा था। देवी और देवता, युद्धस्थलमें दिखायी न देनेपर भी उनकी सहायता निर्विरोधसे कर रहे हैं। उन्नतिका प्रवाह बढ़ता ही जाता है, वह बहुत ही उन्नत प्रवाह है और महाजीवित भूमिपर तरङ्गमय फैल गया है, जो अपना वेग रोक नहीं सकता। विदा, अब विदा! ऐ राजा और राजतन्त्र—सदाके लिये विदा! यह सब हो गया है। अधिकाराधारियोंके शासनका अन्त हो गया है। प्रजापीड़कोंका राजदण्ड टूट गया है। पापी दल अब नहीं है, सब स्वतन्त्र और सब बराबर हैं।"

इसी तरहकी काल्पनिक उन्नतिका स्वप्न देखते देखते, जो अभी तक उस बहादुरकी, आत्माके चारों ओर चमक रहा था, टेरोराइट-दलके सरदार जान जिटकाने भी अपना जीवन समाप्त किया।

* * * * * *

पाठक! अब हम लोगोंको कुस्तुनतुनियाँके सुलतानके भड़कीले कमरेमें प्रवेश करना चाहिये।

वह कमरा इतने भड़कीलेपन तथा उत्तमतासे सजा हुआ था, कि जितना उस समय यूरोप वालोंके ध्यानमें भी न था। सहन पर एक बालिश्त मोटा मखमली गद्दा बिछा हुआ था, जो इतना मुलायम था, कि उसमें बालूकी तरह पैर धंस जाते थे, और वह इतनी खूबसूरती तथा कारीगरीसे बना हुआ था, कि पैर उठते ही फिर ज्योंका त्यों हो जाता था।

इसी कमरेके एक खूबसूरत पलंगपर एक मनोहारिणी रमणी लेटी हुई थी। वह तुर्की फैशनकी ऐसी कीमती और भड़कीली पो पहने हुई थी, जो उसके शरीरपर बड़ी ही शोभा दे रही थी।

माथेपर एक बहुमूल्य ताज था, जिससे मालूम होता था, कि उसका दर्जा बहुत ही बढ़ा बढ़ा है। उस ताजके नीचेसे उसके चमकीले सुनहरे केश बड़ी खूबसूरतीसे हवामें लहरा रहे थे। कोई सांसारिक सम्पति उस सुन्दरता और सुनहरे रगके ढेरका मुकाबिला नहीं कर सकती थी, जो उसके गोल गोल उठते हुए कन्धों तथा सुराहीदार गर्दनपर छिटका हुआ था। उसके ओठोंका गुलाबीपन अब खूनके समान हो गया था, जिसके भीतरसे दांतोंको मनोहर पंक्ति मोतीके समान चमक रही थीं और उसके श्वास प्रश्वाससे वह सुगन्ध निकल रही थी, जो इन्द्रके नन्दन काननको भी मात करती थी।

ओह! उसकी समस्त शरीरकी सुन्दरता गजब ढा रही थी, उसके शरीरके सब अंग प्रत्यंग दर्शनीय और चित्ताकर्षक हो रहे थे। उसका चेहरा मुसलमानी वेशमें इतना सुन्दर, इतना मनोहर और इतना प्यारा मालूम होता था, कि देखने वालोंकी टकटकी लग जाती थी, उसके कन्धोंका मनोहर भुकाव, कुचोंका विचित्र उठाव, बाहुओंकी अद्भुत सुघड़ता और उंगलियोंकी मनमोहिनी नजाकत, पैरोंकी सुर्खी और मदमाती चाल—इन सभोंकी सुन्दरता वर्णन करनेकी शक्ति लेखनीमें नहीं है।

परन्तु उसकी आंखे—वे बड़ी बड़ी काली, मारू आंखें, जिनसे मखमली काले रंगकी ज्योति फूट रही थी तथा उन आंखोंमें वह शान भरी थी, जिसका जोड़ा नहीं दिखायी देता था। उसकी पोशाकपर अनगिनत बहुमूल्य जवाहरात टके हुए थे और कई सम्राटों-की सम्पत्ति केवल उसके आभूषणोंकी शोभा बढ़ा रही थी। इन सब कारणोंसे मालूम होता था, कि वह अवश्य ही कोई ऊंचे दर्जेकी थी, तथा सामान्य मनुष्योंसे ऊंचा पद और असामान्य पानेके कारण उसके प्रत्येक अधर समस्त राज्यमें कानूनके

समान मानी जाती थी। उसकी एक इशारेमें करोड़ोंकी सम्पत्ति उसकी भागी बन जाती थी। उस महलको हजारों दासियां उसकी सेवाके लिये तय्यार रहती थीं, उसके इशारेका दिया करती थीं और उसकी शोभने तकका कह न दिया चाहती थी। इतना कुछ होनेपर भी यह सुन्दरी अपने अधिकारका प्रयोग बड़ी बुद्धिमत्ता तथा दयालुताई करती थी और उसका मुसलमानी जगतपर बड़ा ही दयामय, उदार तथा सज्जनोचित् व्योहार था।

परन्तु इतनी सुन्दरता तथा अधिकारकी अधिष्ठात्री यह कौन रमणी थी?

पाठक! यह समस्त टर्की राज्यके अधिपति बहादुर सुलतानकी प्यारी सुलताना थी। यह वह स्त्री थी, जिसके प्राप्त होनेपर सुलतानने अपनी समस्त बेगमों तथा उपपत्नियोंको त्याग दिया था। उसपर उस स्त्रीका निःसन्देह प्रभाव था, परन्तु अपनी शक्तिको यह बहुत उदारतासे काममें लाती थी। मन्त्री गण उसकी शक्ति पर ईर्ष्या नहीं प्रकट करते थे और एक सिरेसे दूसरे सिरे तक उस तुर्क राज्यकी समस्त प्रजा उसके नामको भक्तिसे स्मरण करती थी।

बीस वर्ष तक यह सुन्दरी इसी तरह मुसलमानी साम्राज्य पर अपना पूर्ण अधिकार जमाये रही और बीस वर्ष तक ही अपने प्यारे पति सुलतानपर उसने अपना दावा रखा। फिर अपनी चालीस वर्षकी अवस्थामें इस संसारसे उसने विदा ली तथा सुलतानने, जो उसके दुःखमें बहुत दिनों तक सन्तप्त रहे, एक बहुत ही भड़कीली कब्र उसके स्मारकमें बनवाई। उस स्थानमें हो, जहां कि स्त्रियां गुलाम और केवल सेवा करने योग्य ही मानी जाती हैं, न कि जीवनकी सर्वस्व तथा आनन्दकी अधिष्ठात्री, वहां भी उस स्त्री की मृत्यु विपदके समान मानी गयी।

परन्तु फिर हमारे पाठक पूछ सकते हैं, कि यह सम्राज्ञी सुलताना कौन थी ?

पाठक ! क़ुस्तुनतुनियामें उसके मकबरेपर यद्यपि "सुलताना जलीमा" लिखा हुआ था; परन्तु अपने प्रारम्भिक जीवनमें, बोहेमिया प्रान्तके बीच वह सुन्दरी "मायश्रा इल्डर गो"के नामसे ही प्रसिद्ध थी। पाठक उसके प्रारम्भिक जीवनसे भलीभांति परिचीत हैं।



"बर्म्मन प्रेस" कलकत्ताकी उत्तमोत्तम पुस्तकें।



कोहेनूर

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

यदि आप राठोर-वीर "दुर्गादास" और सम्राट "औरङ्गजेबके" इतिहास-प्रसिद्ध भीषण संग्रामका रसास्वादन करना चाहते हों, यदि आप "अरावली पर्वतका" में दोनोंमें अत्याधिक क्षत्रिय वीरों और दुर्दान्त मुसलमानोंका घोर संग्राम देखा चाहते हों, यदि आप वीर शिरोमणि "अमरसिंह" "काला पहाड़," राजकुमार "केशरीसिंह" आदि मुट्ठीभर क्षत्रिय वीरोंका भयंकर मुसलमानोंके साथ आश्चर्यजनक युद्ध दृष्टिगोचर किया चाहते हों, यदि आप वीर कन्या वीर और पत्नी "विलासकुमारी" की आदर्श पति-भक्ति देखा चाहते हों, तो इसे अवश्य पढ़िये। इसमें सुन्दर सुन्दर ५ चित्र भी हैं। मूल्य १॥)

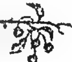


शीशमहल

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

सम्राट-अकबरकी आज्ञासे सेनापति "इस्कन्दर"का गुप्त मार्गसे 'ईदलगढ़-दुर्ग' पर चढ़ाई करना, पठानोंकी वीर पत्नी "गुलबदन" के अपूर्व रूप-लावण्य पर मुग्ध हो तत्क्षण विमुग्ध होना, परिणामतः गुलबदनका इस्कन्दरको धोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, पठानोंका पहाड़से गिरकर प्राण त्याग करना, गुलबदनकी फरियादपर अकबरके दरबारसे इस्कन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, इस्कन्दरका कारागारसे निकल भागना, मालवाधिपति बाज बहादुरका इस्कन्दरको सम्मान सहित घर ले जाना, बाज बहादुरकी सुन्दरी कन्या "रुकिया" पर इस्कन्दरका मोहित होना, आदि बहुत सी अपूर्व घटनायें भरी हैं। हाफटोन फोटोके ४ चित्र भी हैं। दाम सिर्फ १) रुपया।

मनीपुरके सेनापति टिकेन्द्रजितसिंह



पाठक! उन्नीसवीं शताब्दीके अन्तमें "टिकेन्द्रजितसिंह" जैसा वीर-केसरी भारतवर्षमें दूसरा नहीं जन्मा। इस वीरने अपनी बाहुबलसे सैकड़ों सिंह मारे और अनेक युद्धोंमें जय पाई। अन्तमें यह वीर अङ्गरेजोंसे युद्धमें पराजित हो बड़ी वीरतासे हंसते हंसते फांसी पर चढ़ गया। दाम सिर्फ ॥)

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३०७, अपर चीतपुर रोड, —

परन्तु फिर हमारे पाठक पूछ सकते हैं, कि यह सम्राज्ञी सुलताना कौन थी ?

पाठक ! कुस्तुनतुनियामें उसके मकबरेपर यद्यपि "सुलताना अलीमा" लिखा हुआ था; परन्तु अपने प्रारम्भिक जीवनमें, बोहेमिया प्रान्तके बीच वह सुन्दरी "मायग्रा हलडर गो"के नामसे ही प्रसिद्ध थी। पाठक उसके प्रारम्भिक जीवनसे भलीभांति परिचित हैं।





घटना-चक्र सचित्र जासूसी उपन्यास।

इस उपन्यासमें अङ्गरेज-जातिकी पारस्परिक शत्रुताका बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। "लार्ड पेमरोक" नामी एक सम्भ्रान्त अङ्गरेज किस प्रकार शत्रुओंसे सताये जाकर अपनी स्त्री "क्लिओपेट्रा" सहित भारतवर्षमें भाग आये, किस प्रकार उनके शत्रु-दलने भारतमें भी उनका पीछा न छोड़ा, किस प्रकार भारतके डिटेक्टिव-कमिश्नर जनाब रघुपन्तने शत्रुओंके हाथसे बारम्बार उनकी रक्षाकी, किस प्रकार दुष्टोंके षड़यन्त्रसे लार्ड पेमरोककी भयानक खूनी मामलेमें गिरफ्तार हो पुलिसके जाना पड़ा, किस प्रकार राहमें शत्रुओंके जहाजने उनपर आक्रमण किया, किस प्रकार उनकी स्त्री "क्लिओपेट्रा" समुद्रमें फेंक दी गयी, किस प्रकार बड़े बड़े जासूसोंकी मददसे उनको अदालतसे रिहाई मिली, आदि सैकड़ों दिलचस्प घटनाओंका वर्णन है। पुस्तक बड़ी और सचित्र है। दाम सिर्फ १) रुपया।



भीषण डकैती सचित्र जासूसी उपन्यास।

यह उपन्यास बङ्ग साहित्यके गौरवस्तम्भ, जासूसी उपन्यासोंके एकमात्र कर्णधार श्रीयुत 'बाबू पांचकौड़ी दे' की विचित्र लेखनीका सजीव प्रतिबिम्ब है। इस उपन्यासमें 'मिस्टर रोटलेण्ड' नामक एक अमेरिकन जासूसकी अपूर्व कारगुजारियोंका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि पुस्तक एकबार उठाकर फिर छोड़नेकी इच्छा ही नहीं होती। इस उपन्यासके प्रत्येक परिच्छेद, प्रत्येक पृष्ठ, प्रत्येक पैराग्राफ और प्रत्येक शब्दमें दिलचस्पी और मनोरञ्जकता कूट कूटकर भरी गयी है। साथ ही सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। दाम १॥)

दारोगाका खून सचित्र जासूसी उपन्यास।

काशी जैसे पवित्र तीर्थमें भी कैसे कैसे कुकर्म, व्यभिचार, अत्याचार, अनाचार, जाल, जुआचोरी, खून और डकैतीके काम होते हैं, यही बात इस उपन्यासमें दिखाई गई है। १ चित्र भी है। दाम सिर्फ ॥) आना।

पिशाच पिता—रहस्यमय मजेदार जासूसी उपन्यास है। दाम ≈)

* बर्म्मन एण्ड को०, १७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

शोणित-चक्र

(एक बड़ा ही अद्भुत जासूसी उपन्यास ।)

जासूसी उपन्यासके शौकीनो, अगर आप उपन्यासका सच्चा शौक रखते हों, तो इसे अवश्य पढ़ें। इस उपन्यासमें "शोणित चक्र" नामक एक अद्भुत रहस्यका ऐसा अनूठा भेद खोला गया है, कि पढ़कर आप दङ्ग हो जायगे और बार बार ऐसे ही उपन्यास पढ़नेकी इच्छा प्रकट करेंगे। जासूसी ढङ्गके उपन्यासोंमें यह अपनी अनूठा है, दाम केवल २) रुपया।

नराधम

सचित्र जासूसी उपन्यास।

डाकू और उसकी प्रेमिकाका अपने एक मित्रको धोखा देकर फांसीपर लटकाना, जिसकी लाशका एकाएक गायब हो जाना, दो चोरोंका डाकूका भेद खोल देनेका भय दिखलाकर धमकाना, डाकूका उनको पत्थरों भट्ठीमें झोंककर मार डालना। मुरदा लाशका जिन्दा हो जाना, आदि ऐसी आश्चर्य जनक बातें लिखी गयी हैं, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इसमें सुन्दर सुन्दर ५ चित्र भी हैं। दाम सिर्फ १०) आना।

नकली रानी

अद्भुत जासूसी उपन्यास।

इसमें एक डाकू-स्त्रीकी वीरता, बुद्धिमानी, चालाकी और दिलेरी आदिका वर्णन बड़ी बारीकीसे किया गया है। इसमें ऐसे ऐसे गुप्त-रहस्य खोले गये हैं, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ १) रुपया।

जासूसी पिटारा

इसमें बड़े ही रहस्य जनक पाँच जासूसी उपन्यास हैं, (१) गुलजार-महल, (२) फूल बेगम, (३) विचित्र चोरी, (४) बनारसकी चोरी, (५) भूत है या राक्षस? दाम सिर्फ ॥) आना।

जासूसी कहानियां

यह उत्तमोत्तम जासूसी उपन्यासोंका बड़ा ही अपूर्व संग्रह है। इसमें निम्नलिखित बड़े ही अनूठे ५ उपन्यास दिये गये हैं—(१) लार्ड साठ खून, (२) अतीतका बदला, (३) नीलाम-घरका रहस्य, (४) घुड़दौड़का धोखा, (५) चोर चोर मजूर। दाम सिर्फ ८) आना।

डबल जासूस

सचित्र जासूसी उपन्यास।

अमरिकाकी चोरीके तिलस्मी घरोंका अद्भुत रहस्य, नामवर जासूस और चोरोंका भयानक संग्राम, सम्भवी बातमें सोचना तर्कशीलता, एक जीवान बंदरमें मुर्गीके दरवाजे निकल गिरफ्तारी, मुर्दाघरमें शैतानी खायका अनूठे ढंगसे पकड़ा जाना, जहाँसे निकले ही अस्सी चोर मकड़ी जासूसोंका द्वन्द्व युद्ध,—आदि बातें पढ़कर आप दंग रह जायेंगे। ४ चित्र भी हैं। दाम १॥)

काला कुत्ता

सचित्र जासूसी उपन्यास।

एक दुराचारी मनुष्यने सर्वसाधारणमें भूतोंका भय फैलाकर एक खूँखार कुत्ते द्वारा किस चालाकीसे तीन तीन खून कर डाले, इसका बड़ा ही रहस्यजनक मामला इस उपन्यासमें लिखा गया है। दाम ॥) आना।

जासूसी कुत्ता

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इसमें एक स्वामि-भक्त कुत्तेने कैसी कैसी अद्भुत करामातें दिखाई हैं और अपने गरीब स्वामीको "लार्ड" जैसे बड़े ओहदे पर पहुँचा दिया है, कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। आप तो यह शिक्षा भी ग्रहण कर सकते हैं, कि मनुष्य नेकचलनी और परिश्रमके बलपर कहांतक उन्नति कर सकता है। यदि आपको उपन्यासोंसे कुछ भी शौक हो, तो आप इसे अवश्य पढ़ें, इसमें हाफटोन फोटोके कई सुन्दर सुन्दर ७ चित्र भी दिये गये हैं। दाम १॥)



गुलबदन

थियेट्रिकल उपन्यास।



प्रेम-रसका इससे अच्छा उपन्यास हिन्दीमें अबतक दूसरा नहीं छपा। नव्वाब सफदरजङ्ग और जमशेदकी भयानक लड़ाइयां, दो दो आदमियोंका गुलबदनके फिराकमें जो-जानसे कोशिश करना, गुलेनार और हैदरका बाधा देना, ठीक शादीके वक्त जमशेदका गुलबदनको उड़ा ले जाना। गुलबदनका नदीमें कूद पड़ना। आदि बातें बड़ी खूबीसे लिखी गयी हैं। दाम १।) रु०

विचित्र वारांगना—एक निष्कलङ्क वारांगनाका पवित्र प्रेम, युगल प्रेमियोंकी डबल हत्या, दुराचारी एक पाखण्डी महात्माकी भयानक दुश्चरित्रता और जासूसका अद्भुत बुद्धिकौशल देखना हो, तो इसे अवश्य पढ़िये। दाम ।ॐ)

जिन्देकी लाश—यह एक बड़ा ही रहस्यमय, भयानक घटना पूर्ण जासूसी उपन्यास है। इसमें खून खराबी, लड़ाई झगड़े और एक तिलिस्मका ऐसा सुन्दर वर्णन आया है, कि पढ़कर तबीयत फड़क उठती है। दाम केवल ॥ॐ) आना।

"काला साँप"—इसमें एक ऐसे विचित्र साँपकी घटना लिखी गयी है, जो नव यौवना सुन्दरी स्त्रीका रूप धारण कर खूबसूरत नौजवानोंके साथ भोग-विलास करता और पीछे उन्हें मार डालता था। दाम ।ॐ) आना।

"भीषण भूल"—इसमें एक मारवाड़ीके खूनकी ऐसी रहस्य जनक घटना लिखी गयी है, कि पढ़कर हृदय कांप उठता है और दांतों उंगली काटनी पड़ती है। दाम ।ॐ) आ०

"चतुरङ्गचौकड़ी"—इसमें उत्तमोत्तम चार जासूसी उपन्यास हैं:—(१) थियेटरमें खून (२) औरतकी चालाकी, (३) नोटोंकी चोरी और (४) मियांकी करतूत। दाम सिर्फ ।ॐ) आना।

चोर चौकड़ीपर—रातको चोरी करें और दिनमें चार घोड़ोंकी गाड़ीपर घूमें। १ चित्र भी है, दाम सिर्फ ।ॐ) आना।

नकाबदार कलङ्की—का एक बड़ा ही विचित्र-रहस्य इसमें ... गया है। दाम सिर्फ ॥) आना।

एस० बर्मन एण्ड को०, ३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

रंगीले जासूसी उपन्यास।

नकली प्रोफेसर,—पूरे डाम नकली प्रोफेसर और जासूस निभयरामके छिपिर हाथ पेंच देखने हों तो इसे अवश्य पढ़िये। दाम ।≈)

"भूलभुलैया"—इसे नवाबकी मरी हुई पियेटरमें पेशी नायक यह एक मजेदार नक्श है। दाम सिर्फ ≈) आना।

"राजा साहब"—कलकत्ता, बम्बई आदि नगरोंमें नकली राजा, नवाब और बेगम शाहिजा भेष बनाकर ठग लोग किस तरह भोलेभाले मनुष्योंको ठग ले जाते हैं, इसमें यही दिखलाया गया है। दाम ॥) आ०

"सिरकी चोरी"—चोर चोलोंकी चोरी तो रोज ही सुनते होंगे, मगर यह यह उपन्यास मंगाकर "सिरकी चोरी" का रहस्य भी पढ़ लीजिये। ।~)

"गुल्रू-जरीना"—लैली मजनू, शीरीं फरहाद और हीर-रांझाकी भांति गुलरू-जरीनाका प्रेम भी बड़ा ही पवित्र हुआ है। यदि प्रेमके सागरमें गोते खाना हो, तो इस उपन्यासको अवश्य पढ़िये। दाम सिर्फ ।)

"नलिनी बाबू"—इसको पढ़ते पढ़ते मारे हंसीके लोट जाइयेगा ≈)

"खूनी-मज़ार"—नाम जैसा भयङ्कर है,किस्सा भी वैसाही रहस्यमय है।~)

"सम्राट बाबर"—का यह संक्षिप्त जीवनचरित्र है। इसमें बाबर और महाराणा सांगाकी भयानक लड़ाइयोंका हाल लिखा गया है। दाम ।)

"साथाका खून"—तीन तीन खूनोंका बड़ा ही अद्भुत मामला ।) आ०

"गुप्त रहस्य"—इसे पढ़कर चकित होना पड़ेगा। दाम ।~) आना।

"गोपालके गहने"—बड़ाही मनोरञ्जक मामला है। दाम ।) आ०

"अनाथबालिका"—एक डाकूरकी निष्कपट प्रेम लीला, दाम ।~)

"रोमियो जुलियट"—योरोपके प्रसिद्ध नाटककार महाकवि शेक्सपियरके "रोमियोजुलियट" नाटकका अनुवाद। दाम ।≈)

"जाली जमीन्दार"—का बड़ा ही मजेदार मामला है। दाम ।) आ०

"विलायती डाकू"—इसमें विलायतके "डिकटरपिन" नामक प्रसिद्ध डाकूके कितने ही अद्भुत डाकोंका हाल है। दाम ।≈) आना।

"चार दोस्तोंकी हंसी दिल्लगी"—नाम होसे प्रकट है, दाम ~) आ०

रंगीले जासूसी उपन्यास।

नकली प्रोफेसर,—पूर्णदास नकली प्रोफेसर और जासूस मिण्यरामके विचित्र दांव पेंच देखने हों तो इसे अवश्य पढ़िये। दाम ।≈)

"भूलभुलैया"—इसे मजाकही नहीं पूरे थियेटरमें खेलने लायक एक मजेदार नकल है। दाम सिर्फ ≈) आना।

"राजा साहब"—कलकत्ता, बम्बई आदि नगरोंमें नकली राजा, नवाब और बेगम आदिका भेष बनाकर ठग लोग किस तरह भोलेभाले महाजनोंको ठग ले जाते हैं, इसीमें यही दिखलाया गया है। दाम ॥) आ०

"सिरकी चोरी"—और चोरोंकी चोरी तो रोज ही सुनते होंगे, मगर अब यह उपन्यास मंगाकर "सिरकी चोरी" का रहस्य भी पढ़ लीजिये। ।-)

"गुलरू-जरीना"—लैला मजनू, शीरीं फरहाद और हीर रांझाकी भांति गुलरू-जरीनाका प्रेम भी बड़ा ही अद्भुत हुआ है। यदि प्रेमकी राहमें कोई आना हो, तो इस उपन्यासको अवश्य पढ़िये। दाम सिर्फ ।)

"नलिनी बाबू"—इसको पढ़ते पढ़ते मारे हंसीके लोट जाइयेगा ≈)

"खूनी खंजर"—नाम जैसा भयंकर है, किस्सा भी वैसाही रहस्यमय है ।-)

"सम्राट बाबर"—का यह संक्षिप्त जीवनचरित है। इसमें बाबर और महाराणा सांगाकी भयानक लड़ाइयोंका हाल लिखा गया है। दाम ।)

"तायाका खून"—तीन तीन खूनोंका बड़ा ही अद्भुत मामला ।) आ०

"गुप्त रहस्य"—इसे पढ़कर चकित होना पड़ेगा। दाम ।-) आना।

"गोपालके गहने"—बड़ाही मनोरंजक मामला है। दाम ।) आ०

"अनाथबालिका"—एक डाक्टरकी निष्कपट प्रेम लीला, दाम ।-)

"रोमियो जुलियट"—योरोपके प्रसिद्ध नाटककार महाकवि शेक्सपियरके "रोमियोजुलियट" नाटकका अनुवाद। दाम ।≈)

"जाली जमीन्दार"—का बड़ा ही मजेदार मामला है। दाम ।) आ०

"विलायती डाकू"—इसमें विलायतके "डिकटरपिन" नामक प्रसिद्ध डाकूके कितने ही अद्भुत डाकोंका हाल है। दाम ।≈) आना।

"चार दोस्तोंकी हंसी दिल्लगी"—नाम हीसे प्रकट है, दाम -)' आ०

सामाजिक उपन्यास ।

निम्न लिखित सामाजिक उपन्यास इतने अनूठे, मनोरंजक और शिक्षाप्रद हैं, कि इनको पढ़कर स्त्री, पुरुष, बूढ़े बच्चे सभी आदर्श शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं—

धाराकुला रहस्य	२।)	मनमोहिनी	१)	[illegible]	।)
उमा	१)	आदर्श महिला	१)	महाश्वेता	।)
गृहलक्ष्मी	१)	दो बहिन	१)	लैलीमजनू	=)
राज राजेश्वरी	१।)	सुरेन्द्र सुन्दरी	१)	[illegible]	।)
पतित पति	१=)	प्रेमका फल	।=)	माया मरीचिका	।)
परिणाम	॥)	देवी या दानवी	।/)	सूर्य्यकुमार	।)
जहरका प्याला	॥)	हमारी दासी	।/)	मोहिनी	=)
आदर्श मित्र	॥)	ललना गुप्त-प्र०	।/)	दयानी बुढ़िया	=)
दिलका कांटा	॥)	कृष्णकामिनी	।-)	परियोंकी कहानी	/)
मनोरम सुन्दरी	१=)	किरणशशि	।-)	राजा रानी	/)
रजनी	१)	अनुताप	।)	चार दोस्तोंकी हंसी	-)

मसखरोंका—अत्यन्त शिक्षाप्रद मात कहानियोंका अपूर्व संग्रह ॥)

आश्चर्य जनक उपन्यास।

निम्न लिखित उपन्यास भी 'मिस्टर जार्ज विलियम रेनाल्ड्स' तथा अन्य गैरों उपन्यासोंके अनुवाद हैं। अवश्य पढ़िये —

मालिका भाग्य ५ भाग	२॥)	सौन्दर्योपासक २ भाग	१।)
पेरिस अनर्थ ४ भाग	१॥=)	रहस्यभेद २ भाग	१)
रंग रंग ३ भाग	१॥)	किलेकी रानी	॥)
नीतियोंका खजाना ४ भाग	२)	शूर शिरोमणि	॥=)

भक्त सूरदास नाटक ।

यह नाटक बड़ा ही मनोहर और थियेटरमें खेलने योग्य है, क्योंकि इसमें वीर, श्रृङ्गार, वीभत्स आदि नवोरस वर्तमान हैं। हाफटोन फोटोसे छपे सुन्दर कई चित्र भी दिये गये हैं। दाम केवल ॥=) आना।

सावित्री-सत्यवान ।

कुमारी कन्याओं और नवविवाहिता स्त्रियोंके लिये यह पुस्तक बड़ी ही शिक्षाप्रद है, क्योंकि इसमें सती शिरोमणि महारानी सावित्रीके पातिव्रत धर्मका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि जिसके आगे स्वयम् यमराजको भी हार माननी पड़ी थी। इसमें कई चित्र भी हैं। दाम ।≈) आ०

हिन्दी अंगरेजी शिक्षा

आजकल अङ्गरेजीका ही दौर-दौरा है, बिना अङ्गरेजी पढ़ा मनुष्य अपनी यथार्थ उन्नति नहीं कर सकता और स्कूलोंमें जाकर अङ्गरेजी सीखनेसे वर्षों का समय और हजारों का खर्च पड़ जाता है। इन्हीं सब दिक्कतोंको दूर करनेके लिये हमलोगोंने बड़े परिश्रम और प्रचुर अर्थव्ययसे "हिन्दी अङ्गरेजी शिक्षा" नामक पुस्तक दो भागोंमें तय्यार की है। इसके सहारे थोड़ी भी 'हिन्दी जाननेवाला मनुष्य भी कुछ ही दिनोंमें अङ्गरेजीका पूर्ण "पण्डित" बन सकता है। अंगरेजीमें हिसाब-किताब, तार, चिट्ठी, लिखना पढ़ना और बातचीत करना सिर्फ ६ महीनेके परिश्रमसे आ सकता है। आजतक इस विषयकी जितनी पुस्तकें छपी हैं, उनमें यह सर्व श्रेष्ठ मानी गयी है और कितने ही विद्वानोंने मुक्त कण्ठसे इसकी प्रशंसा की है। प्रथम भागका ॥) आना और दूसरे भागका १।) सजिल्दका १॥) रु०

सचित्र गो-पालन-शिक्षा ।

इसमें गौ बछड़ोंकी पहचान, पालन, दवायें और दूध बढ़ाने तथा दूधसे बननेवाले पदार्थोंको बनानेके ऐसे सरल तरीके लिखे गये हैं, कि मनुष्य कुछ ही दिनोंमें मालामाल हो जा सकता है। गाय आदि पालनेवालोंको इसे अवश्य खरीदना चाहिये। दाम सिर्फ ।≈) आना।

जिवनार—तरह तरहके भोजनके पदार्थ बनानेकी अपूर्व पुस्तक ।-)

ज्योतिष शास्त्र—ज्योतिष विद्याकी अपूर्व पुस्तक मूल्य ॥)

विवेक वचनावली—स्वामी विवेकानन्दके उपदेश

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३७१, अपर चीतपुर रोड, कल०